वार्षिक रिपोर्ट
2011-12

रक्षा मंत्रालय

भारत सरकार

विषय सूची

1.	सुरक्षा परिवेश	1
2.	रक्षा मंत्रालय का गठन तथा कार्य	9
3.	भारतीय सेना	17
4.	भारतीय नौसेना	33
5.	भारतीय वायुसेना	43
6.	तटरक्षक	49
7.	रक्षा उत्पादन	57
8.	रक्षा अनुसंधान एवं विकास	91
9.	अन्तर सेवा संगठन	111
10.	भर्ती एवं प्रशिक्षण	127
11.	भूतपूर्व सैनिकों का पुनर्वास तथा कल्याण	147
12.	सशस्त्र सेनाओं तथा सिविल प्राधिकारियों के बीच सहयोग	159
13.	राष्ट्रीय कैडेट कोर	169
14.	विदेशों के सथा रक्षा सहयोग	179
15.	समारोह, अकादमिक और साहसिक कार्यकलाप	189
16.	सतर्कता इकाइयों के कार्याकलाप	201
17.	महिलाओं का सशक्तीकरण और कल्याण	207

परिशिष्ट

I	रक्षा मंत्रालय के विभागों के कार्यों की सूची	214
II	1 जनवरी, 2011 से आगे पदासीन मंत्री, सेनाध्यक्ष और सचिव	218
III	रक्षा मंत्रालय के कार्यकरण पर नियंत्रक–महालेखापरीक्षक की अद्यतन रिपोर्ट का सारांश	219
IV	सीएंडएजी रिपोर्टों/पीएसी रिपोर्टों में की गई टिप्पणियों के संबंध में 31.12.2011 की स्थिति के अनुसार की गई कार्रवाई संबंधी टिप्पणियों की स्थिति	230

1

सुरक्षा परिवेश

भारतीय वायुसेना के एस.यू. 30 का आकाश में प्रभुत्व

fo चारधारा से सम्बद्ध आतंकवाद का उदगमन, छोटे अस्त्रों और हल्के हथियारों (एस ए एल डब्ल्यू) का विस्तार, जनसंहार के हथियारों का प्रसार और इसकी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण कुछ ऐसे कारक हैं जो भारत की सुरक्षा को सीधे विस्तृत भौगोलिक परिवेश से जोड़ते हैं

1.1 भारत की भू–सीमाएं 15,500 किलोमीटर से भी अधिक फैली हुई हैं और इसकी समुद्री सीमाओं में से तीन प्रमुख समुद्री मार्ग होकर गुजरते हैं। एशिया महाद्वीप और हिंद महासागर क्षेत्र दोनों के परिप्रेक्ष्य में देश की सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अवस्थिति है। इसका भू–क्षेत्रफल 3.3 मिलियन वर्ग किलोमीटर है। देश में विविध जातीय, भाषायी, धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले 100 करोड़ से भी अधिक लोग रहते हैं।

1.2 भारत की स्थलाकृति विविधताओं से परिपूर्ण है जहां बर्फ से ढकी 28,000 फुट से अधिक ऊंची हिमालय की चोटियों से लेकर घने जंगल और विस्तृत मैदानी भू–भाग हैं। उत्तर में सियाचिन ग्लेशियर विश्व में सबसे ऊंचा रणक्षेत्र है जहां 21,000 फुट की ऊंचाई पर भी चौकियां स्थित हैं। भारत की पश्चिमी सीमा रेगिस्तानों, उपजाऊ मैदानों और घने जंगलों से ढके पहाड़ों से होकर गुजरती है। पूर्वोत्तर सीमा में भी खड़ी, ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं और घने उष्ण कटिबंधीय वन हैं। दक्षिण में समुद्र के निकटवर्ती पहाड़ी श्रृंखलाएं, अंदरूनी भू–भाग में पठार और इसके बीच–बीच में नदी घाटियां, तटीय मैदान और पश्चिम में लक्षद्वीप तथा पूर्व में अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह जैसे दूर–दराज में स्थित द्वीपीय क्षेत्र हैं। गुजरात से लेकर पश्चिम बंगाल तक देश के तीन ओर की सीमा अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से घिरी है। हमारे पूर्वी तट में निकटतम बिंदु से 1300 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह मलक्का जलडमरुमध्य में प्रवेश के संबंध में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । अरब सागर में लक्षद्वीप और मिनिकॉय द्वीपसमूह, जो फारस की खाड़ी और लाल सागर से पूर्वाभिमुखी समुद्री संचार मार्ग पर अवस्थित है , पश्चिमी तट पर निकटतम बिंदु से 450 किलोमीटर की दूरी पर हैं। इस प्रकार भारत समुद्रवर्ती और महाद्वीपीय देश, दोनों है।

1.3 भौगोलिक और स्थलाकृतिक विविधता, विशेषकर हमारे सात पड़ोसी देशों (अर्थात् अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान) के साथ लगी भू–सीमा की विविधता हमारे सशस्त्र बलों के सामने बेमिसाल चुनौतियां पेश करती है। भारत का प्रायद्वीपीय भू–भाग स्वेज नहर और फारस की खाड़ी से मलक्का जलडमरूमध्य तक फैले विश्व के एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग के सन्निकट है। प्रतिवर्ष 55,000 जहाज और खाड़ी देशों से अधिकांश तेल इस मार्ग से होकर गुजरते हैं।

1.4 महाद्वीपीय एशिया के निचले भाग और हिंद महासागर के शीर्ष पर भारत की अवस्थिति इसे मध्य एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र, दोनों के सापेक्ष में एक अनुकूल स्थिति प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, भारत का आकार, इसकी सामरिक अवस्थिति, व्यापारिक संबंध और अनन्य आर्थिक क्षेत्र इसके सुरक्षा परिवेश को सीधे विस्तृत भू–भाग, विशेषकर पड़ोसी देशों और मध्य एशिया, दक्षिण–पूर्वी एशिया, खाड़ी देशों और हिंद महासागर से जोड़ते हैं। इन सामरिक–आर्थिक कारकों से भारत पर निरंतर एक वृहत्तर जिम्मेदारी आन पड़ती

है।

1.5 शीत युद्ध के बाद के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में, संयुक्त राज्य अमरीका में 9/11 का आतंकवादी हमला और विश्व के अनेक अन्य भागों में आतंकवादी हमलों ने सुरक्षा संबंधी चिंताओं और चुनौतियों पर बेहतर अंतर्राष्ट्रीय तालमेल दिखाई दिया है। विचारधारा से संबद्ध आतंकवाद का उदगमन, छोटे अस्त्रों और हल्के हथियारों (एस.ए.एल. डब्ल्यू) का विस्तार, डब्ल्यू.एम.डी. (जनसंहार के हथियार) का प्रसार और इसकी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण कुछ ऐसे कारक हैं जो भारत की सुरक्षा को सीधे विस्तृत भौगोलिक परिवेश से जोड़ते हैं।

1.6 दक्षिण एशिया में राजनीतिक अनुभवों और प्रणालियों की विविधता है। यह क्षेत्र आतंकवाद के खतरे और शस्त्रों और मादक द्रव्यों के प्रसार संबंधी समस्याओं से भी जूझ रहा है। इस पृष्ठभूमि में भारत कट्टरवाद और उग्रवाद के विरुद्ध एक सुरक्षात्मक दीवार की भांति खड़ा है। यह क्षेत्र में आर्थिक गतिशीलता का केन्द्र है और एक बाहुल्यात्मक लोकतंत्र के रूप में स्थिरता और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का गढ़ है।

of'od lqj{kk ifjo'k

1.7 पिछले वर्षों में, विश्व शक्ति संतुलन में नए समायोजन दिखाई दिए हैं और नित्य प्रकट होने वाले गतिशील परिवर्तनों से नई सामरिक अनिश्चितताएं पैदा हो रही हैं। यूरोप और पश्चिमी देशों में जारी आर्थिक संकट विश्व अर्थव्यवस्था के लिए चिन्ता का प्रमुख कारण है। साथ ही, आर्थिक और सामरिक शक्ति संतुलन में एशिया प्रशांत क्षेत्र का वर्चस्व बढ़ रहा है। भारत, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों का उभार भी सुस्थापित वैश्विक व्यवस्था के सापेक्ष में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है।

1.8 जैसे–जैसे उदीयमान देश और सरकारी नियंत्रण रहित संगठन अधिक शक्तिशाली हो रहे हैं, उभरते हुए जोखिमों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। आतंकवाद, समुद्री डकैती आदि से उत्पन्न विषम खतरों के चलते सुरक्षा परिवेश अधिक जटिल हो गया है। दूर–संचार और अन्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय उन्नति से आतंकवादी गतिविधियों की क्षमता और प्रभाव में कई गुणा इजाफा होने के साधन मुहैया हो गए हैं। आतंकवाद से निपटने हेतु अंतराष्ट्रीय प्रयासों के बावजूद, आतंकवाद से भारी खतरा बना हुआ है। हमारे निकट आस–पड़ोस का अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों का केन्द्र बने रहना निरंतर चिन्ता का विषय है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समुद्री डकैती और आतंकवाद का खतरा और समुद्री संचार मार्गों की सुरक्षा तथा समुद्री डकैती का फैलाव चिन्ता का विषय बने हुए हैं।

ट्रॉपेक्स अभ्यास के दौरान भा नौ पो रणवीर से ब्रह्मोस का प्रक्षेपण

1.9 निरंतर जारी संघर्ष और हिंसा से अंतराष्ट्रीय सुरक्षा स्थिति पर निरंतर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में 'अरब स्प्रिंग' द्वारा मच रही राजनीतिक उठा–पटक ने इस क्षेत्र में पहले से जटिल सुरक्षा परिदृश्य में नई चिन्ताएं उत्पन्न की हैं। एशिया प्रशान्त क्षेत्र में भी आर्थिक, कूटनीतिक और सैन्य कारकों के जटिल और गतिशील परस्पर गठजोड़ ने भी कुल मिलाकर इस क्षेत्र के लिए समग्र सुरक्षा आकलन को निरंतर प्रभावित किया है।

1.10 बहु–आयामी सुरक्षा चिंताओं और चुनौतियों

के वैश्विक आयामों को देखते हुए, भारत ने बहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी भागीदारी सुदृढ़ की है और विभिन्न देशों के साथ अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूती प्रदान की है जिससे कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और स्थिरता में, एक जिम्मेदार हितधारक के रूप में, कारगर ढंग से योगदान किया जा सके।

1.11 एशियाई प्रशांत क्षेत्र की गतिविधियां इस क्षेत्र में आस्था और विश्वास बनाने के लिए पहल करने की आवश्यकता को बल देती हैं। राजनीतिक स्तर पर, पूर्व एशिया शिखर मंच की स्थापना एक महत्वपूर्ण गतिविधि थी और भारत इस मंच का सक्रिय सदस्य है। भारत ने इस क्षेत्र के लिए एक खुले तथा व्यापक सुरक्षा ढांचे की स्थापना के प्रयासों का समर्थन किया है। भारत की नीति सहयोगात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने तथा उसमें सहभागिता करने की है जिससे इस क्षेत्र में सभी देश पारम्परिक तथा गैर–पारम्परिक सुरक्षा चुनौतियों पर कार्रवाई करने में सक्षम हों तथा यह सुनिश्चित कर सकें कि इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण नौ–गम्य मार्ग नौवहन तथा व्यापार के लिए खुले, सुरक्षित तथा स्वतंत्र रहें। भारत के आसियान के नेतृत्व वाले मंचों जैसे एडीएमएम प्लस और आसियान क्षेत्रीय मंच से निरंतर जुड़े रहना आसियान समुदाय के साथ हमारी प्रगतिवादी तथा बहुमुखी द्विपक्षीय तथा बहुद्देशीय साझेदारियों का एक हिस्सा है। साथ ही, भारत अंतर्देशीय तनाव के आर्थिक संबंधों तथा इस क्षेत्र में सैन्य संतुलन पर पड़ने वाले प्रभाव और जिस तरह से ये हमारे राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करेंगे, के प्रति सतर्क है।

1.12 अरब स्प्रिंग से जुड़ी गतिविधियों को पश्चिम एशिया तथा उत्तरी अफ्रीका में प्रजातंत्रीय सक्रियता की शुरुआत के रूप में देखा गया। हालांकि इनका विश्व भर में स्वागत हुआ, तथापि, इस क्षेत्र में सुरक्षा स्थिति पर इन गतिविधियों के प्रभाव तथा ऊर्जा आपूर्तियों के प्रवाह के परिणामों के बारे में चिंताएं हैं। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के काफी बड़े भाग का इस क्षेत्र के देशों से आयात करता है और इसके अलावा, इन देशों में कार्यरत लगभग 6 मिलियन भारतीय कार्यबल के हितों पर भी विचार करना होता है। भारत के इस क्षेत्र के सभी देशों के साथ लंबे समय से अति निकट के तथा व्यापक संबंध रहे हैं और भारत उनके साथ आपसी आदर और हितों के आधार पर आगे भी जुड़ा रहेगा। भारत इस क्षेत्र के विभिन्न देशों, जिनमें ओमान, कतार तथा यू.ए.ई. शामिल हैं, के साथ आतंकवाद तथा पश्चिमी हिन्द महासागर तथा फारस की खाड़ी में संचार नौगम्य मार्गों की सुरक्षा सहित साझे हितों के आधार पर रक्षा और सुरक्षा संबंधी प्रतिबद्धताओं का अनुसरण करता आ रहा है। भारत ने सऊदी अरब के साथ भी महत्वपूर्ण रक्षा संबंधों की शुरुआत की है जो आपसी चिंताओं और हितों के आधार पर तैयार की जाएगी।

1.13 भारत और ईरान आपस में ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक संबंधों तथा विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय व्यापार और सहयोग में हिस्सेदारी करते हैं। भारत, ईरान परमाणु मुद्दे के शांतिपूर्ण, राजनयिक हल तथा ईरान के अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों और वचनबद्धताओं से जुड़े रहने का समर्थन करता रहा है। इस मामले का शांतिपूर्वक हल पश्चिम एशिया की निरंतर शांति एवं स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण है ।

भारत ने वहुपक्षीय संस्थाओं में अपनी भागीदारी सुदृढ़ की है और विभिन्न देशों के साथ अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूती प्रदान की है जिससे कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और स्थिरता में, एक जिम्मेदार हितधारक के रूप में, कारगर ढंग से योगदान किया जा सके।

1.14 अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अफ्रीका की प्रमुखता बढ़ रही है। भारत के अनेकों अफ्रीकी देशों के साथ पारंपरिक –ऐतिहासिक संबंध हैं और वह इस महाद्वीप में कई देशों के साथ अपने संबंध बढ़ाना चाहता है। इन देशों के

साथ भारत–अफ्रीका मंच की शिखर वार्ताओं के जरिए आर्थिक संबंध गहरे करने के लिए की गई पहलों के अलावा, उभरती सुरक्षा चिंताओं के मद्देनजर कई अफ्रीकी देशों के साथ भारत के संबंधों में एक रणनीतिक आयाम जुड़ा है। इन चुनौतियों में से सबसे महत्वपूर्ण चुनौती पश्चिमी हिंद महासागर में समुद्री डकैती के खतरे का बना रहना तथा सोमालियाई समुद्री डाकुओं के कारनामों से नौगम्य मार्गों की सुरक्षा को खतरा बने रहने की चुनौती है। सोमालिया स्थित आतंकवादियों और एक देश से दूसरे देश में संगठित अपराधों के बीच संबंध भी भारी चिंता का कारण है। भारतीय नौसेना इस क्षेत्र में स्वयं भी तथा अन्य देशों की नौसेनाओं के साथ सहयोग करके समुद्री डकैती का मुकाबना करने में सक्रियता से लगी हुई है। भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिदेश के अधीन अफ्रीका में शांति बनाए रखने के अभियानों में भी सक्रियता से जुड़ा रहा है।

रेगिस्तान के राजाः 'विजयी भव' अभ्यास के दौरान एक कवचित सैन्य दल आगे बढ़ता हुआ

{k=h; lqj{kk ifjn`'k

1.15 एक सुरक्षित, स्थायी, शांतिपूर्ण तथा समृद्धशाली पड़ोस भारतीय सुरक्षा संरचना का केंद्र–बिंदु है। भारत तथा आपसी सूझबूझ तथा क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देने की दृष्टि से अपने पड़ोसियों के साथ सक्रिय तथा सहयोगात्मक कार्यों को आगे बढ़ाता रहा है।

1.16 पाकिस्तान के प्रति सुरक्षा चिन्ताएं बनी हुई हैं क्योंकि इसके भू–भाग में कार्यरत आतंकवादी संगठनों की गतिविधियां कम नहीं हुई हैं। भारत इस बात को मानता आ रहा है कि एक सुदृढ़ तथा समृद्धिशाली पाकिस्तान भारत के सर्वोत्तम हित में है और उसने पाकिस्तान के साथ वार्ता तथा आपसी सूझबूझ का समर्थन किया है। तथापि, भारत–पाक सीमा के पार आतंकवादी कैम्पों की मौजूदगी तथा नियंत्रण रेखा के आर–पार निरंतर घुसपैठ एक खतरा बना हुआ है ।

भारत आपसी सूझबूझ तथा क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देने की दृष्टि से अपने पड़ोसियों के साथ सक्रिय तथा सहयोगात्मक कार्यों को आगे बढ़ाता रहा है।

1.17 अफगानिस्तान की स्थिति भारत के लिए महत्वपूर्ण है और उस देश में आतंकवादी हमलों में वृद्धि होना भारत के लिए चिंता का विषय है, विशेषकर देश में अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना सेनाओं के

संदर्भ में। भारत अफगान द्वारा सामना किए जा रहे संकट के लिए अफगान के नेतृत्व में चल रहे समाधान के प्रति वचनबद्ध है और इसके लिए अफगान सुरक्षा बलों के क्षमता निर्माण का समर्थन करता आ रहा है। भारत और अफगानिस्तान के बीच सामरिक भागीदारी समझौता आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में आपसी क्षमता बढ़ाने तथा दोनों देशों द्वारा सामना की जा रही अन्य सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने हेतु सुरक्षा सहयोग सहित सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंध बनाने के लिए दोनों देशों की वचनबद्धता को चिन्हित करता है।

1.18 यद्यपि भारत और चीन के बीच अनसुलझा सीमा विवाद भारत के सुरक्षा परिकलन का एक कारक है, तथापि, भारत की चीन के साथ एक सामरिक तथा सहयोगात्मक भागीदारी है जिसमें आपसी हित के क्षेत्रों में काम करने के प्रयास किए जाते हैं ताकि दोनों देश अभिवृद्धि तथा विकास के साझे लक्ष्यों पर कार्रवाई करने में सक्षम हो सकें। भारत की नीति चीन तथा भारत के आपसी हितों और चिंताओं के लिए आपसी विश्वास तथा सम्मान के सिद्धांतों पर चीन के साथ कार्य करने की है। भारत आसन्न तथा विस्तारिक पड़ोस में चीन की सैन्य स्थिति के प्रभावों के प्रति सचेत और चौकस है।

1.19 भारत के नेपाल के साथ मित्रता तथा सहयोग के अनन्य संबंध हैं। खुली सीमाएं तथा बंधुता एवं संस्कृति के एक–दूसरे के नागरिकों के गहन संपर्क तथा दोनों देशों के सुरक्षा और आर्थिक हितों का एक–दूसरे के साथ रचना–बसना इन द्विपक्षीय संबंधों की महत्वपूर्ण विशेषता हैं। नेपाल में प्रजातंत्रीय परिवर्तन की प्रक्रिया ने गति पकड़ी है और एक करीबी मित्र तथा पड़ोसी के रूप में भारत शांतिपूर्ण प्रजातांत्रिक परिवर्तन तथा इसके आर्थिक विकास के प्रयासों को संघटित करने में भारत नेपाल के लोगों तथा सरकार का समर्थन करने के लिए वचनबद्ध है।

1.20 भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोगात्मक संबंध क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य में एक सकारात्मक कारक बना हुआ है। दोनों देशों का सुरक्षा संबंधी मामलों और सीमा–सुरक्षा के सरोकारों को निपटाने के बारे में मतैक्य है। सीमा संबंधी मुद्दों का समाधान करने तथा सीमा प्रबंधन में वृद्धि करने के लिए द्वि पक्षीय प्रयास किए गए हैं। दोनों देश आर्थिक एवं सामाजिक विकास से संबंधित मामलों पर रचनात्मक सहयोग देते रहे हैं।

1.21 भारत–म्यांमार के संबंधों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और धार्मिक रिश्ते सुदृढ़ बनाते हैं। भारत की म्यांमार के साथ व्यापार और अवसंरचना सहित विभिन्न मोर्चों पर सहभागिता जारी है तथा सुरक्षा संबंधी मामलों में भी सहयोग का अनुसरण किया जा रहा है। म्यांमार सरकार ने आश्वासन दिया है कि इसके राज्य–क्षेत्र से भारत–विरोधी गतिविधियां चलाए जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

1.22 भारत–श्रीलंका के संबंध पक्के, सहयोगात्मक और मैत्रीपूर्ण बने हुए हैं। सामुद्रिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियां और हिंद महासागर के साझे क्षेत्र में शांति तथा स्थायित्व बनाए रखने के मुद्दे दोनों देशों के सामरिक हितों की ऐक्यता का आधार बनते हैं। भारत, श्रीलंका से राष्ट्रीय सुलह–समझौता हासिल करने और तेजी से एक चिर–स्थायी राजनीतिक समाधान ढूंढने का आग्रह करता आ रहा है, ताकि उसके सभी नागरिक शांति से रह सकें। भारत, श्रीलंकाई सरकार के उत्तरी श्रीलंका में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के प्रयासों में पहले ही उसके साथ काम कर रहा है और रक्षा एवं सुरक्षा सहित बहुत से क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के प्रयास कर रहा है।

1.23 भारत और भूटान के पारस्परिक विश्वास तथा समझ पर आधारित आपसी लाभप्रद एवं लाभकारी द्वि पक्षीय संबंध हैं। भारत का भूटान के साथ विद्युत, परिवहन, संचार अवसंरचना, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, उद्योग, औषधि एवं कृषि जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग रहा है। भारत, भूटान की शाही सरकार को

उसके सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायता देने हेतु प्रतिबद्ध है।

1.24 भारत और मालदीव के बीच पारम्परिक गर्मजोशी और मैत्रीपूर्ण संबंध क्षेत्रीय एवं अतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामरिक मुद्दों पर दोनों देशों के मध्य दृष्टिकोण एवं हितों की समानता पर आधारित हैं। एक सामुद्रिक पड़ोसी होने के नाते, मालदीव भारत की सुरक्षा–व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यह रक्षा एवं सुरक्षा संबंधी मामलों में सुदृढ़ द्विपक्षीय सहायोग के रूप में दृष्टिगोचर होता है, जो दोनों देशों के आपसी हितों पर आधारित है।

1.25 हिंद महासागर, जो 68.56 मिलियन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, का भारत के सामुद्रित हितों और सरोकारों में प्रमुख स्थान है। भारत का आर्थिक विकास महत्वपूर्ण रूप से समुद्र पर आश्रित है क्योंकि विश्व में बढ़ते अन्तःसंबंध से समुद्र के जरिए होने वाले व्यापार की महत्ता बढ़ गई है और समुद्रों के विस्तृत आर्थिक संसाधनों की क्षमता के कारण भी। भारत हिंद महासागर में बड़े वाणिज्यिक मार्गों और ऊर्जा नौवहन मार्गों (एनर्जी लाइफ लाइन्स), नामतः मलक्का खाड़ी, छह और दस डिग्री चैनल तथा फारस की खाड़ी के एक सिरे पर स्थित है। वार्षिक रूप में, 200 अरब अमरीकी डालर मूल्य का तेल होमूर्ज़ की खाड़ी से और 60 बिलियन अमरीकी डालर का तेल मलक्का खाड़ी से गुजरता है। अतः हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री संचार लेनों के साथ–साथ नौवहन की सुरक्षा में महत्वपूर्ण हित निहित है। भारत के सामुद्रिक हितों में हमारी तटरेखा और द्वीपीय प्रदेशों की सुरक्षा तथा अनन्य आर्थिक क्षेत्र में हमारे हितों की रक्षा करने के साथ ही समुद्री संचार लेनों को खुली एवं सुरक्षित रखना है।

1.26 हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती, गन रनिंग और आतंकवाद की बढ़ती हुई घटनाएं गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं। अदन की खाड़ी में गश्त की कार्रवाई के लिए बहुत–से देशों के नौसेना युद्ध पोतों की मौजूदगी के बावजूद, समुद्री डकैती का खतरा कम नहीं हुआ है। हमारे पश्चिमी द्वीपीय प्रदेशों के आस–पास के समुद्री क्षेत्र में सोमाली समुद्री डकैतों की लगातार घुसपैठ के कारण चौकसी को चाक–चौबन्द कर दिया गया है। भारतीय नौसेना, जिसे सामुद्रिक सुरक्षा की समग्र जिम्मेदारी दी गई है, समुद्र से खतरों की चुनौतियों से निपटने के लिए तटरक्षक और अन्य केंद्रीय एवं राज्य सरकार एजेंसियों के साथ समन्वय करके कार्य कर रही है। संयुक्त प्रचालन केंद्रों और बहु–एजेंसी समन्वय तंत्र के माध्यम से आसूचना के आदान–प्रदान को सुप्रवाही बनाया गया है। भारतीय नौसेना और तटरक्षक ने तटीय निगरानी और गश्त में बढ़ोत्तरी कर दी है और प्रचालनात्मक समन्वय को बेहतर बनाने के लिए अन्य एजेंसियों के साथ नियमित रूप से संयुक्त अभ्यास भी किए जा रहे हैं। भारत, हिंद महासागर क्षेत्र में विभिन्न देशों के साथ सहयोगात्मक विचार–विमर्श तथा आदान–प्रदान को बढ़ाने में भी लगा हुआ है ताकि सुरक्षा की समान चुनौतियों से निपटा जा सके। भारतीय नौसेना अदन की खाड़ी में विभिन्न देशों की नौसेनाओं के साथ मिलकर कार्य कर रही है। भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ ढांचे के तहत बहुपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने के पक्ष में है ताकि समुद्री सुरक्षा की जटिल चुनौतियों का सामना किया जा सके।

vkrfjd lqj{kk pqukSfr;k

1.27 भारत विभिन्न प्रकार की आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनमें वामपंथी उग्रवाद, कश्मीर में चल रहा परोक्ष युद्ध तथा कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में विद्रोह शामिल हैं ।

1.28 पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा जम्मू और कश्मीर में घुसपैठ के प्रयास चिंता का विषय बने हुए हैं, हालांकि सुरक्षा बल ऐसे प्रयासों से कारगर ढंग से निपट रहे हैं। पूर्वोत्तर राज्यों में सुरक्षा संबंधी स्थिति में सुधार जारी है। ऐसे विद्रोही समूहों की गतिविधियों की बारीकी से

निगरानी की जा रही है जो क्षमताओं को बढ़ाने में लगे हुए हैं। इनमें से कुछ विद्रोही समूहों के बाहरी संबंधों के मद्देनजर, इस क्षेत्र में विद्रोही गतिविधि में किसी भी संभावित बढ़ोत्तरी से निपटने के लिए सजग और तैयार रहना आवश्यक होगा ।

1.29 गतिशील क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा परिवेश भारत के लिए विस्तृत चुनौतियां पेश करता है जिनका तेजी से और कारगर ढंग से मुकाबला किया जाना चाहिए ताकि देश का विकास एवं उत्थान तथा यहां के लोगों का विकास बनाए रखा जा सके और उसमें मदद दी जा सके। यह देश और हमारी रक्षा सेनाएं सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए पूर्णतः तैयार है।

2

रक्षा मंत्रालय का गठन तथा कार्य

सेनाध्यक्षों की समिति

bस मंत्रालय का मुख्य काम रक्षा और सुरक्षा संबंधी मामलों में नीति–निदेश बनाना और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सेना मुख्यालयों, अन्तर सेवा संगठनों, उत्पादन स्थापनाओं और अनुसंधान तथा विकास संगठनों को भेजना है

lxBukRed xBu vkj dk;

2.1 स्वतंत्रता के बाद रक्षा मंत्रालय का गठन एक कैबिनेट मंत्री के अधीन किया गया था और प्रत्येक सेना को उसके अपने कमांडर–इन–चीफ के अधीन रखा गया। 1955 में, कमांडर–इन–चीफ का सेनाध्यक्ष, नौसेनाध्यक्ष तथा वायुसेनाध्यक्ष के रूप में पुनः नामकरण किया गया था। नवंबर, 1962 में रक्षा उपस्करों के अनुसंधान, विकास तथा उत्पादन संबंधी कार्य के लिए रक्षा उत्पादन विभाग का गठन किया गया था। नवंबर, 1965 में, रक्षा आवश्यकताओं के आयात प्रतिस्थापन के लिए योजनाएं बनाने और उनके कार्यान्वयन के लिए रक्षा पूर्ति विभाग बनाया गया था। बाद में, इन दोनों विभागों को मिलाकर रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति विभाग बना दिया गया था। वर्ष 2004 में रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति विभाग का नाम बदलकर रक्षा उत्पादन विभाग रख दिया गया। 1980 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग बनाया गया। वर्ष 2004 में भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग बनाया गया।

2.2 रक्षा सचिव, रक्षा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य करते हैं और इसके अलावा, मंत्रालय के चारों विभागों के कार्यों में समन्वय बनाए रखने के लिए भी उत्तरदायी हैं।

e=kky; vkj bldk foHkkx

2.3 इस मंत्रालय का मुख्य काम रक्षा और सुरक्षा संबंधी सभी मामलों में नीति–निदेश बनाना और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सेना मुख्यालयों, अंतर–सेवा संगठनों, उत्पादन स्थापनाओं और अनुसंधान तथा विकास संगठनों को भेजना है। मंत्रालय को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि सरकार के नीति–निर्देशों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जाए और अनुमोदित कार्यक्रमों का निष्पादन आबंटित संसाधनों के अंतर्गत किया जाए।

2.4 इन विभागों के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैः–

(i) रक्षा विभाग, एकीकृत रक्षा स्टाफ, तीनों सेनाओं और विभिन्न अंतर सेवा संगठनों से संबंधित कार्य करता है। यह विभाग रक्षा बजट, स्थापना मामलों, रक्षा नीति, संसदीय मामलों, अन्य देशों के साथ रक्षा सहयोग और रक्षा संबंधी सभी कार्यकलापों के समन्वय संबंधी कार्य के लिए भी उत्तरदायी है।

(ii) रक्षा उत्पादन विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं और यह विभाग रक्षा उत्पादन कार्यों, आयात किए जाने वाले सामान, उपस्करों और कलपुर्जों के देशीकरण, आयुध निर्माणी बोर्ड और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों की विभागीय उत्पादन इकाइयों के बारे में योजना तैयार करने तथा उन पर नियंत्रण रखने से संबंधित कार्य करता है।

(iii) रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं जो रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार भी हैं । इसका कार्य सैन्य उपस्करों और

संभारतंत्र से संबंधित वैज्ञानिक पहलुओं पर सरकार को सलाह देना और तीनों सेनाओं द्वारा अपेक्षित साज–समान के अनुसंधान, डिजाइन और विकास कार्यों के लिए योजनाएं तैयार करना है।

सेनाध्यक्षों की समिति के अध्यक्ष के तत्वावधान में यह संगठन सेनाओं के बीच सम्बद्धता तथा सहक्रियाशीलता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्यारत है।

(iv) भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग के प्रमुख एक सचिव हैं और यह विभाग भूतपूर्व सैनिकों के सभी पुनर्वास, कल्याण तथा पेंशन संबंधी मामलों को देखता है।

2.5 रक्षा मंत्रालय के विभिन्न विभागों और वित्त प्रभाग द्वारा निपटाई जाने वाली मदों की सूची इस रिपोर्ट के परिशिष्ट–I में दी गई है।

2.6 इस रिपोर्ट की अवधि के दौरान रक्षा मंत्रालय के मंत्रियों, सेनाध्यक्षों और मंत्रालय के विभागों के सचिवों और सचिव (रक्षा वित्त)/वित्त सलाहकार (रक्षा सेवाएं) के पदों पर कार्यरत अधिकारियों से संबंधित सूचना इस रिपोर्ट के परिशिष्ट–II में दी गई है।

e[;ky; ,dh—r j{kk LVkQ

2.7 "उच्चतर रक्षा प्रबंधन" की पुनरीक्षा के लिए गठित मंत्रिसमूह की सिफारिशों के आधार पर मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ 1 अक्तूबर, 2001 को अस्तित्व में आया। सेनाध्यक्षों की समिति के अध्यक्ष के तत्वावधान में यह संगठन सेनाओं के बीच सम्बद्धता तथा सहक्रियाशीलता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्यरत है।

2.8 , ,u lh dh {kerk dk fuek.k % अंडमान और निकोबार कमान(ए एन सी) की संक्रियात्मक और प्रशासनिक क्षमता सुनिश्चित करने के लिए ए एन सी में अवसंरचना विकास और आधुनिकीकरण के लिए एकीकृत रक्षा स्टाफ द्वारा कार्रवाई शुरू की गई।

2.9 ekuoh; lgk;rk vkj vkink jkgr ¼,p , Mh vkj½ मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ ने देश के भीतर और बाहर दोनों जगह आपदात्मक स्थितियों में सशस्त्र सेनाओं की कार्रवाइयों का समन्वय किया । वर्ष के दौरान समन्वित प्रमुख राहत अभियान थे– श्रीलंका को मानवीय सहायता; लीबिया से भारतीय नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालना; उड़ीसा में बाढ़ राहत अभियान– 2011 और सिक्किम में भूकम्प–2011।

2.10 lfud lg;kx % मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ ने निम्नलिखित सैनिक सहयोग उप समूहों की बैठकों का समन्वय किया है:

(क) 24–25 जनवरी, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित 5वीं भारत–जर्मनी एम एस बी बैठक।

(ख) 3–4 मार्च, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित 7वीं भारत–इटली एम एस जी बैठक।

(ग) 20–21 अप्रैल, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित भारत–संयुक्त एम एस जी बैठक ।

(घ) 14 दिसंबर, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित भारत–फ्रांस सैनिक उप समिति की बैठक ।

2.11 f=&lsuk l;ä fo'k"k cy if'k{k.k f'kfoj% मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ द्वारा मुख्यालय ए एन सी के सहयोग से एक संयुक्त विशेष बल प्रशिक्षण शिविर4 से 13 अक्तूबर, 2011 तक कार्निक, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में आयोजित किया गया । इस प्रशिक्षण शिविर में तीनों सेनाओं के कुल 90 विशेष बल कार्मिकों ने भाग लिया ।

2.12 j{kk lok LVkQ dkyst ¼Mh , l , l lh½ तीनों सेनाओं के अधिकारियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, एक चरणबद्ध रूप से स्टाफ पाठ्यक्रम की

त्रि–सेना संयुक्त विशेष बल प्रशिक्षण शिविर

क्षमता बढ़ाकर 500 करने की कार्रवाई शुरू की गई है।

2.13 **j{kk ic/ku egkfo|ky; ¼lh Mh ,e½** सूचना प्रौद्योगिकी, आधुनिक शिक्षण साधनों के अधिकतम इस्तेमाल हेतु तथा भारतीय सशस्त्र बलों की जरूरतों को पूरा करने के लिए महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या में वृद्धि हेतु निम्नलिखित उपाय किए गए हैंः

(क) उच्चतर रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों की क्षमता बढ़ाकर 150 की गई।

(ख) केस स्टडीज, शोध निबंधों और परियोजना अध्ययन रिपोर्टों की विषय वस्तु महाविद्यालय के वेबपोर्टल में डालकर सी डी एम में मौजूद ज्ञान भंडार का आदान–प्रदान।

(ग) भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलूरू, इंदौर तथा जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलुरू और प्रख्यात अतिथि वक्ताओं और अतिथि शिक्षकों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम आयोजित करके पाठ्यक्रम विषय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाई गई।

2.14 **Hkkjrh; jk"Vh; j{kk fo'oof|ky;¼bnw½** विश्ववद्यिालय की स्थापना के लिए, रक्षा विभाग, रक्षा मत्रालय और एजुकेशनल कंसलटेन्ट्स इंडिया लिमिटेड (एड.सिल) के बीच विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, भारतीय राष्ट्रीय रक्षा विश्ववद्यिालय(इंदू) अधिनियम और संविधियां तैयार करने तथा परियोजना इंदू के लिए योजनाएं बनाने हेतु 31 मई, 2011 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एड.सिल ने अपनी आरंभिक रिपोर्ट पहले ही प्रस्तुत कर दी है।

2.15 **l'kó cyk e efgyk vf/kdkfj;k dh Hkrh vkj LFkkbl deh'ku lc/kh uhfr %** उच्च स्तरीय समिति द्वारा तैयार तथा सी ओ एस सी द्वारा यथा अनुमोदित नीतिगत दस्तावेज के आधार पर, रक्षा मत्रालय ने नवंबर, 2011 में सशस्त्र बलों में महिलाओं की भर्ती और तैनाती संबंधी नीति तैयार की।

2.16 **efMdy ckp %** मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ में नवगठित मेडिकल ब्रांच ने हेल्थ स्मार्ट कार्ड जारी करने और सशस्त्र बल मेडिकल सेवाओं हेतु आई टी के विकास हेतु कार्रवाई शुरू की है । इसमें मेडिकल स्टोरों और पूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और टेलीमेडिसन पर विशेष बल दिया गया है।

luk e[;ky;

2.17 तीनों सेना मुख्यालय अर्थात् सेना मुख्यालय, नौसेना मुख्यालय और वायुसेना मुख्यालय क्रमशः सेनाध्यक्ष, नौसेनाध्यक्ष और वायुसेनाध्यक्ष के अधीन कार्य करते हैं। उनके प्रधान स्टाफ अफसर उनकी सहायता

करते हैं। रक्षा विभाग के अधीनस्थ अंतर सेवा संगठन, तीनों सेनाओं की सामान्य जरूरतों जैसे चिकित्सा सुविधा, जनसंपर्क, रक्षा मुख्यालयों में सिविलियनों के कार्मिक प्रबंधन के कार्यों को पूरा करने के लिए उत्तरदायी हैं।

तीनों सेना मुख्यालय अर्थात् सेना मुख्यालय, नौसेना मुख्यालय और वायुसेना मुख्यालय क्रमशः सेनाध्यक्ष, नौसेनाध्यक्ष और वायुसेनाध्यक्ष के अधीन कार्य करते हैं।

2.18 रक्षा संबंधी क्रियाकलापों से जुड़ी कई समितियां रक्षा मंत्री की सहायता करती हैं। सेनाध्यक्षों की समिति सेनाध्यक्षों के लिए सेनाओं के क्रियाकलापों संबंधी मामलों पर चर्चा करने और मंत्रालय को सलाह देने के लिए भी एक मंच है। सेनाध्यक्षों की समिति के प्रमुख का पद सबसे अधिक सेवा काल वाले सेनाध्यक्ष को दिया जाता है और परिणामस्वरूप यह तीनों सेनाओं को बारी–बारी से मिलता है।

l'kó luk vf/kdj.k dh LFkkiuk

2.19 सरकार ने संघ की सशस्त्र सेनाओं के सदस्यों को शीघ्रता से न्याय देने की व्यवस्था करने के लिए तीनों सेनाओं (सेना, नौसेना और वायुसेना) के सदस्यों के सेवा संबंधी मामलों से संबंधित शिकायतों और विवादों तथा कोर्ट मार्शल के निर्णयों से उत्पन्न अपीलों के अधिनिर्णय के लिए एक सशस्त्र सेना अधिकरण की स्थापना की है।

2.20 मुंबई स्थित क्षेत्रीय पीठ ने 9 जून 2011 से कार्य करना आरंभ कर दिया है। दिल्ली स्थित प्रधान पीठ के अलावा चेन्नई, जयपुर, लखनऊ, चंडीगढ़, कोलकाता कोच्चि और गुवाहाटी स्थित क्षेत्रीय पीठें भी कार्य करने लगी हैं।

सरकार ने तीनों सेनाओं के सदस्यों के सेवा संबंधी मामलों से संबंधित शिकायतों और विवादों तथा कोर्ट मार्शल के निर्णयों से उत्पन्न अपीलों के अधिनिर्णय के लिए एक सशस्त्र सेना अधिकरण की स्थापना की है।

j{kk ¼foÙk½

2.21 रक्षा मंत्रालय में वित्त प्रभाग, वित्तीय प्रभाव डालने वाले सभी मामलों का कार्य देखता है। इस प्रभाग के प्रमुख सचिव (रक्षा वित्त)/ वित्त सलाहकार (रक्षा सेवाएं) हैं और यह रक्षा मंत्रालय के साथ पूर्णतः एकीकृत है । यह एक सलाहकार की भूमिका भी निभाता है।

2.22 शीघ्रता से निर्णय लेने के लिए, रक्षा मत्रालय को वर्धित वित्तीय शक्तियों प्राप्त हैं । इन शक्तियों का प्रयोग वित्त प्रभाग की सहमति से किया जाता है। रक्षा अधिप्राप्ति मामलों के संबंध में इन शक्तियों के कार्यान्वयन की पारदर्शिता और निर्धारित नीति संबंधी मार्ग–निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रक्षा अधिप्राप्ति प्रक्रिया तथा रक्षा अधिप्राप्ति मैनुअल को समय–समय पर अद्यतन किया जाता है।

2.23 वित्त प्रभाग रक्षा सेवा अनुमान,रक्षा मत्रालय के सिविल अनुमान तथा रक्षा पेंशन के संबंध में अनुमान तैयार करता है और उनकी मानीटरी करता है । रक्षा सेवा अनुमानों के संबंध में वर्ष 2009–10 और वर्ष 2010–11 के लिए वास्तविक व्यय, वर्ष 2011–12 के लिए संशोधित अनुमान तथा वर्ष 2012–13 के लिए बजट अनुमान के ब्यौरे सारणी संख्या 2.1 में दिए गए हैं।

2.24 रक्षा मंत्रालय के कार्यकरण पर नियंत्रक–महालेखापरीक्षक की अद्यतन रिपोर्ट का सारांश इस वार्षिक रिपोर्ट के परिशिष्ट– III में दिया गया है।

2.25 सी एड ए जी की रिपोर्टों/पी ए सी की रिपोर्टों में की गई टिप्पणियों के सबंध में 31.12.2011 की स्थिति के अनुसार की गई कार्रवाई पर टिप्पणियों की स्थिति इस वार्षिक रिपोर्ट के परिशिष्ट–IV पर दी गई है।

lkj.kh 2-1

रक्षा व्यय का सेना/विभाग–वार ब्यौरा

(करोड़ रु. में)

luk@foHkkx		2009&10 okLrfod ¼jkt Lo$i t h½	2010&11 okLrfod ¼jkt Lo$i t h½	l'kks/kr ikDdyu 2011&12 ¼jkt Lo$i t h½	ctV ikDdyu 2012&13 ¼jkt Lo$i t h½
सेना		75228.00	78239.69	86816.67	96564.83
नौसेना		22693.59	27119.20	29606.01	37314.44
वायुसेना		32790.86	38176.49	43872.16	48220.26
रक्षा उत्पादन विभाग	आयुध निर्माणी महानिदे.	1975.83	–133.32	–56.63	–135.13
	गुणता आश्वासन महानिदे.	617.42	565.73	684.29	807.23
	योग				
अनुसंधान तथा विकास		8475.38	10148.92	10014.31	10635.56
योग		141781-08	154116-71	170936-81	193407-29

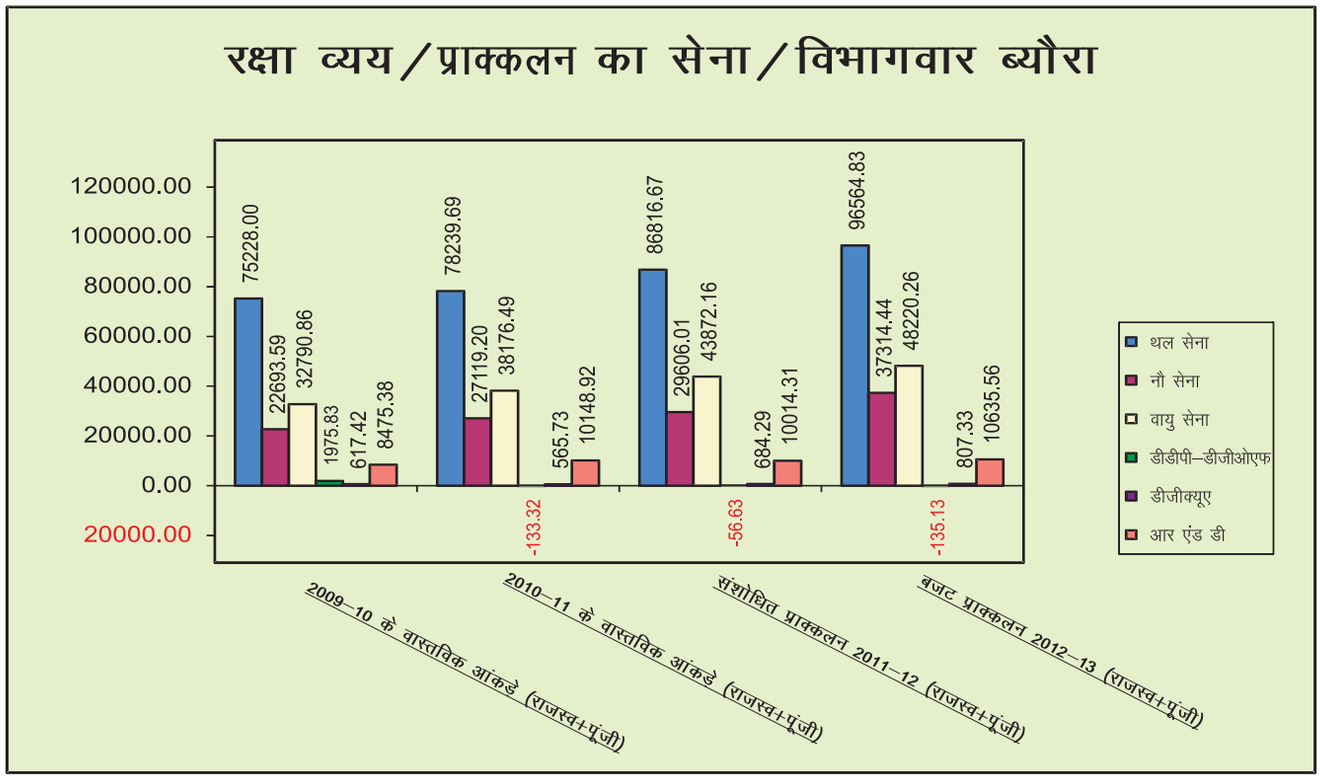

कुल रक्षा प्राक्कलन 2012–13 (बजट प्राक्कलन) के प्रतिशत के रूप में सेना/विभाग–वार आबंटन

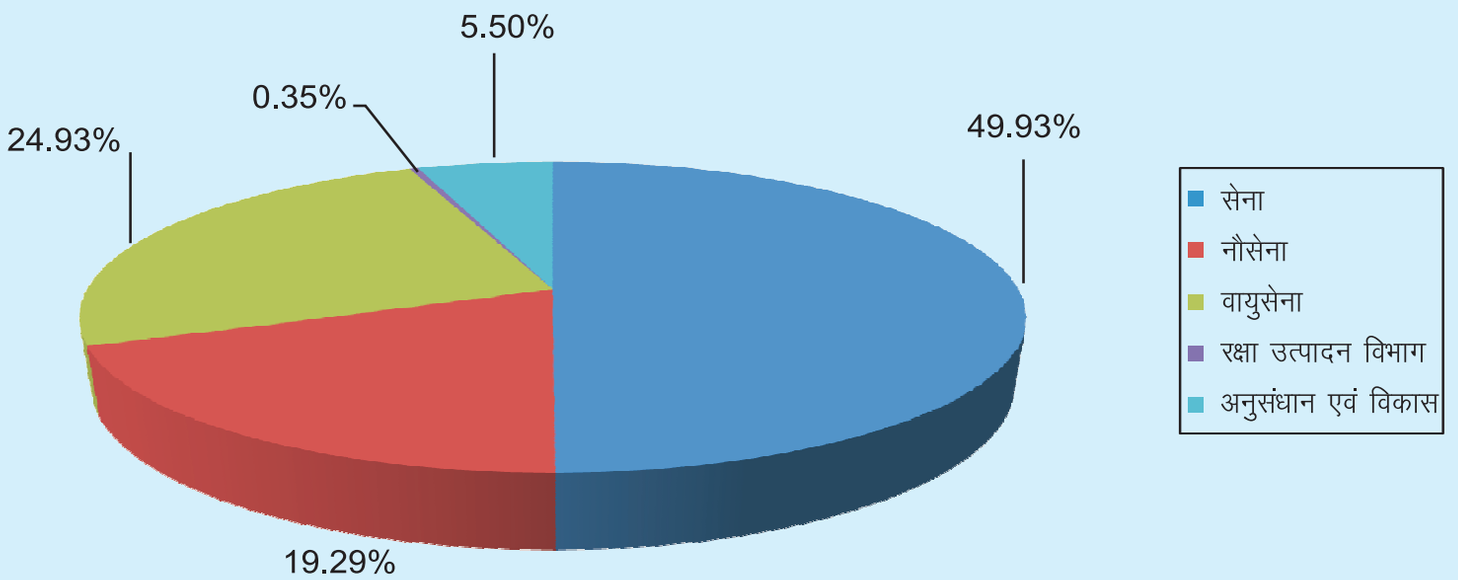

3

भारतीय सेना

पैदल सैनिक मार्च करते हुए

Hkkरतीय सेना किसी भी प्रकार के युद्ध से उत्पन्न बाहरी और अंदरूनी खतरों से देश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हो और सैन्य अभियानों से आतंकवादी घटनाओं में उल्लेखनीय रूप से कमी आई है

lqj{kk lEcU/kh 0;kid leh{kk

3.1 विश्व की भू–राजनैतिक स्थितियों में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं, जिसके कारण देश को सुरक्षा संबंधी विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने ऑपरेशनों के लिए सेना अपनी तैयारी/स्थिति की समीक्षा करती रहती है। साथ ही भारतीय सेना किसी भी प्रकार के युद्ध से उत्पन्न बाहरी और अंदरूनी ख़तरों से देश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। इसके अतिरिक्त विनाश/प्राकृतिक आपदाओं के समय भारतीय सेना आपदाग्रस्त जनता को आवश्यक सहयोग और मदद पहुंचाने के लिए तत्पर रहती है।

tEew&d'ehj

3.2 वर्ष 2011 में जम्मू–कश्मीर में हिंसा में समग्र रूप से कमी होने से वहां सुरक्षा–स्थिति स्थिर बनी रही है। तथापि, यह थोड़े ही समय में बिगड़ भी सकती है। पाकिस्तान द्वारा चल रहे परोक्ष युद्ध के लिए, समर्थन निर्बाध रूप से जारी हैं, पाकिस्तान/पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकी ढांचा सही–सलामत बना हुआ है। पाकिस्तान– आतंकवादी– पृथकतावादी गठजोड़ कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के उद्देश्य से अशांति फैलाने के अपने प्रयास जारी रखे हुए है ।

3.3 भारतीय सेना और अन्य सभी सुरक्षा–बलों ने लगातार और तेजी से गहन आतंकवाद–रोधी ऑपरेशनों के माध्यम से परिवेश का सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमरनाथ यात्रा को शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न करवाना और हाल ही में पंचायती चुनावों में जनता द्वारा बड़ी संख्या में मतदान किया जाना और देश और विदेश के सैलानियों की संख्या में भी अच्छी बढ़ोतरी होना, ये सभी सशस्त्र सेनाओं की उपलब्धियां है जिन्होंने इस क्षेत्र में अनुकूल और सुरक्षित माहौल बनाया है । हालांकि स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी इन उपलब्धियों को और ठोस बनाए जाने की जरूरत है।

3.4 **lhekvksa ds vklikl dh fLFkfr %** छुट–पुट घटनाओं को छोड़कर सीमाओं पर युद्ध–विराम की स्थिति बनी हुई है । इस वर्ष के दौरान सीमाओं पर युद्ध–विराम के उल्लंघन संबंधी 56 मामले सामने आए जबकि 2010 में ऐसी 57 घटनाएं हुई । युद्ध–विराम के उल्लंघन के मामलों पर महानिदेशक सैन्य ऑपरेशन वार्ता, स्थानीय स्तर की फ्लैग बैठकों और हॉटलाइनों की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कार्रवाई की जा रही है।

3.5 सीमाओं की कड़ी निगरानी की जा रही है तथा सेना ने घुसपैठ को रोकने के लिए बेहतर उपाय किए

हैं। परन्तु सीमा–पार से घुसपैठ अब भी जारी है। इस वर्ष घुसपैठ की 16 कोशिशों को नाकाम कर दिया गया जिनमें 15 आतंकवादी मारे गए।

3-6 Hkhrjh bykdk d gkykr % सेना ने वर्ष 2011 में 95 आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया और 35 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया जबकि 15 सैन्यकर्मी हताहत हुए। इस दौरान आतंकवादियों के सरगनाओं को निशाना बनाया गया और 21 आतंकी नेताओं को खत्म करने में सफलता हासिल की गई । सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशनों के कारण आतंकवादियों की हिंसक घटनाओं में कमी आई है।

3-7 vejukFk ;k=k% 29 जून, 2011 से 13 अगस्त 2011 तक की अवधि में अमरनाथ यात्रा का संचालन किया गया। इस यात्रा के दौरान संभावित खतरों से सुरक्षा मुहैया करवाने की जिम्मेदारी सेना को सौंपी गई थी । इस वर्ष यात्रा में श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया और लगभग 6,48,000 यात्रियों ने अमरनाथ की यात्रा की। वर्ष 2010 में लगभग 4,54,000 यात्रियों ने पवित्र गुफा के दर्शन किए।

3.8 ipk;r d puko % जम्मू–कश्मीर में 4130 सरपंच और 29,719 पंचों के चुनाव के लिए पंचायती चुनाव 16 चरणों में राज्य सरकार द्वारा सफलतापूर्वक संचालित किए गए। पंचायती चुनावों में जनता ने बड़ी संख्या (77.73) में भाग लिया, जबकि आतंकवादियों और अलगाववादियों ने इनका बहिष्कार किया था। इन चुनावों से जनता की शांति बहाली की इच्छा स्पष्ट रुप से प्रकट होती है ।

29 जून, 2011 से 13 अगस्त 2011 तक की अवधि में अमरनाथ यात्रा का संचालन किया गया। इस यात्रा के दौरान संभावित खतरों से सुरक्षा मुहैया करवाने की जिम्मेदारी सेना को सौंपी गई थी। इस वर्ष यात्रा में श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया और लगभग 6,48,000 यात्रियों ने अमरनाथ की यात्रा की। वर्ष 2010 में लगभग 4,54,000 यात्रियों ने पवित्र गुफा के दर्शन किए।

mŸkj&iwo

3.9 उत्तर–पूर्व में सुरक्षा की मौजूदा स्थिति स्थिर बन गई है और नियंत्रण में है। पिछले वर्षों की तुलना में हिंसा का स्तर भी काफी कम हो गया है। समाज के सभी वर्ग शांति की बहाली चाहते हैं और इस प्रकार विकास संबंधी परियोजनाओं में प्रगति हुई है । 15 प्रमुख गुटों के साथ इस समय ऑपरेशन रोकने/युद्ध–विराम के लिए वार्ता की जा रही है। सेना ने, अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर यह अपेक्षित परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3.10 vle% राज्य में सुरक्षा की स्थिति शांतिपूर्ण और नियंत्रण में है। राज्य में सुरक्षा बलों द्वारा चलाए जा रहे अनथक ऑपरेशनों से इस क्षेत्र में भूमिगत समूहों की हिंसक कार्रवाइयों में काफी कमी आई है। सुरक्षा बलों ने भूमिगत कार्यकर्त्ताओं पर अपनी नैतिक प्रभुता स्थापित की है।

3.11 सुरक्षा बलों द्वारा लगातार बनाए गए दबाव और सरकार द्वारा शांति–स्थापना के लिए किए गए प्रयासों के फलस्वरुप उल्फा के चेयरमैन अरबिन्दा राजखोवा के तहत असम संयुक्त मुक्ति मोर्चे (उल्फा) के बहुत सारे कैडर सामने आए हैं । असम सरकार, भारत सरकार और उल्फा के शांति–वार्ता के पक्षधर गुट के बीच त्रिपक्षीय–वार्ता जोर पकड़ रही है। परेश बरुआ का शांति वार्ता विरोधी गुट हिंसक कार्रवाइयों को बढ़ावा देने और शांति–वार्ता को भंग करने की कोशिश करता आ रहा है। जनवरी 2011 से 11 से भी अधिक उल्फा कैडर मारे गए हैं, नौ कैडरों ने आत्म–समर्पण कर दिया है और 51 को सुरक्षा बलों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है ।

3.12 असम में नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड, प्रोग्रेसिव, दीमासा हलम डोगा (डी एच डी) के दोनों गुटों और युनाइटेड पीपल्स डेमोक्रेटिक सॉलिडेरिटी जैसे अन्य भूमिगत समूहों के साथ 'ऑपरेशन रोको' समझौते किए जा रहे हैं। एन डी एफ बी का शांति–वार्ता विरोधी गुट सबसे अधिक हिंसक गुट है, इस समूह के विरुद्ध सेना द्वारा किए गए ऑपरेशनों में इस वर्ष 148 कैडरों को निष्प्रभावी बना दिया गया । इस समूह को 1 अगस्त, 2011 से एक–पक्षीय युद्ध–विराम घोषित करने पर मजबूर कर दिया गया।

3.13 'दीमा हासाओ' में सामाजिक सामंजस्य, जो पहले ही डिस्ट्रिक्ट का नाम बदलने के कारण दबाव में था, दीमासा और गैर–दीमासा लोगों में जातीय तनाव बना हुआ है। सेना ने पहले से तैयारी की है जिससे इस क्षेत्र का माहौल शांतिपूर्ण बना हुआ है और इस क्षेत्र में संभावित झगड़ों में कमी आई है।

3.14 ukxkyS.M% नागालैंड में हिंसा की घटनाओं में काफी कमी आई है। एन एस सी एन (आई एम) और एन एस सी एन (के) के बीच चल रहा आपसी संघर्ष भी बहुत कम हो गया है। एन एस सी एन (के) के विभाजन के बाद अस्तित्व में आए एन एस सी एन (खोले/खिटोवी) गुट पर भी युद्ध–विराम के प्रावधान लागू कर दिए गए हैं ।

3.15 नागा समझौता फोरम के नेतृत्व में शुरु की गई समझौता वार्ता में तेजी आई है क्योंकि राज्य की आम जनता शांति से रहना चाहती है। सेना और असम राइफल्स भूमिगत समूहों पर नियंत्रण रखे हुए हैं और सुनिश्चित किया जा रहा है कि युद्ध–विराम ग्राउंड रूल्स का पालन हो । ईस्टर्न नागा पीपल्स ऑर्गनाइजेशन के निर्देशन में फ्रंटियर नागालैंड राज्य की मांग जिसमें मॉन, यूनसेंग, लॉंगलेंग और कीफायर शामिल है, भी जोर पकड़ रही है।

3.16 ef.kiqj% ऑटोनॉमस डिस्ट्रिक्ट काउंसिल के बाकी दस सदस्यों को चुन लिया गया है। अब यह राज्य अगले वर्ष फरवरी/मार्च में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारी में जुटा है। मणिपुर उत्तर–पूर्व का सबसे उपद्रवग्रस्त क्षेत्र रहा है, फिर भी 2010 की अपेक्षा हिंसा की घटनाओं में कमी आई है। अधिकतर हिंसक कार्यवाइयां डी–नोटीफाइड इम्फाल घाटी तक ही सीमित हैं। सेना और असम राइफल्स द्वारा ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। जनवरी 2011 के बाद विभिन्न गुटों के 6 आतंकवादी मारे गए और 670 से भी अधिक आतंकवादी सुरक्षा बलों द्वारा गिरफ्तार किए गए।

3.17 कुकी और जोमी भूमिगत समूहों के साथ किए गए 'ऑपरेशन रोको समझौता' के कारण कुकी और जोमी आबादी वाले इलाकों में शांति का माहौल बना है और उन पर ऑपरेशन रोको समझौते के नियमों का पालन करने का दबाव डाला गया है।

3.18 राज्य में सबसे लम्बा बंद 1 अगस्त 2011 को शुरु हुआ। कुकी समूह जो 'सदर हिल्स' नामक अलग डिस्ट्रिक्ट की मांग कर रहे थे उन्होंने 1, नवंबर 2011 को यह बंद समाप्त किया जबकि नागा समूह ने अपना बंद 29 नवंबर 2011 को खोला। इस बंद से स्थानीय लोगों को अत्यधिक असुविधा का सामना करना पड़ा।

3.19 v#.kkpy izns'k ¼frji vkSj pkaxykax½% यहां पर स्थिति हालांकि नियंत्रण में है फिर भी एन एस सी एन (आई एम) और एन एस सी एन (खापलांग) के बीच इस समय अपना–अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए चल रही लड़ाई के कारण गतिशील बनी हुई है।

3.20 f=iqjk vkSj fetksje % इस क्षेत्र में स्थिति नियंत्रण में है, परन्तु ब्रूस/रियांग को त्रिपुरा के शरणार्थी शिविरों से मिजोरम में प्रत्यावर्तित करने में हुआ विलंब भविष्य में मुद्दा बन सकता है।

3.21 मेघालयः गारो हिल्स में गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी की गतिविधियां बढ़ गई हैं और इनकी मॉनीटरिंग की जरूरत है।

lhek ij fLFkfr

3.22 phu ds lkFk f}i{kh; lac/k% पिछले कुछ

वर्षों में दोनों देशों के बीच आपसी संबंध बेहतर हुए हैं। मिलिटरी स्तर पर दोनों देशों के बीच सीमित आदान–प्रदान के साथ राजनैतिक और राजनयिक स्तर पर सकारात्मक कार्य किए जा रहे हैं । दोनों देशों ने विशेष प्रतिनिधियों की नियुक्ति की है जिससे द्विपक्षीय संबंध के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से एक सीमा–समाधान ढांचे की खोज की जा सके ।

3.23 चीन ने आर्थिक विकास और तकनीकी उन्नयन के द्वारा राष्ट्र की ताकत को व्यापक रूप से बढ़ाने पर जोर दिया है। जिसके परिणामस्वरुप उसकी सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण तथा सैन्य शक्ति के प्रदर्शन की क्षमता में अपेक्षित बढ़ोतरी हुई है। राजनैतिक, सैन्य और आर्थिक सहयोग तथा विशिष्ट कार्यों के माध्यम से सीमा संबंधी मुद्दों पर द्विपक्षीय संबंधों को राजनैतिक नजरिए से सुलझाया जाए। कूटनीतिक अतिसक्रियता के कारण भारत के निकटवर्ती पड़ोसी देशों में चीनी प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। प्रगतिशील अर्थव्यवस्था के साथ चीन की बढ़ती हुई सैन्य ताकत की झलक उसके बढे हुए आत्मविश्वास में मिलती है जिसका प्रभाव क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिरेखा और ताकत के समीकरण पर पड़ेगा। स्वायत्त क्षेत्र तिब्बत (टी ए आर) और जिंग्यांग प्रांत में द्रुत अवसंरचना विकास से चीन की सैन्य शक्ति को भारत के विरुद्ध उसके प्रदर्शन तथा प्रयोग की क्षमता को काफी बल मिला है तथा उससे उनके सम्पूर्ण सामरिक संक्रियात्मक लचीलेपन में सुधार हुआ है ।

3.24 gekjk ieq[k y{;% भारतीय सेना देश की सुरक्षा से संबंधित ज़रुरतों और सीमा–क्षेत्र में अवसंरचनात्मक विकास की आवश्यकता से भली–भांति परिचित है। हमारी अवसंरचना और सेना बल की संरचना के मौजूदा स्तर के उन्नयन के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे है ताकि उत्तरी क्षेत्र की सीमाओं पर राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित लक्ष्यों को हासिल किया जा सके । अवसंरचनात्मक विकास और मिलिटरी के आधुनिकीकरण संबंधी योजना की सर्वांगीण समीक्षा, संपूर्ण सीमा–क्षेत्र विकास योजना के अनुरूप की गई है। वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल ए सी) पर सामरिक महत्व की अवसंरचनात्मक जरुरतों की पहचान कर ली गई है और इन्हें चरणबद्ध तरीके से विकसित किया जा रहा है ।

3.25 Hkfo"; dh pqukSfr;k% भारत, चीन सहित सभी पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहता है। इस संबंध में सकारात्मक महत्वपूर्ण कार्यों और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति एवं अमन बनाए रखने की नीति सुनिश्चित की गई है। इस समय अवसंचनात्मक विकास और सेना में आधुनिकीकरण को अपनाने के लिए सेना की तत्परता जारी है ताकि वर्तमान और भविष्य में देश के समक्ष आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके।

lSukxkSa }kjk vk/kqfudhdj.k ds fy, mBk, x, dne

3.26 dofpr dkj% आधुनिक युद्ध–क्षेत्रों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कवचित कोर का तेजी से आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इसके लिए टैंकों की रात में काम न कर पाने की कमी दूर करने और साथ ही उन्हें आधुनिक फायर नियंत्रण प्रणालियों और बेहतर पॉवर पैक मुहैया करवाने पर सबसे अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त टैंकों को एक एक्टिव–डिफेंस सूट मुहैया करवाने की कोशिश की जा रही है जो आने वाले खतरे का पता लगा कर उसे निष्प्रभावी कर सकेगा। ए आर वी खरीदने के अनुबंध को अंतिम रूप दे दिया गया है। टैंक टी–72 के लिए 'डिजीटल कंट्रोल हार्नेस' और आधुनिकतम फायर कंट्रोल सिस्टम खरीदने की प्रक्रिया जारी है। टी–90 और अर्जुन टैंकों को शामिल करने संबंधी योजना पर कार्यवाही की जा रही है। अन्य महत्वपूर्ण योजनाएं जो 'टी–90 टैंक' के लिए कलपुर्जों के स्तर की मरम्मत सुविधाओं और 'ए एम के 339' की खरीद और '3यू बी के 20 इनवर मिसाइलों ' की खरीद से संबंधित हैं, खरीद–प्रक्रिया के अग्रिम चरण में हैं।

रेगिस्तान में अपने पद–चिन्ह छोड़ते हुए

3.27 e।dukbTM bQ.Vh% मैकेनाइज्ड इंफ्रेंट्री को वांछित आक्रामक क्षमता मुहैया करवाने के लिए हमारी सेना 'बी एम पी' के संपूर्ण फ्लीट को आधुनिक बनाने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना तैयार कर रही है । आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में 'बी एम पी' को ''ट्विन मिसाइल लाँचर,'' आधुनिक फायर कंट्रोल सिस्टम और अन्य आक्रामक हथियार प्रणालियों से सुसज्जित करना शामिल है। आधुनिकतम 'टैंक रोधी निर्देशित मिसाइलों' की खरीद–प्रक्रिया भी जारी है। 'बी एम पी–2 इंजन' की आपरेटिंग और गन के साथ' थर्मल इमेजर साइट' का एकीकरण अन्य हथियार है जिनकी खरीद की जा रही है ।

बाधाओं को पार करते हुए

3.28 rki[kkuk% तोपखाने के उपस्करों की खरीद करने का मुख्य लक्ष्य निगरानी क्षमता बेहतर बनाना और गोला–बारी की क्षमता को बढ़ाना है । निगरानी क्षमता बढ़ाने के लिए, पिछले वर्ष 'युद्धक्षेत्र निगरानी प्रणाली' और 'लॉरोस' के लिए 'मोबाइल टेलिस्कोपिक मास्ट' की खरीद के अलावा, मैदानी इलाकों के लिए हेरॉन यू ए वी और डब्ल्यु एल आर की खरीद–प्रक्रिया अंतिम चरण में है । फायरपावर के रुप में 'पिनाका रेजिमेंटों' के लिए खरीद–प्रक्रिया भी अंतिम–चरण में है और 155 मिमी. एस पी गन (पहिएदार) और 155 मिमी. 'अल्ट्रा लाइट हॉवित्ज़र' पर भी काम चल रहा है। 155 मिमी. टो गन, ब्रहोस मिसाइल की एक रेजिमेंट और जी आर ए डी–बी

आर्टिलरी आग उगलते हुए

एम 21 एम बी आर एल के लिए वाहन प्लेटफॉर्म की खरीद प्रक्रिया जारी है।

3.29 bQ.Vh % इंफेंट्री के जवान का आधुनिकीकरण करने का बुनियादी लक्ष्य इनकी घातक क्षमता में बढ़ोतरी और प्रत्येक जवान की सुरक्षा है । विशेष बलों के लिए सब मशीनगन और असॉल्ट राइफलों का मूल्यांकन परीक्षण किया जा रहा है। बगावत रोधी ऑपरेशनों में प्रयोग करने के लिए बुलेट प्रूफ जैकेटें और बैलिस्टिक हेल्मेटों की खरीद प्रक्रिया भी अंतिम–चरण में है। इन्फेंट्री बटालियन की 'घातक प्लाटूनों' के लिए उन्नत एवं विशिष्ट हथियार उपस्करों की खरीद योजनाएं भी अंतिम चरण में हैं । इंफेंट्री की निगरानी क्षमता को बढ़ाने के लिए 'मिनी यू ए वी' को खरीदने के प्रस्ताव पर भी कार्यवाही की जा रही है। आधुनिक 'थर्ड जैनेरेशन ए टी जी एम' की खरीद–प्रक्रिया अभी परीक्षण चरण में है।

3.30 bt hfu ; l % एन बी सी के परिवेश में इंजीनियरों की संक्रियात्मक कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए 'ऑटोमेटिक

चेंज डिटेक्शन एजेंट और केमिकल एजेंट मॉनीटर्स' की खरीद की जा रही है। इंजीनियरों की रुकावट पार करने और सेतुबंधन क्षमता बढ़ाने के लिए सर्वत्र ब्रिज सिस्टम, 10 मीटर और 05 मीटर के शॉर्ट स्पैन ब्रिज निर्माण के लिए उपयुक्त ब्रिज सिस्टमों की खरीद–प्रक्रिया अंतिम चरण में हैं।

सभी कमियों को दूर करते हुए

3.31 flxuy % सिगनल कोर ने भारतीय सेना के विभिन्न डाटा और संचार–व्यवस्था संबंधी नेटवर्कों को मिलाकर एक करने के कई महत्वपूर्ण उपाय किए हैं । बगावत रोधी ऑपरेशनों में तैनात कुछ फ्रंटलाइन कोरों के लिए मोबाइल कम्युनिकेशन और ई डब्ल्यु क्षमता में सुधार लाने के लिए प्रतिष्ठित 'ट्राइ सर्विस' परियोजना स्कीम, डिफेंस कम्युनिकेशन नेटवर्क स्थापित करने की प्रक्रिया जारी है ।

अंतरिक्ष के ज़रिये संचार

3.32 luk foekuu% मौजूदा टोही और निगरानी हेलिकॉप्टरों की जगह बेहतर क्षमता वाले आधुनिक हेलिकॉप्टर की खरीद प्रक्रिया जारी है। सेना विमानन द्वारा देश में निर्मित उन्नत हल्के हेलिकॉप्टरों को हथियारों से लैस करने की कार्रवाई चल रही है। सेना विमानन कोर अपनी प्रचालनात्मक दक्षता को बेहतर बनाने के लिए चीतल हेलिकॉप्टरों की खरीद भी कर रही है।

उड़ान को तैयार

3.33 luk gokb j{kk% 'सेना हवाई रक्षा कोर' अपनी गन और मिसाइल प्रणालियों को अपग्रेड करने के लिए

शत्रुओ बचो

बड़े कदम उठा रही है। आकाश मिसाइल प्रणाली की खरीद संबंधी संविदा को पिछले वित्तीय वर्ष में अंतिम रूप दे दिया गया था। स्वचालित हवाई रक्षा गन मिसाइल प्रणाली, शिल्का गन प्रणाली और एल 70 गन को अपग्रेड करने का कार्य भी चल रहा है।

राष्ट्रीय राइफल्स

3.34 इस अवधि के दौरान आतंकवादियों के विरुद्ध

अनेक गहन ऑपरेशन चलाए गए जिनके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में आतंकवादियों और विशेष रूप से कमान और नियंत्रण करने वाले तत्वों को नाकाम कर दिया गया

युद्धाभ्यास करते हुए

एवं इस प्रकार राज्य में आतंकवादियों को भारी नुकसान पहुंचाया गया। सुरक्षा बलों, आसूचना एजेंसियों, पुलिस, स्थानीय सरकारी–तंत्र और जनता के सम्मिलित प्रयासों से जम्मू–कश्मीर में ऑपरेशन करने में सहायता मिल रही है और ये राज्य में शांति बहाल करने में सहायता कर रहे हैं ।

3.35 vk/kqfudhdj.k% आतंकवाद का सामना कारगर ढंग से करने के लिए राष्ट्रीय राइफल्स के हथियारों और उपस्करों का भारत सहित पूरे विश्व में उपलब्ध नवीनतम तकनीकों के अनुरूप निरंतर उन्नयन करने की आवश्यकता महसूस की गई है । आतंकवादियों के हथियारों और युक्तियों में आए परिवर्तनों को देखते हुए आधुनिकीकरण करना अनिवार्य हो गया है । आधुनिकीकरण करने के लिए आर आर की कुल 42 योजनाओं का अनुमोदन किया गया है । आधुनिकीकरण योजना में नीचे बताए गए विषयों पर ध्यान दिया गया है:

(क) फायर पावर।

(ख) निगरानी और रात में कार्य करने की क्षमता।

(ग) संचार–व्यवस्था

(घ) सुरक्षा

(च) गतिशीलता

3.36 miyfC/k;k¡

¼d½ fufØ; fd, x, vkradoknh

(i)	मारे गए	63
(ii)	समर्पण किया	6
(iii)	गिरफ्तार	34

¼[k½ cjken fd;k x;k lkeku

(i)	राइफलें (हर किस्म की)	152
(ii)	पिस्तौलें	84
(iii)	एल एम जी/यू एम जी	4
(iv)	आर एल/यू बी जी एल	26
(v)	ग्रेनेड	845
(vi)	इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस	29
(vii)	रेडियो सेट	32
(viii)	विस्फोटक	–208.75 कि.ग्रा.
(ix)	गोला–बारुद	–32399 राउंड

iknf'kd luk

3.37 ekun deh'ku inku djuk % श्री एम एस धोनी और श्री अभिनव बिंद्रा को लेफ्टिनेंट कर्नल का मानद रैंक प्रदान किया गया। आधुनिक समीपी लड़ाई प्रशिक्षण में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल डॉ.दीपक राव को मेजर का मानद रैंक प्रदान किया गया।

3.38 jyo bthfu;j jftesV ¼iknf'kd luk½ e iFke efgyk dh vk vkj ¼vU; jd½ d :i e Hkrh% 969 रेलवे इंजीनियर रेजिमेंट (प्रादेशिक सेना) द्वारा रेलवे इंजीनियर रेजिमेंट (प्रादेशिक सेना) में एक महिला को पहली बार अन्य रैंक में भर्ती किया गया । सैपर शांति टिग्गा को 15 नवंबर, 2010 को प्रादेशिक सेना में भर्ती किया गया। इन्हें डी आर एम अलीपुरद्वार (असम) के अन्तर्गत चालसा रेलवे स्टेशन में पॉइन्ट्समैन के रुप में तैनात किया गया है। इन्होंने 15 नवंबर से 14 दिसंबर, 2010 तक रिक्रूट ट्रेनिंग कैम्प में भाग लिया और प्रशिक्षण में प्रथम स्थान हासिल किया और उन्हें सर्वश्रेष्ठ

सशस्त्र सेना के परिवार में नये आगमन

प्रशिक्षु का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

miLdj

3.39 भारतीय सेना अत्यंत तत्पर, हथियारों से भली–भांति लैस, आधुनिक और ऑपरेशन के लिए तैयार बल के रुप में सामने आने का लक्ष्य रखती है । भारतीय सेना 'संभारिकी व्यवस्था और अव्यवस्था को निर्धारित करने वाली सीमा–रेखा है' आदर्श–वाक्य से प्रेरित है, सेना पर्याप्त संभारिकी और प्रभावी इंजीनियरिंग सहायता प्रदान करती है। इस संबंध में प्रभावी उपस्कर प्रबंधन के लिए भरसक प्रयत्न किए जा रहे हैं। ये इस प्रकार है:–

एक कवचित रिकवरी वाहन

(क) n'k e fuEer cjy% Vid Vh&90 % देश में निर्मित गन आर्टिकल सहित कैमिस्ट्री गन बैरल का सितम्बर 2010 को मूल्यांकन परीक्षण किया गया और अब इनका थोक–उत्पादन करने की स्वीकृति दे दी गई है ।

(ख) , vkj oh oh Vh 72 ch vkj MCY; tM Vh&3 dh 512 vkeh cl od'kki e lEi.k ejEer% 512 आर्मी बेस वर्कशॉप में ए आर वी वी टी 72 बी और डब्ल्यू जेड टी–3 के लिए सम्पूर्ण मरम्मत (ओवरहॉल) सुविधाएं स्थापित करने के मामले में डी पी पी 2008 के पैरा 45 के अनुसार कार्रवाई की जा रही है। एस सी ए पी सी एच सी द्वारा ए ओ एन प्रदान कर दिया है।

(ग) ekuo jfgr ,fj;y ogh dy ¼;w , oh½ ds iqtk dk iki.k½ मुख्य सतर्कता आयुक्त (सी वी सी) द्वारा अन्य उपस्कर निर्माता (ओ ई एम) पर पाबंदी लगाए जाने के कारण पुर्जों के प्रापण में विलंब हुआ है और रक्षा मंत्रालय से प्रत्येक मामले के आधार पर छूट प्राप्त की जा रही है। अत्यधिक कीमतों के कारण बारबार की जाने वाली बातचीत से भी प्रापण अवधि बढ़ी है । 740 मदों के लिए अन्य उपस्कर निर्माताओं के साथ की गई संविदा संबंधी आपूर्ति बहुत शीघ्र ही होने वाली है । अन्य उपस्कर निर्माताओं पर निर्भरता कम करने के लिए तथा आयात के मामलों को छोड़कर टायर, ट्यूब, बैटरियों और कुछ प्रिजर्वेटिव्ज़ के लिए स्थानीय विक्रेताओं की पहचान की गई है और उनके माध्यम से प्रापण की प्रक्रिया प्रगति पर है ।

उड़ान में यू ए वी

(घ) [kkuk cukus ds crZu½ सेना में खाना बनाने के बर्तनों का आधुनिकीकरण कार्यान्वित कर दिया गया है। खाना बनाने के लिए इस्तेमाल आधुनिक बर्तन एस एस–304 (सलेम) ग्रेड के हैं, जिन्हें खाद्य सामग्री ग्रेड के रूप में अनुमोदन प्राप्त है। सेना के लिए एस एस–304 ग्रेड का वाणिज्यिक रूप से विकास किया गया है और ये पहले के एस एस–20 ग्रेड की तुलना में अधिक टिकाऊ हैं ।

(च) bl lh lh vkj bl dh ubl 'kkfey enas ½ अध्ययन के आधार पर की गई सिफारिशों के अनुसार कई नई मदों को शामिल किया गया है। नए तौर पर शामिल किए गए ई सी सी और ई मदों के प्रापण संबंधी कार्रवाई एक मद (सन् स्क्रीन लोशन) को छोड़कर प्रारंभ की गई है । इस मद के लिए मानक बनाने पर कार्रवाई चल रही है। शामिल की गई नई ई सी सी और ई मदें इस प्रकार हैः

(i) वेस्ट थर्मल
(ii) क्राबट्ज (ऊनी स्कार्फ)
(iii) रकसैक
(iv) कैंप मैटरेस आउटर
(v) स्क्रीन लोशन
(vi) फेस मास्क
(vii) गेइटस
(viii) गोगल्स के लिए अतिरिक्त ग्लास

(छ) lHkh okguksa esa mRikn lq/kkj ds :i esa fj;j 0;w dejk ¼vkj oh lh½ yxkuk½ स्टॉक इक्विपमेंट मोडिफिकेशन कमिटी (एस ई एम सी) के माध्यम से उत्पाद सुधार के रुप में इस उपस्कर की सिफारिश की गई है।

(ज) fl;kfpu Xysf'k;j ds fy, Luk&ekckby dk iki.k½ दिसंबर 2010 में 20 स्नो–मोबाइल वाहनों के प्रापण के लिए मेसर्स बी आर पी, फिनलैंड के साथ संविदा की गई थी। तीन महीने की रिकार्ड समय सीमा के अंदर 2010 मार्च तक संपूर्ण सामान को प्राप्त किया गया, उसकी जे आर आई द्वारा जांच और ग्लेशियर में इसकी

हिम वाहन

तैनाती कर दी गई।

(झ) fl;kfpu Xyf'k;j e rukr lfudk d fy, Åuh tjkck dk iki.k% ऊनी जुराबों के 3,82,914 जोड़ों के प्रापण के लिए मेसर्स प्रैंकलिन, यू. के. के साथ सितंबर 2010 में संविदा पर हस्ताक्षर किए गए थे और सात महीने की रिकार्ड समय–सीमा के अंदर इसकी आपूर्ति हो गयी। इतनी ही संख्या में जुराबों के प्रापण के लिए विकल्प खंड के अधीन मई 2011 में हस्ताक्षर

ग्लेशियर हेतु अच्छी गुणत्ता वाली जुराबें

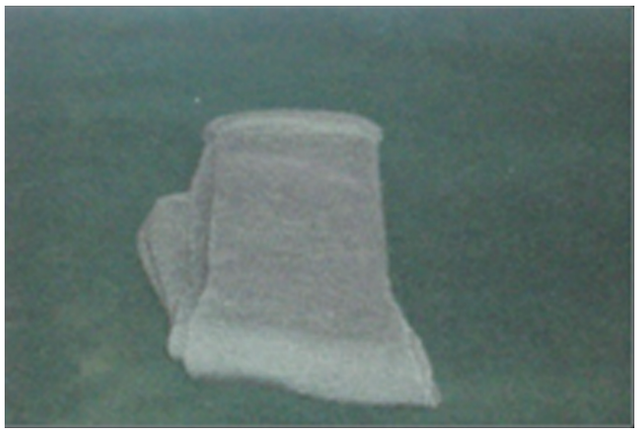

किए गए और दिसंबर 2011 तक डिलिवरी पूरा हो जाने की संभावना है।

(ट) 84 fe eh- i{kikó ykpj xkykck:n dk iki.k% 84 मि मी. प्रक्षेपास्त्र लांचर गोलाबारूद के 66,000 राउंड के प्रापण के लिए 2011 मार्च में

84 मि.मि. वाला रॉकेट लाँचर

मैसर्स एफ एफ वी एस ए ए बी, स्वीडन के साथ संविदा पर हस्ताक्षर किए गए थे। दिसम्बर 2011 तक 20,000 राउंड की आपूर्ति और शेष राउंडों की 2012 नवंबर तक होने की संभावना है।

(ठ) 125 fe- eh- ,Q ,l , ih Mh ,l iki.k% टैंक टी–90 के लिए गोलाबारूद : टैंक टी–90 के लिए 16,000 राउंड एफ एस ए पी डी एस गोलाबारूद के प्रापण के लिए रूस के मैसर्स रोसोबोरोन एक्सपोर्ट के साथ दिसंबर 2010 में

टैंक गोला बारूद

संविदा पर हस्ताक्षर किए गए। यह संविदा मार्च 2011 में प्रभावी हो गई और मार्च 2012 तक संपूर्ण खेप की आपूर्ति की जाने की संभावना है।

lfØ;kRed lHkkfjdh

3.40 j{kk dkfed ;k=h vkj{k.k i.kkyh ¼ ih vkj ,l½ % रक्षा कार्मिकों और उनके आश्रितों के लिए कंप्यूटरीकृत रेल आरक्षण सुविधा प्रदान करने के लिए दूरदराज के विभिन्न स्थानों और प्रमुख छावनी क्षेत्रों में रक्षा कार्मिक यात्री आरक्षण प्रणाली (पी आर एस) प्रारंभ की गई है। मौजूदा समय में संपूर्ण देश में 72 पी आर एस और एक अनारक्षित टिकटिंग स्टेशन (यू टी एस) काम कर रहे हैं। इसके अलावा, 4 पी आर एस निर्माणाधीन हैं।

3.41 j{kk foHkkx dkVk ¼Mh Mh D;½ % इस समय

विभिन्न ट्रेनों में दैनिक उपयोग के लिए रक्षा विभाग के कोटे के तौर पर 7131 सीटें मौजूद हैं। अल्प सूचना के तहत संचलन करने वाली सैन्य टुकड़ियों द्वारा इनका इस्तेमाल हो रहा है। विशेषकर ए सी श्रेणियों में डी डी क्यू आबंटन के लिए रेल प्राधिकारियों के साथ लगातार संपर्क किया जा रहा हैं।

3.42 pkVj mMku % उत्तरी और पूर्वी कमान के ट्रूपों के लिए दिल्ली से लेह, थोयस और श्रीनगर के लिए एवं कोलकाता और इंफाल के बीच चार्टर फ्लाइटों का प्रचालन किया जा रहा है। इन फ्लाइटों से ट्रूपों द्वारा आन्तरिक और बाह्य क्षेत्रों में आवागमन में लगने वाले समय में काफी कमी आयी है।

3.43 t lh vk@vU; jSdk d fy, ehV@ fpdu ¼czk;yj½ dh ek=k e c<ksrjh% जे सी ओ/अन्य रैंकों के लिए मीट/चिकन (ब्रॉयलर) की मात्रा प्रति व्यक्ति 110 ग्राम से बढ़ाकर प्रति व्यक्ति 180 ग्राम प्रति दिन कर दी गई है।

3.44 okfrr ty ,;jfMM i;ty d cny lk¶V ÇMDl dk iki.k% कवचित यूनिटों के अन्य रैंकों को एवं कवचित लड़ाकू वाहनों में तैनात अन्य यूनिटों के अन्य रैंकों को एयरेडिड पेयजल के बदले निम्नलिखित सॉफ्ट ड्रिंक्स पाने के लिए प्राधिकृत किया गया हैः

Øe-l-	en	ek=k
(क)	कार्बनित सॉफ्ट ड्रिंक	300 मि.लि प्रति दिन
(ख)	नींबू आधारित सॉफ्ट ड्रिंक	250 मि.लि.प्रति दिन
(ग)	फलों का रस/लस्सी/नारियल–पानी आदि	250 मि.लि.प्रति दिन

3.45 ckMM fjQkbUM ued dk iki.k% प्रतिष्ठित विक्रेताओं से रिफाइन्ड ब्रांडेड नमक के प्रापण के लिए सरकार से मंजूरी मिल गई है

l;ä jk"V 'kkfr LFkkiuk dUæ ¼lh ;,u ih d½

3.46 शांति स्थापना ऑपरेशन ऐसे विशेष ऑपरेशन होते हैं जिसमें किसी सिद्धांत एवं अनुसंधान और अनुभव के संश्लेषण से पाप्त विशेष तकनीकों की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नई दिल्ली में संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केंद्र का गठन किया गया है। इसमें संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना के क्षेत्र में भारत के व्यापक अनुभवों का लाभ उठाया गया है। इस केंद्र में सेना टुकड़ियों के अफसरों, सैन्य पर्यवेक्षकों और स्टाफ एवं संभारिकी अफसरों के लिए अतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। इस केंद्र में नियमित रूप से सेमिनार, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त कार्य दलों व कमान पोस्ट अभ्यास इत्यादि का संचालन किया जाता है। सी यू एन पी संयुक्त राष्ट्र संगठन शांति स्थापना मिशनों में भारत की सहभागिता दिखाने वाले एक संग्रहालय के रूप में कार्य करता है। यह शांति स्थापना से संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान करता रहता है और उसको अद्यतन करता रहता है।

3.47 सी यू एन पी के द्वारा अक्टूबर 2005 से अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना प्रशिक्षण केन्द्र एसोसिएशन के सचिवालय (आई ए पी टी सी) की जिम्मेदारी संभाली जा रही है। इस संबंध में अधिक जानकारी www.iaptc.org. पर उपलब्ध है।

3.48 lpkfyr ikBÓØe% सी यू एन पी के द्वारा भारतीय सशस्त्र सेनाओं के अफसरों, अर्धसैनिक बलों के अफसरों और मित्र देशों के उन अफसरों जिन्हें एम आई एल ओ बी के रूप में तैनाती के लिए उद्धिष्ट किया गया है, विभिन्न यू एन मिशनों के लिए संभारिकी अफसरों और सैन्य दल अफसरों के लिए 01जनवरी से 31 दिसम्बर, 2011 तक निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाए गएः

3.49 vrjk"Vh; ikB;kØe

(i) यू एन स्टाफ और संभारिकी अफसरों के लिए पाठ्यक्रम

(ii) यू एन सैन्य प्रेक्षकों के लिए पाठ्यक्रम

(iii) यू एन सैन्य दल अफसरों के लिए पाठ्यक्रम

vrjk"Vªh; lfeukj% सी यू एन पी के ने 25 फरवरी, 2011 को 'यू एन मिशनों में सिविलियनों का संरक्षण' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का संचालन किया गया । इसमें उपर्युक्त विषय पर विशेषज्ञ वक्ताओं सहित भारत एवं विदेश के कुल 177 अफसरों ने भाग लिया।

3.50 jk"Vªh; ikB~;Øe % यू एन मिशनों में शामिल किए जाने वाले ट्रूपों को प्रशिक्षण देने के लिए पांच पाठ्यक्रम चलाए गए।

3.51 अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता

(क) fons'kh ifrfuf/keMyk dk nkjk% निम्नलिखित विदेशी प्रतिनिधि मंडलों द्वारा सी यू एन पी के का दौरा किया गयाः

(i) वियतनाम प्रतिनिधि मंडल

(ii) यू एस ए प्रतिनिधि मंडल

(iii) रूसी प्रतिनिधि मंडल

(iv) यू एस प्रतिनिधि मंडल

(v) इतालवी प्रतिनिधि मंडल

(vi) मंगोलियाई प्रतिनिधि मंडल

(vii) डी ए इक्वेडोर का दौरा

(viii) दक्षिण अफ्रीका प्रतिनिधि मंडल

(ix) जापानी प्रतिनिधि मंडल

(x) मलेशियाई प्रतिनिधि मंडल

(xi) इक्वेडोर प्रतिनिधि मंडल

(xii) इंडोनेशियाई प्रतिनिधि मंडल

(ख) 17वीं आई ए पी टी सी कार्यपालक समिति बैठकः सेना के प्रतिनिधियों ने निम्नलिखित बैठक/सम्मेलन में भाग लिया :

(i) शांति स्थापना प्रशिक्षण केंद्रों (आई ए पी टी सी) के 17वे अंतर्राष्ट्रीय संघ की कार्यपालक समिति की बैठक का आयोजन 27 से 31 मार्च 2011 तक आर्मी वार कालेज, कारलिस्ली, पेंसिलवेनिया, यू एस ए में हुआ।

(ii) अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना प्रशिक्षण केंद्र एसोसिएशन की वार्षिक कांप्रेंस 14 से 18 नवंबर 2011 तक यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी वॉर कॉलेज और सेंटर फॉर सिविल–मिलिटरी रिलेशन्स, कारलिस्ली, पेंसिलवेनिया यू एस ए के साथ संयुक्त रूप से यूनाइटेड स्टेट्स आर्यी पीसकीपिंग और स्टेबिलिटी ऑपरेशन्स इंस्टिट्यूट (पी के एस ओ आई) में संपन्न हुई।

(ग) ,Q ,l , in'ku % 28 देशों की एफ एस ए इस कार्यक्रम में शामिल हुईं और इस प्रतिनिधि मंडल में कुल 31 प्रतिनिधियों (तीन देशों से एक अतिरिक्त प्रतिनिधि) ने भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केन्द्र नियमित रूप से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संयुक्त कार्यप्रणाली समूह तथा कमांड पोस्ट अभ्यासों का आयोजन करता है। यह संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत की भूमिका के बारे में सूचना भंडार का भी कार्य करता है तथा शांति स्थापना संबंधी मामलों पर अपने अनुसंधान को लगातार निर्मित एवं अद्यतन कर रहा है।

(घ) अभ्यास खान क्वेस्ट मंगोलिया के उलान बाटर में किए गए इस अभ्यास में दो अफसरों, तीन जे सी ओ एस और 25 ट्रूपों के एक सैन्य दल ने भाग लिया।

3.52 lU; nyk dk if'k{k.k% वर्ष 2011 के दौरान, यू एन मिशनों में शामिल किए जाने वाले सभी सैन्य दलों को सी यू एन पी के तत्वावधान में प्रशिक्षण दिलाया गया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना कार्रवाइयों में भारतीय सेना

3.53 संयुक्त राष्ट्रसंघ के एक

संस्थापक सदस्य के रूप में भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ के आदर्शों एवं सिद्धांतों का दृढ़ समर्थक रहा है । भारत, संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना के समय से ही इसके सभी अंगों को सक्रिय रूप से योगदान देने वाला और संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना कार्रवाइयों में सबसे अधिक सैन्य तथा पुलिस योगदान करने वालों में से एक है। भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना कार्रवाइयों में पहली बार 1950 में कोरिया में 346 कार्मिकों वाली 60 एम्बुलेंस की तैनाती के साथ अपने सैनिक तैनात किए थे ।

3.54 1950 से भारत ने विश्व भर में संयुक्त राष्ट्र संघ के कुल 69 मिशनों में से 45 मिशनों में भाग लिया है। आज की तारीख तक, 165,000 से भी अधिक भारतीय सैनिकों ने विभिन्न संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशनों में भाग लिया है।

3.55 भारतीय सेना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान अफ्रीका और एशिया के भागों में शांति और स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए रहा है। इसने लंबी अवधि तक बड़ी सख्या में सैनिकों को तैनात रखने की बेजोड़ क्षमता प्रदर्शित की है। संयुक्त राष्ट्रसंघ और शांति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को पूरा करने हेतु अब तक 136 भारतीय सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया है ।

3.56 **;w ,u ih dk vkns e urRo %** भारत ने विभिन्न संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशनों में अब तक 13 बल कमांडर मुहैया कराए हैं। लेफ्टिनेंट के. एस. थिमैया पहले भारतीय अफसर थे जिन्हें 1950 में तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग(एन एन आर सी) के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था । लेफ्टिनेंट जनरल चन्दर प्रकार, एस एम, वी एस एम कांगो में एम ओ एन यू सी ओ के बल कमांडर के रूप में सेवारत हैं । बल कमांडर और संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव को दो सैन्य सलाहकार उपलब्ध कराने का गौरव प्राप्त हुआ था ।

3.57 **gekjk ekStwnk ;ksxnku %** भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना कार्रवाइयों के लिए सैनिकों का भी बड़ी संख्या में योगदान दिया है । इस समय विभिन्न संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशनों में हमारे 7099 व्यक्ति (लगभग) कार्यरत हैं । हमारा मौजूदा योगदान इस प्रकार है :

(क) **,e vks ,u ;w ,l lh vks% dkaxks ¼1999 ls vkt rd½ %** एम ओ एन यू एस सी ओ में भारत का योगदान 1999 से सैन्य प्रेक्षकों की प्रतिनियुक्ति के साथ शुरू हुआ। सैनिकों के योगदान की मांग बढ़ने से, भारत ने नवंबर, 2004 से चार इंफैंट्री बटालियन ग्रुपों सहित एक इंफैंट्री ब्रिगेड ग्रुप, ब्रिगेड सिगनल कंपनी और एक लेवल–III अस्पताल तैनात किया है। एक सेना विमानन उड़ान भी 2009 से मिशन एरिया में तैनात की गई है। कांगो गणतंत्र अफ्रीका महाद्वीप में दूसरा सबसे बड़ा देश है और इसने 1960 में अपनी स्वतंत्रता के समय से अशांति और अस्थिरता का सामना किया है और इस दौरान दो सिविल युद्ध तथा जातीय संघर्ष हुए । भारतीय ब्रिगेड के लिए यहां कार्य करने की स्थितियां चुनौतीपूर्ण हैं, जिनमें प्रतिकूल भू–भाग और जलवायु दशाएं शामिल हैं। बिग्रेड को सिविलियनों के संरक्षण का आदेश दिया गया हे, जो प्राथमिक भूमिका है। नॉर्थ किवु ब्रिगेड ने एम ओ एन यू एस सी ओ अधिदेश के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने इसे अत्यंत प्रशंसनीय माना है। एम ओ एन यू एस सी ओ की संपूर्ण अवसंरचना, सुरक्षा प्रबंध और कार्यकलाप इस ब्रिगेड पर निर्भर हैं। इस विरचना ने सिविलियनों के संरक्षण, आत्मसमर्पण ओर क्षेत्र में दबदबा बनाए रखने के रूप में अपने कार्यों के निष्पादन तथा संक्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में बहुत सी चुनौतियों का सामना किया। ब्रिगेड ने मुख्यतः सिविलियनों के संरक्षण और राष्ट्रपति तथा प्रान्तीय चुनावों के सफलतापूर्वक चुनाव सुनिश्चित करने के लिए इस अवधि के दौरान कई ऑपरेशन हाथ में लिए। महत्वपूर्ण ऑपरेशनों में से कुछ ऑपरेशन जुआ मूपिया, ऑपरेशन रैस्टोर लेप, ऑपरेशन बर्ड्स आई और ऑपरेशन डिवाइन फोर्स थे। ऑपरेशन ब्ल्यू फिस्ट किमुआ के इलाके में सशस्त्र समूह संघर्ष का सफलतापूर्वक अंत करने के लिए शुरू की गई थी। इस ऑपरेशन में बड़ी सफलता मिली और इसने भारतीय सैनिकों की एक बहुराष्ट्रीय परिवेश के अंतर्गत कार्य करने की योग्यता को साबित किया। नॉर्थ किवु ब्रिगेड ने

स्थानीय कांगो लोगों के दुख–दर्द को कम करने के लिए बड़ी पहल की। विभिन्न मानवीय कार्रवाइयां शुरू की गईं, उदाहरणार्थ कैच दैम यंग कार्रवाई ताकि युवाओं को सकारात्मक रूप से ए ओ आर में शामिल किया जा सके। ब्रिगेड की यूनिटों ने स्थानीय लोगों की सहायता के लिए 73535.00 अमरीकी डालर मूल्य की कई त्वरित प्रभाव परियोजनाएं निष्पादित कीं। नॉर्थ किंतु ब्रिगेड ने अपने अड्डों के माध्यम से वर्ष 2011 में 398 कैडेटों, 228 बाल सैनिकों और 288 आश्रितों का आत्म–समर्पण करवाया और इस प्रकार इस क्षेत्र में सामान्य स्थिति की बहाली को बढ़ावा दिया ।

(ख) ;w ,u ,Q vkbZ ,y% yscuku¼1998 ls vkt rd½ यू एन एफ आई एल में भारतीय सेना के योगदान में एक इंफैंट्री बटालियन ग्रुप, एक लेवल–I अस्पताल और स्टाफ अफसर शामिल हैं । आई एन डी बी ए टी टी (इंडबैट) ऑपरेशन का इलाका(ए ओ) यू एन आई एफ आई एल ए ओ के पूर्वी भाग में है। बटालियन पूर्वतीय भू–भाग में तैनात है और इंडबैट XIV का ऑपरेशन का इलाका लगभग 100 कि.मी. है । इंडबैट ग्प्ट अपने ऑपरेशन के इलाके में सघन ऑपरेशनल कार्रवाइयां कर रही है । इंडबैट, ब्ल्यू लाइन के साथ–साथ 9 अस्थायी प्रेक्षण चौकियों के अलावा 10 यूएन पोजिशन संभाले हुए है, जो संपूर्ण यू एन एफ आई एल ए ओ आर में किसी एकल यूनिट द्वारा धारित चौकियों की सबसे बड़ी संख्या है और इस प्रकार लेबनान तथा इजराइल अधिकृत चीब फार्म्स एरिया के मध्य प्रत्यावर्तन रेखा(लाइन ऑफ विदड्राअल) किसी भी उल्लंघन के प्रति ब्लू लाइन पर नियंत्रण रखे हुए है, जिससे उल्लंघन की मुस्तैदी से मानीटरी और रिपोर्ट की जा सके। बटालियन अपने ऑपरेशन के इलाके में गश्त लगाने संबंधी अनथक कार्रवाइयों के जरिए शांति और स्थायित्व बनाए रखने में सफल रही है। उक्त कार्रवाइयों में लेबनानी सशस्त्र सेनाओं के साथ निकट समन्वय करके काउंटर राकेट लांचिंग ऑपरेशनों और ब्ल्यू लाइन गश्तों सहित बटानियन के ऑपरेशन के इलाके में दिन/रात 26 गश्तें लगाने का दैनिक कार्यक्रम शामिल है। भारतीय सेना इंडबैट–XIV ने नियमित आधार पर चिकित्सा दल और पशु चिकित्सा शिविरों के आयोजन सहित बहुत–सी कार्रवाइयां कीं ताकि स्थानीय लोगों को मदद और राहत दी जा सके। सहायता के कारण, स्थानीय लोगों के साथ निकट संपर्क और विशेष संबंध बनाए गए हैं, जिससे ऑपरेशन के कार्यों को हासिल करने में मदद मिलती है।

(ग) ;w ,u ,e vkbZ ,l lMku¼vizSy 2005 ls 9 tqykbZ] 2011 rd½ सूडान के लिए प्रारंभ में दिया गया सहयोग दो इंफैंट्री बटालियन ग्रुप, एक सेक्टर हैडक्वॉटर, एक फोर्स सिगनल कंपनी, एक निर्माण इंजीनियर कंपनी, भारतीय वायुसेना सैन्य दस्ता और एक लेवल II अस्पताल के रूप में था । मिशन को जुलाई, 2011 में बंद कर दिया गया ।

(घ) ;w ,u ,e vkbZ ,l ,l¼nf{k.k lMku½ सूडान में संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशन 9 जुलाई, 2011 को बंद कर दिया गया और संयुक्त राष्ट्रसंघ मुख्यालय ने एक नया मिशन नामतः यू एन एम आई एस एस(दक्षिण सूडान) में तैनात सैन्य दस्तों को हटाकर यू एन एम आई एस एस(दक्षिण सूडान) में लगाए जाने हेतु अनुमोदन दिया। भारतीय सेना ने यू एन एम आई एस एस के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ सुरक्षा परिषद के अधिदेश के समर्थन में ऑपरेशन शुरू कर दिए हैं। यह मिशन इस समय स्थिरीकरण चरण में है। एक जटिल और अनिश्चित क्षेत्रीय परिवेश में, 9 जुलाई, 2011 को दक्षिण सूडान गणतंत्र स्वतंत्र देश बनाया गया । यू एन एम आई एस एस के हस्तक्षेप के फलस्वरूप, पुनः एकीकृत हो रहे एस पी एल ए और आर एम जी एस के बीच हथियार रखने के बारे में विवाद का समाधान हुआ । तथापि, दोनों पक्षकारों के बीच अब भी काफी अविश्वास बना हुआ है।

(ङ) ;w ,u Mh vks ,Q % xksyu gkbV~l & btjkby ¼tuojh] 2006 ls vkt rd½ % गोलन हाइट्स में भारत ने यू एन डी ओ एफ के हिस्से के रूप में एक संभारिकी दस्ता तैनात किया है । जिसकी मिशन को द्वितीय पंक्ति की संभारिकी सहायता उपलब्ध कराने

की जिम्मेदारी है। भारतीय दस्ता 2006 से, जब इसने कनाडा के दस्ते का स्थान ग्रहण किया था, यू एन डी ओ एफ का हिस्सा रहा है ।

(च) ;w ,u ,e vkbZ Vh % frekSj yLVs % तिमोर लेस्टे मिशन के लिए भारत ने केवल एक स्टाफ अफसर उपलब्ध कराया है । हालांकि यह योगदान उल्लेखनीय रूप से बड़ा नहीं है लेकिन यह सुसंगत है ।

3.58 आज की तारीख तक 136 भारतीय शांति-स्थापना कार्मिक संयुक्त राष्ट्रसंघ की शांति स्थापना कार्रवाइयों में सेवा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं । विश्व शांति के महत उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनकी भव्य और विशिष्ट सेवा की मान्यता के रूप में, भारतीय सेना शांति स्थापना दस्तों ने निम्नलिखित पुरस्कार जीते हैं :–

(क)	परमवीर चक्र	1
(ख)	महावीर चक्र	5
(ग)	कीर्ति चक्र	1
(घ)	वीर चक्र	19
(ङ.)	शौर्य चक्र	3
(च)	युद्ध सेवा मेडल	4
(छ)	सेना मेडल	10
(ज)	विशिष्ट सेवा मेडल	2
	dqy	45

4

भारतीय नौसेना

भा नौ पो ज्योति, आर एस एस सुप्रीम एवं भा नौ पो किर्च

Hkkरतीय नौसेना (आई एन) अपनी बहु–आयामी क्षमता और क्षेत्र में अपनी सक्रिय मौजूदगी के कारण हिंद महासागर क्षेत्र (आई ओ आर) में अग्रणी भूमिका निभा रही है

4.1 भारतीय नौसेना (आई एन) अपनी बहुआयामी क्षमताओं और हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी सुदृढ़ मौजूदगी के कारण इस क्षेत्र में सामुद्रिक नेतृत्व की भूमिका निभा रही है। भारतीय नौसेना ऐसे विक्षुब्ध वातावरण का सामना कर रही है, जिसमें भू–राजनीतिक, भू–आर्थिक स्थिति, विकसित होती तकनीकें, विषम संकट का बदलता स्वरूप और हमारे समुद्रवर्ती पड़ोसी देशों की लगातार बढ़ती क्षमता जैसे विविध कारण शामिल हैं। परिणामस्वरूप, भारतीय नौसेना की बल योजना और आपरेशनल ढांचे को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि संभावित खतरों और अवसरों से निपटा जा सके। इस तरह हमारा मूल उद्देश्य अपने राष्ट्रीय समुद्री हित के क्षेत्रों की रक्षा करना है।

4.2 भारत जिस प्रकार आर्थिक प्रगति के पथ पर लगातार अग्रसर है, उससे इस तथ्य की स्वीकृति को बल मिल रहा है कि समुद्री क्षेत्र हमारे विकास में सबसे अधिक सहायक है । हमारे व्यापार की 90% से अधिक मात्रा का सामान और कीमत में 77% मूल्य का सामान समुद्र मार्ग से ट्रांसपोर्ट होता है। हमारी तेल संबंधी ऊर्जा आवश्यकताओं का 97% से अधिक या तो आयात किया जाता है या अपतटीय क्षेत्रों में उत्पादित होता है। परिणामस्वरूप, हमारा आर्थिक विकास पूरी तरह से सागर से जुड़ा है ।

4.3 भारतीय नौसेना से हिन्द महासागर क्षेत्र में सुरक्षा, संरक्षा और स्थिरता से संबंधित मुद्दों को सुलझाने के लिए अधिकाधिक आग्रह किया जा रहा है। एक जिम्मेदार राष्ट्र और हितैषी समुद्री पड़ोसी के रूप में हिंद महासागर क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय नियमों को लागू करना, मानवीय सहायता और आपदा राहत पहुंचाना हमारी अंतर्राष्ट्रीय वचनबद्धताओं में सबसे आगे रहेंगे। हिंद महासागर क्षेत्र में पेचीदा समुद्री सुरक्षा माहौल के कारण भारतीय नौसेना के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह उच्च स्तरीय आपरेशनल गति और मुस्तैदी को हर समय बनाए रखे। बड़ी संख्या में किए गए संक्रियात्मक परिनियोजनों के अलावा, भारतीय नौसेना ने विदेशी मित्र राष्ट्रों की नौसेनाओं के साथ सफलतापूर्वक अभ्यास किए हैं। इन अभ्यासों से द्विपक्षीय संबंधों और हमारे व्यावसायिक संबंधों को मजबूत करने और अंतर–संक्रियात्मक विषयों को सरल और कारगर बनाने में मदद मिली है।

4.4 हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती चिंता का बड़ा विषय रही है। पिछले वर्ष अपनी समुद्री–डकैती–रोधी गश्तों के दौरान, भारतीय नौसेना ने भारतीय और विदेशी मर्चेंट पोतों पर होने वाले हमलों को निष्फल करने का सराहनीय कार्य किया है। समुद्र डकैती प्रभावित क्षेत्र में हमारी लगातार उपस्थिति ने समुद्र क्षेत्र में इस खतरे से निपटने के लिए हमारी प्रतिबद्धता और संकल्प को दर्शाया है। हमारे विस्तारित होते हुए आर्थिक हितों की रक्षा करने की आवश्यकता और एक परिपक्व एवं जिम्मेदार क्षेत्रीय समुद्री शक्ति होने के नाते नेतृत्व संबंधी जिम्मेदारियों के चलते हमारे समुद्री हितों का संरक्षण करने की भारतीय नौसेना की भूमिका व जिम्मेदारी बढ़ती ही रहेगी ।

4.5 भारतीय नौसेना ने स्वदेशीकरण कार्यक्रमों का तहे दिल से समर्थन किया है ताकि हमारा राष्ट्र लगातार विकास

कर सके और आत्मनिर्भर बने। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि भारतीय नौसेना का आधुनिकीकरण कार्यक्रम का केंद्र बिन्दु स्वदेशी युद्धपोतों का निर्माण है। हमने देश में ही निर्मित पोतों और पनडुब्बियों को शामिल करने को वरीयता दी है। परिणामस्वरूप, इस समय जिन 49 पोतों और पनडुब्बियों का आर्डर दिया गया है उनमें से 45 को

स्वदेशी स्टील्थ फ्रिगेट – भा नौ पो शिवालिक का इन्डक्शन

भारतीय शिपयार्डों में ही बनाया जा रहा है और नवीनतम पी–28 ए एस डब्ल्यु कार्वेटों को 90% से अधिक स्वदेशी सामग्री से बनाने की योजना है।

विदेश में संक्रियाएं

4.6 fons'k esa rSukrh% भारतीय नौसेना के पोतों द्वारा ध्वज प्रदर्शन, मित्र राष्ट्रों के साथ बेहतर संबंधों को प्रोत्साहित करने और विदेशी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए विदेशों में तैनातियां की जाती हैं। वर्ष 2011 में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विदेशी परिनियोजन किए गएः–

(i) iwohZ ¶yhV% पूर्वी फ्लीट पोतों, जिनमें भारतीय

मनीला, फिलीपीन में अनाथालय का दौरा

नौसेना पोत दिल्ली, रणविजय, रणवीर, ज्योति और किर्च शामिल हैं, ने मार्च से मई, 2011 तक दक्षिण चीन सागर और पश्चिमी प्रशांत महासागर में ओ एस डी की जिम्मेवारी ली। पोतों ने ओ एस डी के दौरान भारतीय नौसेना संयुक्त राज्य अमेरिकी नौसेना के द्विपक्षीय अभ्यास मालाबार–11 और भारतीय नौसेना–सिंगापुर गणराज्य नौसेना के द्विपक्षीय अभ्यास सिम्बेक्स– 11 में भाग लिया और सिंगापुर, फिलीपींस, रूस, वियतनाम, ब्रुनेई, मलेशिया और इण्डोनेशिया का दौरा भी किया।

(ii) Hkkjrh; ukSlsuk iksr ,sjkor% भा नौ पो ऐरावत ने ब्रुनेई में 04 से 09 जुलाई, 2011 तक चले ब्रुनेई अंतर्राष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू (आई एफ आर) और ब्रुनेई अंतर्राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी (ब्राइडेक्स) में भाग लिया। इसके बाद पोत ने सिंहनाकविले (कम्बोडिया), न्हा त्रांग और हाइफोंग (वियतनाम) के पोर्टों और मलेशिया में पोर्ट केलांग का दौरा किया।

(iii) iFke if'k{k.k LDokMªu% प्रथम प्रशिक्षण स्क्वाड्रन पोतों जिनमें भारतीय नौसेना पोत तीर, कृष्णा और आई सी जी एस वीर शामिल हैं, को ओ एस डी के लिए मार्च, 2011 में ओमान, यू ए ई और सऊदी अरब में और अगस्त और सितम्बर, 2011 में दक्षिण पूर्व एशिया (सिंगापुर, मलेशिया, बैंकाक और इण्डोनेशिया) में तैनात किया गया।

(iv) losZ{k.k dk;Z% भा नौ पो सर्वेक्षक को फरवरी से मार्च, 2011 तक विदेश में मारीशस में और नवम्बर–दिसम्बर, 2011 तक सेशल्स और केन्या में जल–राशिक सर्वेक्षण करने के लिए तैनात किया गया।

4.7 vkijs'ku Cyksle% भा नौ पो मैसूर, जलाश्व और आदित्य 26 फरवरी, 2011 को लीबिया से भारतीय नागरिकों के अयोधी निकासी ऑपरेशंस (एन ई ओ) के लिए रवाना हुए। उसके बाद पोतों को मार्च, 2011 में त्रिपोली के निकट तैनात किया गया तथा 150 भारतीय नागरिकों को निकालकर माल्टा लाया गया।

भा नौ पो जलाश्व पर शरणार्थी

4.8 lkd lEeyu d fy, Hkk uk ;fuVk dh rukrh% मालदीव सरकार के अनुरोध पर 10–11 नवम्बर, 2011 को भा नौ पो ब्रह्मपुत्र और एक भा नौ डोर्नियर को अदू– अतोल, मालदीव में आयोजित 17वें सार्क सम्मेलन के दौरान तैनात किया गया।

4.9 vnu dh [kkMh e leæh Mdrh&jkèkh vkij'ku% अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती–रोधी

अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती–रोधी आपरेशन

आपरेशनों के प्रति भारतीय नौसेना की प्रतिबद्धता के अनुरूप ही भारतीय नौसेना ने अक्तूबर, 2008 से इस क्षेत्र में एक युद्धपोत लगातार तैनात किया हुआ है। इसकी तैनाती से समुद्री डाकुओं को काफी हद तक रोका जा सका है और इस क्षेत्र से ट्रांजिट करने वाले ध्वज वाहक मर्चेंट पोतों को अपेक्षित सुरक्षा उपलब्ध करवाई गई है। आज तक भारतीय युद्ध पोतों द्वारा विभिन्न देशों के 1800 से भी अधिक मर्चेंट पोतों को सुरक्षित रूप से यात्रा करवाई गई है। 2011 में पूर्वी अरब सागर में 120 समुद्री डाकुओं को पकड़ा गया है और भारतीय नौसेना द्वारा समुद्री डाकुओं के प्रमुख पोतों के खिलाफ चार आपरेशनों में 73 मछुआरों और क्रू को बचाया गया है।

अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती-रोधी आपरेशनों के प्रति भारतीय नौसेना की वचनबद्धता के अनुरूप भारतीय नौसेना ने अक्तूबर, 2008 से हिन्द महासागर क्षेत्र में लगातार एक युद्धपोत तैनात किया हुआ है।

4.10 bl tM pkdlh vkj l'kYl] ekjh'kl vkj ekynho l yx leæh {k=k e Mdrhjkèkh rukrh% सेशल्स, मारीशस और मालदीव से लगे हुए समुद्री क्षेत्रों में उनकी सरकारों के अनुरोध पर विशेष आर्थिक जोन (ई ई जेड) चौकसी और समुद्री डकैती–रोधी परिनियोजनों के लिए भारतीय नौसेना यूनिटें तैनात की गईं ।

प्रमुख अभ्यास

4.11 Vkid l&11% वार्षिक "थियेटर लेवल आपरेशनल रेडिनेस एक्सरसाइज" (ट्रोपेक्स) पश्चिमी सीबोर्ड के पास फरवरी, 2011 में आयोजित की गई । इस अभ्यास में स्वतंत्र तैयारी चरण, जल–स्थलीय चरण, संयुक्त तैयारी चरण, जिसमें पश्चिमी और पूर्वी दोनों बेड़े शामिल थे, और एक सामरिक चरण शामिल था ।

4.12 ,EQD l&11% भा.नौ.पो. जलाश्व ने भारतीय नौसेना की अन्य जल–स्थलीय यूनिटों और भारतीय थल सेना के साथ जनवरी–फरवरी, 2011 में एम्फेक्स में भाग लिया। इस अभ्यास ने जल–स्थलीय युद्धपद्धति के क्षेत्र में अंतर–संक्रियात्मकता और वैचारिक संकल्पनाओं के विभिन्न पहलुओं को सही ठहराया।

विदेशी नौसेनाओं के साथ अभ्यास

4-13 o#.k 10% जनवरी, 2011 में गोवा से लगे हुए पश्चिमी सीबोर्ड पर वरुण 10 का अभ्यास

किया गया। फ्रांसीसी नौसेना की ओर से 5 यूनिटों एफ एन एस चार्ल्स डि गॉल, एफ एन एस फोर्बिन, एफ एन

मिसाइल फायरिंग

एस टूरविले और एफ एन एस मीयूस ने प्रतिनिधित्व किया। भारतीय नौसेना की ओर से एयरक्राफ्ट कैरियर आई एन एस विराट, आई एन एस गोदावरी, आई एन एस गंगा और आई एन एस शल्की ने प्रतिनिधित्व

जल–थलीय आपरेशनों के लिए प्रशिक्षण

किया।

4.14 ekykckj&11% अप्रैल, 2011 में भारतीय नौसेना–संयुक्त राज्य अमेरिका नौसेना का द्विपक्षीय अभ्यास मालाबार–11 ओकिनावा से लगे हुए क्षेत्र में आयोजित किया गया। इस अभ्यास में अमेरिकी नौसेना यूनिटों यू एस एस स्टेरेट, स्टेथेम और प्रेबल, रोनाल्ड रीगन, चांसलर्सविले, सैंटा फे, ब्लू रिज, कार्ल ब्रशियर और भारतीय नौसेना पोत दिल्ली, रणवीर, रणविजय और ज्योति ने भाग लिया।

4.15 flEcDl&11% मार्च, 2011 में भारतीय नौसेना सिंगापुर गणराज्य नौसेना द्विपक्षीय अभ्यास सिंबेक्स–11 का दक्षिण चीन समुद्र में आयोजन किया गया। इस अभ्यास में सिंगापुर गणराज्य नौसेना की जिन यूनिटों ने भाग लिया वे सिंगापुर गणराज्य पोत सुप्रीम, फोर्मिडेबल, स्टालवार्ट, वेलिएंट, विक्टरी, कॉन्करर, समुद्री गश्त विमान और आर एस ए एफ लड़ाकू विमान हैं । इस अभ्यास में भारतीय नौसेना की जिन यूनिटों ने भाग लिया वे भा नौ पोत दिल्ली, रणविजय, रणवीर, किर्च और ज्योति और

यू एस एस रोनाल्ड रीगन
पर भारतीय नौसेना के अफसर

एक भा नौ समुद्री गश्त विमान (एम पी ए) हैं।

4.16 LykbuDl&11% सितंबर, 2011 में भारत–श्रीलंका द्विपक्षीय नौसेना अभ्यास स्लाइनेक्स–11 में पूर्वी बेड़े के पोतों ने भाग लिया। श्रीलंका की ओर से गश्त पोतों और फास्ट अटैक क्राफ्ट ने प्रतिनिधित्व किया। 2005 के बाद इस अभ्यास को पुनः प्रारम्भ किया गया।

4.17 foink jkgr vH;kl ¼MkbjDl½% इंडोनेशिया और जापान द्वारा ए आर एफ सदस्यों और संबंधित अंतर्राष्ट्रीय और प्रादेशिक संगठनों की भागीदारी के साथ शुरूआती ए आर एफ विपदा राहत अभ्यास (डाइरेक्स) का 14–19 मार्च 2011 तक मनाडो, इंडोनेशिया में संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। आई एन एस केसरी ने इंडोनेशिया के पोत (के आर आई टेडुंग नागा, के आर आई सोइहर्सो, के आर आई बसर्नास), जापान के पोत (जे एम एस डी एफ ओसुमी) और संयुक्त राज्य अमेरिका के पोत (यू एस एस हार्पर्स फेरी) के साथ इस अभ्यास में भाग लिया ।

4.18 dkd.k&11% आई एन एस बेतवा और आई एन एस शंकुश ने अक्तूबर, 2011 में पश्चिमी तट से लगे समुद्र में आई एन–आर एन द्विपक्षी अभ्यास कोंकण–11 में भाग लिया । भाग लेने वाली आर एन यूनिटें एच एम एस टर्बुलेंट और आर एफ ए डिलिजेंस थी ।

4.19 gcukx&11% अक्तूबर 2011 में भारतीय नौसेना–संयुक्त राज्य अमेरिकी नौसेना का अभियानपरक टेबल टॉप अभ्यास (ई ओ टी टी एक्स) हबुनाग का आयोजन विशाखापट्टनम में किया गया । यह अभ्यास मानवीय सहायता और आपदा राहत के उद्देश्य से की गई सेटिंग पर आधारित था। टेबल टॉप अभ्यास से मानवीय सहायता और आपदा राहत पर संयुक्त रूप से योजना बनाने और विचार–विमर्श करने में सहायता मिली।

4.20 ulhe vy&cgj% भारतीय नौसेना और रायल नेवी ऑफ ओमान (आर एन ओ) के बीच द्विवार्षिक नौसेना अभ्यास का आयोजन मुम्बई के निकट दिसंबर, 2011 के अंत में करना तय है।

4.21 bMkuf'k;k d! lkFk lefUor x'r% भारतीय नौसेना और इंडोनेशियाई नौसेना अपनी अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (आई एम बी एल) के साथ–साथ समन्वित गश्त (जिसे इंड–इंडो कोर्पेट का नाम दिया गया) लगाते हैं। 17वीं इंड–इंडो कोर्पेट का आयोजन 6–26 अप्रैल, 2011 तक किया गया। कोर्पेट में भा नौ पोत चीता और बट्टीमाल्व ने एक भा नौ डॉर्नियर के साथ भाग लिया। इंडोनेशिया की ओर से के आर आई पत्तीमुरा ने प्रतिनिधित्व किया। 18वें इंड–इंडो कोर्पेट का आयोजन 25 सितंबर से 5 अक्तूबर, 2011 तक किया गया। भा नौ पोत महीश और बरातंग ने एक भा नौ डॉर्नियर के साथ कोर्पेट में भाग लिया। इंडोनेशिया की ओर से के आर आई सिलास पापारे ने प्रतिनिधित्व किया।

4.22 FkkbyM d! lkFk lefUor x'r% इंडो–थाई कोर्पेट का 12वां चक्र 25 अप्रैल से 3 मई 2011 तक आयोजित किया गया। इस कोर्पेट में आई एन एस तरासा एवं एक आई एन डॉर्नियर ने भाग लिया। थाइलैंड की ओर से रॉयल थाई नेवी के एच टी एम एस लोंग लोम एवं एक डॉर्नियर ने भाग लिया। इंडो थाई कोर्पेट का 13वां चक्र 9–17 नवम्बर, 2011 तक आयोजित किया गया।

तटीय सुरक्षा

4.23 2009 में, भारतीय नौसेना को समूची समुद्री सुरक्षा के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण के रूप में नामित किया गया था जिसमें देश की तटीय एवं अपतटीय सुरक्षा शामिल है। इस कार्य को पूरा करने के लिए भारतीय नौसेना ने गहरे जल वाले क्षेत्रों के साथ ही–साथ छिछले जल वाले क्षेत्रों में भी संक्रियाएं कीं ताकि अपनी तटरेखा को खतरों से बचाया जा सके। सभी मंत्रालयों/एजेंसियों तथा तटीय राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के साथ आवश्यक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए समन्वित प्रयास किए गए हैं ताकि कारगर तटीय सुरक्षा प्रबंधन के लिए सामंजस्य स्थापित हो सके। तटीय सुरक्षा के लिए 15 तीव्र इंटरसेप्टर क्राफ्ट (एफ आई सी) में से जिन छः क्राफ्ट को शामिल किए जाने की योजना थी उन्हें भारतीय नौसेना में पहले ही 2010 में शामिल कर लिया गया है।

4.24 जनवरी, 2009 से तटीय सुरक्षा के कार्यों के लिए भारतीय नौसेना पोतों की तैनाती में 60–80% की बढ़ोतरी हुई है तथा भारतीय नौसेना विमानों की तैनाती में 100% की बढ़ोतरी हुई है। ओ डी ए की निगरानी को भी बढ़ाया गया है। अब तक तटीय सुरक्षा के लिए कई अभ्यास एवं तटीय सुरक्षा संबंधी संक्रियाएं की जा चुकी हैं। समुद्री सुरक्षा में जिनका हित निहित है उनमें मछुआरे भी शामिल हैं; एतदर्थ उनका बुनियादी स्तर पर एकीकरण का कार्य किया गया है। तटीय सुरक्षा की खातिर आंख और कान का कार्य करने के लिए मछुआरा समुदाय की जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से अब तक 361 जागरूकता अभियान चलाए जा चुके हैं ।

4.25 बेहतर अंतर–एजेंसी समन्वय पिछले कुछ वर्षों से हुई प्रगति का ही सकारात्मक परिणाम है। यह सभी

समुद्री हितधारकों के साथ किए गए नियमित तटीय सुरक्षा अभ्यासों के कारण संभव हो सका है । सफल संयुक्त संक्रियाएं एवं हमारी समुद्री तट रेखा से दूर कई गैर–कानूनी जलयानों की जांच सभी संबद्ध एजेंसियों के बीच कारगर समन्वय का ही प्रत्यक्ष परिणाम है ।

राष्ट्रपति द्वारा जहाजी बेड़े का निरीक्षण

4.26 राष्ट्रपति जहाजी बेड़ा निरीक्षण 2011 (पी एफ आर) दिसम्बर, 2011 में मुम्बई में आयोजित किया गया। भारतीय नौसेना की यह एक बहुत पुरानी परंपरा रही है कि सशस्त्र सेना के सर्वोच्च कमांडर के रूप में भारत के राष्ट्रपति अपने कार्यकाल के दौरान एक बार नौसेना के जहाजी बेड़े का निरीक्षण करते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक दस निरीक्षण किए जा चुके हैं।

4.27 राष्ट्रपति जहाजी बेड़ा निरीक्षण (पी एफ आर) राष्ट्र की समुद्री शक्ति का सांकेतिक प्रदर्शन है। भाग लेनेवाली यूनिटों, जिनमें युद्धपोत, पनडुब्बियां, सहायक जलयान, तट रक्षक पोत एवं मर्चेंटमैन को सशक्त सैन्यदल के रूप में खड़ा किया जाता है। भारत के राष्ट्रपति, "राष्ट्रपति की नाव" नामक नौसेना जलयान पर सवार होकर सभी पोतों के पास से से गुजरते हुए निरीक्षण करते हैं। प्रत्येक जहाज की कंपनी नाव के वहां से गुजरने पर सर्वोच्च कमांडर को सलामी देती है। साथ–ही–साथ फ्लीट एयर आर्म का विमान ओवरहेड उड़ान भर कर सलामी देता है। यह सर्वोच्च कमांडर एवं राष्ट्र को यह आश्वाश्न देने का प्रतीक हैं कि हमारे राष्ट्र की समुद्री सेनाएं लड़ने में सक्षम है और किसी भी संभावित स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं।

4.28 भारतीय नौसेना के 66 पोतों, तटरक्षक के 10 तथा मर्चेंट मैरीन के 4 जलयानों ने राष्ट्रपति द्वारा किए गए जहाजी निरीक्षण में भाग लिया । इसके अतिरिक्त 47 विमानों ने पी एफ आर के दौरान परंपरागत फ्लाई पास्ट किया।

अंतर्राष्ट्रीय सभा/संगोष्ठी

4.29 मार्च, 2011 में नार्थ इंडियन ऑशन हाइड्रोग्राफिक

माननीय राष्ट्रपति नौसेना बेड़े का निरीक्षण करते हुए

कमीशन (एन आई ओ एच सी) की 11वीं बैठक तथा अंतर्राष्ट्रीय हाइड्रोग्राफिक सेमिनार–सह–प्रदर्शनी, हाइड्रोइंड–2011 नई दिल्ली में आयोजित की गई। रक्षा मंत्री ने हाइड्रोइंड –2011 का उद्घाटन किया।

विदेशी सहयोग

4.30 इस क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठ समुद्री शक्ति की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही भारतीय नौसेना हिंद महासागरीय क्षेत्र में एक स्थायित्व लाने वाला बल रही है । पिछले वर्ष भारतीय नौसेना ने हिंद महासागरीय क्षेत्र और उससे परे स्थित तटवर्ती मित्र राष्ट्रों की क्षमता और सामर्थ्य निर्माण में मदद देने के लिए अपने सामग्री और प्रशिक्षण सहायता कार्यक्रम को और मजबूत बनाया है।

4.31 ,e lh th ,l gwjkoh dk mRikn lgk;rk% भारत ने 16 अप्रैल, 2006 को मालदीव को तटरक्षक पोत हूरावी (पूर्व–तिलंगचंग) उपहार स्वरूप दिया। पोत को उत्पाद सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय नौसेना द्वारा अक्तूबर 2011 से नौसेना डाकयार्ड (विशाखापट्टनम) में तीन माह का मरम्मत कार्य किया जा रहा है।

4.32 ukSlsuk ls ukSlsuk LVkQ ds e/; ckrphr% स्टाफ वार्तालाप के रूप में नौसेना–से नौसेना स्तर की बातचीत द्विपक्षीय सहयोग की पहल को विकसित करने तथा उन्हें कार्यान्वित करने के लिए एक कारगर मंच प्रदान करती है। आस्ट्रेलिया, फ्रांस, इंडोनेशिया, इजराइल, सिंगापुर, जापान, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, यूनाइटेड किंगडम, थाइलैंड तथा संयुक्त अरब अमीरात के साथ स्टाफ वार्तालाप आयोजित किए गए।

सेशल्स के राष्ट्रपति सेशल्स में भारतीय डॉर्नियर फ्लाइट का दौरा करते हुए

हाइड्रोइन्ड 2011 के उद्घाटन पर रक्षा मंत्री, पोत परिवहन मंत्री और नौसेनाध्यक्ष

4.33 i{f'k{k.k% अंतःसंक्रियात्मकता प्राप्त करने में प्रशिक्षण एक सर्वोत्तम साधन है और यह नौसेना के सहयोग तंत्र में ध्यानाकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। गत कई वर्षों से विकसित सहयोगात्मक ढांचे से विदेश में प्रतिनियुक्त किए जा रहे प्रशिक्षणार्थियों की और हमारे संस्थानों/स्कूलों में प्रशिक्षित किए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। यह ट्रेंड जारी रहने की संभावना है और इसलिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण को अधिक आकर्षक बनाने और अधिक विश्वव्यापी भागीदारी आमंत्रित करने के लिए आमूल परिवर्तन किए गए हैं। इन प्रयासों का यह परिणाम हुआ है कि पपुआ न्यू गिनी, तिमोर लिस्तो और बुल्गारिया से प्रशिक्षणार्थी पहली बार 2011 में भारतीय नौसेना से पाठ्यक्रम प्राप्त कर रहे हैं।

4.34 fgUn egklkxj uklsuk laxks"Bh ¼vk;Ul½ फरवरी, 2008 में आयन्स की उद्‌घाटन संगोष्ठी नई दिल्ली में आयोजित की गई थी जिसमें हिन्द महासागर क्षेत्र में फैले 35 समुद्रतटीय देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। नौसेनाओं द्वारा अपने शीर्ष स्तर पर व्यापक भागीदारी ने हमारे समुद्री क्षेत्र में इस प्रकार के साधन के लिए सामूहिक आवश्यकता को दर्शाया है। अगली संगोष्ठी (आयन्स–2010) मई 2010 में आबू धाबी, यू ए ई में आयोजित की गई थी, जहां 2010–12 की अवधि के लिए आयन्स की अध्यक्षता यू ए ई नौसेना के कमांडर को सौंपी गई थी। तीसरी संगोष्ठी (आयन्स–2012) अप्रैल 2012 में केप टाउन में आयोजित की जाएगी।

कमीशनिंग और डि–कमीशनिंग

4.35 u, ikrk dh deh'kfuax% दो नए फ्लीट टैंकर, भा नौ पो दीपक और भा नौ पो शक्ति, जिनका निर्माण जेनोवा, इटली में मैसर्स फिनकैन्टिरि शिपयार्ड में किया गया था, को क्रमशः 21 जनवरी, 2011 और 01 अक्तूबर, 2011 को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। शिवालिक श्रेणी के दूसरे स्वदेश में डिजाइन तथा निर्मित किए गए स्टील्थ फ्रिगेट, भा नौ पोत सतपुड़ा को 20 अगस्त, 2011 को कमीशन किया गया। भा नौ पोत काबरा, कोसवारी और करूवा को भी 2011 में कमीशन किया गया।

शिवालिक श्रेणी के दूसरे स्वदेश में डिजाइन किए गए और निर्मित स्टील्थ फ्रिगेट भा नौ पो सतपुड़ा को 20 अगस्त, 2011 को कमीशन किया गया ।

4.36 i|jkuh ;fuVks dk fM&deh'ku djuk% भा नौ पो एल सी यू 32, एल सी यू 34 और भा नौ पो शरभ को 2011 में डि–कमीशन किया गया ।

4.37 l'kkf/kr lfuf'Pkr vkthfodk ikUUk;u ;ktuk% (एम ए सी पी एस) सरकार ने 01 सितम्बर, 2008 से नौसैनिकों के लिए संशोधित सुनिश्चित अजीविका प्रोन्नयन योजना (एम ए सी पी एस) कार्यान्वित करने के लिए अनुमोदन दे दिया है। इस महत्वपूर्ण योजना से नौसैनिक 8, 16 और 24 वर्षों की सेवा होने पर अगले उच्चतर ग्रेड वेतन पर वित्तीय बढ़ोतरी के रूप में न्यूनतम सुनिश्चित प्रोन्नयन के हकदार हो जाएंगे। यदि नौसैनिक 8 वर्ष लगातार एक ही ग्रेड वेतन में सेवा कर लेते हैं तब भी उनकी वित्तीय बढ़ोतरी स्वीकार्य होगी। एम ए सी पी एस के लिए पात्रता का निर्धारण स्क्रीनिंग समिति द्वारा 6–6 माह के अंतराल पर नौसैनिकों के ब्यूरो में किया जाएगा ।

4.38 uklfudk d fy, vkthfodk ;ktuk dh leh{kk ¼fjdIl½ उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी वाले उपस्करों और प्लेटफार्मों को लाने से भारतीय नौसेना के संगठनात्मक ढांचे और मानव संसाधन प्रभावित हुए हैं। भारतीय नौसेना को युवा, सुप्रशिक्षित और काम करने के लिए एक ऐसे प्रेरित कार्यबल की आवश्यकता है जो इसकी विकास संबंधी योजनाओं से जुड़ी बड़ी जिम्मेदारियों को निभा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सरकार ने लीडिंग से पेटी अफसर के पद तक वेतन की बढ़ोतरी के लिए नौसैनिकों की आजीविका योजना की समीक्षा (रिकैप्स) को लागू करने का

भा नौ पो दीपक की कमीशनिंग

अनुमोदन कर दिया है। यह योजना 5 वर्ष की अवधि में लागू की जा रही है, यह अवधि 1 जनवरी, 2011 से शुरु हुई थी जिसमें अनुमोदित रिक्तियों की 20% रिक्तियां हर वर्ष निर्मुक्त की जा रही हैं। रिकैप्स से कार्यात्मक क्षमता बढ़ेगी और संतुष्टि के स्तरों में सुधार होगा क्योंकि इससे अभी नौसैनिकों को अपनी प्रारंभिक नियुक्ति के 15 वर्ष के भीतर ही पेटी अफसर के रैंक तक पहुंचने में सहायता मिलेगी बशर्ते वे अर्हता संबंधी मानदण्ड पूरा करते हों।

5

भारतीय वायुसेना

विशेष ऑपरेशनों पर बल देते हुए अपनी सामरिक और रणनीतिक एयरलिफ्ट क्षमताओं का निर्माण करती हुई

Vkt भारतीय वायुसेना विश्वसनीय एरोस्पेस शक्ति बनने के पथ पर अग्रसर है और आधुनिकीकरण और कुशल नेतृत्व के बल पर तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है

5.1 आज भारतीय वायुसेना विश्वसनीय एरोस्पेस शक्ति बनने के पथ पर अग्रसर है और आधुनिकीकरण और कुशल नेतृत्व के बल पर तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी की वैश्विक चुनौतियों का डट कर सामना करने को तैयार है। भारतीय वायुसेना अपनी 'व्यक्ति प्रथम, मिशन हमेशा' की प्रतिबद्धता पर अडिग है। यह लक्ष्य इसने अपनी सुव्यवस्थित कार्यशैली से हासिल किया है, ताकि यह अपनी सामरिक, रणनीतिक और राष्ट्र–निर्माण की क्षमताओं का विकास कर सके। भारतीय वायुसेना बारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौर में प्रवेश कर रही है और यह ऐसी क्षमताएं हासिल करने में जुटी हुई है, जिनसे यह हर तरह के युद्ध में नेटवर्क केन्द्रित ऑपरेशनों को बखूबी अंजाम दे सके। सैन्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार हो रहे विकास के कारण नई–नई चुनौतियों से सामना हो रहा है, जिससे इसे राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करते हुए अपनी नवीन और मौजूदा सैन्य क्षमताओं को साबित करने के विशेष अवसर मिलते हैं। भारतीय वायुसेना ने इस नीति का पालन करते हुए चालू वर्ष में हवाई रक्षा नेटवर्क के संपूर्ण ओवरहॉल, आधुनिकतम अचूक हथियारों से लैस अग्रिम समाघाती वायुयान खरीदने और अन्य समर्थक प्रौद्योगिकी हासिल करने के लिए एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार की है। इसने विशेष ऑपरेशन परिवहन वायुयान सी–130 जे और मीडियम लिफ्ट हेलिकॉप्टर एम आई–17 वी 5 को अपने परिवहन और हेलिकॉप्टर बेड़े में शामिल करके इसे शक्तिशाली बनाया है।

ऑपरेशन

5.2 uVod dfær lkefjd {kerk dk fuekZ.k एस यू–30 एम के आई वायुयान, तीन वायुवाहित चेतावनी और नियंत्रक प्रणाली वायुयान (अवाक्स) और नवीन सैन्य उपकरणों को लगातार अपने बेड़े में शामिल कर भारतीय वायुसेना ने विशेष मिशनों के लिए सामरिक और रणनीतिक एयरलिफ्ट प्लेटफॉर्म तैयार कर आपातस्थिति का सामना करने में अपनी आक्रामक और रक्षात्मक युद्ध नीतिक संभावनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि की है। भारतीय वायुसेना ने सभी स्तरों पर जागरूकता बढ़ाने, कमान ढांचे की कारगरता बेहतर करने, ऑपरेशनों में तेजी लाने और अपनी मारक क्षमता बढ़ाने के लिए सी 4 आई एस आर (कमान, कंट्रोल, कम्यूनिकेशन, कम्प्यूटर, आसूचना, निगरानी, टोह) के दायरे में नेटवर्किंग सेंसर, निर्णायक घटकों और हथियार प्रणालियों द्वारा अपनी नेटवर्क केंद्रित क्षमताएं भी बढ़ाई है, जिससे इसकी समाघाती शक्ति बढ़ती जा रही है।

वी आई पी ऑपरेशन

5.3 वायुसेना मुख्यालय की संचार स्क्वाड्रन को वी वी आई पी/वी आई पी, राष्ट्राध्यक्षों और विदेशी गण्यमान्य व्यक्तियों के एयरलिफ्ट का कार्य सौंपा गया है। इसकी परिवहन विंग बोइंग बिज़नेस जेट और एम्ब्रेयर ई–135 वायुयान संचालित करती है और रोटरी विंग एम आई–8/17 हेलिकॉप्टर संचालित करती है। एम्ब्रेयर ई–135 लिगेसी देश के बाहर मध्य एशिया गणराज्यों, आसियान और सार्क देशों तक की और टोक्यो व पेरिस तक अनेक उड़ानें भर चुका है। यह अल्प सूचना मिलने पर अफगानिस्तान और इंडोनशिया तक उड़ान भर चुका है। देश में यह उन इलाकों से एयरलिफ्ट के काम को

अंजाम दे चुका है, जहां अन्यथा पहुंचा नहीं जा सकता, जैसे कारगिल, बद्रीनाथ इत्यादि।

वायुयान अपग्रेड एवं अर्जन

5.4 **lh&130 ts ¼gjD;qfyl½ %** भारतीय वायुसेना में सी–130 जे हरक्यूलिस वायुयान शामिल करने से इसकी विशेष संक्रियात्मक क्षमता कई गुना बढ़ गई है। यह वायुयान हर तरह के मौसम में उड़ान भरने में सक्षम है।

5.5 **eè;e Hkkjokgd gsfydkWIVj%** भारतीय वायुसेना में मंझोले भारवाहक एम आई–17 वी 5 हेलिकॉप्टर शामिल करने के साथ नई हेलिकॉप्टर यूनिटों का गठन किया जा रहा है। ये हेलिकॉप्टर ग्लास कॉकपिट यंत्र पैनलयुक्त आधुनिकतम एवियॉनिक्स प्रणाली से लैस हैं। ये हेलिकॉप्टर नाइट विज़न गॉगल्स से सुसंगत है और इन्हें आर्मर प्लेटिंग से अधिक शक्तिशाली बनाया गया है जिससे कि ये प्रतिकूल परिस्थितियों में रात्रि ऑपरेशनों को कारगर ढंग से अंजाम दे सकें। बहुउपयोगी क्षमता वाले इन हेलिकॉप्टरों का प्रयोग हवाई अनुरक्षण, टैक्टिकल बैटल एरिया में सेना के सहायक ऑपरेशनों और विशेष ऑपरेशनों में किया जा सकता है, इन हेलिकॉप्टरों से भारतीय वायुसेना की संक्रियात्मक क्षमता और युद्ध करने की ताकत उल्लेखनीय रूप से बढ़ गई है। हेलिकॉप्टर यूनिटें गठित करने का काम सितम्बर, 2011 से शुरू किया गया।

एम आई–17 वी 5, मीडियम लिफ्ट हेलिकॉप्टर भारतीय वायुसेना में शामिल किए जाने की प्रक्रिया के अधीन

5.6 **fejkt&2000 ,p@Vh ,p vixzsM djuk%** मिराज–2000 वायुयान को अपग्रेड करने के लिए फ्रांसीसी मूल उपस्कर निर्माताओं (मैसर्स थेल्स और मैसर्स दासॉल्ट एविएशन) और मैसर्स एच ए एल के बीच 29 जुलाई, 2011 को एक करार पर हस्ताक्षर किए गए। दो वायुयान अपग्रेड करने के लिए फ्रांस भेजे जा चुके हैं। फ्रांसीसी मूल उपस्कर निर्माता दो और वायुयानों को एच ए एल (बेंगलुरू) में अपग्रेड करेंगे। शेष वायुयानों को मैसर्स एच ए एल, बेंगलुरू में क्रमिक रूप से अपग्रेड करेगा।

5.7 **fex&29 vixzsM dk;Øe%** मिग–29 भारतीय वायुसेना में 1987 में शामिल किए गए और तभी से ये वायुयान हवाई रक्षा का शक्तिशाली साधन रहे हैं। 2008 में रूस के साथ इनके अपग्रेड कार्यक्रम के लिए करार किया गया, जिसके तहत वर्ष 2010 तक वायुयान के ढांचे, रेडार और एवियॉनिक्स को पूरी तरह अपग्रेड करना शामिल था। फिलहाल वायुयान के डिज़ाइन और विकास की प्रारंभिक खेप में से तीन वायुयानों का रूस में उड़ान परीक्षण चल रहा है और तीन अन्य वायुयान अपग्रेड होने की प्रक्रिया के अंतिम चरण में हैं। डिज़ाइन एवं विकास चरण के बाद भारत में वायुयानों को क्रमिक स्तर पर अपग्रेड किया जाएगा।

5.8 **, ,u&32 ok;q;ku vixzsM dk;Øe%** ए एन–32 वायुयान 1984 से 1991 के बीच तत्कालीन सोवियत संघ से लिए गए थे। 25 वर्ष तक सेवा देने के बाद भी इस वायुयान में काफी जान शेष रहने के कारण इसमें 40 वर्ष तक इस्तेमाल किए जाने की संभावना पायी गई। इसकी मियाद बढ़ाने के साथ–साथ कॉकपिट में आवाज कम करने और एवियॉनिक्स को अपग्रेड करने पर भी विचार किया गया, क्योंकि आई सी ए ओ के अनुसार परिवहन वायुयान में कुछ एवियॉनिक्स उपकरणों का होना अनिवार्य है। ए एन–32 आर ई वायुयानों में आधुनिक उपकरण लगाए गए हैं, जिससे कि वे परिवहन वायुयान के लिए निर्धारित आई सी ए ओ विशिष्टियों पर खरे उतर

सकें।

एस यू–30 एम के आई

5.9 vuj{k.k 'kYVjk dh [kjhn% टारमेक पर काम कर रहे अनुरक्षण कर्मियों को पर्यावरण संबंधी खतरों से सुरक्षा प्रदान करने और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए भारतीय वायुसेना ने पहली बार एस यू–30 एम के आई स्क्वाड्रनों के लिए हर मौसम के अनुकूल पोर्टेबल अनुरक्षण शेल्टर खरीदे हैं। शुरू में दो स्क्वाड्रनों के लिए 27 शेल्टर खरीदे गए हैं तथा 50 शेल्टरों की खरीद की प्रक्रिया अपने अंतिम चरण में है।

हवाई सुरक्षा नेटवर्क

5.10 अत्यंत पुरानी/पुरानी पीढ़ी के सेंसरों की जगह आधुनिकतम प्रौद्योगिकी वाले सेंसर लाने और बेहतरीन निगरानी क्षमता सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त सेंसर प्राप्ति के लिए बड़ी संख्या में नए उपकरण शामिल किए गए हैं। इन नए उपकरणों का विवरण आगे के पैराओं में

एस यू 30 एम के आई के लिए हर मौसम के अनुकूल पोर्टेबल अनुरक्षण शेल्टर

दिया गया है।

5.11 jkfg.kh jMkj% भारतीय वायुसेना स्वदेश निर्मित रोहिणी रेडार बड़ी संख्या में खरीद रही है। ये रेडार बी ई एल द्वारा बनाए जा रहे हैं और मौजूदा लो लेवल ट्रांसपोर्टेबल रेडारों की जगह इन रेडारों को लगाने की योजना है।

5.12 v#/kkjk ehfM;e ikoj jMkj% भारतीय वायुसेना मीडियम पावर रेडारों की खरीद पर भी विचार कर रही है जिससे एरोस्पेस की मीडियम और उच्च स्तर की निगरानी सुनिश्चित की जा सके। इस प्रकार का पहला रेडार संक्रियात्मक प्रयोग के लिए भारतीय वायुसेना में शामिल किया जा चुका है।

5.13 tehu l gok e ekj dju oky funf'kr

रोहिणी रडार

gfFk;kj% भारतीय वायुसेना के जमीन से हवा में मार करने वाले निदेशित हथियारों में मुख्य रूप से पिचोरा, ओ एस ए–ए के एम और आई जी एल ए आते हैं। पिचोरा, भारतीय वायुसेना के जमीन से हवा में मार करने वाले निदेशित हथियारों के बेड़े का आधार–स्तंभ है। इन्हें 70 के दशक की शुरुआत में शामिल गया था। इस पुराने बेड़े की जगह निकट भविष्य में नए–नए हथियारों को शामिल किया जाएगा। जमीन से हवा में मार करने वाली मध्यम दूरी/कम दूरी वाली मिसाइलों, स्पाइडर और आकाश को जल्द ही भारतीय वायुसेना के बेड़े में शामिल किया जाएगा।

अरूधारा रडार

5.14 vokDl dk Hkk ok l e 'kkfey djuk % वर्ष 2004 में तीन आई एल 76 बेस प्लेटफॉर्म और उनके संबद्ध भू–उपकरणों के लिए अवाक्स करार पर हस्ताक्षर किए गए। पहले दो अवाक्स वर्ष 2009 और 2010 में भारतीय वायुसेना में शामिल किए गए, जबकि तीसरा अवाक्स और उनका संबद्ध भू–उपस्कर मार्च, 2011 में शामिल किया गया।

एरोस्पेस संरक्षा

5.15 भारतीय वायुसेना उच्च एरोस्पेस मानक स्थापित करने की जरूरत के प्रति सजग है। इसके लिए विभिन्न स्तरों पर लगातार कार्य किए जा रहे हैं। गंभीर खामियों की पुनरावृति रोकने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं, जैसे खामियों का पता लगाना और खामियों का पता लगाने वाली एजेंसियों द्वारा निर्धारित उपायों का सावधानी–पूर्वक पालन करना। हवाई योद्धाओं का कौशल बेहतर करने के लिए सुनियोजित ढंग से सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

पहले दो अवाक्स वर्ष 2009 और 2010 में भारतीय वायुसेना में शामिल किए गए जबकि तीसरा अवाक्स और उसका संबद्ध भू-उपस्कर मार्च, 2011 में शामिल किया गया।

5.16 n?kVukvk d vkdM % इस समय भारतीय वायुसेना की दुर्घटना दर श्रेणी–1 में 0.53 (प्रति 10,000 उड़ान घंटे) दर्ज की गई है। 70 के दशक के शुरू में यह दर 1.84 थी, परंतु सोची–समझी रणनीति और दृढ़ निश्चय प्रयासों के बल पर आज यह दर घट कर इतनी कम हो गई है।

5.17 दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण तकनीकी खराबी और मानव चूक (विमानकर्मी) रहा है। भारतीय वायुसेना में दुर्घटना दर कम करने के लिए अनेक सक्रिय उपाय किए गए हैं। इससे संबंधित कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियों का वर्णन आगे किया गया है।

5.18 i e[k igy % उड़ान संरक्षा और घटना/दुर्घटना रिकॉर्ड को बेहतर बनाने के लिए भारतीय वायुसेना द्वारा की गई कुछ प्रमुख पहल इस प्रकार हैं:–

(क) ,;jQhYM ,fj;k dk i;koj.k izc/ku % सभी स्टेशनों ने अपने–अपने क्षेत्र के विशिष्ट ग्रिड के अनुसार एयरफील्ड प्रबंधन शुरू कर दिया है।

(ख) QkM ckl miLdjk dk Lon'kh dj.k % 40 स्टेशनों के लिए फॉड बॉस (वायुयान युद्धाभ्यास क्षेत्र साफ़ करने वाला उपस्कर) उपस्कर खरीदे गए हैं, ये उपस्कर ऑपरेशन वाली जगह को साफ – सुथरा रखने में बड़े कारगर सिद्ध हो रहे हैं।

(ग) i{kh foKku l y % एरोस्पेस संरक्षा निदेशालय में जून 2007 में स्थापित पक्षीविज्ञान सेल अब तक वायुसेना के 27 बेसों, भारतीय नौसेना के एक और एच ए एल के दो हवाई अड्डों का सर्वेक्षण कर चुका है। यह सेल एयरफील्ड और इसके आस–पास के इलाकों में एरोस्पेस का वैज्ञानिक तरीके से सर्वेक्षण कर पक्षियों से उत्पन्न खतरों से बचने की व्यवस्था करता है। पक्षीविज्ञान सेल पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों की डी एन ए बार कोडिंग और फिंगर प्रिंटिंग सर्विस के लिए अन्य प्रयोगशालाओं, जैसे कोशिकीय और आण्विक जीव–विज्ञान

केन्द्र (सी सी एम बी) के संपर्क में है।

अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण/अभ्यास

5.19 वर्ष 2011–12 में मित्र राष्ट्रों के साथ निम्नलिखित अंतरराष्ट्रीय अभ्यास आयोजित किए गए:–

5.20 Hkkjr&vkeku vH;kl % 17 से 21 अक्तूबर, 2011 के दौरान वायुसेना स्टेशन जामनगर में भारत–ओमान अभ्यास ईस्टर्न ब्रिज–।। (2011) का आयोजन किया गया। इस अभ्यास में ओमान की रॉयल एयर फोर्स ने छह जगुआर विमानों और लगभग 110 कार्मिकों के साथ भाग लिया। भारतीय वायुसेना ने जगुआर और मिग–29 स्क्वॉड्रनों के साथ इसमें शिरकत की।

5.21 Hkkjr&Çlxkiqj vH;kl % भारत सरकार और सिंगापुर सरकार के बीच हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौते के तहत वायुसेना स्टेशन कलाइकुंडा (खड़गपुर,पश्चिम बंगाल) में सिंगापुर गणराज्य वायुसेना के साथ प्रति वर्ष संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण का यह आयोजन इस वर्ष 14 अक्तूबर, 2011 से दिसंबर, 2011 के बीच वायुसेना स्टेशन कलाइकुंडा में किया गया। इस अभ्यास में सिंगापुर वायुसेना के 8 एफ–16 डी–स्टार, पी स्टार रेडार, 2 आर बी एस–70 फायरिंग यूनिटों और लगभग 300 कार्मिकों (रोटेशन आधार पर) ने भाग लिया। भारतीय वायुसेना ने इस अभ्यास में मिग–27 वायुयानों के साथ शिरकत की। 8 नवंबर, 2011 को सिंगापुर के रक्षा सेना अध्यक्ष ने वायुसेना स्टेशन कलाइकुंडा का दौरा किया।

उत्तर और उत्तर पूर्व में एयरफील्डों के संक्रियात्मक ढांचे का विकास

5.22 सरकार ने उत्तर–पूर्व क्षेत्र में एयरबेस और एडवांस लैंडिंग ग्राउंड बनाने को अनुमोदन दिया है। विजयनगर के एडवांस लैंडिंग ग्राउंड के रनवे की पुनः कार्पेटिंग कर उसे तैयार कर दिया गया है और यहां पर 12 नवंबर, 2011 से हवाई संभारिकी ऑपरेशन नियमित रूप से शुरू कर दिए गए हैं।

5.23 fookfgr dkfeZdksa dh fy, vkokl ifj;kstuk% भारतीय वायुसेना के वर्दीधारी कार्मिकों को शत–प्रतिशत आवासीय सुविधा मुहैया करवाने के लिए, पहले चरण में कुल 7805 आवासीय इकाइयां बनाने की योजना थी, जिसमें से 7223 आवासीय इकाइयां तैयार हो गई हैं और उन्हें रहने के लिए आबंटित कर दिया गया है। शेष 574 आवासीय (544 पुणे में और 10 रजोकरी में) इकाइयों का निर्माण कार्य चल रहा है। दूसरे चरण में वायुसेना के 39 स्टेशनों में 7073 आवास बनाए जाएंगे। 30 स्थानों पर निर्माण कार्य शुरू किया जा चुका है।

6

भारतीय तटरक्षक

एक तटरक्षक अभ्यास प्रगति पर

Hkkरत के समुद्री क्षेत्रों की नियमित रूप से निगरानी करने के लिए भारतीय तटरक्षक के पास 44 पोत, 29 नौकाएं/होवरक्राफ्ट, 33 कमीशन न की गई नौकाएं/क्राफ्ट और 52 वायुयान हैं । भारतीय तटरक्षक के बेड़े में 2011 में 4 अंतर्रोधी नौकाएं, 8 अंतर्रोधी क्राफ्ट और 4 डॉर्नियर विमान शामिल किए गए हैं

6.1 संसदीय मामलों संबंधी मंत्रिमंडल समिति द्वारा एक अंतरिम तटरक्षक संगठन स्थापित किए जाने के लिए अनुमोदन देने पर भारतीय तटरक्षक 01 फरवरी, 1977 को अस्तित्व में आया। तटरक्षक अधिनियम, 1978 के विधायन के साथ ही इस सेवा की एक स्वतंत्र संगठन के रूप में 19 अगस्त, 1978 को औपचारिक रूप से स्थापना हुई। भारतीय नौसेना से प्राप्त दो फ्रिगेटों और सीमा शुल्क विभाग से प्राप्त पांच गश्ती नौकाओं के साथ तटरक्षक ने 1978 में अपना सफर शुरू किया। अपनी स्थापना के समय से, इस सेवा ने शांति काल के दौरान उसे सौंपे गए कार्यों को पूरा करने तथा युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना के प्रयासों की अनुपूर्ति करने के लिए सतह और वायुवाहित दोनों ही प्रकार की व्यापक क्षमताएं हासिल की हैं।

6.2 l:xBu% तटरक्षक की कमान और नियंत्रण नई दिल्ली स्थित महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक के हाथ में होती है। इस संगठन के गांधीनगर, मुंबई, चेन्नई और पोर्ट ब्लेयर स्थित 4 क्षेत्रीय मुख्यालय हैं। ये क्षेत्रीय मुख्यालय भारत के तटवर्ती राज्यों में स्थित 12 तटरक्षक जिला मुख्यालयों के माध्यम से भारत की संपूर्ण तटरेखा से लगे समुद्र में कमान और नियंत्रण संभालते हैं। इसके अलावा, खोज एवं बचाव कार्य तथा समुद्री निगरानी के लिए पोतों व विमानों की प्रभावी रूप से तैनाती करने हेतु विभिन्न सामरिक स्थानों पर 31 स्टेशन, 2 वायु स्टेशन, 3 एयर संक्लेव और 5 स्वतंत्र स्क्वाड्रन स्थापित किए गए हैं।

6.3 dk;l rFkk i:dk;%% तटरक्षक को निम्नलिखित कार्य सौंपे गए हैं :–

(क) समुद्री क्षेत्रों में कृत्रिम द्वीपों, अपतटीय टर्मिनलों, संस्थापनाओं तथा अन्य संरचनाओं और साधनों की सुरक्षा तथा संरक्षा सुनिश्चित करना।

(ख) समुद्र में संकट के दौरान मछुआरों की सहायता करने सहित उनको संरक्षण प्रदान करना।

(ग) ऐसे उपाय करना जो समुद्री पर्यावरण की संरक्षा एवं सुरक्षा तथा समुद्री प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण के लिए आवश्यक हों।

(घ) तस्करी–रोधी अभियानों में सीमा–शुल्क तथा अन्य प्राधिकरणों की सहायता करना।

(ड़) समुद्री क्षेत्रों में इस समय लागू अधिनियमों के उपबंधों को प्रवर्तित करना।

(च) समुद्र में जान और माल की सुरक्षा करने के लिए उपायों सहित अन्य मामलों पर कार्रवाई करना तथा यथानिर्दिष्ट वैज्ञानिक आंकड़ों का संग्रहण करना।

(छ) भारतीय तटरक्षक की स्थापना के समय से इसे अतिरिक्त कार्य भी सौंपे गए हैं, जो इस प्रकार हैं:–

(i) राष्ट्रीय समुद्री एस ए आर समन्वय प्राधिकरण।

(ii) राष्ट्रीय तेल रिसाव दुर्घटनाओं हेतु समन्वयन प्राधिकरण।

(iii) अपतटीय तेल क्षेत्रों में सुरक्षा के लिए समन्वय।

(iv) समुद्री डकैती रोधी कार्रवाइयों में समन्वय के लिए भारत में केंद्र बिन्दु।

(v) समुद्री सीमाओं के लिए अग्रणी आसूचना एजेंसी।

6.4 **fo|eku cy Lrj%** भारत के समुद्री क्षेत्रों की नियमित रूप से निगरानी करने के लिए भारतीय तटरक्षक के बेड़े में इस समय 44 पोत, 29 नौकाएं/होवरक्राफ्ट, कमीशन न की गई 33 नौकाएं/क्राफ्ट और 52 वायुयान हैं।

तटीय सुरक्षा

6.5 26/11 के बाद, भारतीय तटरक्षक को प्रादेशिक समुद्र में तटीय सुरक्षा के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण के रूप में भी नामोद्दिष्ट किया गया है जिसमें वह समुद्र भी शामिल है जहां तटीय पुलिस द्वारा गश्त लगाई जाती है। महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक को कमांडर, तटीय कमान के रूप में भी नामोदिष्ठ किया गया है और तटीय सुरक्षा से संबंधित सभी मामलों में केंद्रीय तथा राज्य एजेंसियों के मध्य समग्र समन्वय की जिम्मेदारी भी उनकी होगी ।

6.6 तटरक्षक ने नौसेना के साथ समन्वय करके, संपूर्ण तटरेखा की गश्त और निगरानी में वृद्धि की है। समन्वित गश्त की कारगरता को सुनिश्चित करने के लिए वर्ष के दौरान 19 तटीय सुरक्षा अभ्यास संचालित किए गए ।

6.7 अनन्य आर्थिक क्षेत्र की सामान्य गश्त के अलावा तटीय सुरक्षा के लिए तटरक्षक पोतों और वायुयानों की तैनाती बढ़ा दी गई है। तटीय सुरक्षा अभ्यासों के अलावा, तटरक्षक द्वारा नौसेना के साथ समन्वय करके 15 तटीय सुरक्षा संक्रियाएं संचालित की गई हैं ।

महत्वपूर्ण लक्ष्य और उपलब्धियां

6.8 **vrjk/kh ukdkvksa dh deh'kfuax%** चार अंतर्रोधी नौकाएं, नामतः आई सी जी एस सी–150, सी–151, सी–152 और सी–153 पिछले एक वर्ष में सेवा में शामिल की गई हैं। आई सी जी एस सी–150 और सी–151 28 मार्च, 2011 को कमीशन की गईं तथा अन्य दो अंतर्रोधी नौकाएं क्रमशः 18 जून व 22 अक्तूबर, 2011 को।

6.9 **vrjk/kh Øk¶V dks 'kkfey djuk%** आठ अंतर्रोधी क्राफ्ट (सी–119 से सी–126) 2011 में शामिल किए गए।

6.10 **rVj{kd LVs'kuksa dh deh'kfuax%** दो भारतीय तटरक्षक स्टेशन रत्नागिरि (महाराष्ट्र) और मुंद्रा(गुजरात) में क्रमशः 26 मार्च तथा 19 मई, 2011 को कमीशन किए गए।

6.11 **rVj{kd ok;q ,Dyso dk lfØ;dj.k%** कोच्चि और कोलकात्ता में तटरक्षक के दो वायु एंक्लेवों का क्रमशः 1 मार्च तथा 1 अप्रैल, 2011 को सक्रियकरण किया गया।

6.12 **vfÖkDdy esa rVj{kd vdkneh%** रक्षा मत्री ने 28 मई, 2011 को अझिक्कल, केरल में भारतीय तटरक्षक अकादमी का शिलान्यास किया। भारतीय तटरक्षक

महानिदेशक तटरक्षक द्वारा 28 मार्च, 2011 को सी–150 को सेवा में शामिल किया गया

22 अक्टूबर, 2011 को कमीशन किया गया सी–153 एक अभियान पर प्रस्थान करता हुआ

अकादमी, तटरक्षक, नौसेना, मैरीन पुलिस और तटवर्ती देशों के कार्मिकों के लिए विशिष्ट रूप से सभी समुद्री पाठ्यक्रमों की आवश्यकता को पूरा करेगी।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

6.13 **ekynho dk lkFk lg;kx%** 10 अप्रैल, 2010 को माले में आयोजित एक समारोह में एक भारतीय तटरक्षक ए एल एच हेलिकॉप्टर 'ध्रुव' रक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय सुरक्षा, मालदीव (एम एन डी एफ) को हस्तांतरित किया गया । इसके अलावा, 500 उड़ान घंटों के बाद ए एल एच की संपूर्ण मरम्मत/सर्विसिंग किए जाने के लिए एम एन डी एफ के अनुरोध पर भारतीय तटरक्षक पोत समर को ए एल एच को कोच्चि लाने के लिए जनवरी, 2011 में गान, मालदीव को भेजा गया था । ए एल एच की सर्विसिंग पूरी होने पर उसे भारतीय तटरक्षक पोत संग्राम द्वारा मई, 2011 में वापस भेजा गया । ए एल एच की अनुपलब्धता के दौरान मालदीव की समुद्री क्षेत्रों की निगरानी संबंधी आवश्यकताओं के समाधान के लिए एक प्रस्ताव पर भारतीय तटरक्षक/भारतीय नौसेना द्वारा डोर्नियर विमानों का इस्तेमाल करते हुए संयुक्त रूप से कार्य किया गया । तदनुसार, जनवरी, 2011 से अप्रैल, 2011 की अवधि में एक डोर्नियर विमान प्रति माह छह दिन के लिए तैनात किया गया ।

महानिदेशक तटरक्षक द्वारा 19 मई, 2011 को भारतीय तटरक्षक स्टेशन मुंद्रा को कमीशन किया गया

6.14 **l;ä jkT; vefjdk d fMIVh lØVjh] gkeyM flD;kfjVh dk nkjk%** सुश्री जेन हॉल ल्यूट, डिप्टी सेक्रेटरी, होमलैंड सिक्योरिटी ने अपने भारत दौरे के दौरान महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक से मुलाकात करने के लिए 12 जनवरी, 2011 को तटरक्षक मुख्यालय का दौरा किया। विचार–विमर्श के दौरान, भारतीय तटरक्षक और संयुक्त राज्य अमेरिका तटरक्षक के बीच सहयोग सहित आपसी हित के मुद्दों पर बातचीत की गई।

6.15 **Hkkjrh; rVj{kd ifrfuf/keMy dk l;ä jkT; vefjdk dk nkjk%** वाइस एडमिरल अनिल चोपड़ा, एवीएसएम, तटरक्षक महानिदेशालय ने 17 से 24 फरवरी, 2011 तक संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा किया । दौरे के दौरान, दोनों तटरक्षकों के बीच सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए आपस में विचार–विमर्श किया गया।

6.16 **,f'k;k e ikrk ij leæh Mdrh vkj l'kó Mdrh dk edkcyk dju d fy, {k=h; lg;kx djkj dh 'kklh ifj"kn dh cBd%** वाइस एडमिरल अनिल चोपड़ा, ए वी एस एम, महानिदेशक भारतीय तटरक्षक ने सिंगापुर में रिकाप सूचना आदान–प्रदान केंद्र की 6–8 मार्च, 2011 तक हुई शासी परिषद की 5वीं बैठक में भाग लिया ।

6.17 **eyf'k;k d lkFk lg;kx%** भारतीय तटरक्षक पोत संकल्प ने समुद्री खोज और बचाव, समुद्री तेल रिसाव प्रतिक्रिया और समुद्र में अपराध का मुकाबला करने के

लिए द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने हेतु मलेशियाई समुद्री प्रवर्तन अभिकरण से विचार–विमर्श करने के प्रयोजन से 14–19 मार्च, 2011 तक मलेशिया का दौरा किया। दौरे के दौरान, मलेशियाई समुद्री प्रवर्तन अभिकरण, मलेशिया प्राधिकरणों के समुद्री संस्थान और मलेशियाई समुद्री पुलिस के साथ उच्च स्तरीय विचार–विमर्श किया गया।

6.18 feJ d` lkFk lg;kx% एक दो सदस्यीय मिश्री सैन्य प्रतिनिधिमंडल ने एसएआर मुद्दों पर भारतीय तटरक्षक के साथ विचार–विमर्श करने के लिए 21 मार्च, 2011 को तटरक्षक मुख्यालय का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय तटरक्षक द्वारा भारतीय एसएआर क्षेत्र में एसएआर आपरेशनों के समन्वय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए समुद्री बचाव समन्वय केंद्र, मुंबई का भी दौरा किया।

6.19 fo;ruke d` lkFk lg;kx% भारतीय तटरक्षक पोत संकल्प ने वियतनाम की समुद्री विधि प्रवर्तन एजेंसी के साथ विचार–विमर्श करने के लिए 22–31 मार्च, 2011 तक वियतनाम का दौरा किया। दौरे के दौरान, वियतनाम समुद्री पुलिस और अन्य समुद्री प्रवर्तन एजेंसियों के साथ उच्च स्तरीय विचार–विमर्श और संयुक्त अभ्यास किए गए।

6.20 r`rh; Hkkjr&ckXykns'k l;qä vH;kl% भारतीय तटरक्षक पोत वज्र और रजिया सुल्ताना ने तृतीय भारत–बांग्लादेश तटरक्षक संयुक्त अभ्यास के लिए 24 और 28 अप्रैल, 2011 तक चिट्टगोंग, बांग्लादेश का दौरा किया। पोतों के दौरे के दौरान, समुद्री विधि प्रवर्तन एजेंसियों के साथ् उच्च स्तरीय विचार–विमर्श भी किए गए।

6.21 E;kekj d` lkFk lg;kx% भारतीय तटरक्षक पोत वज्र और रजिया सुल्ताना ने म्यांमार की समुद्री एजेंसियों के साथ विचार–विमर्श करने के लिए 30 अप्रैल, 2011 से 04 मई, 2011 तक चिट्टगोंग, बांग्लादेश का दौरा किया। दौरे के दौरान, भारतीय तटरक्षक पोतों द्वारा म्यांमार नौसेना के साथ 4 मई, 2011 को पहली बार पासेक्स(PASSEX) आयोजित किया गया।

6.22 fQyhihu d` lkFk lg;kx% भारतीय तटरक्षक पोत सागर ने 20 से 24 जून, 2011 तक मनीला,

फिलीपीन का दौरा किया । भारतीय तटरक्षक पोत के दौरे के दौरान फिलीपीन तटरक्षक के साथ विचार–विमर्श/संयुक्त अभ्यास किए गए।

6.23 **cqubl d lkFk lg;kx%** भारतीय तटरक्षक पोत सागर ने समुद्री एजेंसियों के साथ विचार–विमर्श करने के लिए 26 से 30 जून,2011 तक पोर्ट मुआरा, ब्रुनेई का का पहली बार दौरा किया ।

6.24 **dekMsV] ekynho jk"Vh; j{kk cy dk nkjk:** ब्रिगेडियर जनरल जकरिय्या मंसूर, कमांडेंट मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल, तटरक्षक ने भारत के दौरे के दौरान महानिदेशक, भारतीय तटरक्षक से 22 जुलाई, 2011 को मुलाकात की। विचार–विमर्श के दौरान, भारत–मालदीव संयुक्त अभ्यास 'दोस्ती–VI' के आयोजन सहित दोनों संगठनों के बीच सहयोग को सुदृढ़ बनाने के लिए उपायों पर विचार–विमर्श किया गया ।

6.25 **tkiku d lkFk lg;kx%** अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती–रोधी गश्त के लिए तैनात जापानी समुद्री आत्म रक्षा बल पोतों पर सवार दलों ने मार्च, 2011 से जुलाई, 2011 और अक्तूबर, 2011 में तीन अवसरों पर कोच्चि बंदरगाह पर आगमन के दौरान भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय का दौरा किया। इसके अलावा, एक दो सदस्यीय तटरक्षक अध्ययन दल ने जापानी तटरक्षक की तेल प्रदूषण प्रतिक्रिया संबंधी क्षमताओं से संबंधित मुद्दों पर विचार–विमर्श करने हेतु और भारतीय तटरक्षक की क्षमताओं का स्तरोन्नयन करने के लिए तकनीकी सहायता हासिल करने के लिए जापान का दौरा किया।

6.26 **l;qä jkT; vefjdk rVj{kd ekckby if'k{k.k ny%** संयुक्त

एशियाई तटरक्षक एजेंसियों के प्रमुखों की 7वीं बैठक

राज्य अमेरिका के एक चार सदस्यीय प्रशिक्षण दल ने एक बोर्डिंग वर्कशॉप चलाने के लिए 23 से 28 सितंबर, 2011 तक तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (पूर्व), चेन्नई का दौरा किया ।

6.27 ,f'k;kbZ rVj{kd ,tsfl;ksa ds izeq[kksa dh 7oha cSBd% महानिरीक्षक वी एस आर मूर्ति, टी एम, उप महानिदेशक(ऑपरेशंस एवं सी एस) ने एशियाई तटरक्षक एजेंसियों के प्रमुखों की बैठक में भाग लेने के लिए 25 से 28 अक्तूबर, 2011 तक हनोई का दौरा किया।

6.28 fjdki {kerk fuekZ.k dk;Z'kkyk% भारतीय तटरक्षक ने रिकाप सूचना आदान–प्रदान केंद्र के साथ 14 से 18 नवंबर, 2011 तक गोवा में क्षमता निर्माण कार्यशाला की मिलकर मेजबानी की । इस श्रृंखला में यह पांचवीं कार्यशाला थी, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन और परियोजना कार्यान्वयन यूनिट, जिबोटी आचार संहिता सहित 19 देशों के 38 सहभागियों ने भाग लिया। यह पहला अवसर था जब यह कार्यशाला भारत में आयोजित की गई ।

6.29 भारतीय तटरक्षक के प्रमुख ऑपरेशन नीचे तालिका में दर्शाए गए हैः–

rkfydk 6-1

Ø-la-	fo"k;	LFkkiuk ds le; ls	1 tuojh ls 30 uoacj 2011 rd
(क)	विनिषिद्ध माल की जब्ती	504.16 करोड़ रु.	5,85,000.00
(ख)	मत्स्य ट्रालरों को पकड़ना	1310 नावें 11639 कर्मीदल	58 नावें 422 कर्मीदल
(ग)	तस्करी में इस्तेमाल किए गए जलयानों को पकड़ना	120 नावें 731 कर्मीदल	– 01 कर्मीदल
(घ)	खोज और बचाव अभियान	1932	322
(ड.)	खोज और बचाव उड़ानें	2979	223
(च)	बचाई गई जानें	5370	330
(छ)	तेल रिसाव की घटनाएं जिनमें प्रतिक्रिया की गई	82	06
(ज)	देश के बाहर तेल रिसाव की घटना	01	–

6.30 [kkt vkj cpko%

(क) E;kekfj;k d fy, [kkt vkj cpko% म्यांमार के गुम हुए मछुआरों की खोज और बचाव के लिए 25 से 29 मार्च, 2011 तक ऑपरेशन 'बचाव' संचालित किया गया। भारतीय तटरक्षक पोत वरद,दुर्गाबाई देशमुख, अरुणा आसफ अली, तटरक्षक मुख्यालय–9, दिगलीपुर, वायु यूनिटों के साथ, बहते हुए मछुआरों का पता लगाने और उनकी सहायता करने के लिए तैनात किए गए थे। तटरक्षक द्वारा किए गए प्रभावी समन्वय और सभी एजेंसियों के सघन प्रयासों से कुल मिलाकर 133 म्यांमारी मछुआरे बचाए गए।

तटरक्षक पोत और विमान खोज और बचाव की विभिन्न कार्रवाइयां करते हैं और वर्ष के दौरान उन्होंने समुद्र में 303 जानें बचाईं ।

(ख) lMgMl] if'Pke cxky l ij 57 eNvkjk dk cpko% तटरक्षक ने एक समुद्र–वायु समन्वित ऑपरेशन में सैंडहैड्स, पश्चिम बंगाल से परे 57 मछुआरों को बचाया। भारतीय तटरक्षक पोत विश्वस्त, भारतीय तटरक्षक पोत सुचेता कृपलानी, भारतीय तटरक्षक पोत सरोजिनी नायडू, तटरक्षक होवरक्राफ्ट एच–186, सी जी डी एच क्यू– 8 और वायु यूनिटें मदद करने के लिए तैनात की गई थीं ।

7

रक्षा उत्पादन

रक्षा मंत्री गोवा शिपयार्ड लिमिटेड की आधुनिकीकरण परियोजना के चरण 3 और 4 के लिए आधारशिला रखते हुए

fiछले वर्षों में रक्षा उत्पादन विभाग ने आयुध निर्माणियों और सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों के माध्यम से विभिन्न रक्षा उपस्करों के लिए व्यापक उत्पादन सुविधाएं स्थापित की हैं

7.1 रक्षा उत्पादन विभाग की स्थापना नवंबर, 1962 में देश की रक्षा के लिए उत्पादन के एक व्यापक बुनियादी ढांचे के विकास के उद्देश्य से की गई थी। पिछले वर्षों में इस विभाग ने आयुध निर्माणियों और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के माध्यम से विभिन्न रक्षा उपकरणों के लिए व्यापक उत्पादन सुविधाएं स्थापित की हैं । विनिर्मित उत्पादों में हथियार एवं गोलाबारूद, टैंक, बख्तरबंद वाहन, भारी वाहन, लड़ाकू विमान एवं हेलीकॉप्टर, युद्धपोत, पनडुब्बियां, प्रक्षेपास्त्र, गोलाबारूद, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, अर्थ मूविंग इक्विप्मेंट, विशेष मिश्र धातु और विशेष प्रयोजन वाले इस्पात शामिल हैं।

7.2 रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख संगठन हैं :

- आयुध निर्माणी बोर्ड (ओ एफ बी)
- हिंदुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड (एच ए एल)
- भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड (बी ई एल)
- गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड (जी आर एस ई)
- गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जी एस एल)
- हिदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एच एस एल)
- माझगांव डॉक लिमिटेड (एम डी एल)
- बी ई एम एल लिमिटेड (बी ई एम एल)
- भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बी डी एल)
- मिश्र धातु नगम लिमिटेड (मिधानि)
- गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डी जी क्यू ए)
- वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डी जी ए क्यू ए)
- मानकीकरण निदेशालय (डी ओ एस)
- योजना एवं समन्वय निदेशालय (डी पी एण्ड सी)
- रक्षा प्रदर्शनी संगठन (डी ई ओ)
- राष्ट्रीय रक्षा पोत निर्माण अनुसंधान व विकास संस्थान (निर्देश)

7.3 रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से आयुध निर्माणियां और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रम अपनी क्षमताओं को निरंतर आधुनिक और उन्नयित तथा अपनी उत्पादन रेंज को विस्तृत कर रहे हैं। उन्होंने प्रौद्योगिकी के अंतरण के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में क्षमताओं के विकास के अलावा अनेक प्रमुख उत्पादों को अपने आप भी विकसित किया है।

7.4 सशस्त्र सेनाओं की बढ़ती आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर में आयुध निर्माणियों और रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों के उत्पादन एवं कारोबार में निरंतर वृद्धि हो रही है। विगत चार वर्षों के कारोबार का ब्यौरा तालिका 7.1 में दिया गया है:–

lkj.kh 7-1

वर्ष	आयुध निर्माणियों की कुल बिक्री	सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की कुल बिक्री	कुल योग (करोड़ रुपये में)
2007–08	6937.81	16740.25	23678.06
2008–09	7229.31	20403.64	27632.95
2009–10	8715.26	25899.64	34614.90
2010–11	11215.01	25975.06	37190.07

7.5 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और आयुध निर्माणियों ने, नीति के रूप में अपनी जरूरत का बहुत सारा काम बाहर से करवाया है और पिछले वर्षों में एक व्यापक विक्रेता आधार विकसित किया है जिसमें भारी उद्योग के अलावा अनेक मध्यम और लघु उद्यम भी शामिल हैं।

7.6 futh {k= dh Hkkxhnkjh% रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए जहां भी प्रौद्योगिकीय रूप से साध्य और आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो, रक्षा उपस्करों का स्वदेशीकरण करने के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

7.7 मई, 2001 में, रक्षा उद्योग क्षेत्र को जो कि अब तक सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित था, लाइसेंस के अध्यधीन 26% तक के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित शत–प्रतिशत तक की भारतीय निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोल दिया गया था। लाइसेंस के तहत हथियारों और गोलाबारूद का उत्पादन करने के लिए औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) अपने 4 जनवरी, 2002 के प्रेस नोट 2(2002 श्रृंखला) द्वारा विस्तृत दिशा–निर्देश जारी कर चुका है।

7.8 हथियारों और आयुधों के विनिर्माण के लिए औद्योगिक लाइसेंस प्रदान करने हेतु डीआईपीपी से प्राप्त सभी आवेदनों पर विचार करने और रक्षा मंत्रालय की सिफारिशों को संबंधित विभाग को सूचित करने के लिए रक्षा उत्पादन विभाग में एक स्थाई समिति का गठन किया गया है। यह समिति लाइसेंसशुदा कंपनियों द्वारा रक्षा उपस्करों के उत्पादन से संबंधित सभी मामलों अर्थात स्वतः प्रमाणन के लिए आवेदन, लाइसेंस के तहत विनिर्मित उत्पादों के निर्यात के लिए अनुमति और लाइसेंस संबंधी शर्तों या सुरक्षा प्रावधानों के उल्लंघन आदि के कारण लाइसेंस रद्द करने पर भी विचार करती है। वर्तमान में, नौसेना मुख्यालय, वायुसेना मुख्यालय, थल सेना मुख्यालय, डीजीक्यूए, डीजीएक्यूए, रक्षा विभाग, ओएफबी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और बीईएल जैसे विविध क्षेत्रों से सदस्यों सहित संयुक्त सचिव (इलेक्ट्रानिक प्रणाली) इस स्थायी समिति के अध्यक्ष हैं।

7.9 औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग ने रक्षा मंत्रालय की सिफारिश पर कंपनियों को कई प्रकार के रक्षा उपस्करों के विनिर्माण के लिए अब तक 178 आशय–पत्र/औद्योगिक लाइसेंस जारी किए हैं (वर्ष 2011 में 10 औद्योगिक लाइसेंस जारी किए गए हैं)।

7.10 रक्षा उद्योग में लाइसेंस के तहत 26% तक के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति सहित भारतीय निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोलने के परिणामस्वरूप अब तक भारतीय निजी कंपनी और विदेशी कंपनियों के बीच 17 संयुक्त उद्यमों का गठन किया गया है।

7.11 b&xousZUl% रक्षा उत्पादन विभाग ई–गर्वेनेन्स परियोजना शुरू करने की प्रक्रिया में है। इस प्रक्रिया के अधीन रक्षा उपस्करों के उत्पादन के लिए लाइसेंस प्रदान करने संबंधी कार्यकलापों की सूचना रक्षा मंत्रालय/प्रस्तावित रक्षा उत्पादन विभाग की वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएगी और समय–समय पर इसे अद्यतित किया जाएगा। वेबसाइट में रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित रक्षा मदों के विनिर्माण के लिए लाइसेंस प्रक्रिया के बारे में जानने के लिए इच्छुक आम लोगों के साथ ऑनलाइन संपर्क करने की सुविधा उपलब्ध होगी। इसमें निजी क्षेत्र की कंपनियों को जारी रक्षा औद्योगिक लाइसेंसों की और रक्षा क्षेत्र में विदेशी निवेश समर्थन बोर्ड द्वारा यथा अनुमोदित एफडीआई/संयुक्त उद्यमों की अद्यतित सूची भी शामिल होगी।

vk;q/k fuekZ.kh laxBu

7.12 भारतीय आयुध निर्माणियां रक्षा मंत्रालय में रक्षा उत्पादन विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करती हैं। इन निर्माणियों के पास उच्च विशेषीकृत रक्षा हार्डवेयर और उपस्करों के निर्माण के लिए एक एकीकृत अवसंरचना मौजूद है। इन निर्माणियों की

उत्पाद मदें अत्यंत विस्तृत और विविध हैं जो मुख्यतया सेना की मांग को पूरा करती हैं।

7.13 आयुध निर्माणी का इतिहास 1801 से आरंभ हुआ था जब तोप उत्पादन की पहली निर्माणी कोशीपुर, कोलकाता में स्थापित की गई थी। तत्पश्चात, युद्ध सामग्रियों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए अन्य निर्माणियों की स्थापना की गई। वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद आयुध निर्माणियों के विकास में वास्तविक तेजी आई। आज इस संगठन में 39 निर्माणियां हैं और नालंदा, बिहार और कोरवा, उत्तर प्रदेश में दो परियोजनाएं शुरू की जा रही हैं। सेना के विभिन्न अंगों की मांगों के अनुसार उत्पाद प्रोफाइल की विविधता और जटिलता में भी वृद्धि हुई है। ये निर्माणियां मुख्य युद्ध क टैंक टी–90 और अर्जुन, इन्फैंट्री समाघात वाहन बीएमपी–II, तोपखाने के लिए 105 मिमी. तोप और राकेट, कई छोटे हथियारों, मोर्टार और गोलाबारूद की पूरी श्रृंखला सहित मध्यम केलिबर के हथियारों का उत्पादन करती हैं। ये आयुध निर्माणियां भारतीय सेना की आधुनिकीकरण और युद्ध लड़ने की क्षमता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत जटिल और अत्याधुनिक हथियारों और गोलाबारूद के विकास और उत्पादन को लेते हुए अपने उत्पाद प्रोफाइल को निरंतर अद्यतित कर रही हैं।

7.14 lxBu dk <kpk भारतीय आयुध निर्माणियों का प्रबंधन आयुध निर्माणी बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसमें अध्यक्ष के पद पर महानिदेशक और नौ सदस्यों के रूप में अपर महानिदेशक आयुध निर्माणी रैंक के नौ अधिकारी होते हैं। आयुध निर्माणियों को उत्पादों के प्रकार और विनिर्माण प्रौद्योगिकी के आधार पर पांच परिचालन समूहों में विभाजित किया गया है। बोर्ड के चार सदस्य स्टाफ संबंधी कार्यों अर्थात कार्मिक, वित्त, नियोजन और सामग्री प्रबंधन और परियोजना, इंजीनियरिंग तथा तकनीकी सेवाओं के लिए जिम्मेदार होते हैं। 39 कार्यात्मक निर्माणियां और दो आगामी परियोजनाओं के अलावा संगठन के पास 8 शिक्षा संस्थाएं, 3 क्षेत्रीय व्यापार केन्द्र और 4 सुरक्षा नियंत्रक हैं। राष्ट्रीय रक्षा उत्पादन अकादमी, नागपुर समूह 'क' अधिकारियों को प्रशिक्षण देती है।

39 कार्यात्मक निर्माणियों और दो आने वाली परियोजनाओं के अलावा, संगठन के पास 8 शिक्षण संस्थान, 3 क्षेत्रीय विपणन केन्द्र और 4 संरक्षा नियंत्रणालय हैं।

7.15 vk/kqfudhdj.k प्रगति के साथ समसामयिक रहने के लिए आयुध निर्माणियों की आधारभूत अवसंरचनाओं को जो कि कई वर्षों से बनाई गई हैं, उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी को शामिल करते हुए निरन्तर अद्यतित करने की आवश्यकता है।

7.16 सेनाओं और अन्य उपभोक्ताओं की मात्रात्मक और गुणात्मक आवश्यकताओं को देखते हुए और आधुनिकीकरण की सतत प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए विभिन्न ग्रीन फील्ड और ब्राउन फील्ड परियोजनाओं के जरिए और नई पूंजी के माध्यम से निवेश करने व पुराने संयंत्रों और मशीनरी का नवीकरण करने व उनका प्रतिस्थापन करने के माध्यम से निवेश योजनाएं निष्पादित की जा रही हैं। गुणता और उत्पादकता में सुधार लाने, कीमतों को कम रखने हेतु अधिक उत्पादन करने और नई उत्पादन प्रौद्योगिकियां प्राप्त करने की बात को ध्यान में रखते हुए आधुनिकीकरण का कार्य किया जा रहा है।

7.17 आयुध निर्माणी बोर्ड ने 12वीं योजनावधि (2012–17) के दौरान लगभग 12761 करोड़ रुपए के निवेश की परिकल्पना करते हुए आधुनिकीकरण की एक महत्वाकांक्षी योजना बनाई है। 11वीं और 12वीं योजना के दौरान संयंत्र और मशीनरी के आधुनिकीकरण पर योजित निवेश का ब्यौरा तालिका 7.2 में दिया गया है:–

rkfydk 7-2

vk;q/k fuekf.k;ksa dh fuos'k ;kstuk

¼djksM+ #i, esa½

fuos'k	11 oha ;kstuk ds nkSjku 0;;	12 ;kstuk dh ifjdYiuk
नई पूंजी	689	10271
नवीकरण और प्रतिस्थापन	1275	2490

7.18 XIवीं और XII वीं योजना के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में निवेश करने पर बल होगाः

क. विस्फोटकों के विनिर्माण के लिए पुराने संयंत्रों को स्वचालित सतत प्रक्रिया वाले संयंत्रों से प्रतिस्थापित करना

ख. कवचित वाहनों का उत्पादन

ग. पिनाका राकेट का उत्पादन

घ. उच्च केलिबर वाली आर्टिलरी तोपों का उत्पादन

ङ आयुध निर्माणी नालंदा परियोजना

च. कोरवा में छोटे हथियारों की निर्माणी

छ. विनिर्माण और गुणता नियंत्रण में स्वचालन।

7.19 o"kZ 2011&12 ¼fnlacj 2011 rd½ ds nkSjku egRoiw.kZ miyfC/k;ka vkSj iqjLdkj% आयुध निर्माणियां अपने घरेलू अनुसंधान एवं विकास प्रयासों तथा रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के सहयोग से रक्षा बलों के लिए नए उत्पादों का विकास करने के लिए विशेष प्रयास कर रही हैं। सफलता की कुछ कहानियां इस प्रकार हैः–

i) ओएलएफ ने आईआरडीई, देहरादून के सहयोग से टी–72 (सीटीआई टी–72) के लिए कमांडर्स डे थर्मल इमेजिंग नाइट साइट का विकास किया है। यह पहली बार है कि थर्मल इमेजिंग बेस नाइट विजन उपस्करों को देश में डिजाइन किया गया है।

ii) गोलाबारूद निर्माणी, खड़की से स्वदेशी आरजीबी–60 राकेट की पहली खेप (अभ्यास रूपांतर), भारतीय नौसेना को सौंपी गई है। इन राकेटों का इस्तेमाल पनडुब्बी रोधी युद्ध में किया जाता है और अब तक इनको रूस से आयात किया जा रहा था।

iii) सेना तोपखाना निदेशालय की तात्कालिक स्वरूप की आवश्यकता के आधार पर आयुध विकास केन्द्र/जीसीएफ ने 105 मिमी. एलएफजी तोपों के लिए ,;j fyÝ¶Vx midj.k विकसित करने का कार्य शुरू किया है। यह उपकरण, तोप को नीचे लटकने वाले भार के रूप में उठाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। भारतीय वायु सेना के एमआई–17 और नौसेना के सी किंग हेलिकॉप्टर यह कार्य करते हैं।

iv) तोपगाड़ी निर्माणी, जबलपुर ने 12.7 मिमी. वाली भारी मशीन गन (प्रहरी) का रूपांतरण किया है। भारतीय नौसेना द्वारा मैसूर जलयान से इनका परीक्षण किया गया है।

v) भारतीय सेना ने आयुध निर्माणी त्रिची द्वारा विकसित 40 मिमी. वाले मल्टी ग्रेनेड लांचर (एमजीएल) को सेवा में शामिल किए जाने के लिए जीएस अनुमोदन दे दिया है। सेना द्वारा विगत में इस हथियार को दक्षिण अफ्रीका से सीमित संख्या में आयात किया जाता था।

vi) आयुध निर्माणी बोर्ड, निर्माणियों के पास उपलब्ध प्रौद्योगिकी दस्तावेजों के आधार पर, भारतीय सेना की सेवा में शामिल एफएच 77बी तोपों के समान 155/39 मिमी. और 155/45 मिमी. वाली तोपों के उत्पादन के लिए एक महत्वाकांक्षी अनुसंधान एवं विकास संबंधी परियोजना पर कार्य कर रहा है।

vii) आयुध निर्माणी, तिरुचिरापल्ली ने एके–47 राइफल जिसका इस्तेमाल केंद्रीय तथा राज्य पुलिस बल द्वारा प्रतिविद्रोही कार्रवाईयों के लिए व्यापक रूप से करते हैं, के विकल्प के रूप में 7.62 मिमी.

स्वचालित असाल्ट राइफल का विकास किया है। गृह मंत्रालय द्वारा प्रारंभिक मूल्यांकन किया गया है और हथियार को विस्तृत उपभोक्ता परीक्षण के लिए तैयार किया जा रहा है।

7.20 **ikjn£'krk%** गोलाबारूद निर्माणी, खड़की पुणे में 9 मई को इलेक्ट्रानिक माध्यम से राजस्व की अधिप्राप्ति का कार्य शुरू किया गया है। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और इससे सामग्री की अधिप्राप्ति में खुलेपन के एक नए युग का सूत्रपात होगा। अधिप्राप्ति के बारे में विस्तृत सूचना उपलब्ध होने के कारण आयुध निर्माणियां नए विक्रेताओं के प्रवेश की आशा रखती है जिससे और अधिक प्रतिस्पर्धा, बेहतर गुणता और मितव्ययता की ओर अग्रसर होंगे।

7.21 अद्यतित सूचना का नागरिकों, ग्राहकों और विक्रेताओं में प्रचार करने के लिए भारतीय आयुध निर्माणियों की वेबसाइट (ofb.gov.in) को नियमित रूप से अद्यतित किया जा रहा है। सिविल व्यापार ग्राहकों को विभिन्न आयुध निर्माणियों से उनके पिस्तौल और रिवाल्वर के आर्डर का पता लगाने के लिए एक नई सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

7.22 **lj{kk ,o i;kZoj.k lj{kk%** इंजीनियरिंग, विस्फोटक और विद्युत संरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण, ओएफबी संगठन में आपदा प्रबंधन और पेशागत स्वास्थ्य के क्षेत्र में नैगमिक स्तर के सुरक्षा संबंधी सभी कार्यकलापें को संरक्षा नियंत्रणालय द्वारा देखा जाता है। संरक्षा नियंत्रालय (सीओएस) के अलावा, संरक्षा के नियंत्रण और प्रबंधन को, सभी 39 आयुध निर्माणियों को कवर करते हुए कानपुर, नागपुर (अंबाझरी), चेन्नई (आवडी) और पूणे (खड़की) स्थित चार क्षेत्रीय संरक्षा नियंत्रणालयों द्वारा विकेन्द्रित किया जाता है। विद्युत संरक्षा पहलू को देखने के लिए प्रत्येक क्षेत्रीय संरक्षा नियंत्रणालयों में एक क्षेत्रीय विद्युत निरीक्षक भी होते हैं।

7.23 पर्यावरण रक्षण के रूप में प्रदूषण उपायों के संबंध में आयुध निर्माणियां प्रदूषण/पर्यावरण संबंधी सभी अधिनियमों/और नियमों का पालन कर रही हैं। निर्माणियों के निस्सारण को निस्सारण परिशोधन संयंत्र/सीवेज परिशोधन संयंत्र से आवश्यक परिशोधन करने के बाद छोड़ा जाता है। सभी आयुध निर्माणियां यह सुनिश्चित कर रही हैं कि निस्सारण (जल और वायु) उस राज्य जहां निर्माणी स्थित है, के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा निर्धारित विनिर्दिष्ट मानकों को पूरा करती हो और उन्होंने जल और वायु के निर्गम के लिए प्रदूषण बोर्डों से अनुमति प्राप्त कर ली हो जैसा कि संगत अधिनियमों के तहत प्रयोज्य है। निस्सारण की जांच के लिए निर्माणियों में प्रयोगशाला सुविधाएं (जो एनएबीसी द्वारा प्रत्यायित होती हैं) मौजूद हैं। वायु प्रदूषण को रोकने के लिए निर्माणियों में स्टॉक गैस की मानीटरी की जाती है। कर्मशाला (शॉप्स) में ध्वनि प्रदूषण को अपनी सीमा में बनाए रखने के लिए भी प्रयत्न किए जाते हैं।

7.24 **vuqlwfpr tkfr ,oa vuqlwfpr tutkfr vkSj vU; fiNM+s oxksZ dks nh tk jgh lqfo/kk,a%**

i) सीधी भर्ती में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़े वर्ग को आरक्षण और पदोन्नति में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के आरक्षण से संबंधित विभिन्न सरकारी नीतियों का पालन किया जा रहा है।

ii) आरक्षित श्रेणियों के हितों की रक्षा के लिए आयुध निर्माणी बोर्ड तथा आयुध निर्माणी बोर्ड के अधीन अन्य सभी यूनिटों में एक प्रकोष्ठ (सेल) खोला गया है।

iii) रोस्टर का निरीक्षण करने और विभिन्न सरकारी नियमों में उपबंधित आरक्षण, रियायत, छूट से संबंधित मामलों में प्रबंधन को सलाह देने क लिए संपर्क अधिकारियों को नामित किया गया है।

iv) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों की शिकायतों पर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान दिया जाता है। इन कार्यकलापों को विभिन्न यूनिटों में स्थित अनुसूचित जाति/

अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ मानीटर करते हैं। संगठनों/यूनिटों के प्रशासनिक प्रमुखों के साथ समय–समय पर बैठक की जाती हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम

fgUnLrku ,jkukfVDl fyfeVM

7.25 हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड (एचएएल) एक नवरत्न कंपनी है और यह रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय के तहत सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का रक्षा उपक्रम है। कंपनी की प्राधिकृत और प्रदत्त पूंजी क्रमशः 160.00 करोड़ रुपए और 120.50 करोड़ रुपए है। इसने विमानन, स्पैनिंग वायुयान, प्रशिक्षक विमान और हल्के हेलीकॉप्टर के क्षेत्र में भारतीय रक्षा सेनाओं को एक व्यापक समाधान प्रदाता के रूप में अपने आप को पदस्थापित किया है। एचएएल की लगभग 90 फीसदी बिक्री भारतीय रक्षा सेवाओं के लिए होती है। वर्ष 2010–11 के दौरान कंपनी का कारोबार लगभग 13,000 करोड़ रुपए था। सरकार अपने 10% शेयर कंपनी की इक्विटी पूंजी में विनिवेश करने की योजना बना रही है।

7.26 एचएएल के 19 उत्पादन डिवीजन और बंगलुरु, नासिक, हैदराबाद, लखनऊ, कानपुर, कोरवा, कोरापुट और बैरकपुर स्थित 10 अनुसंधान एवं विकास केन्द्र हैं। वायुयान, हेलीकॉप्टर, उनके इंजन, सहायक कलपुर्जों (हाइड्रोलिक, न्यूमेटिक, ईंधन एवं औजार) और वैमानिक प्रणालियों (रडार, नेवीगेशन पद्धति, संचार पद्धति आदि) के लिए समर्पित यूनिटों में आधुनिक डिजाइन एवं विकास अवसंरचना स्थापित की गई हैं।

7.27 कंपनी के अपने अनुसंधान एवं विकास से 15 प्रकार के वायुयानों का लाइसेंस के अधीन 14 प्रकार के वायुयानों का उत्पादन किया है। वर्तमान में कंपनी वायुसेना, थल सेना, नौसेना, तटरक्षक बल और सिविलियन जरूरतों के लिए निम्नलिखित प्रकार के वायुयानों का उत्पादन कर रही हैः–

- एसयू–30 एमके बहु–भूमिका वाले वायुयान
- हॉक–उन्नत जेट प्रशिक्षक
- हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए)
- मध्यवर्ती जेट प्रशिक्षक (आईजेटी)
- डोर्नियर 228–हल्के परिवहन वायुयान
- ध्रुव (उन्नत हल्का हेलीकॉप्टर)
- चेतक, चीता और चीतल हेलीकॉप्टर

7.28 एचएएल में इस समय डिजाइन एवं विकसित किए जा रहे नए प्रमुख उत्पाद हल्के उपयोगी हेलिकाप्टर (एलयूएच) और हल्के लड़ाकू विमान (एलसीएच) हैं।

7.29 एचएएल द्वारा डिजाइन एवं विकसित किया गया हल्का लड़ाकू हेलिकाप्टर (एलसीएच) एक समर्पित हेलिकॉप्टर है, जिसने अपनी पहली उड़ान मार्च, 2010 को भरी थी। यह हेलिकाप्टर आक्रमण श्रेणी में भारत में स्वदेशी रूप से डिजाइन एवं विकसित किया गया वायुयान है। यह हल्का लड़ाकू हेलिकॉप्टर हवा से हवा/हवा से जमीनी प्रक्षेपास्त्रा i, राकेटों, टरेट गन, इलेक्ट्रानिक युद्ध पद्धति स्यूट और एन बी सी सेंसरों के साथ निकट हवाई सहायता और आक्रमण भूमिकाओं के लिए उपयुक्त होगा।

एलसीएच– दूसरे प्रौद्योगिकी प्रदर्शक टीडी–2 की पहली उड़ान

7.30 चौथी पीढ़ी का हल्के वजन वाला, बहु भूमिका वाला स्वदेशी लड़ाकू विमान– हल्का लड़ाकू विमान (एलसीए) तेजस को आरंभिक प्रचालन स्वीकृति जनवरी, 2011 में प्राप्त हुई। यह अब अंतिम प्रचालन स्वीकृति चरण की ओर अग्रसर है और इसके 2012 के अंत तक

पूर्ण रूप से प्रचालन योग्य बन जाने की आशा है।

7.31 विकास विंगों को एक साथ मिलाकर दस अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों में समूहबद्ध किया गया है। इनमें प्रमुख हैं – फिक्स्ड विंग और हेलीकाप्टर के डिजाइन एवं विकास के लिए बंगलुरु स्थित विमान अनुसंधान एवं विकास केन्द्र और रोटरी विंग अनुसंधान एवं विकास केन्द्र। अन्य अनुसंधान एवं विकास केन्द्र हैं – सामरिक इलेक्ट्रानिक अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, एरोस्पेस पद्धति एवं उपस्कर अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, विमान उन्नयन अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, इंजन एवं टेस्ट बेड अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, मिशन एवं समाघात पद्धति अनुसंधान एवं विकास केन्द्र और गैस टरबाइन अनुसंधान एवं विकास केन्द्र। इसके अतिरिक्त रोटरी विंग के पास एक अलग डिजाइन एवं विकास केन्द्र है।

एचएएल ने वित्तीय वर्ष 2010-11 के लिए 237.39 करोड़ रुपए का निर्यात किया है। वर्ष 2011-12 के दौरान नवंबर, 2011 तक प्राप्त निर्यात आर्डरों का मूल्य 267.40 करोड़ रुपए है।

7.32 भारतीय वायुसेना और थल सेना के लिए शक्ति इंजन, इलेक्ट्रानिक युद्ध पद्धति सेंसरों, निवारक उपाय पद्धतियों जैसी प्रणालियों के साथ एएलएच (एम के III) के नए रूपांतर का विकास किया गया था। दो शक्ति इंजन, सशस्त्र एएलएच को 6 किमी. ऊंचाई पर कार्य करने के लिए अपेक्षित शक्ति प्रदान करते हैं।

7.33 सुखोई 30 एमके I वायुयान का विनिर्माण लाइसेंस के अधीन 4 चरणों में किया जा रहा है। सभी 4 चरणों में प्रौद्योगिकी को अपनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। चरण–IV में फ्यूसीलेज सहित कच्चे माल से लाइसेंसशुदा सामग्रियों का विनिर्माण किया जाता है। कच्चे माल चरण से वायुयान का उत्पादन वर्ष 2010–11 से शुरू हो गया है।

कच्चे माल से विनिर्मित पहला एसयू–30 एमके I वायुयान

7.34 एचएएल ने वित्तीय वर्ष 2010–11 के लिए 237.39 करोड़ रुपए का निर्यात लक्ष्य प्राप्त किया है। वर्ष 2011–12 के दौरान नवंबर, 2011 तक 267.40 करोड़ रुपए मूल्य के निर्यात आर्डर बुक किए गए हैं। एचएएल की 2011–12 के दौरान सूरीनाम और नामीबिया को 6 चीता/चीतल हेलीकाप्टरों की आपूर्ति संविदा को पूरा करने की योजनाएं भी है।

7.35 भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए लांच वाहन संरचनाओं हेतु एक समर्पित एयरोस्पेस डिवीजन कार्य कर रहा है। बंगलुरु स्थित संयंत्र में जीएसएलवी, पीएसएलवी, आईएनएसएटी के लिए स्ट्रक्चर्स, टैंकेजिज और हीट शील्ड्स का विनिर्माण किया गया है। इस सुविधा पर थिन वाल्ड ह्यूज एल्यूमीनियम मिश्रधातु संरचनाओं (4.5 मीटर व्यास तक की) का उत्पादन शुरू करने के लिए विशेष उच्च तकनीक वाली सुविधाएं स्थापित की गई हैं।

7.36 एचएएल ने वर्ष 2009-10 के लिए कार्य निष्पादन उत्कृष्टता के लिए "संस्थागत" श्रेणी के अंतर्गत रक्षा मंत्री का उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त किया।

7.37 एचएएल के प्रभागों ने आईएसआ 9001–2000 गुणवत्ता प्रबंधन पद्धति मानक की अपेक्षाओं को कार्यान्वित किया और प्रमाणन प्राप्त किया।

7.38 सात एच ए एल प्रभागों ने ए एस 9100 मानक में वर्णित एरोस्पेस क्षेत्रक गुणता प्रबंधन प्रणाली अपेक्षाओं को भी कार्यान्वित किया है और प्रमाणीकरण प्राप्त किया

है। इनमें से चार प्रभागों ने विशेष प्रक्रियाओं जैसे कि एन डी टी, ऊष्मा उपचार, वेल्डिंग इत्यादि के लिए एन ए डी सी ए पी (राष्ट्रीय एरोस्पेस रक्षा संविदाकार प्रत्यायन कार्यक्रम– संयुक्त राज्य अमेरिका) प्रमाणीकरण भी प्राप्त किया है।

Hkkjr byDVªkfuDl fyfeVM ¼chbZ,y½

7.39 भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड (बी ई एल), जो सार्वजनिक क्षेत्र की एक नवरत्न इकाई है, की स्थापना भारत सरकार द्वारा रक्षा मंत्रालय के अधीन वर्ष 1954 में बेंगलूर में की गई थी। बी ई एल, रक्षा राजस्व में विश्व की 100 सर्वोच्च कंपनियों में से 64वें स्थान पर है, जैसाकि डिफेंस न्यूज यू एस ए में प्रकाशित किया गया। बी ई एल की 9 प्रचालन इकाइयां हैं जो पूरे देश में फैली हुई हैं।

7.40 यह कंपनी, रडारों और हथियार प्रणालियों, सोनार, संचार, इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणालियों, इलेक्ट्रो आप्टिक्स और टैंक इलेक्ट्रानिक्स क्षेत्र में बुनियादी क्षमताएं रखती है। कंपनी का लगभग 80% कारोबार इन्हीं व्यापारिक क्षेत्रों में होता है। बी ई एल, इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन एवं विस्तृत किस्म के संघटकों जैसे एकीकृत सरकिट, हाई ब्रिड माइक्रो सरकिट, सेमीकन्डक्टर डिवाइसेस, सोलर बैटरियों आदि का विनिर्माण करती है।

7.41 इनके अलावा, बीईएल की अभिगम नियंत्रण प्रणाली, सुरक्षा प्रणालियों और चुनिंदा गैर रक्षा उपयोग के क्षेत्रों में भी उपस्थिति है।

7.42 वर्ष 2011–12 के दौरान की गई/की जा रही कुछ प्रमुख आपूर्तियां हैं– रोहिणी रडार, निगरानी रडार एलिमेंट, आकाश मिसाइल प्रणाली, रेडियो रिले एफ (लो बैंड), वी/यूएचएफ संचार प्रणाली, काम्बेट नेट रेडियो, तत्काल अग्नि अभिज्ञान और दमन प्रणाली, आईजीएलए के लिए टीआई दर्शी, मोबाइल संचार टर्मिनल, लोरोस मास्ट, डिजीटेल रेडियो ट्रकिंग प्रणाली, तटरक्षक निगरानी प्रणाली, एचयूएमएसए–एनजी, सामूहिक, आर्थिक और जाति गणना निदेशालय, टेबलेट पीसी।

बीईएल अनु. एवं विकास पर अपने वार्षिक कारोबार का लगभग 6 से 7% प्रत्येक वर्ष व्यय कर रहा है। अनु. एवं विकास पर 2009-10 में किए गए 316 करोड़ रुपए की तुलना में 2010-11 में 388 करोड़ रुपए व्यय किए गए।

7.43 बी ई एल एक प्रौद्योगिकी संचलित कंपनी है। इसकी सभी इकाइयों के पास अपने–अपने अनुसंधान एवं विकास समूह हैं, जो सर्वोत्कृष्ट प्रौद्योगिकी का विकास करने के लिए तीन केन्द्रीय प्रयोगशालाओं द्वारा अनुसमर्थित हैं। अनुसंधान और विकास पर बीईएल प्रत्येक वर्ष अपने वार्षिक कारोबार का लगभग 6–7% व्यय करता है। बीईएल ने इस पर वर्ष 2009-10 के 316 करोड़ रुपए की तुलना में वर्ष 2010-11 में 388 करोड़ रुपए का व्यय किया है।

7.44 ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के विकास की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए बीईएल ने आवश्यक जोर देने के लिए कई कार्रवाइयां शुरू की हैं। सभी अनुसंधान एवं विकास प्रभागों के लिए लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रौद्योगिकी मानचित्र (रोडमैप) और त्रि–वर्षीय अनुसंधान एवं विकास योजना तैयार की गई हैं। योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए संसाधनों में वृद्धि की गई है और अनुसंधान एवं विकास के लिए बजट की मंजूरी दी गई है । रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर कई संयुक्त विकास कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। बीईएल ने ये पुरस्कार जीते – (i) कारपोरेट गर्वनेंस, अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी विकास और नवाचार के लिए स्कोप का सराहनीय पुरस्कार (ii) आयात, सर्वोत्तम कार्य निष्पादन करने वाला प्रभाग, आयात प्रतिस्थापन, अभिकल्पन प्रयास और नवाचार के लिए रक्षा मंत्री पुरस्कार (iii) बीईएल को विद्युत एवं स्वचालित उपस्कर, प्रौद्योगिकी विकास क्षेत्र के तहत डुन एण्ड ब्राडस्ट्रीट रोल्टा

कारपोरेट पुरस्कार 2010 के लिए प्रथम भारतीय कंपनी के रूप में चुना गया (iv) वर्ष की सबसे प्रभावी कंपनी और नवाचार में उत्कृष्ट श्रेणियों के तहत अंतर्राष्ट्रीय एरोस्पेस पुरस्कार, 2011 जीता, (v) बीईएल ने वर्ष 2010 के लिए डुन एण्ड ब्राडस्ट्रीट रोल्टा कारपोरेट पुरस्कार जीता (vi) निर्यात और व्यापार उत्कृष्टता श्रेणी में इलसिना ईएफवाई पुरस्कार 2010-11 जीता।

7.45 गुणता आश्वासन के क्षेत्र में बीईएल ने वर्ष 1990 में 'टारॉक्यू' अर्थात टोटल आर्गेनाइजेशनल क्वालिटी इन्हेंसमेंट के अंतर्गत सकल गुणता प्रबंधन की संकल्पना की शुरूआत की है। टारक्यू इस पर आधारित है कि उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का उत्तरदायित्व केवल उत्पादन/शॉप फ्लोर कार्मिकों का ही नहीं है बल्कि गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं की पूर्ति के माध्यम से ग्राहकों की अपेक्षाआां को पूरा करने व इसे आगे बढ़ने के लिए अन्य सहायक सेवाओं को भी भूमिका निभानी होती है। कंपनी ने अपने संपूर्ण कारोबार और सामरिक उत्कृष्टता में वृद्धि करने के लिए सीआईआई–एक्जिम बैंक व्यापार उत्कृष्टता मॉडल को अपनाया है। वर्ष 2002 के इस मॉडल को अपनाने से कंपनी को विभिन्न पणधारियों की अपेक्षाओं को समझने और उनके संतोष स्तर में वृद्धि करने के लिए सहायता मिली है। वर्ष 2011–12 के दौरान पांच बीईएल यूनिटों/एसबीयू ने कारोबार उत्कृष्टता के लिए सीआईआई–एक्जिम बैंक पुरस्कार में भाग लिया। बेंगलूर यूनिट ने स्तर–II सम्मान अर्थात महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त किया। चेन्नई, कोटवाड़ा, गाजियाबाद और पंचकुला यूनिटों ने इस पुरस्कार योजना के अंतर्गत दृढ़ वचनबद्ध ता के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

7.46 कंपनी ने वर्ष 2009-10 के दौरान 23.67 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में वर्ष 2010-11 के दौरान 41.53 मिलियन अमरीकी डालर का निर्यात कारोबार प्राप्त किया जो पिछले वर्ष के मुकाबले 75.45% की वृद्धि को दर्शाता है। कंपनी ने मैसर्स फिन कनटेरी, इटली, बोइंग, यूएसए और नार्थ रोप ग्रुमान, यूएसए जैसी कंपनियों के लिए ऑफसेट संविदाएं कार्यान्वित कीं। निर्यात को बढ़ाने के लिए बीईएल ने कई पहल की हैं। कंपनी प्रत्यक्ष निर्यात और ऑफसेटों के माध्यम से निर्यात को बढ़ाने की योजना बना रही है। इसने उत्पाद निर्यात पर विशेष ध्यान देने के लिए अफ्रीका और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की पहचान की है। विभिन्न प्लाटफोर्मों से संबंधित आफसेट कारोबार में इसके पास महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध हैं।

7.47 lR;fu"Bk leÖkkSrk% बीईएल ने 31 जुलाई, 2010 को 20 करोड़ रुपए और उससे ऊपर मूल्यवाले सभी आदेशों/संविदाओं के लिए सत्यनिष्ठा समझौते को अपनाया है। सीवीसी की सिफारिशों के अनुसार बीईएल ने श्री एन.के. सिन्हा, आईएएस (सेवानिवृत्त), पूर्व सचिव, योजना आयोग और पूर्व अध्यक्ष, पीईएसबी को बीईएल के आईईएम के रूप में नियुक्त किया है।

7.48 lkekU; ykHk fgr lacaf/kr eqÌs& lkekftd fodkl@lkekftd nkf;Ro lac/kh igyw% बीईएल के सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के विचारों के अनुरूप कंपनी अपने पणधारियों के सामाजिक, आर्थिक विकास में अपना योगदान देने के लिए वचनबद्ध है और कंपनी के कारोबार संबंधी निर्णय उसकी कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के दायित्वों (सीएसआर) के अनुरूप होंगे। बीईएल के निरंतर रूप से किए जाने वाले प्रयासों का लक्ष्य समाज की सद्भावना प्राप्त करना तथा कंपनी की छवि को बढ़ाना है। इस उद्देश्य का अनुसरण करने के लिए कंपनी की कारपोरेट सामाजिक दायित्व संबंधी नीति है। वर्ष 2010-11 में कारपोरेट सामाजिक दायित्व पर 208 लाख रुपए खर्च किए गए।

xkMZu jhp f'kifcYMlZ ,.M bathfu;lZ ¼thvkj,lb½

7.49 गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) 5 सितंबर, 2006 से एक सार्वजनिक क्षेत्र की Þ,d y?kq jRu Js.kh IÞ की कंपनी है। यह एक अग्रणी पोत निर्माण यार्ड और इस क्षेत्र की आधुनिकतम

प्रौद्योगिकियों से सज्जित उच्च मूल्य वाले पोतों के विनिर्माता के रूप में जानी जाती है। कंपनी का लक्ष्य *fo'o J.kh dk ikr fuekZrk vkj bathfu;Çjx dEiuh cuuk' है।

7.50 iUe[k miyfC/k;k%

(i) ukSlsuk dks iksrksa dh lqiqnZxh%

वित्त वर्ष (2011-12) के दौरान भारतीय नौसेना को निम्नलिखित तीन जल एफएसी पोत सुपुर्द किए गए:–

- आईएनएस कबरा (जीआरएसई यार्ड सं. 2064)
- आईएनएस कोसवरी (जीआरएसई यार्ड सं. 2065)
- आईएनएस करुवा (जीआरएसई यार्ड सं. 2066)

(ii) Hkkjrh; rVj{kd cy dks iksrksa dh lqiqnZxh %

वित्त वर्ष (2011-12) के दौरान भारतीय तटरक्षक बल को दो अपतटीय गश्ती पोत सुपुर्द किए जाने हैं।

- सीजीएस राजश्री (जीआरएसई यार्ड सं. 2072)
- सीजीएस राजतरंग (जीआरएसई यार्ड सं. 2073)

iksrksa dk tykorj.k%

वित्त वर्ष (2011-12) के दौरान निम्नलिखित पोतों का जलावतरण किया गया:

(क) परियोजना पी–28 के पनडुब्बी रोधी युद्धक कोर्वेट

- दूसरा पनडुब्बी रोधी युद्धक कोर्वेट {एएसडब्ल्यू (सी)}, 'कदमात' (जीआरएसई यार्ड सं. 3018) का जलावतरण 25 अक्तूबर, 2011 को किया गया।

जीआरएसई यार्ड सं. 3018, 25 अक्तूबर, 2011

(ख) भारतीय तटरक्षक बल के अपतटीय गश्ती जलयान

दूसरे एएसडब्ल्यू कार्वेट का जलावतरण

भारतीय तटरक्षक बल से आर्डर प्राप्त आठ पोतों के तीसरे, चौथे और पांचवे अपतटीय गश्ती जलयानों को 30 सितंबर, 2011 को एक साथ जलावतरित किया गया।

- आईसीजीएस राजकिरण (जीआरएसई यार्ड सं. 2074)
- आईसीजीएस राजकमल (जीआरएसई यार्ड सं. 2075)
- आईसीजीएस राजरतन (जीआरएसई यार्ड सं. 2076)

7.51 ekjh'kl virVh; x'rh ty;ku ¼thvkj,lbZ ;kMZ 3021½% मारीशस के लिए अपतटीय गश्ती जलयान की निर्यात आर्डर संबंधी संविदा पर मई, 2011 को हस्ताक्षर किए गए थे और 15 जून, 2011 को पोत का निर्माण कार्य शुरू किया गया था (संविदा के अनुसार कार्यक्रम के चार माह पहले)। पोत को वर्ष 2014

में सुपुर्द करने का कार्यक्रम है। किसी युद्धपोत के लिए जीआरएसई को दिया गया यह पहला निर्यात आर्डर है।

7.52 thvkj,lbl esa bvkjih i.kkyh dk dk;kUo;u% जीआरएसई ने आधुनिकीकरण के अपने प्रयास में अत्याधुनिक ईआरपी प्रणाली को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है। जीआरएसई में यह प्रणाली निम्न विशेषताओं के साथ पूर्ण रूप से परिचालन में है:–

(i) डाटा केन्द्र में अपनी सभी 8 विनिर्माण सुविधाओं और 2 विपणन/क्षेत्रीय कार्यालयों को जोड़ने के लिए एलएएन और डब्ल्यूएएन सहित सर्वर लगे हुए हैं।

(ii) कागज रहित प्रचालन और शीघ्र निर्णय लेने के ओर ले जाने हेतु कंपनी की सहायता के लिए दस्तावेज प्रबंधन प्रणाली।

(iii) स्वचालित पे–रोल प्रक्रिया के सृजन हेतु सभी कर्मचारियों की ईआरपी के लिए स्मार्ट कार्ड आधारित हाजिरी रिकार्डिंग प्रणाली।

7.53 रक्षा राज्य मंत्री ने 24 अक्तूबर, 2011 को सूचना एवं आसूचना प्रौद्योगिकियों के सफल कार्यान्वयन सहित डाटा केन्द्र का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया और इसे राष्ट्र को समर्पित किया।

7.54 dkjikjV lkekftd mÙkjnkf;Ro% जीआरएसई ने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (टीआईएसएस) के साथ 5 वर्ष की अवधि के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह संस्थान (टीआईएसएस) संगठन में सीएसआर से संबंधित सेवाओं के साथ सीएसआर परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करेगा।

7.55 सीएसआर, जीआरएसई के कारपोरेट दर्शन का अनिवार्य अंग है और उन्होंने सीएसआर परियोजनाओं के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों को निर्धारित किया है:

(i) स्वास्थ्य देखभाल

(ii) शिक्षा और दक्षता का विकास

(iii) सामुदायिक विकास

7.56 i;koj.k% जीआरएसई ने पर्यावरण संबंधी मामलों को कभी अनदेखा नहीं किया है। इसने संगत जल और वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 और वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 की धारा 21 के प्रावधानों के तहत पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से "प्रचालन अनुमति" प्रमाण पत्र प्राप्त किया है जिसकी वैधता 31 अगस्त, 2013 तक है।

7.57 Åtk lj{k.k% चालू वित्त वर्ष के दौरान इस यार्ड की अब तक रिकार्ड की गई अधिकतम और न्यूनतम ऊर्जा खपत क्रमशः 99.87 और 99.04 है और औसतन 99.70 है।

7.58 ऊर्जा संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए हैं/प्रचालन में है:–

(क) हॉट मील कैंटीनों में पानी को गर्म करने के लिए सौर ऊर्जा से चलने वाली प्रणालियां स्थापित की गई हैं।

(ख) कोयला, बिजली, पेट्रोलियम जैसे ईंधन के उपयोग को कम करने के लिए जीआरएसई की सभी यूनिटों में प्रत्येक वर्ष ऊर्जा लेखा परीक्षा (एनर्जी आडिट) की जाती है और

सिफारिशों को कार्यान्वित किया जाता है। इस मापदंड को भी वार्षिक 'समझौते ज्ञापन' में शामिल किया जाता है।

(ग) बैटरी से चलने वाले मटीरियल हैडलिंग उपकरणों को अपनाना और प्रकाश प्रणालियों के लिए इलेक्ट्रानिक बैलास्ट को ज्यादा से ज्यादा स्थापित करना।

(घ) नये कार्यालयों और विभागों में प्रकाश के लिए सीएफएल, टीएल 5 प्रकाश उपकरण, एलईडी प्रकाश उपकरण, सौर ऊर्जा चलित एलईडी आधारित स्ट्रीट लाइट को ही इस्तेमाल में लाया जा रहा है। इस प्रकार की फिटिंग्स विस्तृत रूप से मौजूदा प्रकाश उपकरणों को प्रतिस्थापित भी कर रही हैं।

(ङ) स्टार रेटिंग वाले विन्डो एसी को अपनाया गया है। एसी संयंत्रों में सोलिड स्टेट नियंत्रण प्रणाली, ऊर्जा किफायती कम्प्रेशरों का उपयोग शुरू किया गया है।

(च) ऊर्जा की खपत लगभग 2% तक कम करने के लिए एलिवेटर्स की पुनःर्सज्जा के दौरान एलिवेटर्स में वीवीवीएफ किस्म की नियंत्रण प्रणालियां इस्तेमाल में लाई गई हैं।

xkok f'ki;kMl fyfeVsM ¼th,l,y½

7.59 गोवा शिपयार्ड लिमिटेड सबसे नया और सबसे छोटा रक्षा शिपयार्ड है। वर्ष 1957 में एक छोटे बार्ज मरम्मत और विनिर्माण यार्ड के रूप में एक छोटी सी शुरूआत से विकास करते हुए गोवा शिपयार्ड लिमिटेड एक ऐसे प्रतिष्ठित प्रतिस्पर्धी शिपयार्ड की हैसियत तक आ पहुंचा है जो भारतीय नौसेना एवं तटरक्षक बल के लिए अपेक्षित उच्च प्रौद्योगिकी वाले अत्याधुनिक पोतों के स्वदेशी अभिकल्पन एवं उनका निर्माण करने में सक्षम है। गोवा शिपयार्ड लिमिटेड को मार्च, 2007 में गौरवशाली लघु रत्न श्रेणी–I का दर्जा दिया गया है।

7.60 वर्ष के दौरान भारतीय नौसेना के लिए 1 पाल प्रशिक्षण पोत और सरदार सरोवर नर्मदा लिमिटेड के लिए 1 जीआरपी नौका की सुपुर्दगी की गई है।

पाल प्रशिक्षण पोत

5 टी जीआरपी नौका

7.61 यह यार्ड, प्रौद्योगिकी और कार्य के संदर्भ में भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक आधुनिकीकरण योजना को कार्यान्वित करने की प्रक्रिया में लगा हुआ है। इस योजना को 800 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से चार चरणों में पूरा किया जाएगा। रक्षा मंत्री द्वारा 21 मई, 2011 को बर्थ और जेट्टी के निर्माण के साथ 6000टी शिप लिफ्ट प्रणाली की स्थापना सहित चरण 1 और 2 की कमीशनिंग की गई थी और चरण 3 और 4 की नींव रखी गई थी। चरण 3 और

4 के अधीन बनाई गई सुविधाओं में माड्यूलर निर्माण के लिए नया हल फेब्रीकेशन और आऊटफिटिंग शॉप और भारतीय नौसेना के लिए एमसीएमवी के निर्माण हेतु जीआरपी काम्पलेक्स शामिल हैं।

7.62 mRiknu vkj vuqla/kku ,oa fodkl dk;ZØe% अपने उत्पादों के डिजाइन एवं विकास के लिए जीएसएल अपने स्वयं के अनुसंधान एवं विकास कार्यकलाप करता है। 30 वर्ष के अनुसंधान एवं विकास के फलस्वरूप नई पोत निर्माण परियोजनाएं इसके स्वयं के डिजाइन पर आधारित हैं। यह उल्लेखनीय है कि जीएसएल द्वारा स्वदेश में ही गश्ती जलयानों के डिजाइन के विकास से पोतों/डिजाइनों के आयात से बचते हुए देश की काफी विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। इससे पोत डिजाइन में आत्मनिर्भरता हासिल करने के देश की प्रयासों को प्रोत्साहन मिला है।

आधुनिकीकरण चरण 1 एवं 2 के अधीन सुविधाओं का विहंगम दृश्य

7.63 fofo/krk% जीएसएल ने अपने व्यापार संबंधी कार्यकलापों का विविधीकरण किया है, निम्न परियोजनाएं कार्यान्वयनाधीन हैः–

(क) भारतीय नौसेना के लिए कोच्ची में क्षति नियंत्रण सिमुलेटर

(ख) आईएनएस हंसा में तट आधारित परीक्षण सुविधा

(ग) स्टर्न गियर प्रणालियों के लिए आपूर्ति, संस्थापन और सेवा सहायता।

7.64 i;koj.k % जीएसएल ने अपेक्षित सांविधिक आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए विभिन्न उपाय शुरू किए हैं और साथ के साथ ऊर्जा संरक्षण उपाय भी किए हैं जो इस प्रकार हैः–

(क) उप स्टेशनों में तत्काल प्रकाश के लिए सौर प्रकाश की व्यवस्था करना।

(ख) डिब्बा और शौचघर के लिए ओकुपेंसी सेंसर लगाना।

(ग) केन्द्रीकृत कम्प्रेशर यूनिट के लिए वेरियबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव लगाना।

7.65 dkjikjV xoZual% जीएसएल ने "सीपीएसई 2010 के लिए कारपोरेट गर्वेनेंस संबंधी दिशा– निर्देशों" को कार्यान्वित किया है और हाल ही में बोर्ड के सदस्यों और वरिष्ठ प्रबंधकों के लिए बनी व्यवसाय संबंधी आचार संहिता और आचार नीति को संशोधित किया है। जीएसएल के निदेशक बोर्ड में पूर्णकालिक कार्यात्मक निदेशक, सरकारी निदेशक और स्वतंत्र निदेशक शामिल होते हैं।

7.66 ekuo lalk/ku% कुछ कार्यकलाप इस प्रकार हैः

(क) fu'kä 0;fä;k% vuqlfpr tkfr@vuqlfpr tutkfr@vU; fiNM+k oxZ dk dY;k.k% जीएसएल, आरक्षण के लाभों को निशक्त व्यक्तियों को उपलब्ध कराने के लिए निशक्त व्यक्ति अधिनियम, 1995 (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण सहभागिता) के प्रावधानों का पालन करता रहा है।

(ख) efgyk l'kfädj.k% जीएसएल में महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी गई है। महिला कर्मचारी के अधिकारों का संरक्षण किया जाता है और उनके साथ पुरुष

कर्मचारी जैसा समान व्यवहार किया जाता है।

(ग) lh,lvkj dk;ldyki% गोवा शिपयार्ड लिमिटेड के कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में विभिन्न स्वैच्छिक प्रयास शामिल हैं जो कंपनी स्वयं करती है ताकि एक बेहतर कारपोरेट नागरिक के रूप में समुदाय के जीवन की गुणता में सुधार लाते हुए सामाजिक विकास के प्रति वह अपना योगदान दे सके।

(घ) कंपनी ने कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को कार्यान्वित करने के लिए एक बेस लाइन सर्वेक्षण और आवश्यकता आकलन हेतु 7 फरवरी, 2011 को टाटा समाज विज्ञान संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

(ङ) डीपीई के दिशा–निर्देशों के अनुसार एक नई कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व संबंधी नीति बनाई और सीएसआर परियोजनाओं, प्रशिक्षण, मानीटरी, प्रभाव मूल्यांकन और प्रमुख घटनाओं/प्रकाशन के लिए गैर सरकारी संगठनों को पैनलबद्ध करते हुए सीएसआर परियोजनाओं के कार्यान्वयन को सुकर बनाने के लिए एनसीएसआर केन्द्र के साथ एक समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

7.67 ijLdkj% जीएसएल ने निम्नलिखित पुरस्कार जीतेः

(क) वर्ष 2009-10 के लिए 'श्रेष्ठ कार्य निष्पादन शिपयार्ड' के लिए रक्षा मंत्री पुरस्कार।

(ख) प्रणोदन प्रणाली का इन–हाउस डिजाइन एवं विकास, एकीकरण और मशीनरी नियंत्रण के लिए वर्ष 2009-10 के लिए 'डिजाइन प्रयासों' के लिए रक्षा मंत्री पुरस्कार।

(ग) लघु रत्न और अन्य श्रेणी में आईसीसी पीएसई उत्कृष्टता पुरस्कार।

(घ) कारपोरेट ग्लोबल एचआर एक्सलेन्स पुरस्कारों में सृजनात्मक मानव संसाधन पद्धति पुरस्कार, 2010–11।

fgUnLrku f'ki;kMl fyfeVM ¼,p,l,y½

7.68 हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल) भारत के रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग के अधीन सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का रक्षा उपक्रम है। यह पोत परिवहन, तेल और रक्षा क्षेत्रों के भारी वाहन, यात्री पोत, टग, सर्वेक्षण पोत, ड्रिल शिप, अपतटीय और उपतटीय गश्ती जलयानों, ड्रैजरों, ऑयल टैंकरों, तेल रिगो और परंपरागत पनडुब्बियों आदि के निर्माण और मरम्मत संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह यार्ड ओएनजीसी के लिए 11 वेलहैड प्लेटफार्मों सहित अब तक 164 जलयानों का निर्माण व सुपुर्दगी कर चुका है और विभिन्न ग्राहकों के लिए लगभग 1870 जलयानों और भारतीय नौसेना के लिए एक एफ श्रेणी की पनडुब्बी की मरम्मत कर चुका है। 877 ईकेएम पनडुब्ब्यों का आधुनिकीकरण व रिफिटिंग की जा रही है। पोत निर्माण एक असेम्बली उद्योग होने के कारण बहुत ही जटिल इंजीनियरी और श्रम आधारित उद्योग है जिसमें काफी मानव प्रयास किए जाने भी शामिल होते हैं। डिजाइन एवं ड्राइंग कार्यालय में व्यापारिक पोतों, भारी पोतों (बल्कर्स), टगों आदि के डिजाइन कार्य पर लगभग 100 डिजाइन इंजीनियर लगे हुए हैं। डिजाइन कार्यालय ने "मानक फ्लैक्सीबल डिजाइन" के तहत 14000 डीडब्ल्यूटी से 30,000 डीडब्ल्यूटी के पोतों (बल्कर्स) और टगों के लिए इन हाउस डिजाइन का विकास किया है।

7.69 एचएसएल के पास नवीनतम ट्रिबोन 3एम और आटोकेड 2008 पोत निर्माण साफ्टवेयर से सुसज्जित डिजाइन सुविधा है।

7.70 यार्ड की आधारभूत अवसंरचना का उन्नयन किया गया और आज यह 8000 डीडब्ल्यूटी के वाष्प

चलित जलयानों से 53000 डीडब्ल्यूटी के डीजल चलित पोतों (बल्कर्स) का निर्माण कर रहा है। रिवेटिंग चरण से अर्ध स्वचालित/स्वचालित वेल्डिंग चरण तक और 1950 में अधिकतम 5 टन इस्पात से निर्मित ब्लॉक से 250-300 टन ब्लॉक तक पहुंचते हुए प्रौद्योगिकी का उन्नयन किया गया है।

7.71 एचएसएल का दृष्टिकोण सर्वोत्तम शिपयार्डों में से एक शिपयार्ड बनना है ताकि इसके पास कंपनी को ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए पर्याप्त क्षमता मौजूद हो।

7.72 mRiknu dk;Øe%

fuekk.kk/khu t y;ku

एमवी गुड ट्रेड 53,000 डीडबल्युटी बल्कर

आईएनएस रानी, अब्बाका उपतटीय गश्ती जलयान

7.73 lpuk iki|kfxdh% एचएसएल ने वर्ष के दौरान निम्न कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया :–

(क) एचएसएल में ई-अधिप्राप्ति शुरू करने की पहल की जा रही है और उसे मार्च, 2012 में कार्यान्वित किए जाने की संभावना है।

(ख) एचएसएल के सभी सरकारी पत्र-व्यवहार की और अधिक गोपनीयता और सुरक्षा की बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय सूचना विकास केन्द्र डाक सेवा शुरू की गई है।

(ग) समूह नीति का इस्तेमाल करते हुए नेटवर्क सुरक्षा को कार्यान्वित किया गया।

7.74 i;koj.k lqj{kk% एचएसएल निरंतर पर्यावरण अनुकूल कंपनी रही है और इसने केन्द्र और राज्य के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों की सांविधिक अपेक्षाओं को पूरा किया है। यह पर्यावरण को बनाए रखने और उसके संरक्षण हेतु सभी विनिर्धारित मानकों को पूरा करने के लिए वचनबद्ध है।

7.75 vuqlfpr tkfr% हिन्दुस्तान शिपयार्ड अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति कल्याण संस्था जो एक निर्वाचित निकाय है, एचएसएल के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करता है। एचएसएल का प्रबंधन अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के कार्मिकों को अपने प्रतिनिधियों को चुनने के लिए चुनाव का सुचारू ढंग से आयोजन करने और उनके कल्याण कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए कार्यालय उपलब्ध कराने और उनकी शिकायतों को प्रबंधकों के साथ उठाने के लिए अपना सहयोग देती है। सरकार द्वारा समय–समय पर जारी निर्देशों के अनुसार रोजगार में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लोगों को आरक्षण दिए जाने की बात का अनुपालन किया जा रहा है।

7.76 foÙkh; iqu%lajpuk% मंत्रालय ने वित्तीय पुनःसंरचना पैकेज के लिए 824.90 करोड़ रुपए का अनुमोदन किया है जो निम्नानुसार है:–

i) बैंक के पुराने देयों, कर्मचारियों को बकाया राशि, बकाया कर और अन्य दायित्वें को चुकाने के लिए सहायता अनुदान के रूप में 452.68 करोड़ रुपए (चार सौ बावन करोड़ और अड़सठ लाख रुपए) दिए गए हैं।

ii) ब्याज सहित मौजूदा सरकारी ऋण और एसबीआई से ऋण के प्रति 372.22 करोड़ रुपए (तीन सौ बहत्तर करोड़ और बाइस लाख रुपए) के सरकारी गारंटी शुल्क को ब्याज रहित निरन्तरता वाले ऋण में बदल दिया गया है।

7.77 vk/kqfudhdj.k% यार्ड का आधुनिकीकरण किया जाना अपेक्षित है ताकि वह भविष्य में अत्याधुनिक रक्षा पोतों के निर्माण के लिए अपनी क्षमता और दक्षता में वृद्धि कर सके।

7.78 रक्षा मंत्रालय ने पुरानी पड़ी मशीनरी/आधारभूत अवसंरचना के आधुनिकीकरण/उन्नयन के लिए 457.36 करोड़ रुपए की मंजूरी दी है।

7.79 vuqla/kku ,oa fodkl % यद्यपि अलग से कोई अनुसंधान एवं विकास विभाग का गठन नहीं किया था तो भी एचएसएल ने विभिन्न क्षमता वाले बोलार्ड पुल टगों के अलावा मानक फ्लैक्सीबल डिजाइन के अधीन 14,000 डीडब्ल्यूटी, 30,000 डीडब्ल्यूटी के पोतों (बल्कर्स) के लिए अपने स्वयं के (इन हाउस) डिजाइन का विकास किया है।

ekÖkxkao Mkd fyfeVM ¼,eMh,y½

7.80 कंपनी को सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम के रूप में 14 मई, 1960 को निगमित किया गया था और इसने पिछले वर्ष अपनी स्वर्ण जयंती मनाई है। कंपनी जो 1960 में पोत मरम्मत यार्ड था अब विश्व के प्रमुख युद्धपोत निर्माण यार्डों में से एक है।

7.81 माझगांव डाक लिमिटेड सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम के शिपयार्डों में एक सबसे अग्रणी शिपयार्ड है जो युद्धपोतों ओर पनडुब्बियों के निर्माण में लगा हुआ है। वर्तमान में यह यार्ड परियोजना पी–17 के अंतर्गत अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के स्टील्थ फ्रिग्रेटों, परियोजना पी–15ए के अंतर्गत प्रक्षेपास्त्र विध्वंसकों और परियोजना पी 75 के अंतर्गत स्कोर्पियन पनडुब्ब्यों का निर्माण कर रहा है।

7.82 एमडीएल ने 9 जुलाई, 2011 को पी 17 फ्रिग्रेट श्रेणी के आईएनएस सतपुड़ा द्वितीय पोत की सुपुर्दगी की। आईएनएस सतपुड़ा जैसे सतह पर तैरने वाले शक्तिशाली जंगी जहाज नौसेना बेड़े में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को जोड़ेंगे और राष्ट्र के हितों को समर्थन देने के लिए पूर्ण रूप से सहायक सिद्ध होंगे। अपने जलावतरण के बाद से सतपुड़ा राष्ट्र की सेवा में निःसंदेह रूप से एक समर्थ योगदान देगा और भारतीय नौसेना को इसकी महासागरों में आने जाने की क्षमता को और अधिक बल प्रदान करेगा।

7.83 उपलब्धियों से संतुष्ट न होकर और यह महसूस करते हुए कि इसे भविष्य में निजी शिपयार्डों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना होगा, माझगांव डॉक लिमिटेड ने अत्याधुनिक उपकरणों से लैस एक ऐसे वर्चुयल रियलटी केन्द्र की स्थापना की है जो त्रि–आयामिक रूप से एक स्टीरियोस्कोपिक जलमग्न परिवेश में संपूर्ण पोत को काल्पनिक तौर पर देखने हेतु 3डी माडलिंग साफ्टवेयर की मदद करेगा और इस प्रकार वह डिजाइन के शुरूआती चरण में कई ले–आउट संबंधी मामलों को हल करने में समर्थ हो पा रहा है। एमडीएल ने ई–अधिप्राप्ति के माध्यम से अधिप्राप्ति प्रक्रिया भी शुरू की है। परंपरागत सामान्य (मैनुअल) निविदा के विकल्प के तौर पर यह निविदा प्रक्रिया सरल और पारदर्शी होगी। ई–अधिप्राप्ति में खरीद करने का पूरा चक्र, ग्राहक और आपूर्तिकर्त्ताओं से संपर्क स्थापित करना, निविदा, सूची पत्र, संविदा, क्रय आदेश, बीजक आदि का इलेक्ट्रानिक रूप से आदान–प्रदान करना शामिल है। ई–अधिप्राप्ति समाधान से बेहतर छवि और पारदर्शिता, लागत में कमी, बेहतर निर्णय लेने, कुशल प्रक्रिया, लेखा परीक्षण, मूल्य/

आपूर्तिकर्त्ता व्यवहार पूर्वानुमान, आपूर्तिकर्त्ताओं के कार्य निष्पादन की मानीटरी जैसे लाभ प्राप्त होने की आशा की जाती है।

7.84 i;koj.k% कंपनी, केन्द्र तथा राज्य के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों की सभी सांविधिक अपेक्षाओं को पूरा करती है। कंपनी, हरित आवरण वर्षा जल संग्रहण और कूड़ा–कचरा खाद परियोजना के विकास द्वारा पर्यावरण को बनाए रखने व उसका संरक्षण करने के लिए सभी निर्धारित मानकों को पूरा करने के लिए वचनबद्ध है और ये परियोजनाएं तैयार की जा रही हैं।

7.85 Åtk lj{k.k% ऊर्जा बड़ी कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण कार्यकलाप बन गया है। ऊर्जा संरक्षण के लिए एमडीएल ने भी प्रभावी कदम उठाए हैं जिसमें ट्यूब लाइट को ऊर्जा किफायती ट्यूब लाइट से प्रतिस्थापित करना, ऊर्जा की बड़ी खपत करने वाले पुराने विन्डो एयर कंडीशनरों को 3स्टार रेटिंग वाले नवीनतम एयरकंडीशनरों से प्रतिस्थापित करना और वेरियबल फ्रीक्वेंसी ड्राइव नियंत्रण के साथ क्रेनों की ईओटी प्रणाली का आधुनिकीकरण करना और पुराने कंप्रेशर को वेरियबल फ्रीक्वेन्सी ड्राइव नियंत्रण युक्त नए स्क्रू टाइप एलपी एयर कंप्रेसर से बदलना शामिल है। कंपनी 3 डीजल वाहनों को सीएनजी में बदलने का काम भी पूरी कर चुकी है। कंपनी, वर्षा जल संग्रहण करने के कार्य की ओर भी अग्रसर है और वह भवनों में सौर ऊर्जा पैनल लगाकर गैर–परंपरागत ऊर्जा को उपयोग में ला रही है।

7.86 vk/kqfudhdj.k% कंपनी लगभग 826 करोड़ रुपए की कुल लागत पर अवसंरचना और प्रौद्योगिकी के उन्नयन के लिए एक आधुनिकीकरण योजना पर कार्य रही है जिसमें मुख्यतः 300 टन गोलियाथ क्रेन का निर्माण, माड्यूलर वर्कशॉप का सृजन और अतिरिक्त वेट बेसिन का निर्माण शामिल है। इन सुविधाओं के पूरा हो जाने पर आशा है कि युद्धपोतों/पनडुब्ब्यों के निर्माण में लगने वाले समय में कमी आएगी।

chb,e,y fyfeVM

7.87 बीईएमएल लिमिटेड, रक्षा मंत्रालय के अधीन एक लघु रत्न (श्रेणी–I), बहु–स्थानिक, बहु उत्पादी कंपनी है जो विभिन्न खनन एवं निर्माण उपस्करों, रक्षा एवं एरोस्पेस उत्पादों और रेल एवं मेट्रो रेल उत्पादों के डिजाइन, विनिर्माण, विपणन एवं बिक्री पश्चात सेवा

बीईएमएल डंपर– बीएच 35–2

स्टेनलेस इस्पात ईएमयू

बीईएमएल टेट्रा ब्रह्मोस 12x12

संबंधी कार्यों में लगी हुई है। कंपनी प्रमुख क्षेत्रों जैसे कि रक्षा, एरोस्पेस, कोयला/गैर कोयला खनन, सीमेंट, ऊर्जा, सिंचाई, आधारभूत अवसंरचना क्षेत्र, रेल और मेट्रो परिवहन प्रणाली को अपनी सेवाएं देती है।

7.88 chbl,e,y की स्थापना 1964 में की गई थी। इसके निगम मुख्यालय और केन्द्रीय विपणन प्रभाग बेंगलुरु में स्थित हैं एवं चार विनिर्माण परिसर बेंगलुरु, मैसूर, कोलार गोल्ड फील्ड्स और पालक्काड में हैं। कंपनी की तरीकरे, कर्नाटक में स्थित विज्ञान उद्योग लिमिटेड नामक एक सहायक कंपनी भी है जो इस्पात कास्टिंग का उत्पादन करती है। कंपनी का बिक्री एवं सेवा कार्यालयों का एक देशव्यापी नेटवर्क है तथा प्रमुख ग्राहकों के अति समीप्य में हिस्से–पुर्जे का डिपो है।

7.89 vk/kfudhdj.k] vf/kxg.k ,o foLrkj d ek/;e l {kerk lo/ku% विस्तार और विविधीकरण की योजनाओं के साथ कंपनी की बड़ी व्यापारिक केन्द्र बनने के बड़े स्वप्न को बराबरी के पूंजीगत व्यय उचित अवसरों को पहचानने की योग्यता और उभरते हुए अवसरों का लाभ उठाने, एक निर्धारित समय सीमा के भीतर नई और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी की पहचान करने व उन्हें लाने के लिए गतिशीलता प्रदान करने, उत्पादन क्षमता को वृहद करने एवं उसमें विविधता लाने, प्रौद्योगिकी अंतरण में प्रवेश करने, श्रमिक उत्पादकता एवं अनुशासन में वृद्धि करने की क्षमता बनाने तथा उचित व्यापार अनुकृति को अपनाने द्वारा उचित तौर पर समर्थित थी। विनिर्माण क्षमता बढ़ाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी। पूंजी आबंटित की गई थी एवं सभी उत्पादन इकाइयों में संयंत्रों और मशीनों के उन्नयन और आधुनिकीकरण क्षमता का संवर्धन करने के कार्य शुरू किए गए थे।

7.90 कंपनी ने कारोबार विस्तार के लिए प्राथमिक आवश्यकता के रूप में उत्पादन अवसंरचना को बढ़ाने व उसका आधुनिकीकरण करने को पहचानते हुए 2007–08 से अनेक वर्षों में पहली बार बड़ी मात्रा में पूंजीगत व्यय किया अन्यथा इसकी मात्रा काफी कम होती थी। इसके अलावा, भविष्य की कारोबारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण विस्तार उपाय के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत गोल्ड माइन्स लिमिटेड (बीजीएमएल) के साथ लगे हुए दो कारखानों के साथ लगी हुई 1109 एकड़ भूमि को अर्जित करके केजीएफ में विनिर्माण अवसंरचना का संवर्धन किया है। तब से रेल के डिब्बों (कोचों) के लिए रेल कोच इकाई–II के रूप में एक सुविधा स्थापित की गई है जो रंगरोगन सहित हिस्से–पुर्जों का उत्पादन करने से लेकर संपूर्ण कोच का निर्माण कर रही है और प्रतिदिन 01 कोच की दर से कोच तैयार कर रही है। हैबी फैब्रीकेशन यूनिट के रूप में स्थापित अन्य यूनिट एचएफयू (अन्य प्रभागों के लिए फीडर यूनिट) अब धीरे–धीरे बढ़कर उपकरणों की एक पूर्ण असेम्बली करने वाली यूनिट के रूप में परिणित हो चुकी है।

7.91 xhu QhYM m|e% एक अन्य महत्वपूर्ण उपाय के रूप में कपनी ने कर्नाटक के बाहर भी विनिर्माण सुविधाओं को बढ़ाया है और पालक्काड, केरल में विशेषकर रक्षा संबंधी विनिर्माण के लिए बीईएमएल की ग्रीन फील्ड परियोजना– पालक्काड विनिर्माण परिसर को शुरू किया है और इस प्रकार कंपनी के राजस्व को बढ़ाने के लिए रेल और मेट्रो तथा रक्षा व्यापार क्षमता को बढ़ाया है। पालक्काड, केरल में नए परिसर की स्थापना की गई है और इसमें मई, 2010 से उत्पादन शुरू हो चुका है।

7.92 ckmu QhYM m|e% foKku vkj vk|kfxd fyfeVM ¼ohvkbl,y½& chbl,e,y dh lgk;d diuh% बीईएमएल की इस्पात कास्टिंग की बढ़ती हुई बाध्यकारी आवश्यकताओं को पूरा करने के फास्ट लूप नो बेक मोल्डिंग मशीन में निवेश किया गया ताकि क्षमता को 6000 टन से ऊपर बढ़ाया जा सके।

7.93 [kuu vkj lEc) e'khujh fuxe ¼,e,,elh½% बढ़ती हुई पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण खनन कंपनियां, विशेषकर सीआईएल, ओपेन कास्ट से भूमिगत खनन में जाने की योजना बना रही

हैं। बीईएमएल पहले से ही कुछ भूमिगत खनन उपकरणों का उत्पादन कर रही है। उच्च प्रौद्योगिकी वाले भूमिगत उत्पादों की बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा करने के लिए बीईएमएल ने 100 करोड़ का निवेश करके सरकार के स्वामित्व वाली कोल इंडिया लिमिटेड और दामोदर घाटी निगम के साथ एक संयुक्त उद्यम का गठन करके पश्चिम बंगाल स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के एक बीमार उपक्रम, माइनिंग एण्ड अलाइड मशीनरी कारपोरेशन (एमएएमसी) जो भूमिगत खनन उपकरणों के विनिर्माण में लगी हुई थीं की परिसंपत्तियों को अर्जित किया है। बीईएमएल की इस अर्जित उद्यम में 48% की हिस्सेदारी है जबकि कोल इंडिया लिमिटेड और दामोदर घाटी प्रत्येक की 26% की हिस्सेदारी है एमएएमसी परिसंपत्तियों की यह खरीद और संयुक्त उद्यम कंपनी एमएएमसी उद्योग लिमिटेड का गठन बीईएमएल को इस क्षेत्र में अपनी उत्पादन श्रृंखला को सीआईएल और डीवीसी के साथ अगले 10 वर्षों के लिए सुनिश्चित कारोबार को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। यह बीईएमएल को सतह और भूमिगत खनन दोनों के लिए अपेक्षित सभी उपकरणों की आपूर्ति में वैश्विक लीडरों के साथ यथापेक्षित उचित प्रौद्योगिकी गठजोड़ बनाने का अवसर प्रदान करेगा। प्रसंगवश यह नोट किया जाए कि बीईएमएल एशिया में पहली ऐसी कंपनी होगी जो एक जगह से ही सतह खनन और भूमिगत खनन उत्पादों का विनिर्माण करेगी।

7.94 इसके अलावा, बीईएमएल निम्नलिखित के साथ वर्तमान में अपनी उत्पाद मदों को बढ़ा रहा हैः–

(क) केजीएफ में अपने विश्वस्तरीय परीक्षण ट्रैक का इस्तेमाल करते हुए एआरवी एवं इससे संबंधित उत्पादों का विनिर्माण।

(ख) ट्रांसमिशन, फाइनल ड्राइव एवं इंजन से युक्त पावर पैक मुख्य युद्धक टैंक के लिए उपांगों और हिस्से पुर्जों का विनिर्माण।

(ग) मुख्य युद्धक टैंक बीएमपी–II की प्रस्तावित ओवरहॉलिंग।

(घ) टैंक एवं इससे संबंधित सारे उत्पादों के लिए हिस्से–पुर्जों एवं उपांगों का विनिर्माण।

7.95 **fofo/khdj.k% xhu QhYM ifj;kstuk%**

(i) **,;jks Lisl fofuekZ.k iHkkx%** कंपनी ने रक्षा आफसेट नीतियों को ध्यान में रखते हुए अंतरिक्ष अनुप्रयोग में उभरते हुए अवसरों का पूर्वानुमान लगाया है और इस प्रकार मैसूर निर्माणी में एयरोस्पेस अनुप्रयोग के लिए ग्राउण्ड हैण्डलिंग उपकरण, टूलिंग और घटकों के विनिर्माण के लिए इस प्रभाग को शुरू किया गया था।

(ii) **Msztj midj.k fofuekZ.k iHkkx%** एक प्रमुख पहल के रूप में कंपनी ने उभरते अवसरों का लाभ उठाने के लिए ड्रेजर उपकरण विनिर्माण कारोबार में प्रवेश किया है और मैसूर में एक ड्रेजर प्रभाग का गठन किया है।

(iii) **V\sd fcNkus dk 0;olk;& vol\jpuk fodkl lsok,a%** रेल एवं मेट्रो क्षेत्र में अपनी महत्वकांक्षी वृद्धि योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए बीईएमएल ने भारतीय रेलवे, विभिन्न भारतीय मेट्रो निगमों के लिए पटरी बिछाने संबंधी कार्य और कोयला आधारित नए ताप विद्युत संयंत्रों के लिए मेरी–गो–राउण्ड ट्रैक्स के लिए भी पटरी बिछाने के व्यवसाय में प्रवेश किया है।

(iv) **leÆir ekyHkkM+k xfy;kjk%** बीईएमएल जो पहले से ही रेल क्षेत्र में यात्री परिवहन व्यवसाय में लगा हुआ है ने मालभाड़ा परिवहन के व्यवसाय में प्रवेश किया है। बीईएमएल तैयार हो रहे डेडीकेटेड फ्राइट कॉरीडोर परियोजना की आवश्यकताओं का अनुमान करके पहले ही अल्युनियम वैगनों और स्टेनलैस स्टील वैगनों का निर्माण कर चुका है।

7.96 **vuqla/kku ,oa fodkl dk;ZØe%** कंपनी के पास एक सुस्थापित अनुसंधान एवं विकास ढांचा है जो भारत में अपने प्रकार का सबसे बड़ा है। यूएनडीपी की सहायता से अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं की

स्थापना की जाती है और इन्हें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा मान्यता दी जाती है । बीईएमएल का अनुसंधान एवं विकास के मुख्य कार्यकलापों में नए उत्पादों और डोजरों, डंपरों, भूमि खोदने वाले यंत्रों, भार ढोने वाले यंत्रों जैसे उत्पादों के हिस्से–पुर्जों और अन्य रक्षा तथा रेल उत्पादों का अभिकल्पन और विकास, प्रौद्योगिकी विलयन, स्वदेशीकरण, कंपनी के मानकीकरण कार्य शामिल हैं। अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं में पावर लाइन प्रयोगशाला, ढांचागत अभियांत्रिकी प्रयोगशाला, फ्लूड पावर प्रयोगशाला, पदार्थ विज्ञान प्रयोगशाला, इलेक्ट्रानिकी और यांत्रिकी प्रयोगशाला, प्रोटोटाइप शॉप शामिल हैं।

7.97 विश्व स्तर पर प्रौद्योगिकी का पता लगाने के लिए कारपोरेट स्तर पर अलग से एक प्रौद्योगिकी सेल बनाया गया है और कंपनी विश्व के प्रमुख अग्रणी कंपनियों के साथ विभिन्न प्रौद्योगिकी गठजोड़ कर सकी। कंपनी द्व ारा अपने अनुसंधान और विकास कार्यों को भी बढ़ावा दिया गया था और अनुसंधान एवं विकास संबंधी व्यय के लिए आवश्यक संसाधन भी मुहैया कराए गए थे जिसके परिणामस्वरूप अनेक नए उत्पादों का विकास हुआ। उपर्युक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप नए/ उन्नत किए गए उत्पादों की भागीदारी कुल कारोबार के 29% से अधिक है। इसके कुछ विशिष्ट उत्पाद खंडों में बाजार में हिस्सेदारी को बनाए रखने तथा इसे बढ़ाने में भी मदद मिली है। कंपनी ने वर्ष 2011-12 के अनुसंधान एवं विकास व्यय हेतु अपने बिक्री कारोबार का 1.8% नियत किया है।

7.98 ?kjsyw ¼bu&gkml½ vuqla/kku ,oa fodkl }kjk 'kq: fd, x, mRikn% घरेलू अनुसंधान एवं विकास को भी मजबूती प्रदान की गई और आवश्यक निधियां उपलब्ध करवाई गई जिसके परिणामस्वरूप कई उत्पादों का विकास हुआ जैसे कि बीई 1250 एक्सकैवेटर, बी एच 150ई डम्पर, बीएच 205ई डम्पर, बीजी 405ए मोटर ग्रेडर, बीई450 एक्सकैवेटर, ग्रैड बीएम 21, मल्टी बैरल राकेट लांचर सिस्टमस (एमबीआरएलएस), फील्ड आर्टीलरी ट्रैक्टर (एफएटी) 6X6, भारतीय रेल के लिए ओएचई कार।

7.99 fu;kZr% बीईएमएल ने मार्च, 2011 तक लगभग 2800 करोड़ रुपए के सामान/सेवाओं का निर्यात किया। विगत तीन वर्षों में बीईएमएल ने 678 करोड़ रुपए से अधिक का निर्यात किया और इस प्रकार यह एक *LVkj fu;kZrd* से आगे बढ़कर एक *0;kikfjd ?kjkuk* हो गया है। वर्ष 2010-11 के दौरान 217 करोड़ रुपए का निर्यात था। इसने नए देशों जैसे जिम्बाब्वे, थाइलैंड, घाना, श्रीलंका इत्यादि में नए बाजारों में सफलतापूर्वक प्रवेश किया।

7.100 dkjkckj dh ifr n'kku ,oa Hkfo"; dh ;kstuk,% कंपनी ने आरंभिक तौर पर वर्ष 2013-14 तक 5000 करोड़ रुपए की बिक्री प्राप्त करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है और जैसाकि ऊपर बताया गया है अनेक महत्वपूर्ण पहलों को अपनाया है– जैसे कि विस्तार, विविधीकरण, पुनर्संरचना, प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण, संयुक्त उद्यम, मानव संसाधन संबंधी पहलें इत्यादि। इन सभी आरंभिक पहलों से 2011-12/2012-13 में 5000 करोड़ रुपए प्राप्त करने के लिए योजनाएं चल रही हैं। इसलिए कंपनी ने 2018-19 तक 10,000 करोड़ रुपए के अगले लक्ष्य के साथ विजन और रणनीति का पुनर्निधारण किया है और इसे अपनी कारपोरेट योजना-II के जरिए प्राप्त करने के लिए रोड मैप बना रहा है।

7.101 xq.koÙkk% प्रभागों में विभिन्न गुणता आश्वासन दलों ने आवश्यक गुणता योजनाएं बनाई हैं एवं प्रक्रियागत निरीक्षण में जांच पत्र (चेकशीट) तैयार किए गए हैं और इसे उत्पादन कार्यशालाओं को सौंप दिया गया है एवं प्रचालकों द्वारा इसका कार्यान्वयन प्रगति पर है। असेम्बली और अंतिम परीक्षण, चरणवार चेकशीट्स की तैयारी चल रही है।

7.102 डिवीजनों में गु.नि.–गु.आ. कार्यान्वयन को तेजी प्रदान करने के लिए मैसर्स एनआईक्यूआर, चेन्नई की परामर्श सेवाओं को जनवरी, 2012 से छः महीने की

अवधि के लिए उपयोग में लाया जा रहा है।

7.103 सभी विनिर्माण डिवीजन निरंतर रूप से vkbZ,lvks 9001&2008 गुणता प्रबंधन प्रणाली (क्यूएमएस) प्रमाणीकरण बनाए हुए हैं। केजीएफ बेंगलुरु और मैसूर परिसर, आईएसओ 14001–2004 पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (ईएमएस) के लिए प्रमाणित है। बेंगलुरु परिसर, बीएस ओएचएसएएस 18001–2007 एकीकृत प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रमाणित किया गया है। इंजन प्रभाग मैसूर परिसर, एएस 9100 बी एरोस्पेस प्रमाणीकरण के लिए प्रमाणित है। आरएण्डडी की जीएफ प्रयोगशालाएं और इंजन डिवीजन मैसूर एनएवीएल प्रत्ययनों को निरंतर बनाए रखे हुए हैं।

7.104 वर्ष के दौरान, मैसर्स वीआईएल तरीकेरे ने भी गुणता प्रबंधन प्रणाली को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है और vkbZ,lvks 9001&2008 क्यूएमएस प्रमाणन प्राप्त किया है।

7.105 उत्पाद और उत्पादन गुणता में निरंतर सुधार लाने के लिए पूरी कंपनी में गुणता सर्किल सक्रिय हैं।

7.106 dkjiksjsV 'kklu% बीईएमएल वित्तीय अनुशासन, उच्च नैतिक मानकों, पारदर्शिता और पूर्ण विश्वास पर आधारित दीर्घकालिक कारपोरेट लक्ष्यों का हमेशा अनुसरण करता है। सही माध्यमों के जरिए उच्च परिणामों की प्राप्ति बीईएमएल के कारपोरेट शासन के तरीके के सार को दर्शाता है।

7.107 i;kZoj.k vkSj oujksi.k%

(i) oujksi.k% निर्माणी परिसर/टाउनशिप में और इसके आसपास में पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण किया गया। आस–पास के क्षेत्रों में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए कंपनी की खाली पड़ी भूमि में लगभग 18 लाख विभिन्न प्रकार के एवेन्यू वृक्ष/फल देने वाले वृक्षां। के पौधों को लगाया गया।

(ii) i;kZoj.kh; iznw"k.k fu;a=d mik;% घरेलू/औद्योगिक निःस्त्रवण के परिशोधन के लिए उत्पादन इकाईयों के निर्माणी परिसरों के भीतर निःस्त्रवन परिशोधन संयंत्र बनाए गए हैं। इसके अलावा, निर्माणी और टाउनशिप के भीतर विभिन्न जगहों में निःस्त्रावण का प्राकृतिक तरीके से परिशोधन करने के लिए परिशोधन संयंत्र/आक्सीडेसन तालाब लगाए/बनाए गए हैं। निःस्त्रावण के परिशोधित जल का प्रयोग लैण्डस्केपिंग विभाग द्वारा उत्पादन इकाई में किया जा रहा है। वर्षा जल का संग्रहण, मृदा अपरदन रोकने और भूगर्भीय जल स्तर को बढ़ाने के लिए विनिर्माण परिसरों में कृत्रिम टेंकों का निर्माण कराया गया है। आइएसओ 14001 की आवश्यकताओं के अनुसार डिवीजन के निस्तारण भंडार में खतरनाक अपशिष्ट के लिए भंडारण यार्ड सुविधा का निर्माण किया गया है।

7.108 lkekftd mÙkjnkf;Ro dk;Zdyki%

(i) fo/kok iquokZl dsUæ% एक विधवा पुनर्वास केन्द्र कार्य कर रहा है जिसमें 20 महिलाएं कार्य कर रही हैं जो केजीएफ और बेंगलुरु में स्थित बीईएमएल कैंटीनों को आपूर्ति करने के लिए पापड़ बनाने का कार्य में लगी हुई हैं। बीईएमएल लिमिटेड ऐसे अकुशल ठेका श्रमिकों को जो साक्षर हैं, आन–जॉब दक्षता प्रशिक्षण प्रदान करके अवसर प्रदान कराता है जिससे कि नियमित रोजगार के लिए उनके नामों पर विचार हो सके।

(ii) vuq-tkfr@vuq-tutkfr ds vMj xzstq,V bathfu;j fo|kFkhZ;ksa ds fy, Nk=of`=% पूरे देश के इंजीनियरिंग संस्थानों में पूर्णावधिक इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम कर रहे अनु. जाति/अनु. जनजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के लिए कंपनी ने एक योजना प्रायोजित की है। इस योजना का लक्ष्य उन छात्रों को रोजगार प्रदान करना भी है जो सफलतापूर्वक इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम पूरा कर लेते हैं।

(iii) 'kkjhfjd fodykax cPpksa dk vuqnku%

बीईएमएल लिमिटेड ने कोयम्बटूर के यूनाइटेड विद्यालय शारीरिक रूप से विकलांग चार बच्चों–निवेधा, माधवन, सौदर्जन और दिलीप को 34000/रुपए (केवल चौत्तीस हजार रुपए) की वार्षिक स्पानसरशिप पर अपनाया है। प्रबंधन ने बच्चों को पीडब्ल्यूडी कोटा के तहत उचित रोजगार मिलने तक बच्चों को अपनाने की बात को निरंतर बनाए रखने का निदेश दिया है।

7.109 ijLdkj%

- बीईएमएल को एसएपी मीडिया वर्ल्डवाइड लिमिटेड द्वारा इसके "स्लो कटर" के लिए 'स्वदेशी प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता' के लिए एयरोस्पेस और

रक्षा राज्य मंत्री बीईएमएल के अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए

रक्षा पुरस्कार का विजेता घोषित किया गया।

Hkkjr Mk;ukfeDl fyfeVM ¼chMh,y½

7.110 रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत भारत डायनामिक्स लिमिटेड (बीडीएल) को जोकि एक लघु रत्न श्रेणी–I कंपनी है, वर्ष 1970 में निगमित किया गया था। बीडीएल ने टैंकरोधी निर्देशित प्रक्षेपास्त्रा i के विनिर्माण से शुरूआत की थी, लेकिन आज यह नवीनतम पीढ़ी की एटीजीएम, सतह से हवा में मार करने वाली शस्त्र प्रणालियों, सामरिक महत्व की शस्त्र प्रणालियों, लांचरों, अंतर्जलीय शस्त्रों, डिकॉयज और परीक्षण उपस्करों के विनिर्माण केन्द्र के रूप में उभरा है। कंपनी कई प्रकार के भारी वजन वाले तारपीडो और उत्कृष्ट हथियारों का उत्पादन करने की दहलीज पर खड़ा है।

7.111 कंपनी के ज्यादातर उत्पाद सिंगल शॉट डिवाइसेस हैं और इसलिए इसमें उच्चतम विश्वास की आवश्यकता होती है। इस लक्ष्य के अनुसरण में कंपनी की गुणता नीतियों का निर्धारण, मूल इनपुट स्तर से अंतिम उत्पाद को मूर्तरूप दिए जाने तक गुणता की सुनिश्चितता पर बल देते हुए किया जाता है। गुणता की चाह की परिणति उत्पादन डिवीजन, डिजाइन एवं इंजीनियरिंग डिजाइन एवं सूचना प्रौद्योगिकी डिवीजन को आइएसओ 9001:2008 प्रत्यायन प्राप्त करने के रूप में हुई है।

7.112 हथियार प्रणाली प्रौद्योगिकी में विश्व की अग्रणी कंपनियों के साथ तकनीकी सहयोग और डीआरडीओ ने कंपनी को इस योग्य बनाया है कि वह सशस्त्र बलों को प्रभावी और प्रतिस्पर्धी समाधान प्रस्तावित कर सके। बीडीएल की योजना है कि वह प्रतिस्पर्धी मूल्य पर प्रक्षेपास्त्र विनिर्माताओं के लिए परिशुद्ध उपकरणों/उप प्रणाली उपलब्ध कराने के लिए विश्व के एक प्रभावी और व्यवहार्य केन्द्र के रूप में उभरे।

7.113 कंपनी की तीन यूनिटें हैं जो कंचनबाग (हैदराबाद), भनुर (मेडक) और विशाखापट्टनम में स्थित हैं।

7.114 बीडीएल, देश में ही विकसित पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र (सामरिक युद्ध भूमि का जमीन से जमीन तक मार करने वाला प्रक्षेपास्त्र) एवं आकाश (जमीन से हवा में मार करने वाला प्रक्षेपास्त्र) दोनों प्रक्षेपास्त्र प्रणालियों का आईजीएमडीपी के अंतर्गत विनिर्माण करने के अलावा रूस के सहयोग से कोनकर–एम और इनवर (3यूवीके–20) टैंकरोधी निर्देशित मिसाइलों (एटीजीएम) और एमबीडीए, फ्रांस के सहयोग से मिलान 2–टीएटीजीएम के निर्माण में लगा हुआ है। भारतीय वायु सेना द्वारा जगुआर और एलसीए के लिए कंपनी में ही विकसित सीएमडीएस (काउंटर मेजर डिस्पेंसिंग सिस्टम) को पहले ही स्वीकार

कर लिया गया है। अन्य प्लेटफार्मों के लिए परीक्षण जारी हैं। बीडीएल, प्रौद्योगिकी अन्तर्लयन/साम्यानवेषण के लिए डीआरडीओ के साथ कंधे से कंधे मिलाकर काम कर रहा है और प्रक्षेपास्त्रों की उप प्रणालियों/उनका एकीकरण मुहैया करके सहयोग प्रदान कर रहा है। कंपनी ने एनएसटीएल विशाखापट्टनम के साथ समवर्ती इंजीनियरिंग मोड में अंतर्जलीय हथियार प्रणालियों जैसे कि उन्नत हल्के वजन वाला तारपीडो (टीएएल), भारी वजन वाला तारपीडो (वरुणास्त्र) इत्यादि के उत्पादीकरण में प्रवेश किया है। एटीजीएमएस, एडी (एयर डिफेंस) प्रक्षेपास्त्रों और हवा से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों के

इनवार (3 यूबीके-20) एटीजीएम

orleku mRikn J[kyk

आकाश एसएएम

कोनकर्स-एम एटीजीएम

आकाश एसएएम

मिलान-2टी एटीजीएम

नाग–एटीजीएम

उन्नत हल्के वजन वाला तारपीडो (टीएएल)

पनडुब्बी से छोड़े जाने वाला डिकॉय (एसएफडी)

जीवन काल को बढ़ाने के कार्यकलाप सभी तीनों सेनाओं के लिए किए जाते हैं। बीडीएल ने एक दीर्घकालिक संदर्शी योजना बनाई है जिसमें रक्षा सेनाओं की भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्कृष्ट प्रौद्योगिकियां अपनाकर नए उत्पादों के विनिर्माण की संकल्पना की गई है।

orZeku mRikn J`[kyk

7.115 u, fodkl%

(i) वर्तमान में बीडीएल, आकाश प्रक्षेपास्त्र और भू-सहायक उपकरण के लिए भारतीय वायुसेना के आर्डर को निष्पादित कर रहा है।

(ii) बीडीएल को भारतीय सेना के लिए आकाश एसएएम प्रक्षेपास्त्र के लिए प्रमुख समन्वयक के रूप में नामांकित किया गया है जिसके लिए बीडीएल ने अपनी सुविधाओं को बढ़ाने के लिए कार्रवाई शुरू की है।

(iii) बीडीएल को भारतीय नौसेना के लिए उस एलआरएसएम प्रक्षेपास्त्र के लिए प्रक्षेपास्त्र समन्वयक के रूप में नामांकित किया गया है जिसका विकास डीआरडीओ मैसर्स आईएआई, इजरायल द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है।

(iv) बीडीएल को सेना आर्डर के लिए अग्रणी समन्वयक के रूप में नामांकित किया गया है और एमआरएसएएम प्रक्षेपास्त्र के लिए प्रक्षेपास्त्र का विकास प्रगति पर है।

(v) डीआरडीएल, बीडीएल और एमबीडीए, फ्रांस का एक एकल संविदा के अंतर्गत एक त्रिपक्षीय समझौते के माध्यम से एसआर एसएएम हथियार प्रणाली का संयुक्त रूप से विकास करने व उनका उत्पादन करने का प्रस्ताव है।

7.116 lEeku@iqjLdkj@miyfC/k;k% काउंटर मेजर डिस्पेंसिंग सिस्टम के लिए इंटरमीडिएट स्तरीय परीक्षण प्रणाली (आईएलटीएस) के डिजाइन और विकास के लिए निदेशक संस्थान से स्वर्ण मयूर नयाचार पुरस्कार–2010।

7.117 कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में उत्कृष्ट आचरण के लिए भारत डायनामिक्स लिमिटेड द्वारा किए गए योगदान के सम्मान में कारपोरेट गवर्नेंस हेतु लोक उद्यम संस्थान (आईपीए) और सुबीर राहा केन्द्र से कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पुरस्कार–2011

7.118 मिधानि की स्थापना 1973 में रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति विभाग रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण

के अधीन विदेशी सहयोगियों से तकनीकी जानकारी के साथ जटिल क्षेत्रों के लिए विभिन्न उत्कृष्ट मिश्र धातुओं, टिटेनियम मिश्रधातुओं, विशेष प्रयोजन वाले इस्पात आदि के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए की गई थी। तत्पश्चात मिधानि ने रक्षा, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा क्षेत्रों के राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों के लिए विभिन्न आकार, प्रकार, रूप में उच्च कार्य निष्पादन मिश्र धातुओं का विकास, विनिर्माण किया व उनकी आपूर्ति की।

मिधानी को नवंबर, 2008 में "लघु रत्न श्रेणी–I" के दर्जे से नवाजा गया।

7.119 मिधानि को विगत आठ वर्षों से लगातार उत्कृष्ट समझौता ज्ञापन रेटिंग प्राप्त होती रही है।

7.120 हाल के दिनों में कंपनी द्वारा शुरू किए गए आधुनिकीकरण एवं उन्नयन के कार्यक्रम अपने पूरा होने के अंतिम चरण में पहुंच गए हैं जो वर्तमान वर्ष में कंपनी के कारोबार स्तर को 500 करोड़ रुपए तक ले जाने और 2015 तक 1000 करोड़ रुपए के स्तर को प्राप्त करने के कंपनी के अभियान को व्यापक मजबूती प्रदान करने का भरोसा दिलाया है।

7.121 वृद्धि की ओर मिधानि की वचनबद्धता ने इसे रक्षा क्षेत्र के लिए पारस्परिक सहयोग के द्वारा मूल्य वर्धित उत्पादों का उत्पादन करने/उन्हें परिवर्तित करने की संभावनाओं को तलाशने के लिए 16 जून, 2011 को भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड के साथ समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने और पारस्परिक हितों के विभिन्न क्षेत्रों में एक संयुक्त उद्यम चलाने व उसकी स्थापना करने के लिए गोवा शिपयार्ड लिमिटेड के साथ 14 सितंबर, 2011 को एक और अन्य समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रोत्साहित किया।

7.122 रक्षा मंत्रालय के अनुमोदन से वाइड प्लेट मिल के लिए 307 करोड़ रुपए की राशि के वित्तपोषण हेतु ओएफबी, कोलकाता के साथ एक समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए एवं शेष 200 करोड़ रुपए का वित्त पोषण, एडवांस्ड सिस्टम लाइब्रेरी (एएसएल) डीआरडीओ द्वारा किया जा रहा है।

7.123 मिधानि का लक्ष्य है कि वह उन्नत धातुओं में "सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रीय केन्द्र" के रूप में अपने दर्जे को अक्षुण्ण बनाए रखे।

7.124 e[;fcUn%

- 8 लाख रुपए की लागत से जल प्रशीतित 50 किलोवाट प्लाज्मा टार्च का देश में ही विकास किया गया जिससे कंपनी को 17 लाख रुपए की बचत हुई।
- ई–अधिप्राप्ति निविदाओं के प्रकाशन और प्रक्रम (प्रोसेसिंग) के लिए एक समर्पित ई–अधिप्राप्ति पोर्टल (eprocuremidhani. gov.in) बनाया गया है। ई–अधिप्राप्ति निविदाओं के पहले बैच को 23 दिसंबर, 2011 को प्रकाशित किया गया था। राष्ट्रीय

ऊष्मा उपचारित रिंग

मशीन से तैयार की गई रिंग

सूचना केन्द्र द्वारा इस साइट का प्रबंध किया जाता है।

7.125 vuql/kku ,oa fodkl dk;Øe% रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वर्ष 2011–12 के दौरान अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलापों पर अतिरिक्त जोर देने को प्राथमिकता दी गई है। इसके परिणामस्वरूप छः ग्रेडों का विकास हुआ (क) क्रायोजेनिक इंजन अनुप्रयोग के लिए 15–5डब्ल्यूपीएच और 12–10 पीएच इस्पात, (ख) प्रक्षेपास्त्र अनुप्रयोग के लिए फर्नी 39 और 15–5टीआईपीएच, (ग) अंतरिक्ष अनुप्रयोग हेतु सुपर्णी 214, (घ) दिसंबर, 2011 तक डीएमआर 1700 आर्मरिंग। इसके अलावा सामूहिक अनुप्रयोग के लिए निम्न मिश्र धातु के तीन ग्रेडों 80 एचएलइएस, एचवाई80 एवं एचएसएलई 100 और एरोस्पेस अनुप्रयोग हेतु टीआई 15वी–3ए का विकास किया जा रहा है। इसरो के अनुप्रयोग के लिए एसटीए वातावरण में टाइटन ग्रेड 31 क ओडी 1200एमएमXआईडी 1100एमएम X ऊंचाई 400एमएम के बड़े रिंगों को भी विकसित किया गया था।

7.126 mUu;u ,oa vk/kqfudhdj.k% 151 करोड़ रुपए के निवेश से चरण–I में परिकल्पित एक नवीनीकरण और उन्नयन कार्यक्रम को पूरा कर लिया गया है। 200 करोड़ रुपए के पूंजीगत परिव्यय से कंपनी की क्षमता उपयोगिता को बढ़ाने के लिए चरण–II का कार्यान्वयन अपने अंतिम चरण में है जिसके लिए रक्षा मंत्रालय से 100 करोड़ रुपए का वित्त पोषण है और शेष धनराशि

रक्षा राज्य मंत्री अपने मिधानि दौरे के दौरान 25 जून, 2011 को टिटेनियम और टिटेनियम एलॉय और विशेष स्टील से बने उच्च गुणता वाले बंधकों (फास्टनर्स) के उत्पादन के लिए समर्पित संयंत्र स्थापित करने के लिए आधारशिला रखते हुए

आंतरिक संसाधनों से जुटाई जाती है। इन चरणों के दौरान कार्य के लिए अपनाए गए प्रमुख उपकरण हैः– 6.5 एमटी वैक्यूम इंडक्सन मेल्टिंग फार्जेस, 10 टी वीएआर फार्नेस एवं 10 टी इएसआर फार्नेस। वर्तमान में 6000 एमटी फोर्ज प्रेस और रेडियस एक्सिल रिंग रॉलिंग मिल अधिप्राप्ति के विभिन्न चरणों में है।

7.127 उत्कृष्ट उपकरणों की अर्थात 4 एचआई वाइड प्लेट रोलिंग मिल और 20टी इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस की अधिप्राप्ति के प्रस्ताव और मैसर्स एडवांस्ड सिस्टम्स लेबोट्ररी (डीआरडीओ) और आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) से 507 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता के लिए गठबंधन को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

7.128 xq.krk% भारतीय मानक ब्यूरो ने वर्ष के दौरान मिधानि की गुणता प्रबंधन प्रणाली आईएसओ 9001:2008 की समीक्षा की और फरवरी, 2014 तक के लिए प्रमाणीकरण नवीकरण किया।

7.129 रासायनिक परीक्षण विधा के लिए आइएसओ/आईईसी 17025:2005 के अनुसार दिसंबर, 2011 में एनएबीएल प्रत्यायन प्रदान किया गया।

7.130 fuxfer 'kklu% कंपनी अपने कार्यकलापों के सभी क्षेत्रों में निगमित शासन की सर्वोत्तम प्रणालियों और पद्धतियों को सतत रूप से बनाए हुए हैं। मिधानि में कर्मचारियों ने जम्मू और कश्मीर के बाढ़ पीड़ितों को सहायता प्रदान करने के लिए अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के तौर पर प्रधानमंत्री राहत कोष में एक दिन के वेतन का दान दिया।

7.131 Åtkl laj{k.k% वर्ष के दौरान मिधानि ने ऊर्जा संरक्षण में किए गए अग्रिम उपायों के कारण इलेक्ट्रीसिटी और एलपीजी की ऊर्जा खपत की सीमा के भीतर रखने के लिए "उत्कृष्ट" दर्जा प्राप्त किया। वीआईआर भट्टी में वैक्यूम सृजित करने के लिए मैकेनिकल पम्पों को उपयोग में लाकर बायलर हाउस की भट्टी की तेल की खपत में कमी की और ईंधन सेरामिक ब्लैंकिटों से रिहीटिंग भट्टी के ब्रिक वर्क को प्रतिस्थापित करके इसे

और अधिक ईंधन किफायती बनाया।

7.132 i;kZoj.k lqj{kk% मिधानि अपने परिसर और टाउनशिप में वृक्षारोपण के द्वारा पारिस्थितिकी संतुलन कायम रखने व उसे बढ़ाने का प्रयास सतत रूप से कर रही है।

xq.krk vk'oklu egkfun'kky; ¼Mh thD;w,½

7.133 गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डीजीक्यूए) एक गुणता आश्वासन संगठन है जो रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत कार्य करता है। गुणता आश्वासन महानिदेशालय सेना, नौसेना के लिए (नौसेना हथियारों को छोड़कर) आयातित एवं स्वदेशी दोनों प्रकार के सभी रक्षा भंडारों और उपस्करों और निजी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों और आयुध निर्माणियों से वायुसेना के लिए अधिप्राप्त सामान्य उपभोक्ता मदों के लिए सेकेंड पार्टी गुणता आश्वासन के लिए उत्तरदायी है। अतः देश की रक्षा तैयारियों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

7.134 laxBukRed <kapk vkSj dk;Z% गुणता आश्वासन महानिदेशालय संगठन दस तकनीकी निदेशालयों में संरचित हैं जिनमें से प्रत्येक निदेशालय एक भिन्न प्रकार के उपकरण श्रेणी के लिए जिम्मेवार है। कार्यात्मक उद्देश्यों के लिए तकनीकी निदेशालयों को दो स्तरों में संरचित किया गया है जिनमें उनके नियंत्रणालय और फील्ड स्थापनाएं शामिल हैं। इसके अलावा हथियारों और गोलाबारूदों की जांच करने के लिए जांच स्थापनाएं हैं। संगठन द्वारा किए जाने वाले आवश्यक कार्य निम्नलिखित हैः–

(क) xq.krk vk'oklu% इनके कुछ प्रमुख कार्य हैः

- (i) गुणता संबंधी मामलों पर विनिर्माताओं को तकनीकी दिशा–निर्देश प्रदान करना।
- (ii) तकनीकी मूल्यांकन और अंतिम स्वीकृति।
- (iii) रक्षा मांगकर्त्ताओं को संविदा के पहले और इसके बाद की सेवाएं।

(ख) rduhdh lsok,a@fn'kk&funsZ'k%

- (i) विनिर्दिष्ट नियंत्रण और मुहरबंद विवरणों को रखने वाले प्राधिकरण (एएचएसपी) के तौर पर कार्य करना।
- (ii) फील्ड/विरचना मुख्यालयों/प्रशिक्षण संस्थानों/सेना मुख्यालयों में प्रयोक्तताओं को उत्पाद संबंधी तकनीकी सेवा मुहैया कराना।
- (iii) सेना मुख्यालय को तकनीकी सलाह प्रदान करना।
- (iv) डीजीक्यूए अनुमोदनों/कार्य सूचियों को जारी करना एवं रक्षा भंडारों की सूची बनाना।

(ग) nks"k tkap% उपयोग में लाए जा रहे सभी उपकरणों की समयपूर्व असफलता की जांच करना असफलता के संभावित कारणों की पहचान करना और तत्पश्चात उन्हें दूर करने के लिए उपचारात्मक उपायों को शुरू करना ताकि असफलताओं को कम किया जा सके/उनकी पुनरावृत्ति को न्यूनतम किया जा सके।

7.135 xq.krk vk'oklu dk;ZdykiZ%

(i) HkkMkjksa dk xq.krk vk'oklu% विगत तीन वर्षों के दौरान गुणता सुनिश्चित किए गए भंडारों का मूल्य नीचे सारणी 7.3 में दिया गया है।

lkj.kh 7-3

Øe l-	o"kZ	निरीक्षण किए गए भंडारों का मूल्य (करोड़ रुपए में)
1.	2009–10	16203 रुपए
2.	2010–11	19223 रुपए
3.	2011–12 (अक्टूबर, 2011 तक)	9125 रुपए

(ii) i;käk lrf"V% सीधी सूचना प्राप्त करने और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए कमान स्तर पर प्रयोक्ताओं के साथ नियमित संपर्क रखा जाता है और फील्ड यूनिटें का दौरा किया जाता है।

(iii) Lo&iek.khdj.k% आज की तिथि तक 59 विनिर्माणियों को स्व–प्रमाणीकरण प्रमाण पत्र दिया गया है।

(iv) ,u,ch,y iR;k;u% डीजीक्यूए की 21 परीक्षण प्रयोगशालाओं को एनएबीएल प्रत्यायन प्रदान किया गया है।

(v) vkb,lvk iek.khdj.k% डीजीक्यूए के अंतर्गत 73 स्थापनाओं को आइएसओ 9001:2008 के तहत प्रमाणीकृत किया गया है।

oekfudh x.krk vk'oklu egkfun'kky; ¼Mh th,D;,½

7.136 वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा उत्पादन विभाग के अधीन एक संगठन है जो सैन्य विमानों, उनके सहायक हिस्से–पुर्जों और अन्य वैमानिकी भंडारों के लिए गुणता आश्वासन और उनकी अंतिम स्वीकृति प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। यह संगठन डिजाइन, विकास, उत्पादन, ओवरहाल और मरम्मत जैसे सभी चरणों में गुणता आश्वासन सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराता है।

7.137 वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय रक्षा एयरो भंडारों की अधिप्राप्ति के विभिन्न चरणों के दौरान सेना मुख्यालयों और विनिर्माताओं को तकनीकी मार्गदर्शन देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। संगठन की गुणता प्रबंधन प्रणाली की व्यवस्था यह सुनिश्चित करने के लिए है कि अधिप्राप्त मदें अपेक्षित विनिर्देशनों और कार्य निष्पादन पैरामीटरों को पूरा करती हों।

वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय सैन्य विमानों, सहायक हिस्से-पुर्जों और अन्य वैमानिक भंडारों की गुणवत्ता आश्वासन और उनकी अंतिम स्वीकृति के लिए उत्तरदायी है।

7.138 इस संगठन का मुख्यालय नई दिल्ली में है और देश के विभिन्न भागों में 34 फील्ड स्थापनाएं हैं। विनिर्देशनों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए खतरनाक उत्पादों और सहायक हिस्से–पुर्जों के गुणता संबंधी कई आडिट भी किए गए थे। वैमानिक भंडारों की गुणता और विश्वसनीयता को सुधारने के लिए यह संगठन सेना मुख्यालयों के साथ कई जांच–पड़तालों और संयुक्त अध्ययनों में भी भाग ले रहा है।

ekudhdj.k fun'kky; ¼Mhvk,l½

7.139 mÌ';% मानकीकरण निदेशालय (डीओएस) की स्थापना 1962 में रक्षा सेनाओं के भीतर मदों की तेज वृद्धि को नियंत्रित करने के उद्देश्य से की गई थी। तदनुसार मानकीकरण महानिदेशालय का प्राथमिक उद्देश्य तीनों सेनाओं में उपस्करों और संघटकों में उभयनिष्ठता स्थ. ापित करना है ताकि रक्षा सेवाओं की कुल मदसूची को कम करके न्यूनतम किया जा सके। निम्नलिखित द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास है:

(क) विभिन्न मानकीकरण दस्तावेजों को तैयार करना;

(ख) रक्षा सामान सूची का संहिताकरण।

(ग) प्रविष्टि नियंत्रण।

7.140 j{kk ekudhdj.k idk"B vkj mi idk"B% मानकीकरण कार्यकलापों को अपेक्षित मजबूती प्रदान करने के लिए रक्षा मानकीकरण निदेशालय के अंतर्गत 09 रक्षा मानकीकरण प्रकोष्ठ (ईशापुर, कानपुर, बेंगलुरु, पुणे, जबलपुर, चेन्नई, देहरादून, नई दिल्ली और हैदराबाद में) और 04 उप प्रकोष्ठ (अहमदनगर, मुंबई, विशाखापट्टनम एवं कोच्चि में) स्थापित किए गए हैं। पुणे और दिल्ली में स्थित रक्षा मानकीकरण प्रकोष्ठ समर्पित प्रशिक्षण संस्थान

यह सुनिश्चित करते हैं कि मानकीकरण निदेशालय के अधिकारी एवं कर्मचारी मानकीकरण और संहिताकरण की प्रक्रिया से संबंधित उभरती हुई चुनौतियों को पूरा करने के लिए पूर्णतया तैयार हों।

7.141 ekudk d fy, iHkkoh uVod% मानकीकरण निदेशालय की एक रक्षा मानक बेवसाइट– http://www.defstand.gov.in और इसका हिंदी पाठ रक्षा प्रयोक्ताओं के लिए 24X7 दिनों उपलब्ध है। 30 नवंबर, 2011 तक मानकीकरण निदेशालय की वेबसाइट के साथ 669 प्रयोक्ताओं को पंजीकृत किया जा चुका है। मानकीकरण निदेशालय में बनाए गए रक्षा मानकों अर्थात संयुक्त सेवा विनिर्देशन (जेएसएस), संयुक्त सेवा दिशा निर्देश (जेएसजी), संयुक्त सेवा प्राथमिकता रेंज (जेएसपीआर), संयुक्त सेवा युक्तिकरण सूची (जेएसआरएल) को अद्यतित किया जा रहा है और उसे मानकीकरण निदेशालय के वेबसाइट पर अपलोड किया जा रहा है। सभी रक्षा मानकीकरण प्रकोष्ठ और उप प्रकोष्ठ भी एक समर्पित सर्वर के माध्यम से मानकीकरण निदेशालय के निरंतर संपर्क में रहते हैं। इसके अलावा, मानकीकरण निदेशालय और मानकों के संबंध में सूचना को ट्राई सविसेस इंटरनेट पर अपलोड किया गया है जिसका तिमाही आधार पर अद्यतीकरण किया जाता है।

7.142 ekudhdj.k vkj lfgrkdj.k y{; ,o miyfC/k;k% दो प्रमुख कार्यकलापों अर्थात माननीकरण और संहिताकरण के लिए प्रत्येक वर्ष क्रमशः अध्यक्ष मानकीकरण उप समिति की समिति (सीसीएसएससी) और रक्षा संहिताकरण समिति के द्वारा वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं/उनकी समीक्षा की जाती है। 2011-12 के लिए इन प्रमुख कार्यकलापों की उपलब्धियों के साथ–साथ लक्ष्यों का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

(क) ekudhdj.k% वर्ष 2011-12 के लिए निर्धारित किए गए मानकीकरण लक्ष्यों में नए मानक दस्तावेजों के लिए 839 दस्तावेज और संशोधन दस्तावेज के लिए 624 दस्तावेज शामिल हैं। इन लक्ष्यों के प्रति 30 नवंबर, 2011 तक 508 नए मानक दस्तावेज एवं 361 संशोधन दस्तावेजों को तैयार कर लिया गया है। 30 नवंबर, 2011 तक कुल 4,996 संयुक्त सेवा दस्तावेज तैयार कर लिए गए हैं।

(ख) lfgrkdj.k% संयुक्त सचिव (एमएस) की अध्यक्षता में 10 मार्च, 2011 को हुई बैठक में संहिताकरण लक्ष्य और प्राप्तियों की समीक्षा की गई। वर्ष 2011–12 के लिए 54,111 मदों के संहिताकरण का लक्ष्य रखा गया है जिसमें से 30 नवंबर, 2011 तक 11,031 मदों का संहिताकरण किया गया है। इस प्रकार आज की तारीख तक कुल 4,87,374 मदों का संहिताकरण किया जा चुका है।

(ग) v|ruhdj.k% यह प्रक्रिया एएसएचएसपी द्वारा शुरू की जाती है और एएसएचएसपी से मानकीकरण महानिदेशालय को प्राप्त उन्नयनीत आंकड़े डाटाबेस के उन्नयन को सुविधाजनक बनाते हैं। वर्ष 2011-12 के लिए 24,070 मदों के अद्यतनीकरण का लक्ष्य है जिसकी तुलना में 30 नवंबर, 2011 तक 14,055 मदों को अपडेट किया गया है। इस प्रकार अद्यतित की गई कुल मदों की संख्या 4,13,129 बनती है।

;ktuk ,o leUo; funs'kky; ¼Mk;jsDVjsV vkQ ih ,.M lh½

7.143 रक्षा उत्पादन में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित कार्यकलापों के लिए रक्षा उत्पादन विभाग के अंतर्गत योजना एवं समन्वय निदेशालय में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रभाग (आईसी डिवीजन) एक केंद्रीय बिन्दु है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रभाग विभिन्न देशों जिनके साथ भारत का रक्षा सहयोग समझौता है, के साथ रक्षा उद्योग सहयोग से संबंधित सभी मामलों को देखता है। रक्षा उत्पादन विभाग में आईसी डिवीजन की भूमिका व कार्य वही हैं जो रक्षा मंत्रालय में पीआईसी विंग के हैं जो कि मंत्रालय के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित सभी मामले को देखता है।

j{kk in'kuh lxBu ¼Mhbvk½

7.144 भारतीय रक्षा उद्योग द्वारा विकसित और विनिर्मित रक्षोन्मुखी उत्पादों और सेवाओं के निर्यात में अभिवृद्धि करने के मूल दृष्टिकोण से देश और विदेश में रक्षा प्रदर्शनियों का आयोजन और समन्वय करना रक्षा प्रदर्शनी संगठन का मुख्य कार्य है।

7.145 रक्षा प्रदर्शनी संगठन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में रक्षा पंडाल में स्थायी रक्षा प्रदर्शनी लगाए रखता है। इस प्रदर्शनी में सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम, आयुध निर्माणी बोर्ड, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, गुणता आश्वासन महानिदेशालय और वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय अपने उत्पादों, नवाचारों और सेवाओं को प्रदर्शित कर चुके हैं।

> **रक्षा प्रदर्शनी संगठन मुख्यतया भारतीय रक्षा उद्योग द्वारा विकसित व विनिर्मित रक्षा उन्मुखी उत्पादों और सेवाओं की निर्यात संभावनाओं का संवर्धन करने की दृष्टि से भारत और विदेशों में रक्षा प्रदर्शनियों का आयोजन व समन्वय करता है।**

jk"Vh; j{kk ikrfuek.k vu|l/kku o fodkl lLFkku ¼funs'k½

7.146 आधुनिक नौसेना प्लेटफार्म जटिल और प्रौद्योगिकी सघन होते हैं और अतः यह आवश्यक हो जाता है कि उनका निर्माण करने के लिए देश के पास देश के भीतर ही प्रौद्योगिकीय आधार और दक्षता तंत्र उपलब्ध हो।

7.147 अतः सरकार ने देश को रक्षा प्रौद्योगिकी के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा की ओर ले जाने के लिए राष्ट्रीय रक्षा पोतनिर्माण अनुसंधान व विकास संस्थान (निर्देश) कोजीकोड (कालीकट) के नजदीक चालियम, केरल में स्थापित किया है। यह संस्थान, सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के तहत एक सोसाइटी के रूप में स्थापित किया गया है और यह रक्षा उत्पादन विभाग का एक हिस्सा होगा। निर्देश के लिए वित्त पोषण रक्षा मंत्रालय और देश के सभी रक्षा शिपयार्डों द्वारा किया जाएगा।

7.148 रक्षा मंत्री, संचालक बोर्ड के अध्यक्ष और रक्षा मंत्रालय, भारतीय नौसेना, तटरक्षक के प्रतिनिधि तथा रक्षा शिपयार्डों के अध्यक्ष इसके सदस्य होते हैं।

fuos'k

¼djksM+ #i, eas½

lkoZtfud {ks= ds miØe dk uke	2009&10		2010&11	
	bfDoVh	ljdkjh _.k	bfDoVh	ljdkjh _.k
एच ए एल	120.50	––	120.50	––
बी ई एल	80.00	––	80.00	––
बी ई एम एल	41.77	––	41.77	––
एम डी एल	199.20	––	199.20	––
जी आर एस ई	123.84	––	123.84	––
जी एस एल	29.10	––	29.10	––
बी डी एल	115.00	––	115.00	––
मिधानि	183.34	44.20	183.34	35.00
एचएसएल	301.99	149.87	301.99	372.21
dqy	1194-74	194-07	1194-74	407-21

dk;Z lEcU/kh ifj.kke mRiknu vkSj fcØh dk ewY;

¼djksM+ #i, eas½

lkoZtfud {ks= ds miØe dk uke	2009-10		2010-11		2011-12 ¼31-12-11 rd½	
	mRiknu ewY;	fcØh ewY;	mRiknu ewY;	fcØh ewY;	mRiknu ewY;	fcØh ewY;
एच ए एल	13489.59	11456.70	16450.84	13115.50	6636.36	5708.25
बी ई एल	5247.88	5219.77	5520.80	5529.69	3453.65	3462.95
बी ई एम एल	3708.66	3557.67	3768.60	3623.52	2850.24	2500.11
एम डी एल	2856.13	3150.94	2611.41	636.56	1718.41	2164.50
जी आर एस ई	870.74	424.27	1053.30	546.22	911.74	319.17
जी एस एल	866.48	472.89	990.32	514.46	401.05	130.19
बी डी एल	631.61	627.23	910.92	939.10	683.47	585.39
मिधानि	373.24	371.21	485.46	417.87	356.45	350.56
एचएसएल	608.43	618.96	603.84	652.14	339.50	363.56
dqy	28652-76	25889-64	32395-4	25975-06	17350-87	15585-21

vk;|/k fuek.kh ckM dk mRiknu vkj fcØh eY;

¼djkM #i, e½

2009&2010		2010&2011		2011&2012 ¼ fnlEcj] 11 rd vufre½	
mRiknu eY;	fcØh eY;	mRiknu eY;	fcØh eY;	mRiknu eY;	fcØh eY;
11817.89	8715.26	15389.58	11215.01	10025.33	6815.01

dj i'Pkkr ykHk

¼djkM #i, e½

lkotfud {k= d miØe dk uke	2009-10	2010-11
एच ए एल	1967.41	2114.26
बी ई एल	720.87	861.47
बी ई एम एल	222.85	149.76
एम डी एल	240.19	243.52
जी आर एस ई	114.81	115.71
जी एस एल	130.72	176.13
बी डी एल	33.77	51.71
मिधानि	44.62	50.42
एचएसएल	2.32	55.00
dy	3477-56	3817-98

8

रक्षा अनुसंधाान एवं विकास

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा विकसित प्रक्षेपास्त्र

Mhआरडीओ नवीनतम रक्षा प्रणालियों में डिजाइन, विकास, एकीकरण एवं उत्पादन को विस्तृत तरीके से शामिल कर स्वदेशी विकास करने हेतु मजबूत प्रौद्योगिकी आधार एवं प्रबंधन प्रणालियों के साथ एक उच्च व्यावसायिक एवं परिपक्व संगठन के रूप में उभरा है

पृष्ठभूमि

8.1 रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन ने 1958 के प्रारंभ से अपने प्रादुर्भाव से लेकर एक लंबी दूरी तय की है । केवल 10 प्रयोगशालाओं के साथ शुरूआत करके डीआरडीओ ने बहुआयामी प्रगति की है और यह देश भर में फैली अपनी 52 प्रयोगशालाओं और स्थापनाओं के विशाल नेटवर्क के साथ एक प्रमुख अनुसंधान संगठन के रूप में उभर कर सामने आया है। भारत देश को आधुनिकतम प्रौद्योगिकियों से शक्तिशाली बनाने और हमारी सेनाओं को अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले की प्रणालियों से सुसज्जित करके डीआरडीओ ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह वैमानिकी, आयुध, समाघात वाहनों, समाघात इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रानिक्स, मिसाइलों, जैव विज्ञान, सामग्री तथा नौसेना प्रणालियों जैसे भिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक रणनीतिक तथा सामरिक मिलिट्री हार्डवेयर और विभिन्न प्रौद्योगिकियां बना सकता है । डीआरडीओ की इस प्रौद्योगिकीय क्षमता के मूल में प्रणाली डिजाइन, प्रणाली एकीकरण, परीक्षण तथा मूल्यांकन तथा विगत पांच दशकों से बनाए गए परियोजना प्रबंधन में इसकी प्रवीणता है जिनके कारण यह हथियारों और इनकी डिलीवरी प्रणालियों में स्वदेशी क्षमताओं के विकास में सक्षम बन गया है ।

8.2 आज डीआरडीओ सुदृढ़ प्रौद्योगिकी आधार पर प्रबंधन प्रणालियों के साथ एक उच्च व्यावसायिक तथा परिपक्व संगठन के रूप में परिवर्तित हो गया है जो व्यापक रूप में अत्याधुनिक रक्षा प्रणालियों का स्वदेशी विकास कर सकता है जिसमें डिजाइन, विकास, एकीकरण तथा उत्पादन शामिल है । डीआरडीओ ने गोलाबारूद, कवचित प्रणालियों, मिसाइलों, सोनार प्रणालियां, एवियॉनिक्स, रडार तथा इलैक्ट्रानिक युद्ध पद्धति प्रणालियां, संवेदक, एनबीसी रक्षा, निम्न तीव्रता वाली संघर्ष प्रौद्योगिकियां तथा उन्नत संगणन सहित कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय आत्मनिर्भरता प्राप्त करके देश को गौरवान्वित किया है ।

8.3 डीआरडीओ रक्षा नीति को आधार बनाकर रक्षा मंत्रालय को वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय सलाह प्रदान करने, सैन्य संक्रियात्मक आवश्यकताओं के लिए रक्षा उपस्कर का मूल्यांकन करने और रक्षा उद्योगों द्वारा अत्याधुनिक हथियार प्रणालियों के विकास के लिए दी जाने वाली नई प्रौद्योगिकीय जानकारी देने जैसी कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा करता है । यह संगठन सरकार को अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा खतरों तथा वर्तमान और संभाव्य दोनों प्रतिकूलताओं में सैन्य क्षमताओं के तकनीकी मूल्यांकन करने की भी सलाह देता है ।

संगठनात्मक ढांचा

8.4 डीआरडीओ एक मिशन मोड संरचना है जिसके अध्यक्ष रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार (एसएटूआरएम) हैं जो भारत सरकार के सचिव भी हैं। सचिव की सहायता के लिए मुख्य नियंत्रक आयुध, सामग्री समाघात वाहन एवं इंजीनियरी, नौसेना प्रणालियां तथा सामग्री ; संसाधन एवं प्रबंधन ; मानव संसाधन ; मिसाइल तथा

सामरिक प्रणालियां; निम्न तीव्रता वाले संघर्ष, वैमानिकी; एवियॉनिक्स; सेनाओं की परस्पर क्रियाएं; जैव विज्ञान तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग; इलैक्ट्रॉनिक्स तथा कम्प्यूटर विज्ञान और माइक्रो इलैक्ट्रॉनिक डिवाइस एवं प्रबंधन सूचना प्रणाली तथा प्रौद्योगिकी हैं। इस संगठन में दो स्तरीय व्यवस्था है अर्थात् डीआरडीओ मुख्यालय, नई दिल्ली स्थित तकनीकी तथा कॉरपोरेट निदेशालय तथा देशभर में विभिन्न स्थानों में स्थित प्रयोगशालाएं/स्थापनाएं, क्षेत्रीय केन्द्र, फील्ड स्टेशन आदि।

MhvkjMhvk e[;ky;

8.5 तकनीकी निदेशालयों में वैमानिकी; आयुध; समाघात वाहन तथा इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रॉनिक और कम्प्यूटर विज्ञान, माइक्रो–इलैक्ट्रानिक डिवाइस तथा प्रबंधन सूचना प्रणाली तथा प्रौद्योगिकी; सामग्री; कार्य के लिए सेनाओं के साथ परस्पर क्रिया; अंतर्राष्ट्रीय सहयोग; उद्योग इंटरफेस तथा प्रौद्योगिकी प्रबंधन, मिसाइल; नौसेना अनुसंधान तथा विकास; जैव विज्ञान, सिविल निर्माण एवं संपदा; तथा तकनीकी परीक्षा प्रकोष्ठ निदेशालय हैं। ये निदेशालय सरकार से नई परियोजनाओं का अनुमोदन प्राप्त करने, चालू परियोजनाओं की मानीटरिंग तथा समीक्षा, तथा अन्य प्रयोगशालाओं तथा निदेशालयों के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए उनके अंतर्गत कार्य कर रही प्रयोगशालाओं तथा स्थापनाओं को सुविधाएं प्रदान करने में 'एकल विंडो' के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा, सेनाध्यक्ष (सीओएएस), वायुसेना अध्यक्ष (सीएएस), नौसेना अध्यक्ष (सीएनएस) के वैज्ञानिक सलाहकार और एकीकृत रक्षा स्टाफ के उप प्रमुख (डीसीआईडीएस) भी तकनीकी निदेशकों के रूप में कार्य करते हैं।

8.6 कॉरपोरेट निदेशालय, जैसे कार्मिक निदेशालय; मानव संसाधन विकास; सामग्री प्रबंध; योजना एवं समन्वय; प्रबंध सेवा; राजभाषा और संगठन पद्धति; बजट, वित्त एवं लेखा; सुरक्षा एवं सतर्कता, बाह्य अनुसंधान तथा बौद्धिक संपदा अधिकार और पब्लिक इंटरफेस, उनके बुनियादी ढांचे में सुधार करने, नई सुविधाओं के सृजन, जनशक्ति की भर्ती, संसद प्रश्नों तथा संसदीय समिति द्वारा उठाए गए मुद्दों के उत्तर देने, अन्य मंत्रालयों/विभागों आदि के साथ समन्वय स्थापित करने और उनके अपने–अपने क्षेत्रों में परियोजनाओं को आरंभ करने के लिए सरकार का अनुमोदन प्राप्त करने में प्रयोगशालाओं की सहायता करते हैं।

MhvkjMhvk i;kx'kkyk,a@LFkkiuk,a

8.7 डीआरडीओ का मिशन सशस्त्र सेनाओं को उनकी समाघात प्रौद्योगिकीय तैयारी प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक, जटिल तथा रणनीतिक रक्षा प्रणालियों तथा प्रौद्योगिकियों का डिजाइन, विकास तथा उत्पादन करना, एक मजबूत, स्वदेशी प्रौद्योगिकी आधार का निर्माण करना; तथा गुणवान कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना है। देशभर में विभिन्न स्टेशनों पर स्थित विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं फील्ड स्टेशनों, क्षेत्रीय सैन्य उड़ानशीलता वाले प्रादेशिक केन्द्रों (आरसीएमए) आदि के नेटवर्क के जरिए कई परियोजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है। ये प्रयोगशालाएं/स्थापनाएं वैमानिकी, एवियॉनिक्स, आयुध, मिसाइल, समाघात वाहन, आधुनिक कंप्यूटिंग और नेटवर्किंग, इलैक्ट्रानिकी, इंजीनियरी प्रणाली, जैव विज्ञान, उन्नत सामग्रियां और संयुक्त अंतर्जलीय संवेदकों/शस्त्रों, युद्धपोत प्रौद्योगिकी, निम्न तीव्रता संघर्ष प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास कार्यों में लगी हैं। ये प्रयोगशालाएं, अपने क्षेत्रों में परियोजनाओं को निष्पादित करने के लिए अकादमियों तथा उद्योगों के साथ परस्पर कार्य करती हैं ।

कार्यक्रम तथा परियोजनाएं

8.8 डीआरडीओ ने आधुनिकतम प्रौद्योगिकियां प्रदान करके देश को शक्तिशाली बनाया है और हमारी सेनाओं को अंतर्राष्ट्रीय मुकाबले की प्रणालियों से सुसज्जित किया है। पिछले पांच दशकों में इसने अत्याधुनिक शस्त्र प्रणालियों एवं प्रौद्योगिकियों के विकास के माध्यम से हमारी सशस्त्र सेनाओं को निरंतर अपनी युद्ध क्षमता बढ़ाने में मदद की है। डीआरडीओ सामरिक महत्व वाले, जटिल और सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील प्रणालियों के विकास

पर बल दे रहा है। अन्य सभी प्रकार के उपस्करों को विकसित किया जा रहा है और इनके अपग्रेड उद्योगों द्वारा निष्पादित किए जा रहे हैं। डीआरडीओ ने दीर्घकालिक एकीकृत सेवा परिप्रेक्ष्य योजना (एलटीआईपीपी) का विश्लेषण तथा डीआरडीओ योजना के साथ मैपिंग/समक्रमण (सिनक्रोनाइजेशन) डीआरडीओ योजना के और बेहतर सामंजस्य के लिए सेनाओं के साथ निरन्तर बातचीत, जहां भी उचित हो विश्वासपात्र सहभागियों के साथ संयुक्त विकास के काम में लगना; जटिल प्रौद्योगिकियों का विकास, प्रोटोटाइप परीक्षण का डिज़ाइन व निर्माण, प्रयोक्ता परीक्षण तथा उत्पादन एजेंसियों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण जिससे अधिक उत्पादन हो सके व सेनाओं में शामिल किया जा सके; एस एवं टी रोड मैप तैयार करना; भविष्य की आवश्यकताओं के लिए प्रमुख शैक्षणिक अनुसंधान संस्थानों को डीआरडीओ से संबंधित अनुसंधान गतिविधियां प्रायोजित करना और रक्षा हितों के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता केन्द्र खोलना आदि कार्य संभाले हैं ।

डीआरडीओ ने हमारी सेनाओं को नवीनतम प्रौद्योगिकी से सुसज्जित कर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक प्रणालियों की शक्ति प्रदान की है। पिछले पाँच दशकों में इसने सशस्त्र सेनाओं को नवीनतम अस्त्र प्रणालियों एवं प्रौद्योगिकियों के विकास के माध्यम से उनकी संग्राम प्रभावकारिता में लगातार वृद्धि कर समर्थता प्रदान की है।

8.9 इन उपायों से रक्षा प्रणालियों की आत्म–निर्भरता तथा स्वदेशीकरण में काफी सुधार होगा। डीआरडीओ ने बहुत सी प्रणालियों/उत्पादों/प्रौद्योकियों का विकास किया है जिनमें से अधिकतर का उत्पादन करके सशस्त्र सेनाओं में शामिल किया गया है और कुछ की निर्माण व उत्पादन की प्रक्रिया चल रही है। डीआरडीओ द्वारा विकसित व सेना में शामिल की गई अथवा शामिल हा. ेने की प्रक्रिया में प्रणालियों/उत्पादों/प्रौद्योगिकियों का मूल्य 1.30 लाख करोड़ रू. से अधिक है।

8.10 डीआरडीओ विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है जिन्हें मोटे तौर पर मुख्य विधाओं जैसे मिसाइल, ऐरो प्रणालियां, इलैक्ट्रॉनिक प्रणालियां, समाघात वाहन, आयुध सामग्री, नौसेना प्रणालियां, उन्नत सामग्री तथा जैव विज्ञान, आदि में वर्गीकृत किया गया है। पिछले एक साल के दौरान कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाओं की उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित पैराग्राफों में दिया गया है।

8.11 **felkby i.kkfy;k**

iFoh felkby% सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल, पृथ्वी सामरिक युद्ध क्षेत्र मिसाइल के 150 कि.मी., 250 कि.मी. और 350 कि.मी. रेंज वाले तीन वर्ज़न हैं। सभी वर्ज़नों को सशस्त्र सेनाओं में शामिल कर लिया गया है। पृथ्वी–II मिसाइल का लांच कॉम्प्लैक्स–III, आईटीआर, चांदीपुर, उड़ीसा से 09 जून, 2011 को सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया गया। लांच सशस्त्र सेना के नियमित प्रशिक्षण के अभ्यास के भाग के रूप में किया गया। मिसाइल बंगाल की खाड़ी में पूर्व निर्धारित लक्ष्य के पास 10 मीटर से अधिक की अत्यधिक परिशुद्धता के साथ पहुंची। इस उड़ान परीक्षण से मिशन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त किया गया और यह टेक्स्टबुक लांच की तरह था।

vfXu J[kyk dh felkby% अग्नि–I मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण सशस्त्र सेना द्वारा 01 दिसम्बर, 2011 को व्हीलर, आइलैंड से रोड मोबाइल लांचर प्रणाली से किया गया और यह अपने लक्ष्य बिंदु बंगाल की खाड़ी पर पहुंचा। अग्नि–II मिसाइल को सशस्त्र सेना द्वारा प्रशिक्षण अभ्यास के रूप में 30 सितम्बर, 2011 को लांच किया गया था। द्विस्तरीय मिसाइल, जो उन्नत उच्च परिशुद्धता नौ संचालन प्रणाली से सुसज्जित है, को सॉलिड रॉकेट प्रणोदक प्रणाली द्वारा प्रणोदित किया गया था। मिसाइल 220 किमी के शिरोबिन्दु (चरम तुंगता) पर पहुंची और लक्ष्य को भेदा। डीआरडीओ ने 15 नवम्बर, 2011 को रोड मोबाइल प्रणाली से सर्वाधिक उन्नत

लम्बी दूरी की मिसाइल प्रणाली अग्नि–IV मिसाइल को टेस्टफायर भी किया। मिसाइल अनुमान के मुताबिक बिल्कुल अपने प्रक्षेप पथ पर गई, 900 किमी की उंचाई पर पहुंची और बंगाल की खाड़ी के अंतर्राष्ट्रीय समुद्री क्षेत्र में पूर्व–निर्धारित लक्ष्य पर पहुंची। मिशन के सभी लक्ष्य पूरे किए गए। 30000 से अधिक के पुनः प्रविष्टि तापमान का सामना करते हुए अंत तक सभी प्रणालियां सही–सही काम करती रहीं। यह मिसाइल अपनी ही तरह की है, जो बहुत सी नई प्रौद्योगिकियों को पहली बार सिद्ध कर रही है और मिसाइल प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण परिवर्तन दर्शाती है। मिसाइल वजन में हल्की है और इसमें दो चरणों में ठोस प्रणोदन और पुनः प्रवेश हीट शील्ड के साथ पेलोड है। सम्मिश्रित रॉकेट मोटर ने, जिसका प्रयोग पहली बार किया गया है, उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

yEch njh dh lrg l gok ij ekj dju okyh felkby ¼,yvkj,l,,e½

यह डीआरडीओ, भारतीय नौसेना और आईएआई, इज़राइल का संयुक्त विकास कार्यक्रम है। इसकी रेंज 70 किमी है जिसमें टर्मिनल फेज़ में ड्युअल पल्स रॉकेट मोटर तथा एक्टिव रडार सीकर और मार्ग–दर्शन के लिए इनर्शियल/मिड–कोर्स अपडेट का प्रयोग होता है। पहली पोत हथियार नियंत्रण प्रणाली की सुपुर्दगी पूरी कर ली गई है। पहला पोत एमएफ स्टार रडार फैक्टरी स्वीकार्यता परीक्षण पूरा कर लिया गया है और प्रणाली की सुपुर्दगी की प्रक्रिया चल रही है।

e/;e njh dh lrg l gok e ekj dju okyh felkby ¼,evkj,l,,e½

यह भू आधारित हवाई रक्षा प्रणाली है जिसका विकास भारतीय वायु सेना (भा वा से) की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जा रहा है। यह डीआरडीओ तथा आईएआई, इज़राइल के बीच संयुक्त विकास कार्यक्रम है। एमआरएसएएम हथियार प्रणाली में 70 किमी के रेन्ज 20 किमी तुंगता तक फिक्स्ड विंग एयरक्राफ्ट, हेलिकॉप्टर्स, मिसाइल (सब सॉनिक, सुपर सॉनिक तथा सामरिक बैलिस्टिक मिसाइल) को निष्प्रभावी करने की क्षमता है । फायरिंग यूनिट एक साथ कई लक्ष्यों से होने वाले खतरों को निष्प्रभावी करने के लिए सुसज्जित है।

cãkl lijlkfud Øt felkby% यह एक सार्वभौम मिसाइल है जिसे समुद्री व जमीनी लक्ष्यों के विरूद्ध भू, समुद्र, सब–सी व वायु पर आधारित बहु–प्लेटफॉर्मों से लांच किया जा सकता है। ब्रह्मोस की 2.8 मैक नंबर से भी ज्यादा की गति के साथ 290 कि.मी. की रेंज है। नौसेना व सेना के लिए ब्रह्मोस मिसाइल के विभिन्न वर्जन नौ सेना युद्ध पोतों तथा मोबाइल कॉम्प्लैक्सों में तैनात किए गए हैं। सेना के लिए मिसाइल के ब्लॉक–III वर्ज़न का प्रदर्शन किया गया, जिसमें उन्नत प्रणाली व सॉफ्टवेयर का प्रयोग करते हुए अनेक मार्ग बिन्दुओं के साथ प्रक्षेप–पथ की पैंतरेबाजी और स्टीपडाइव करने की समर्थता प्रदर्शित की गई है। इस हथियार प्रणाली को पहले ही 04 पोतों पर लगाया जा चुका है और 05 और पोतों पर अधिकाधिक लगाया जा रहा है। 2012 में उड़ान परीक्षणों के लिए भारतीय वायु सेना के लिए एस यू–30 मेक–I पर ब्रह्मोस हवाई वर्जन को जोड़ने का कार्य प्रगति पर है।

vó felkby% अस्त्र हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल है जिसे पैंतरेबाजी में माहिर सुपरसॉनिक हवाई लक्ष्यों को इनगेज व नष्ट करने के लिए देश में ही डिज़ाइन व विकसित किया जा रहा है। लो स्मोक प्रणोदक का विकास पूरा कर लिया गया है तथा एस यू–30 पर कैप्टिव उड़ान परीक्षण चरण–I भी पूरा कर लिया गया है।

lrg l lrg ij ekj dju okyh lkefjd felkby&igkj% सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल प्रहार का लांच कॉम्प्लैक्स–III, बालासोर, उड़ीसा से 21 जुलाई, 2011 को डीआरडीओ द्वारा सफल परीक्षण किया गया। यह मिसाइल जिसकी रेन्ज 150 कि.मी. है मल्टी बैरल रॉकेट्स और मध्यम रेन्ज की बैलिस्टिक मिसाइलों के बीच की मुख्य कमियों को पूरा करती है। यह मिसाइल विभिन्न युद्धशीर्षों को ले जाने की क्षमता

रखती है और यह भारतीय सेना के लिए युद्ध क्षेत्र सहायक प्रणाली के रूप में काम करती है। यह मिसाइल जिसकी लम्बाई 7.3 मीटर तथा व्यास 420 मिमी और वजन 1280 कि.ग्रा. है और इसमें एकल अवस्था वाली सॉलिड प्रणोदन प्रणाली है, तकरीबन 250 सेकेंड में 150 किमी की रेन्ज में लक्ष्य तक पहुंचने से पहले 35 किमी ऊंचाई तक जाती है। यह मिसाइल अत्याधुनिक उच्च परिशुद्धता नौसंचालन, मार्गदर्शन तथा इलेक्ट्रो मैकेनिकल एक्चुएशन प्रणाली से सुसज्जित है तथा साथ ही इसमें 10 मीटर से कम की ऑन बोर्ड कम्प्यूटर से प्राप्त टर्मिनल परिशुद्धता है।

gsfyuk% यह उन्नत हल्के हेलिकॉम्टर के लिए 7+ किमी वाली तीसरी पीढ़ी की टैंकरोधी मिसाइल है। हेलिना का पहला उड़ान परीक्षण भू लांचर के लिए 27 फरवरी, 2011 को किया गया था और 17 अक्तूबर, 2011 को एएलएच से एक स्वतंत्र बैलिस्टिक उड़ान परीक्षण किया गया।

'kkS;Z felkby% शौर्य, 700 कि.मी. रेन्ज वाली मिसाइल का लॉन्च कॉम्प्लैक्स–III, बालासोर से 24 सितम्बर, 2011 को सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया गया। यह मिसाइल, जिसे ग्राउंड लांच मोड में कैनिस्टर से लांन्च किया गया था उसके परिणाम बिल्कुल यथानुमानित रहे और यह बंगाल की खाड़ी में पूर्व निर्धारित लक्ष्य तक के रास्ते पर ठीक सीधा गया। पूर्वी तट के पास सभी रडार स्टेशनों, टेलीमेट्री स्टेशनों, इलेक्ट्रो–ऑप्टिकल स्टेशनों ने सभी मिशन पैरामीटरों को ट्रैक व मॉनीटर किया है। लक्ष्य के पास स्थित पोतों ने भी अंतिम घटना को ट्रैक किया व देखा है। मिसाइल कुछ ही मीटरों की परिशुद्ध ता के साथ लक्ष्य तक पहुंच गई।

yM okjxse% थल सेना के लिए डिज़ाइन, विकसित व प्रचालित की गई अत्याधुनिक वॉरगेनिंग प्रणाली और बटालियन स्तर के वॉरगेम को सूट करने के लिए सेना युद्ध कॉलेज महू में ब्रह्मास्त्र नाम की वॉरगेमिंग सुविधा (फैसिलिटी) की स्थापना की है। यह सुविधा अफसर को कम्प्यूटरीकृत वॉरगेम पर रणनीति बनाने में सहायता प्रदान करती है।

vkdMk fo'ys"k.k o iSVuZ dh igpku ¼Mh,ihvkj½ otZu 2-0% निर्णय समर्थक सॉफ्टवेयर (डीएपीआर) का विकास किया गया है, जिसमें बेहतर मास्टर एमिटर डेटाबेस बनाने के लिए ईएलआईएनटी प्रणालियों द्वारा एकत्रित एमिटर्स के वर्गीकरण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तथा डेटा माइनिंग एलगॉरिथम (परिकल्पना परीक्षण, विभेदकारी विश्लेषण, क्लस्टर विश्लेषण, प्रतिक्रमण विश्लेषण) अपनाए जाते हैं। डीएपीआर को भारतीय नौसेना को सौंप दिया गया है।

uSVodZ dsfUær ;q)&iz.kkyh ¼,ulhMCY;w½ dk irk yxkus ds fy, ladYiuk lkW¶Vos;j fLVªy;s'ku VsLV csM% एकीकृत वायु रक्षा (आईएडी) परिदृष्य में एनसीडब्ल्यू की संकल्पना का पता लगाने के लिए संकल्पना सॉफ्टवेयर टेस्ट बेड के प्रूफ को, एक प्रायोगिक एसओए आधारित संरचनात्मक तथा निर्णय लेने के लिए एजेंट आधारित मॉडलिंग के अनुप्रयोगों को सफलतापूर्वक डिजाइन, विकसित तथा स्थापित किया गया है।

8-12 oSekfudh iz.kkfy;k

e/;e rqxrk nh?kZ lá rk ekuojfgr gokbZ okgu ¼;w,oh½ :Lre &I% देश में डिजाइन किया हुआ तथा विकसित रूस्तम–I ने होसुर के नजदीक क्रूज पर 25 मिनट के दौरान जमीनी स्तर से ऊपर 2300 फीट की ऊँचाई पर तथा 100 समुद्री मील की गति से उड़ान भरते हुए 5वीं सफल उड़ान भरी। उड़ान सफल थी क्योंकि जो भी सुधार किए गए थे, वे ठीक काम कर रहे थे तथा यूएवी ने, जो 661 कि.ग्रा. का था, सभी पैरामीटर प्राप्त कर लिए थे। विशेष रूप से संशोधित लिफ्ट ऑफ स्कीम की जांच का उद्देश्य, परिवर्तित ऊँचाई तथा स्पीड होल्ड लॉजिक्स बहुत अच्छे से कार्य कर रही थी। इस यूएवी के पास सशक्त मिलिट्री मिशन हैं जैंसे टोह तथा निगरानी, लक्ष्य प्राप्त करना, टार्गेट एक्विजीशन संचार रिले, युद्ध क्षति मूल्यांकन तथा सिगनल आसूचना। यह यूएवी पूरी तरह से विकसित होने पर 150 समुद्री मील की अधिकतम गति, 22,000 फीट की ऊँचाई तथी 250

किमी की प्रचालन रेंज के साथ 12–15 घंटे की सहायता प्राप्त कर सकता है।

gYdk yMkd ok;;ku&,ylh, ¼uk luk½ Vuj ikVkVkbi ¼,uih& I½% कैरियर वाहित नौसेना लड़ाकू वायुयान को बनाने के देश के पहले स्वदेशी प्रयास के सपने को, 26 सितम्बर, 2011 को पहले एलसीए (नौसेना) प्रोटोटाईप एनपी–I के प्रथम इंजन ग्राउंड रन (ईजीआर) के दूसरे महत्वपूर्ण लक्ष्य को पार करने के साथ हल्का धक्का लगा। स्टीयरिंग एलसीए (नौसेना) परियोजना में भारतीय नौसेना, भारतीय वायुसेना, हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि., डीआरडीओ, सेमिलेक, डीजीएक्यूए, सीएसआईआर प्रयोगशालाएं, शैक्षिक संस्थान के सदस्य, अन्य सार्वजनिक तथा निजी–क्षेत्र के पार्टनर्स शामिल हैं। एनपी–I वायुयान के पहले ईजीआर का प्रमुख उद्देश्य वायुयान को जांचने से लेकर इंजन एकीकरण तथा विभिन्न प्रणालियों जैंसे उड़ान नियंत्रण, हाइट्रॉलिक्स, ईंधन बिजली, वैमानिकी आदि के एक्टिवेशन तक था, जिसे सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया गया था। अब यह वायुयान, निर्माण की प्रक्रिया के दौरान पहचाने गए तथा ईजीआर के दौरान भी विचारित फीडबैक पर आधारित परिशोधित चरण से गुजरेगा, इसके पश्चात् अपनी पहली उड़ान से पूर्व यह अंतिम एकीकरण जांच की श्रृंखला तथा टैक्सी परीक्षणों से गुजरेगा ।

ok;okfgr io pkrkouh rFkk fu;=.k ¼,bMCY; rFkk lh½ i.kkyh% देश में विकसित भारतीय वायुवाहित पूर्व चेतावनी तथा नियंत्रण प्रणाली वाले पहले संपूर्ण परिशोधित वायुयान ने, डीआरडीओ द्वारा प्रदान किए गए लगभग 1000 मिशन प्रणाली घटकों के साथ ब्राजील में साओ जोस दोस कम्पोस की एम्बरेयर सुविधाओं में अपनी पहली उड़ान के हिस्से के रूप में 06 दिसम्बर, 2011 को उड़ान भरी। इन घटकों में, डीआरडीओ द्वारा विकसित एक्टिव इलैक्ट्रॉनिक, स्कैनिंग एन्टेना (एईएसए) राडार ऐंटेना तथा एएनएसी, अन्तर्राष्ट्रीय एफएआर प्रमाणन एजेंसी से प्रमाणित महत्वपूर्ण मदें शामिल हैं। यह उड़ान, स्वदेशी एईडब्ल्यूएंडसी प्रणाली के सपने को साकार करने की ओर एक प्रमुख मील का पत्थर है जो भारत को कई देशों के एक चुने हुए क्लब में शामिल करेगा। इसके आगमन से, भारत अपने प्रयोक्ताओं को इस प्रकार की जटिल प्रणालियों की वायुवाहित प्रणाली का विकास करने तथा जिलीवरी करने में सक्षम देशों की लीग में शामिल होने की ओर अग्रसर है।

,ylh, d fy, byDVkfud ;)&i)fr ¼bMCY;½

यूएवी रुस्तम

lV% एलसीए के लिए उन्नत ईडब्ल्यू सूट डीआरडीओ तथा मैसर्स एलीसरा के बीच एक संयुक्त विकास कार्यक्रम के रूप में विकासाधीन है। इस सूट में सिगनल प्रोसेसर, ट्रांसमीटर्स तथा अन्य एलआरयू शामिल हैं। यह प्रणाली एलसीए तेजस पीवी–I में स्थापित की जा रही है ताकि उड़ान के दौरान कार्य–क्षमता का मूल्यांकन किया जा सके। वायुयान को ईडब्ल्यू प्रणाली से एकीकृत किया जा रहा है।

,e,y,p d fy, byDVkfud ;)&i)fr ¼bMCY;½ lV&e d&17½ मेक 17 हेलिकॉप्टर पर ईडब्ल्यू सूट विकसित तथा एकीकृत किए गए हैं और एमआई 17 पर ईडब्ल्यू सूट के उड़ान परीक्षण पूरे हो गए हैं ।

लगा सके। इस रडार में उन्नत प्रौद्योगिकियां हैं जैंसे डिजीटल रिसीवर तथा कार्यक्रम सिगनल प्रोसेसर, उच्च विभेदन प्रदान करना, एक्यूरेसी, प्रत्यूत्तर तथा सूचना उपलब्धता। सॉफ्टवेयर नियंत्रित उच्च–गति डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने, संक्रियात्मक क्रू को वास्तविक संरूपण का प्रस्ताव दिया है। उन्नत सॉफ्टवेयर एलगोरिदम्स, बहु उच्च गति प्रोसेसर तथा नवीनतम प्रौद्योगिकियों ने इस रडार को शांति तथा युद्ध के समय कमांडर्स को 24X7 हवाई जानकारी प्रदान करके इसे एक प्रयोक्ता–सहयोगी सेंसर बना दिया है।

Hkkjrh; uklsuk d fy, f=&vk;keh fuxjkuh jMkj& jorh% यह एस–बैंड में प्रचालित अकेला,

वायुवाहित पूर्व चेतावनी एवं नियंत्रण प्रणाली

8-13 byDVkfud i.kkfy;k

Hkkjrh; ok;q lsuk d fy, f=&vk;keh fuxjkuh jMkj i.kkyh&jkfg.kh% हवाई निगरानी के लिए यह मध्यम रेंज निगरानी रडार जमीन पर आधारित मेकेनिकली स्कैनिंग एस–बैंड पल्स डॉपलर रडार है जो प्रतिकूल इलैक्ट्रॉनिक युद्ध–पद्धति संक्रियात्मक वातावरण के होते हुए भी विश्वसनीयता से हवाई लक्ष्यों का पता मध्यम रेंज में सभी मौसमों में 3डी निगरानी रडार है और वायुवाहित तथा सतही लक्ष्यों को ट्रेक–वाइल–स्कैन (टीडब्ल्यूएस) करने में सक्षम है। यह एंटेना यांत्रिक रूप से दिगंश (अजिमुथ) में घूमकर 360 डिग्री, संपूर्ण कवरेज प्रदान करता है और एक स्थिर प्लेटफॉर्म पर चढ़ाया जाता है, जिसे दो एक्च्युएटर रोल को सही करते है तथा पिच गलतियों को ठीक करते हैं। यह परिशुद्धता

तथा भार दोनों को देखते हुए सर्वश्रेष्ठ ढांचे के साथ अति–आधुनिक प्रौद्योगिकी उत्पाद है।

'kó dk irk yxkus okyk jMkj ¼MCY;w,yvkj½ यह सुसंगत, इलैक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड, सी–बैंड पल्स डॉपलर रडार, अपने आप शत्रु के तोपखाने, मोर्टार्स तथा रॉकेट लॉन्चर का पता लगा लेता है और फ्रैंडली फायर को ट्रैक कर लेता है ताकि आवश्यक करेक्शन करके फ्रैंडली आर्टीलरी फायर के प्रभाव बिन्दु का पता चल सके। यह रडार ईडब्ल्यू सिनेरियों में जमीनी, मौसम का शोर (वेदर क्लटर) तथा हस्तक्षेप की अन्य किस्मों की उपस्थिति में प्रक्षेप्य (प्रोजैक्टाईल्स) का पता लगाने तथा दृष्टि रखने के लिए उन्नत सिगनल प्रक्रिया तकनीक का उपयोग करता है यह रडार उन्नत नौसंचालन प्रणाली के साथ आता है जो सही स्थिति की सूचना देता है।

bl,l,e i.kkyh ^o#.k*½ आधुनिक ईएसएम प्रणाली, सी से लेकर जे तक के फ्रिक्वेंसी बैंड के ऊपर एलपीआई रडार सहित स्पंद (पल्स), सीडब्ल्यू, पीआरएफ एजाइल, फ्रिक्सवेंसी एजाइल रडारों का अंतर्रोधन (इंटरसेप्शन), संसूचना (डिटेक्शन), वर्गीकरण (क्लासीफिकेशन) तथा अभिज्ञान (आइडेंटिफिकेशन) करने में सक्षम है। यह प्रणाली, अपनी बिल्ट–इन रडार फिंगर प्रिंटिंग फीचर के साथ इंटर तथा इंटरा स्पंद (पल्स) विश्लेषण पर कार्य कर सकती है तथा 500 रडार एमीटर्स के क्रियाकलापों को एक साथ रिपोर्ट कर सकती है। ईएसएम प्रणाली 'वरूण' का इंजीनियरिंग मॉडल बना दिया गया है तथा के–क्लरुस नौसेना प्लेटफॉर्म ऑनबोर्ड पर स्थापित किया गया है। समुद्री स्वीकार्य परीक्षण (सी एक्सेप्टेंस टेस्ट) सफलतापूर्वक कर लिया गया है। इस प्रणाली का उपयोग भारतीय नौसेना द्वारा किया जा रहा है।

ईएसएम प्रणाली 'वरुण' के इंजीनियरी मॉडल को मूर्तरूप प्रदान कर के-वर्ग नौसेना प्लेटफार्म पर स्थापित किया गया है। समुद्री स्वीकार्यता परीक्षणों को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस प्रणाली का भारतीय नौसेना द्वारा उपयोग किया जा रहा है ।

dkUok; ikVD'ku tej i.kkyh ^LVkbM*½ व्हीकल माउन्टेड म्यूटिंग प्रणाली को राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा तैनात रेडियो कन्ट्रोल्ड इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आरसीआईईडीएस) का पता लगाने से बचने के लिए डिजाइन किया गया है। ये प्रणालियां, आरसीआईडी के खतरे से वीवीआईपी के सुरक्षा कारवां (कॉन्वॉय) को बचाने के लिए अभिप्रेत हैं और सशस्त्र सैन्य बलों तथा अर्धसैनिक बलों द्वारा उपयोग किया जा रहा है।

deku lpuk fu.kZ; lgk;rk i.kkyh ¼lhvkbMh,l,l½ सीआईडीएसएस चरण–1 प्रणाली को 05 अक्तूबर, 2011 को औपचारिक तौर पर प्रयोक्ता को सौंपा गया था। यह घटना विकास तथा फील्डिंग

रोहिणी रडार

शस्त्र का पता लगाने वाला रडार

प्रयासों की औपचारिक पराकाष्ठा के रूप में जानी जाती है, जिसके फलस्वरूप फील्ड प्रयोक्ताओं द्वारा इस प्रणाली को अंतिम स्वीकृति मिली, सौंपने के समय प्रयोक्ता लोगों को सुनिश्चित करता है कि 58 नोड्स वाली यह संपूर्ण प्रणाली पूरी तरह से प्रचालनीय तथा (चालू हालत) सर्विस में है, जिसमें हार्डवेयर, शैल्टर, प्राइम मूवर तथा एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर शामिल है।

Hkkjrh; ukSlsuk ds fy, lqj{kk lek/kku% संचार सुरक्षा समाधान जो सभी आर एफ मीडिया के लिए है उसे भारतीय नौसेना को उनके द्वारा बताई गई आवश्यकता के अनुरूप डिजाइन, विकसित तथा डिलीवर किया गया था। नौसेना नेटवर्क में दो स्तर के सुरक्षा समाधान प्रदान तथा तैनात किए जाते हैं।

ft;kLisfV;y fp=.k iz.kkyh lqfo/kk% यह सुविधा 3डी चित्रण और जीआईएस के प्रस्तुतीकरण तथा भूभागी आंकड़ों को आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण के लिए स्थापित किया गया है। एक सही सौहार्दपूर्ण वातावरम में जियोस्पेटियल परिस्थिति का वित्रण उचित निर्णय लेने को आसान बनाता है तथा प्रचालन की योजना को प्रभावी बनाता है। यह उष्म वातावरण, 3डी स्टीरियो चित्रण की उच्च गुणता के साथ एक बड़ी डिस्प्ले स्क्रीन पर विभिन्न स्रोतों से समेकित वातावरण में आंकड़े लाने में सक्षम होगा।

lqjf{kr vkadM+k vMsIVj ¼,lMh,½% यह एक ऐंसा डिजाइन तथा विकसित किया हुआ एनक्रिप्शन/डिक्रिप्शन डिवाइस है जो ऐसे आंकड़ों को सुरक्षित रखता है जो वायुयान, पोत तथा जमीनी संचार प्रणालियों के किसी भी बड़े अथवा वायरलेस संचार मीडिया से भेजे जाते हैं। एसडीए एक काम्पैक्ट यूएसबी पावर्ड अति आधुनिक एनक्रिप्सन डिवाइस है जिसे मानक आंकडा टर्मिनल से जोड़ा जा सकता है। डैटा इनपुट को हाईग्रेड प्रोप्राइटरी एनक्रिप्शन एलगोरिथम का इस्तेमाल करते हुए टर्मिनल से एंक्रिप्ट किया जाता है।

भा नौ पो खंजर पर लगा वरुण इंजीनियरी माडल

nkLr vFkok n'eu dh lek?kkr igpku ¼lhvkbl,Q,Q½ जमीन–से–जमीन पर मार करने वाले सीमित प्रचालनों के लिए कवचित (आर्मर्ड) वाहन की एक प्रणाली तैयार की गई है। यह साथियों के हताहत होने को कम करता है तथा टार्गेट सर्विस रेट को बढ़ाता है। तीन निर्मित प्रोटोटटाईप प्रणालियों को तैयार कर लिया गया है तथा टी–17 टैंकों से बांधकर फील्ड मूल्यांकन चल रहा है। इसने रेंज, पूछताछ समय तथा पारदर्शिता (एक्यूरेसी) में अपनी कार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर लिया है।

gsyeV ekmVM Fkesy beÇtx dsejk ¼,p,eVhvkblh½ यह आईएनएस शिवाजी पर भारतीय नौसेना द्वारा मूल्यांकित ऐंसा परीक्षण था जिसमें पोत पर आग लगने की दशा में धुएं में भी देखा जा सके। यह हैंड्स फ्री ऑपरेशन के लिए बहुत ही उपयोगी पाया गया था तथा इसे अग्निशमन अनुप्रयोग (फायर फाइटिंग एप्लीकेशन) के लिए सतही पोतों में शामिल करने के लिए सिफारिश की गई थी।

ekbØkoo V¸kc lfo/kk जेसी बोस माइक्रोवेव ट्यूब सुविधा, नई–नई स्थापित एकीकृत माइक्रोवेव ट्यूब विकास यूनिट का 09 अप्रैल, 2011 को उद्घाटन किया गया था, जिसमें अति आधुनिक प्रिसीजन फैब्रिकेशन मशीनरी, हाई–वोल्टेज जांच सुविधा पर्यावरण जांच सुविधा तथा हाई–पावर माइक्रोवेव (एचपीएम) जनरेशन तथा डायग्नोस्टिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस अवसर पर, डीआरडीओ द्वारा विकसित एक उत्पाद तथा भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) द्वारा उत्पादित माइक्रोवेव पावर माड्यूल (एमपीएम) को कार्यक्रम निदेशक (आकाश) को सौंपा गया था।

8-14 lek?kkr okgu rFkk btsfu;Çjx

e[; ;q) d Vd ¼,echVh½ vtu ed&I भारतीय सेना ने भारी वाहन फैक्ट्री, आवडी को 124 अर्जुन एमबीटी टैकों के लिए मांग दी है । अभी तक 110 टैंक सेना के सुपुर्द किए जा चुके हैं। इसके साथ ही दो एमबीटी अर्जुन रेजीमेंट बनाई गई हैं और अब प्रचालन में हैं। शेष 14 टैंकों के 2012 के मध्य तक बनाए जाने की संभावना है।

vtu ,echVh,ed ed& II d fy, dekMj fogxe nf"V ¼iuksjfed lkbV½ ¼lhih,l½ कमांडर केपैनोरेमिक साइट मेक–II को नई विशिष्टिताओं के साथ जैंसे थर्मल इमेजिंग कैमरा, लेजर रेंज फाइंडर तथा बेलिस्टिक कम्प्यूटर के साथ इंटरफेस को एमबीटी अर्जुन मेक–II के लिए तैयार कर लिया गया है। यह टैंक कमांडर को रात्रि निगरानी तथा पूरी फायर क्षमता प्रदान करता है। सीपीएस मेक–II के निगरानी तथा फायरिंग परीक्षण को पोखरन रेंज में सफलतापूर्वक किया गया है।

vijVM 1000 ,pih btu टी–72 टैंक के वी 46–6

हेल्मेट माउंटेड थर्मल इमेजिंग कैमरा

इंजन की मोबिलिटी बढ़ाने के लिए पावर आउटपुट को 780 एचपी से 1000 एचपी कर दिया गया है। एक इंजन परीक्षण के समय 400 घंटे तक चलने की क्षमता को पूरा करता है। इस इंजन को दो टी–72 टैंकों में एकीकृत किया गया था और डीआरडीओ तथा प्रयोक्ता द्वारा गहन फील्ड परीक्षण किए गए थे। इंजन की क्षमता तथा जीवन को बढ़ाने के लिए इसकी कूलिंग प्रणाली, एयर फिल्टरेशन, ब्रीदिंग प्रणाली, ऑयल फिल्टर तथा इंजन की क्षमता को अनुकूलतम करने के लिए गहन सुधार किए गए थे।

,;jØk¶V ekmVM ,Dlslj fx;jckDl

¼,,e,thch½% एयरक्राफ्ट माउंटेड एक्ससरी गियरबॉक्स (एएमएजीबी), एलसीए–तेजस वायुयान के लिए गौण विद्युत प्रणाली (एसपीएस) बनाता है। इसे चार एक्सेसरियों को चलाने के लिए डिजाइन किया गया है, नामतः दो हाइड्रॉलिक पंप, एक एकीकृत ड्राईव जनरेटर (आईडीजी) तथा वायुयान प्रचालन के लिए एक जेट ईंधन स्टार्टर (जेएसएस)। डीआरडीओ ने एएमएजीबी के 12 प्रोटोटाईपों का विकास तथा परीक्षण किया है जिसमें से 07 गियर बॉक्स उड़ान परीक्षण के लिए एडीए को सौंप दिए गए हैं। एचएएलके टीओटी गियरबॉक्सों सहित इन गियर बॉक्सों ने अब तक 1756 से भी ज्यादा उड़ानों के 2594 घंटे पूरे कर लिए हैं। डिजाइन वैधता को आवश्यक 1000 घंटों के सहनशक्ति परीक्षण करने के बाद सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया था और गुणता परीक्षण पूरा किया गया था। आवश्यक दस्तावेज, जांच रिपोर्ट, डिजाइन अन्य दस्तावेज, पूरी संहिता और विस्तृत हिस्सों की सूची पूरी कर ली गई है और उसे उड़ान योग्य (एयरवर्दी) एजेंसी को सौंपा गया है। गियरबॉक्स की दक्षता तथा प्रलेखन के प्रस्तुतीकरण के आधार पर, एएमएजीबी को टाईप प्रमाणपत्र जारी किया जाता है।

भारतीय थल सेना ने भारी वाहन निर्माणी, आवडी को 124 अर्जुन एमबीटी के लिए मांग पत्र भेजा है। आज की तारीख में थल सेना को 110 टैंक सौंप दिए गए है।

ikoj Vsdvkl Q ¼ihVhvks½ 'kk¶V% एक ऐसे हल्के भार वाले, उच्च गति लचीले पीटीओ शाफ्ट को डिजाइन तथा विकसित किया गया है जो एलसीए–तेजस के लिए 16,810 आरपीएम पर 250 एचपी को ट्रांसमिट करने में सक्षम है। पीटीओ शाफ्ट के उड़ान परीक्षण पूरे कर लिए गए है। आवश्यक गुणता परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लेने के बाद सौंपने योग्य दो पीटीओ शाफ्टों को प्रयोक्ताओं को सौंप दिया गया है। पावर परीक्षण के कुल 1200 घंटे तथा पीटीओ शाफ्ट के 900 स्टार्ट साईकल सिम्यूलेशन परीक्षण किए गए थे। महत्वपूर्ण एसेम्बली का प्रौद्योगिकी हस्तातंरण आरंभ किया गया है।

ch,eih 'kgjh mŸkj thfork fdV% इस परियोजना का लक्ष्य बीएमपी के लिए एक शहरी उत्तरजीविता किट का विकास करना है जो दुश्मनों के शस्त्रों से सुरक्षा के स्तर में वृद्धि करेगा। इस परियोजना का सफलतापूर्वक डिजायन और विकास कर लिया गया है। इसके अंदर कई खूबियां हैं जैसे आरपीजी को विफल या डेटोनेट करने के लिए वाहन के अग्र एवं पार्श्व भागों में हल्के वजन के सम्मिश्र पिंजरा कवच हैं, निर्मित क्षेत्रों में पॉपिंग आउट के साथ परिचालन करने के लिए चालक की गुमटी में बुलेट प्रूफ शीशा; टर्रेट और पिछले दरवाजों के लिए आरपीजी नेट, सीमांत सड़कों पर ड्राइविंग में सहायता के लिए सिरा मार्किंग पोल, और प्रकाशिक यंत्रों और दृष्टि उपकरणों की किरचों से सुरक्षा के लिए तार मेस रक्षक। वर्तमान में, प्रयोक्ताओं द्वारा इस वाहन का इसकी क्षमता के लिए मूल्यांकन किया जा रहा है और तदनुसार प्रयोक्ता परीक्षणों के आधार पर आवश्यक परिवर्तनों को शामिल कर लिया जाएगा।

bLVªesaVsM vo/kko jkWM% संचलन आसान बनाने और स्नोपैक सूचना को ग्रहण करने के लिए डीआरडीओ ने एक इंस्ट्रूमेंटेड अवधाव रॉड का डिजायन और विकास किया है। इस यंत्र को एक लोड सेल, चुम्बकीय डेफ्थ सेंसरों, थर्मो कपल, ग्लोबल पोजीशनिंग प्रणाली (जीपीएस) के साथ जोड़ा जाता है। अवधाव रॉडों का विकास प्रयोक्ताओं जैसे सेना, ट्रैकर्स और वैज्ञानिकों को ध्यान में रखते हुए तीन रूपों में किया गया है। इस इंस्ट्रूमेंटेड रॉड में अवधाव में हताहत व्यक्तियों की खोज, बचाव अभियान और अवधाव जोखिम मूल्यांकन और अन्य वैज्ञानिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्नो पैक डाटा एकत्र करने का भी प्रावधान है।

8-15 vk;q/k i).kkfy;k

foLQkVd [kkst fdV% एक अमेरिकी कंपनी ने डीआरडीओ की एक अंगीभूत प्रयोगशाला, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल), पुणे

द्वारा विकसित विस्फोटक खोजी किट की प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए डीआरडीओ के साथ एक लाइसेंसिंग समझौता किया है। एचईएमआरएल ने विस्फोटकों का तुरंत पता लगाने और पहचानने के लिए एक किट विकसित किया है जो नाइट्रो ईस्टर्स, नाइट्रामाइंस, ट्राइनाइट्रोटॉल्यूइन (टीएनटी), डायनामाइट या काले पाउडर के मेल से किसी भी विस्फोटक की खोज और पहचान कर सकता है। यह प्रौद्योगिकी अत्यंत प्रभावशाली है और इसका उपयोग भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा किया जा रहा है और अब अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी इससे सहायता मिलेगी।

5-56 feeh bulkl jkbQy ,oa gYdh e'khu xu ds fy, Dyksat DokVZj ;q) ds ¼lhD;wch½ xksykck:n% कम दूरी पर उच्चतर घातकता देने के लिए 5.56X45 मिमी इनसास गोलाबारूद को पुनः डिजायन किया गया है । सेना ने आईएफएस मऊ में प्रथम एवं द्वितीय चरण के प्रयोक्ता परीक्षण किए हैं और वर्तमान में जीएस मूल्यांकन किया जा रहा है ।

dksuk Qk;fjax 'kó% यह एक विशेष प्रयोजन का शस्त्र है जिसका उपयोग निम्न तीव्रता की युद्ध संक्रियाओं (एलआईसीओ) विशेषतया शहरी युद्ध पद्धतियों और बंधक परिस्थितियों में किया जा सकता है। यह जवान को गोलीबारी की सीध में आए बगैर कोने से ग्रेनेड्स और के ई गोलाबारूद दागने में सक्षम होगा। इस शस्त्र प्लेटफार्म का मोड़ा जा सकने वाला हिस्सा भिन्न–भिन्न शस्त्रों के लिए अलग–अलग होगा। यह शस्त्र विभिन्न उपकरणों जैसे अलग किये जा सकने वाले कैमरे, दृश्य और आई आर लेजरों और टैक्टिकल फ्लैशलाइट्स, रंगीन एलसीडी मॉनीटर से लैस होगा ताकि कोने से आस–पास शूट करने के लिए संप्रेषण क्षमता के साथ वीडियो प्रेक्षण और दृश्य प्रणाली उपलब्ध कराई जा सके।

105 feeh 37 dSfyCkj Hkkjrh; QhYM xu ds fy, ekWM~;wyj pktZ iz.kkyh% फील्ड गन के लिए नाल सिरा अवरोधन के आधार पर मॉड्यूलर चार्ज प्रणाली का विकास किया गया है जिसे देश में विकसित ब्रास स्टब से कारगर बनाया गया है। मॉड्यूलर चार्ज के सभी घटकों जैसे दहनीय मॉड्यूलर केस, प्रणोदक, ब्रास स्टब, इग्नाइटर, प्राइमर, पॉलिस्टर बैग, वीयर रिड्यूसिंग लाइनर और डीकॉपरिंग एजेंट का डिजायन और विकास किया गया है और उनका स्वदेशी स्रोत स्थापित किया गया है । सभी विकास परीक्षण पूरे किये जा चुके हैं और परिवर्ती परीक्षणों के बाद एक नया रेंज टेबल संकलित किया गया है ।

jsy VSd jkdsV LysM iz.kkyh&jk"Vªh; tkap lqfo/kk% नए आरटीआरएस ट्रैम पर स्लेड के प्रणोदन के लिए 2.4 सेकंड के ज्वलन समय के साथ 6700 के जी एफ थ्रस्ट के नए रॉकेट मोटर का सफलतापूर्वक डिजायन किया गया है। केसिंग तैयार किया गया है और प्रूफ टेस्ट किया गया है।

IykfLVd cqysV% प्रदर्शनों के रूप में लोगों के द्वारा किए जाने वाले उपद्रव जिनसे पारंपरिक रूप में लाठी चार्ज, आंसू गैस, गोली आदि से निपटा जाता है और जिससे मौत आदि भी हो जाती है, को रोकने के लिए पुलिस और कानून को लागू करने वाली एजेंसियों के लिए दंगा नियंत्रण गोला–बारूदों का डिजायन एवं विकास किया गया है। ऐसे गोला–बारूद का वर्तमान में देश की विभिन्न ऐसी एजेंसियां उपयोग कर रही हैं। ये भय पैदा करके तथा अघातक तकनीकों का उपयोग करके उपद्रवी स्थितियों को रोकते हैं। किसी सख्त लक्ष्य से टकराने के बाद यह छोटे–छोटे टुकड़ों में टूट जाता है।

,,u&32 ok;q;ku ds fy, ch,y&2, vfXu fu;a=.k bdkbZ% एक माइक्रोनियंत्रक आधारित बीएल–2ए यूनिट का सफलतापूर्वक विकास किया गया है जिसका संगत ईएमआई/ईएमसी, पर्यावरणीय और कार्यात्मक परीक्षण किया गया है। इस यूनिट को आरसीएमए कानपुर द्वारा उड़न योग्यता प्रमाणपत्र दिया जा चुका है। इस प्रणाली का 1, बीआरडी, वायु सेना स्टेशन, कानपुर में भू–परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है।

mUUkr vkWDlhdj.k izfØ;k ¼,vkschih½ izkS|ksfxdh%

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की बहिःस्राव सीमा का अनुपालन करते हुए बहिःस्रावों से सभी प्रकार के विषैले और खतरनाक कार्बनिक और सायनायड यौगिकों को नष्ट करने के लिए उन्नत आक्सीकरण प्रक्रिया (एओपी) प्रौद्योगिकी विकसित की गई है। इस प्रक्रिया से किसी प्रकार का विषैला उप–उत्पाद पैदा नहीं होता है एवं इसके अंतिम उत्पाद कार्बन डाइआक्साइड, हाइड्रोजन आक्साइड और अकार्बनिक लवण होते हैं। यह प्रक्रिया साफ और प्रयोक्ता अनुकूल है तथा संसाधित जल का पुनःउपयोग किया जा सकता है। इस प्रौद्योगिकी का रंग और विस्फोटक संयंत्र बहिःस्राव में प्रायोगिक संयंत्र स्तर पर जांच की गई है। एओपी प्रौद्योगिकी का रक्षा के साथ–साथ नागरिक क्षेत्रों में भी उपयोग किया जा सकता है। इस प्रौद्योगिकी को वाणिज्यीकरण के लिए निजी क्षेत्र को हस्तांतरित किया जा चुका है।

ty dqgklk vk/kkfjr vfXu 'keu iz.kkyh ¼MCY;w,e,Q,l,l½& अग्नि शमन प्रणाली को सफलतापूर्वक अभिपुष्ट करके वास्तविक स्केल कंपार्टमेंट (590 एम3) में प्रयोक्ताओं के समक्ष प्रदर्शित करके स्थापित एवं कमीशन किया जा चुका है। डब्ल्यूएमएफएसएस के कार्यनिष्पादन का मूल्यांकन जांच प्रोटोकाल के अनुसार पनडुब्बी अग्नि परिस्थितियों का अनुरूपण करने का विभिन्न अग्नियों में किया गया है जिनमें ज्वलनशील द्रव पूल अग्नि एवं स्प्रे अग्नि, लकड़ी, रूई के गद्दे एवं पी यू फोम आग, बिजली उपकरणों की आग और गैलरी आग शामिल हैं।

ijkvo'kks"kd tSy }kjk fo"kSyh vkSj Hkkjh /kkrq vk;uksa dk gVkuk% विषैले और भारी धातु आयनों को दूषित जल से हटाने में पॉलीएक्रिलिक एसिड आधारित जैल को काफी असरदार पाया गया है । विभिन्न धातु आयनों जैसे क्रोमियम, तांबा, कैडमियम, कोबाल्ट, जिंक, पारा और निकेल को जल से अलग करने के लिए बैच स्केल अवशोषण प्रयोग किए गए हैं जिनमें कमरे के तापमान पर 1 ग्राम जैल पर 600 ग्राम जल की फुलाव क्षमता का प्रयोग किया गया है ।

lfEeJ iz.kksnu iØe.k lqfo/kk% माननीय रक्षा मंत्री ने नासिक में डीआरडीओ की नवीनतम सम्मिश्र प्रणोदन प्रक्रमण सुविधा का उद्‌घाटन किया और इसे राष्ट्र को समर्पित किया। यह सुविधा डीआरडीओ की पुणे स्थित एक प्रयोगशाला उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल) द्वारा स्थापित की गई है जो ठोस रॉकेट प्रणोदकों समेत उच्च ऊर्जा पदार्थों के अनुसंधान एवं विकास में संलग्न है। ऊर्जावान सामग्री उन्नत केंद्र (एसीईएम) की ठोस रॉकेट मोटरों के लिए उनके विकास के दौरान कंपोजिट प्रणोदकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ सीमित श्रृंखला उत्पादन के लिए एक समर्पित सुविधा के रूप में स्थापना की गई है। यह सुविधा आधुनिकतम उपस्करों और मशीनरी से लैस है जिन्हें प्रोग्रामेबल लॉजिक नियंत्रक (पीएलसी) और पर्यवेक्षक नियंत्रण और आंकड़ा अधिग्रहण (एससीएडीए) द्वारा दूर से ही संचालित किया जाता है, इस प्रकार इन खतरनाक प्रक्रियाओं से मानव को दूर रखा जाता है। इसमें एक बहुत बड़ी संख्या में महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियां और मशीनरी शामिल हैं जिनका डिजायन,विकास और निर्माण 40 निजी कंपनियों की मदद से स्वदेश में ही किया गया है।

8-16 ukSlsuk iz.kkfy;k¡

iuMqCch lksukj&Å'kql&यह एक एकीकृत पनडुब्बी सोनार प्रणाली है जो भारतीय नौसेना की आनबोर्ड ईकेएम श्रेणी की पनडुब्बियों में एमजीके 400 एवं एमजी 519 सोनारों के स्थान पर लगती है। इस प्रणाली में निष्क्रिय निगरानी सोनार, सक्रिय सोनार, इंटरसेप्टर सोनार, अंतर्जलीय संचार प्रणाली और बाधा से बचाने वाला सोनार शामिल है। इस प्रणाली के प्रभावी प्रयोग के लिए एएसडब्ल्यू संक्रियाओं के प्रशिक्षण और अनुरक्षकों के लिए अनुरूपक विकसित किया गया है। इस प्रणाली को तीन प्लेटफार्मों पर चालू किया गया है और आगामी वर्षों में दो और प्रणालियों को चालू किया जाएगा ।

Å'kql lksukj vuq:id% इस परियोजना का उद्देश्य पनडुब्बी विद्यालयों के लिए दो सोनार ऊशुस अनुरूपकों

का विकास और आपूर्ति करना है ताकि इससे ऊशुस सोनार प्रचालकों के प्रशिक्षण में सुविधा हो और इससे सोनार के सभी प्रचालन तरीकों और व्यवस्थाओं के अधिकतम और प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित किया जा सके। ये अनुरूपक इस प्रणाली में प्रदत्त औजारों के आसान और प्रभावी अनुरक्षण के लिए ऊशुस सोनार अनुरक्षकों को भी प्रशिक्षण देंगे ।

ubl ih<h dk gy ekmVM lkukj gElk&,uth% यह एक उन्नत सक्रिय एवं निष्क्रिय एकीकृत सोनार प्रणाली है जो विभिन्न प्रकार के भारतीय नौसेना प्लेटफॉर्मों पर फिट किए जाने के लिए है। भारतीय नौसेना द्वारा कुल 10 प्रणालियों के आर्डर दिए गए थे। हम्सा एनजी मुख्यतया एक सक्रिय सोनार प्रणाली है जिसमें बढ़ी हुई निष्क्रिय और अवराधक क्षमताएं हैं। हम्सा–एनजी प्रणाली में बहुत सी उन्नत सिग्नल और सूचना प्रक्रमण क्षमताएं और विशेषताएं हैं। हम्सा–एनजी और इसके वेरिएंट्स की अगले दो दशकों में प्रचालन में आने की उम्मीद है। भारत इलेक्ट्रानिक्स को ब्रह्मपुत्र और दिल्ली श्रेणी पोतों पर प्रतिस्थापन के लिए छः अन्य प्रणालियों के आर्डर दिए गए हैं। इस परियोजना में विकास की समय–सीमा का डिजायन, उत्पादन और प्रयोक्ता एजेंसी के बीच उत्तम समन्वय के साथ कड़ाई से पालन किया गया।

पनडुब्बी सोनार प्रणाली को तीन प्लेटफार्मों पर चालू कर दिया गया है और आने वाले वर्षों में दो और प्रणालियों को चालू किया जाएगा।

ukxu% इस परियोजना का उद्देश्य एक सक्रिय एवं निष्क्रिय कर्षित अरे सोनार (एटीएएस) का डिजायन, विकास, संस्थापन एवं उसके कार्यनिष्पादन का प्रदर्शन करना है। आईएनएस शारदा ने, जिस पर एटीएएस को स्थापित किया गया है, जून 2010 से नवंबर 2011 तक एमआर में प्रवेश किया है । इस प्रणाली का तकनीकी मूल्यांकन परीक्षण 2012 में शुरू होगा ।

mUUkr rkjihMks j{kk i.kkyh ¼,VhMh,l½] ekjhp% यह सतही पोतों के लिए विंटेज आधुनिक तारपीडो के स्थान पर एक संपूर्ण पैकेज है। मारीच में निष्क्रिय एवं सक्रिय होमिंग तारपीडो को खोजने और ट्रैक करने के लिए कर्षित ऐरे सोनार और हल माउंटेड ऐरे सोनार के साथ इंटरफेस है। यह प्रणाली एफ सी एस प्रणाली, विस्तारणीय डेकॉय, इत्यादि से एकीकृत है जिसे एन एस टी एल, विशाखापत्तनम द्वारा मारीच परियोजना के अधीन विकसित किया गया है। साथ में यह प्रणाली तारपीडो को खोजने, ट्रैक करने, उसकी वास्तविक स्थिति का पता करने, वर्गीकृत करने और ध्वनिकी के आधार पर डेकॉय करने में सक्षम है। 2011 में मैसर्स भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, बेंगलोर जो इसकी नामोद्दिष्ट उत्पादन एजेंसी है, के माध्यम से इसके आर्डर दिए जा चुके हैं। आई एन एस गंगा पहला प्लेटफॉर्म होगा, जिसमें ऐसी उत्पादन ग्रेड प्रणाली को स्थापित किया जाएगा।

fuEu vkofŸk okyk Mfidu lkukj ¼,y,QMh,l½% यह पनडुब्बी रोधी युद्ध पद्धति के विरुद्ध एक वायुवाहित प्रणाली है, जिसमें एक निम्न आवृत्ति वाला डिप्पिंग सोनार है और लंबी दूरी के जमीनी खतरों को भांपने के लिए सोनोबॉय प्रोसेसिंग (सोनिक्स) क्षमताएं हैं। एल एफ डी एस प्रणाली ने जो ए एल एच के ए एफ सी एस के साथ एकीकृत है व्यापारिक पोतों और नौसेना सतही लक्ष्यों को खोजने में समुद्र में अभियान के सक्रिय, निष्क्रिय और सोनिक तरीकों को सिद्ध किया हैं। सामुद्रिक खोज और स्थानीकरण पेरिस्कोप द्वारा प्राप्त किया जाता है और उनसे उत्पन्न गोताखोरी वाली परिस्थितियां छिछले पानी और गहरे पानी में उनके कार्यनिष्पादन की पुष्टि करते हैं। इस समय, प्रयोक्ता से जुड़े परीक्षणों के एक और दौर के लिए प्रणाली सूक्ष्म समस्वरण किया जा रहा है।

,dh—r rVh; fuxjkuh i.kkyh ¼vkbZlh,l,l½% इस परियोजना का लक्ष्य एक तटीय निगरानी प्रणाली का डिजायन और विकास करना है जिसमें डीआरडीओ सेंसर्स का प्रयोग किया जाएगा जिससे कि एक सामान्य ऑपरेटिंग तस्वीर का विकास हो सके, जिसमें सतह और

उप–सतह के घुसपैठियों को स्वतः पहचाना जा सके। इस परियोजना के प्रथम चरण के दौरान एक प्रायौगिक मॉड्यूल कोच्चि में लागू किया जाएगा। प्रायौगिक मॉड्यूल के बाद दूसरा मॉड्यूल बालासोर में स्थापित किया जाएगा। दोनों मॉड्यूलों में तीन दूरस्थ स्टेशन होंगे। प्रत्येक दूरस्थ स्टेशन में रडार या अन्य सेंसरों को माउंट करने के लिए एक पर्यवेक्षण मीनार और प्रोसेसिंग इलेक्ट्रानिक्स या प्रदर्शन प्रणालियों के लिए एक जमीनी स्टेशन होगा।

Lon'k% एक अत्याधुनिक अन्तर्जलीय निगरानी प्रणाली को साकार करने में नए सोनार विंचों, अंतर्जलीय निकायों के विकास की प्रौद्योगिकी और इससे जुड़ी अवयव प्रौद्योगिकियां एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य भूमिका निभाती हैं। इसलिए अंतर्जलीय निगरानी प्रणाली अनुप्रयोगों के लिए इस परियोजना को अत्याधुनिक उन्नत सोनार विंचों और हैंडलिंग प्रणालियों, अंतर्जलीय निकायों, महत्वपू र्ण अवयव प्रौद्योगिकियों, जैसे केबल, कनेक्टर्स और टर्मिनेटर्स का विकास करने पर केंद्रित किया गया है।

8-17 mUUkr lkefx;k vkj dEikftV l

VkbVfu;e Likt dk vk|kfxd Lrj ij mRiknu% टाइटेनियम स्पोज का औद्योगिक स्तर पर उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी को मैसर्स केरल मिनरल्स एंड मेटल्स लिमिटेड, छावड़ा, कोल्लम, केरल में एक 500 टी पी वाई वाणिज्यिक टाइटेनियम स्पोंज प्लांट स्थापित करने के लिए हस्तांतरित कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त इसरो की फंडिंग की मदद से के एम एम एल स्पोंज संयंत्र को स्थापित करने के लिए संपूर्ण आधारभूत अभियांत्रिकी सहायता प्रदान करने के लिए संयंत्र को खड़ा करने और शुरु करने में डीआरडीओ की भी सक्रिय भूमिका है। इस संयंत्र का 27 फरवरी, 2011 को माननीय रक्षा मंत्री ने उद्घाटन किया था। तदनुसार उत्पादन शुरु हो चुका है और पहला टाइटेनियम स्पोंज केक सितंबर 2011 में उत्पादित किया गया। यह स्पोंज कठोर गुणता आवश्यकताओं को पूरा करता है।

j{kk vuqi;kxk d fy, vY;fefu;e feJ èkkrq dk Lon'khdj.k% भारतीय रक्षा के लिए अपेक्षित अधिकतर गढ़ा अल्युमिनियम मिश्र धातु की वर्तमान समय में आयात द्वारा ही पूर्ति की जा रही है। एक प्रोजेक्ट की शुरूआत की गई है जहां चयन किए गए गढ़े हुए अल्युमिनियम में मिश्र धातुओं में विभिन्न अर्द्ध–उत्पाद के आकारों का उत्पादन भारतीय अल्युमिनियम उद्योगों में विद्यमान आधारभूत सुविधाओं के उपयोग एवं उचित निरीक्षण एजेंसियों द्वारा प्रमाणित प्रकार से किया जा रहा है। तीन विभिन्न अल्युमिनियम मिश्र धातुओं का अपेक्षित अर्द्ध–उत्पाद आकारों एवं प्रमाणन प्रक्रियाओं के अनुसार अपेक्षित तापमान पर गर्मी पैदा कर सफलतापूर्वक उत्पादन किया गया है। ये AA2219T8511 निष्कासनों में व्यासों अर्थात् 40, 60 एवं 85 एमएम (मिसाइल अनुप्रयोगों के लिए) और AA6082T651 निष्कासनों में व्यासों अर्थात् 60,100 एवं 150 एमएम (आयुध अनुप्रयोगों के लिए) का आयुध निर्माणी अंबाझरी, नागपुर में उत्पादन और AA6061T6 सीटों में 2 मोटाई अर्थात् 1.5 एवं 2.0 एमएम (एयरोस्पेस अनुप्रयोगों) के लिए बाल्को, कोरबा में उत्पादन किया गया।

dek¶yt iVu ih<h lk¶Vo;j flxek&ed&111% सशस्त्र सेनाओं के फीडबैक पर पहले विकसित सिगमा–मेक 11 रूपांतर के आधार पर सिगमा–मेक–111 सॉफ्टवेयर का उन्नत रूपांतर विकसित किया गया है। सॉफ्टवेयर के नए रूपांतर में 3डी मॉडलों पर इंटरएक्टिव पैटर्न पीढ़ी; रंगों के मिलान के लिए परावर्तन आकड़ा कल्पनाय अनुकृत पेंटिंग के लिए कैमोफ्लेज पैटर्न को शामिल किया गया है।

ukVk lV% अद्यतन नाटो वस्त्र ठंड के मौसम में एक बचाव वस्त्र है जो उच्च तुंगता में स्थित वायुयान के सदस्यों को बचाव प्रदान करता है । यह सूट वास्तव में हल्के वजन का एकल पीस है जो थर्मल वेस्ट और ड्राअर के साथ टेंडम में प्रयोग होता है जिससे बेहतर इंशुलेशन एंव आराम मिलता है । इस उत्पाद को शामिल करने के लिए स्वीकार कर लिया गया है । प्रौद्योगिकी स्थानांतरण पूरा कर लिया गया है। इसका बड़ी मात्रा में उत्पादन

कर 103 लाख रू. की लागत से इसके 250 सूटों को सम्मिलित कर लिया गया है।

8.18 t|o foKku i|.kkfy;k@mRikn

VfyefMlhu i|.kkyh% पोर्टेबल टेलिमेडिसन प्रणाली एक विषम बायोमेडिकल आंकड़ा अधिग्रहण एवं प्रसारण प्रणाली जिसका लक्ष्य सशस्त्र सेना कार्मिकों विशेष रूप से सैन्य अस्पतालों के अग्रिम क्षेत्रों एवं जहाज से समुद्र तट तक स्वास्थ्य मानीटर एवं प्रबंधन करना है। इस प्रणाली में हार्डवेयर शामिल है जो आकड़ा अधिग्रहण प्रणाली एवं एमआईएल ग्रेड लैपटॉप के माध्यम से रोगियों से ईसीजी, ब्लड प्रेशर, श्वास गति, हृदय गति, एसएओ2 एवं शरीर के तापमान जैसे मुख्य प्राचलों का अधिग्रहण करता है । इस प्रणाली की मुख्य विशेषताएं इसकी पोर्टेबिलिटी और विभिन्न संचार रीतियों जैसे सैटकॉम, वी सैट, इनमारसैट, पीएसटीएन एंव आईएसडीएन तथा वीडियो कांफ्रेसिंग सुविधाओं में संचालन की नम्यता है।

, dh—r vkJ;% सैनिकों को हिमालय क्षेत्र की विपरीत मौसम परिस्थितियों से बचाव प्रदान करने के लिए एकीकृत थर्मल संचालित आश्रय को 15 जून 2011 को मुख्यालय 14 कोर लेह, लद्दाख को समर्पित किया गया। इन आश्रय स्थलों का डिजायन एवं विकास एकीकृत तापमान रेगुलेटर, बायोडायजेस्टर एवं वायु मानिटरिंग प्रणालियों से सुसज्जित कर दिया गया है। आश्रय स्थल का डिजायन माड्यूलर है और एचवीएसी, विद्युतीय, पलंबिंग एवं जल आपूर्ति, मलजल निपटान, केरोसिन जेनसेट एवं सोलर पावर इस आश्रय स्थल के अन्तर्गत अच्छे तरीके से एकीकृत किए गए हैं। इन आश्रय स्थलों का डिजाइन जोन स्तर की भूकंपीय गतिविधियों 55 एम/सेकेंड तक की हवा की गति एवं 0 से 35 डिग्री तक का मुकाबला कर सकता है। आश्रय स्थल के अंदर सुरक्षा सीमाओं के अंदर कार्बन–डाई–ऑक्साइड के स्तर को नजदीक से मानीटर एवं देखा जा सकता है।

Y;|dkMek d| fy, gc|y d|;j mRikn% ल्यूकोडर्मा के लिए डीआरडीओ द्वारा विकसित एक हर्बल उत्पाद मलहम एवं ओरल तरल पदार्थ के रूप में उपलब्ध है। एमिल फार्मास्यूटिकल्स (इंडिया) लिमिटेड, नई दिल्ली को उनके प्रौद्योगिकीय एवं मार्केटिंग विश्वास को देखते हुए इस उत्पाद के उत्पादन एवं मार्केटिंग करने के लिए 'प्रौद्योगिकी हस्तांतरण' की मंजूरी दी गई है। दवाई के रूप में यह उत्पाद अत्यंत प्रभावी है जो न केवल प्रभावी क्षेत्र में सामान्य रंग को बरकरार रखता है बल्कि प्रभावी लोगों को मानसिक तनाव, भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक सदमों से भी मुक्ति दिलाता है, जिससे विश्वास एवं क्षमता बढ़ती है।

ePNjjk/kh% मैक्सो डाइइथाइल फिनाइल एसिटामाइड (डीईपीए) पर आधारित एक विविध कीटरोधी है जो दो रूपांतरों 'मैक्सो–मिलिट्री' एवं 'मैक्सो–सेफएंड सॉफ्ट' में उपलब्ध है। यह विकर्षक पोंछन के रूप में उपलब्ध है जिसकी लागत तीन रूपये मात्र है। इन्हें मच्छरों एवं अन्य खून चूसने वाले कीटों से व्यक्तिगत बचाव के लिए प्रयोग किया जा सकता है, विशेष रूप से वे कीट जो मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया बुखार के लिए उत्तरदायी हैं।

cpko ekLd% इसकी आवश्यकता रासायनिक एवं जैविक युद्धपद्धति (सीबीडब्ल्यू) एजेंटों से बचाव के लिए छोटी अवधि के लिए स्वदेशी रूप में बचाव मास्क के विकास में होता है। अपरिहार्य परिस्थितियों जैसे एन बीसी हमला, बचाव साजो–सामान एवं प्रणाली की स्थिति में आने के लिए लोगों को सुरक्षित स्थान में जरूरत होती है। सुरक्षित स्थानों या साजो–सामान से सुसज्जित होने के लिए बचाव की स्थिति में पहुँचने तक कम अवधि के लिए सीबीडब्ल्यू एजेंटों से बचाव के लिए श्वास संबंधी बचाव की आवश्यकता पड़ती है। बचाव मास्क स्थायी एवं गैर स्थायी सीडब्ल्यू एजेंटों एवं वायु वाहित सूक्ष्म जीवों से बचाव प्रदान करता है ।

ck;k ekLd% इसे जैविक युद्धपद्धति (बीडब्ल्यू) एजेंटों से श्वास संबंधी बचाव प्रदान करने के लिए विकसित किया जा रहा है । अपरिहार्य परिस्थितियां घटित होने जैसे बायो हमला या बीमारियों के असमान रूप से फैलने की स्थिति में बी डब्ल्यू एजेंटों से लोगों को बचाने के

लिए श्वास संबंधी बचाव की आवश्यकता होती है।

dkcu ekukvkDlkbM ,vj DyhÇux fQYVj dkjrl% पनडुब्बियों में प्रयोग के लिए स्वदेशी रूप से विकसित पैलेडियम इम्प्रेगनेटिड कार्बन का विकास सीओ एअर क्लीनिंग फिल्टर कारतूसों के लिए किया गया और इसका कार्य–निष्पादन मूल्यांकन संतोषजनक रूप से पूरा कर लिया गया।

vkRefuHkj lkj vkJ; lkt% इसके डिजाइन को विकसित कर सियाचिन बेस कैम्प एवं लेह में सोलर पैनलों एवं रेखीय अक्षीय विंड टरबाइन (1 के डब्ल्यू) के साथ इंस्टाल किया गया है। तापमान के लिए डाटा लागर्स को इंस्टाल किया गया है। अंदर और बाहर दोनों का तापमान संग्रह प्रगति पर है।

?kjy ty 'kf)dj.k% एक घरेलू जल शुद्धिकरण यूनिट का विकास किया गया है जो पीने योग्य पानी में अनुमति योग्य सीमा तक लोहा, आर्सनिक एवं मैंगनीज के दूषणों को हटा सकता है। यह बैक्टीरिया के दूषण को भी रोक सकता है। प्यूरीफायर का आउटपुट प्रति घंटा 1.2 लिटर है। विस्तृत परीक्षणों के लिए 50 फिल्टर बनाए गए हैं। नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर पोर्टेबल वाटर बोतल प्यूरिफायर के विकास हेतु परीक्षणों की शुरूआत की गई है।

8-19 vuqla/kku ,oa fodkl esa lg;ksx

Hkkjr ,oa ;w d u 0;oLFkk i= ij gLrk{kj fd,% 16 सितम्बर 2011 को भारत एवं यूनाइटेड किंगडम ने यूके की रक्षा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (डीएसटीएल) के साथ रक्षा अनु एवं विकास में सहयोग को बढ़ावा देने एवं संयुक्त प्रोजेक्टों, सहयोगी अनुसंधान एवं उद्योग एवं एकेडेमिया सहभागिता के माध्यम से संबंधित अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास क्षमता का बेहतर उपयोग करने के लिए सुविधा प्रदान करने के लिए व्यवस्था पत्र (एलओए) पर हस्ताक्षर किए। एलओए के हस्ताक्षर होने से दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि साबित होगी और आने वाले महीनों में कई प्रोजेक्टों की शुरूआत करने की योजना बनाई जा रही है।

fdfxl t& Hkkjr ekmVu efMdy fjlpl dUæ% यह दशानुकूलन में उच्चतुंगता और जातीय विभिन्नता के अलग–अलग पहलुओं का अनुसंधान करने हेतु बिशकेक तथा टोया आशु (उच्च तुंगता फील्ड स्टेशन) में स्थापित किया गया है। इस केंद्र का रक्षामंत्री द्वारा 5 जुलाई, 2011 को उद्घाटन किया गया।

MhvkjMhvk vuql/kku ,oa uokpkj dæ% अकादमिक परस्पर क्रिया के माध्यम से अनुसंधान की गुणता को बढानें के प्राथमिक उद्देश्य एवं उद्योगों को भी अनुसंधान के प्राथमिक स्तर पर दी सहभागिता बढ़ाने के लिए सामर्थ्यवान बनाने हेतु डीआरडीओ ने आईआईटी मद्रास अनुसंधान पार्क (आईआईटीएमआरपी) के साथ दीर्घ अवधि का समझौता कर आईआईटीएमआरपी में डीआरडीओ अनुसंधान एवं नवाचार केंद्र की स्थापना की है। यह केन्द्र डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं के साथ विद्वत्परिषद, अनुसंधान विद्यार्थियों, छात्रों एवं तकनीकी अनुकूल उद्योगों के साथ सक्रिय सहभागिता कर हित के क्षेत्रों में 'प्रत्यक्ष अनुसंधान' में समर्थ बनाएगा। नवीनतम प्रयोगशाला सुविधाओं की स्थापना के पूरे होने का कार्य पूर्ण होने के अंतिम स्तर पर है। यह केन्द्र आईआईटी संकाय के साथ नजदीकी समन्वय कर उच्च अनुसंधान को बढ़ाने हेतु एक उच्च आकड़ा केंद्र नेटवर्क होगा।

8-20 iqjLdkj

foØe lkjkHkkbl eeksfj;y iqjLdkj% 98वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस– 2011 में रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, सचिव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग तथा महानिदेशक अनुसंधान एवं विकास, डॉ. वी के सारस्वत को विक्रम साराभाई मेमोरियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार

> **''उच्च तकनीकी अकादमिक एवं सरकार'' श्रेणी में डीआरडीओ को प्रतिष्ठित थामसन रायटर्स इंडिया नवाचार अवार्ड -2011 से सम्मानित किया गया है।**

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विश्वभर के 26 अग्रणी वैज्ञानिकों, जिनमें दो नोबेल पुरस्कार विजेता भी शामिल थे, के साथ उन्हें दिया गया था। डॉ. सारस्वत ने इस अवार्ड को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नवीनतम सैन्य प्रौद्योगिकियों को विकसित कर भारत को गौरवशाली बनाने वाले समस्त डीआडीओ परिवार के प्रयासों को समर्पित किया ।

uokpkj vokM% डीआरडीओ को 'उच्च तकनीकी अकादमिक एवं सरकार' श्रेणी में प्रतिष्ठित थामसन रायटर्स इंडिया नवाचार अवार्ड–2011 से सम्मानित किया गया है। थामसन रायटर्स एवं भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा आयोजित समारोह में माननीय राज्य मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भू–विज्ञान मंत्रालय एवं योजना मंत्रालय ने इस अवार्ड को उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक (अनु एवं वि), डॉ. के डी नायर को प्रदान किया। इस अवार्ड को पेटेंट प्रोफाइल, सफलता दर, भूमंडलीकरण का क्षेत्र एवं विश्लेषण मानदडों के रूप में नवाचार के प्रभाव के आधार पर निर्णय किया गया था।

8-21 lpuk dk vf/kdkj ¼vkjVhvkbZ½ vfèkfu;e% लोक प्राधिकारियों के कार्य में उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता लाने के लिए आरटीआई अधिनियम 2005 प्रारंभ किया गया था। इसने भारत के नागरिकों को प्राधिकारियों के पास उपलब्ध सूचना तक पहुंचने में सक्षम बनाया। मानवाधिकार उल्लघंन तथा भ्रष्टाचार के मुद्दों को छोड़कर इस अधिनियम के सामान्य प्रावधानों के लागू होने में छूट देते हुए डीआरडीओ को आरटीआई अधिनियम–2005 की द्वितीय अनुसूची में रखा गया है। तदनुसार डीआरडीओ ने सूचना के प्रवाह को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रणाली तैयार की है। इसके अतिरिक्त उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए आदेशों के अनुसार दूसरी अनुसची में सूचीबद्ध संगठन आरटीआई अधिनियम से पूरी तरह से छूट प्राप्त हैं लेकिन पारदर्शिता के लिए संगठन ने आरटीआई के मामलों से निपटने के लिए अपनी प्रत्येक प्रयोगशाला/ स्थापना में लोक सूचना अधिकारियों (पीआईओ) की नियुक्ति की है। तदनुसार डीआरडीओ ने 56 सीपीआईओ एवं 12 सीएपीआईओ की नियुक्ति की है। डीआरडीओ मुख्यालय में भी एक लोक सूचना अधिकारी एवं एक मुख्य लोक सूचना अधिकारी (सीपीआईओ) है। संगठन ने डीआरडीओ पर लागू होने वाले आरटीआई अधिनियम के दिशा–निर्देश तैयार किए हैं जो संगठन के सभी लोक सूचना अधि ाकारियों के लिए एक संदर्भ दस्तावेज का काम करते है। संगठन ने एक विशिष्ट वेबसाइट भी शुरू की है जिसका नाम है www.drdo-rti.com.।

9

अंतर सेवा संगठन

रक्षा सेवा स्टाफ महाविद्यालय, वेलिंगटन

rhनों सेनाओं के लिए समान रूप से सेवाओं और साधनों को विकसित करना और रखरखाव तथा मितव्ययी लागतों पर उत्तम सुविधाओं के प्रबंधन का उत्तरदायित्व अंतर सेवा संगठनों पर है

9.1 निम्नलिखित अंतर–सेवा संगठन सीधे रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करते हैं:

(i) सेना इंजीनियर सेवा

(ii) सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा

(iii) रक्षा संपदा महानिदेशालय

(iv) मुख्य प्रशासन अधिकारी का कार्यालय

(v) जनसंपर्क निदेशालय

(vi) सेना क्रय संगठन

(vii) सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड

(viii) सेना चित्र प्रभाग

(ix) राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय

(x) विदेशी भाषा विद्यालय

(xi) इतिहास प्रभाग

(xii) रक्षा प्रबंधन महाविद्यालय

(xiii) रक्षा सेवा स्टाफ महाविद्यालय

(xiv) रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय

9.2 सेना इंजीनियर सेवा (एम.ई.एस.) सशस्त्र सेनाओं को संक्रियात्मक व ढांचागत सेवा प्रदान करती है। इस संगठन को पारंपरिक भवनों एवं फैक्टरियों से लेकर विशिष्ट परियोजनाओं, जैसे कि हवाई अड्डों, रनवे एवं नौसैनिक निर्माणों के तथा प्रयोज्यता सेवाओं के सिविल निर्माण कार्यों में विशेषज्ञता हासिल है।

सेना इंजीनियर सेवा को बड़े पैमाने पर एयरपोर्ट, हवाई पट्टी, समुद्री कार्य, उपयोगी सुविधाओं का निर्माण कार्य तथा नागरिक श्रेणी की परंपरागत बिल्डिंग और निर्माणियों के विशेष प्रोजेक्टस को करने में निपुणता प्राप्त है ।

9.3 सेना इंजीनियर सेवा सेना मुख्यालय में इंजीनियर–इन–चीफ के समग्र नियंत्रण में काम करती है जो ढांचागत विकास परियोजनाओं और संबंधित नीतिगत मामलों के लिए रक्षा मंत्रालय और तीनों सेनाओं के सलाहकार भी हैं। एम.ई.एस. का वार्षिक कार्यभार बजट 12000 करोड़ रुपए से भी अधिक है। यह सशस्त्र सेनाओं को किसी भी भू–भाग और जलवायु में युद्ध, शांति एवं आतंकरोधी आपरेशनों के दौरान समाघात क्षमता बढ़ाने में समर्पित सहयोग देने के लिए उत्तरदायी है। एम.ई.एस. मित्र राष्ट्रों के लिए विदेशों में ढांचागत निर्माण कार्यों द्वारा भारत सरकार की सैन्य कूटनीतिक पहल में भी सहयोग प्रदान करती है।

9.4 वर्ष के दौरान योजना एवं निष्पादन के अंतर्गत प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं:–

(क) i{kkxg&lg&fluek gky] ch-b-,- t h- ,o dæ] #Mdh% मार्च, 2011 में 6.44 करोड़ रुपए की लागत पर स्वीकृत 900 सीटिंग क्षमता के प्रेक्षागृह–सह–सिनेमा हॉल को सितंबर, 2011 में पूरा किया गया।

(ख) ik;ksfxd ifj;kstuk 'kq# djus lfgr mPp rqxrk {ks= esa lq/kkj% उच्च तुंगता क्षेत्रों में रिहाइश में सुधार के लिए एक प्रायोगिक परियोजना को 195 करोड़ रुपए की लागत पर स्वीकृत किया गया जिसमें लगातार पानी तथा बिजली आपूर्ति, सेंट्रल हीटिंग और सीवेज ट्रीटमेंट की व्यवस्था है।

(ग) xksok esa foekuksa ds fy, foeku'kkyk% तकनीकी सुविधा सहित अत्याधुनिक विमानशाला 30.23 करोड़ रुपए में स्वीकृत की गई थी और हाल ही में इसे पूरा किया गया है।

(घ) lkarkØqt esa foekuu lqfo/kk% इस कार्य को प्री–इंजीनियर्ड बिल्डिंग संरचना के रूप में 1541.10 लाख रुपए के लिए 31 मार्च, 2008 को स्वीकृत किया गया था। विमानशाला को 13 मार्च, 2011 में पूरा किया गया था।

(ड़) rduhdh lsok,a Hkou] ,u-,l-vkj-okbZ-] iksVZ Cys;j% इस कार्य की स्वीकृति 305.16 लाख रुपए के लिए 29 मार्च, 2007 को की गई थी और इसे हाल ही में पूरा किया गया है।

(च) dksfPp esa ifj'k{kq vijksa ds fy, vi.kZ vkokl% इस कार्य की स्वीकृति 17 अगस्त, 2009 को 1070.21 लाख रुपए की राशि पर की गई थी। इसे हाल ही में पूरा किया गया है।

(छ) juos dk;Z% वार्षिक रूप से किए गए रनवे के कार्यों में अत्यधिक वृद्धि एक बड़ी उपलब्धि है। वार्षिक रूप से एक अथवा दो रनवे की सरफेसिंग की पिछली पद्धति के मुकाबले अब तीन महत्वपूर्ण स्टेशनों पर री–सरफेसिंग का कार्य पूरा हो गया है। नौ रनवे पर री–सरफेसिंग का कार्य चल रहा है। पांच रनवे री–सरफेसिंग के कार्यों पर निविदा कार्रवाई चल रही है और रनवे री–सरफेसिंग के दो कार्यों पर स्वीकृति की कार्रवाई चल रही है। पांच रनवे री–सरफेसिंग के कार्य योजना चरण में हैं।

9.5 fookfgr vkokl ifj;kstuk ¼,e-,-ih-½% रक्षा सेवा कार्मिकों को पर्याप्त विवाहित आवास उपलब्ध कराने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा विवाहित आवास परियोजना का आरंभ किया गया है। परियोजना के अतर्गत चरणबद्ध ढंग से कुल 1,98,881 रिहायशी इकाइयां बनाने का प्रस्ताव है। एम.ए.पी. चरण–1 के अंतर्गत 57,875 रिहायशी इकाइयों में से 53,659 इकाइयों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। एम.ए.पी. चरण–2 के अतर्गत 69,992 रिहायशी इकाइयां बनाए जाने का प्रस्ताव है जो पहले ही निर्माण/योजना में चल रहे हैं। केबिनेट ने 9 अगस्त, 2010 को 71,014 रिहायशी इकाइयों के निर्माण के लिए एम.ए.पी. चरण–3 शुरु किए जाने को भी मंजूरी प्रदान कर दी है जिसके लिए संबंधित सेना मुख्यालय में योजना चल रही है।

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा

9.6 सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा में सेना, नौसेना और वायुसेना की चिकित्सा सेवाएं और महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा शामिल है। प्रत्येक चिकित्सा सेवा लेफ्टिनेंट जनरल अथवा समतुल्य रैंक में महानिदेशक, चिकित्सा सेवा के अधीन है। महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा रखा मंत्रालय का चिकित्सा सलाहकार है और चिकित्सा सेवा सलाहकार समिति का अध्यक्ष भी है। सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा के कार्मिकों में सेना चिकित्सा कोर, सेना चिकित्सा कोर (गैर–तकनीकी), सेना दंत चिकित्सा कोर और सैन्य नर्सिंग सेवा के अफसर शामिल हैं। देश में 130 सशस्त्र सेना अस्पताल हैं। मेडिकल अफसरों, डेंटल अफसरों एवं एम.एन.एस. अफसरों तथा ए.एम.सी.टी. (एन.टी.) की प्राधिकृत नफरी क्रमशः 6366, 624, 3916 एवं 368 है।

9.7 हमारे देश की सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा युद्ध–क्षेत्र में तैनाती के समय अर्द्ध–सैनिक कार्मिकों, देश के उपदवग्रस्त क्षेत्रों में तैनात केंद्रीय पुलिस/आसूचना बलों समेत सशस्त्र सेना कार्मिकों एवं उनके परिवारों को समर्पित एवं भरोसेमंद चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने का बेहतरीन रिकार्ड रखती है। इसके अतिरिक्त

यह भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों एवं देश–विदेश में जरूरतमंद सिविलियनों को भी यथासंभव चिकित्सा सुविधा प्रदान करती है ।

9.8 ए.एफ.एम.एस. संसाधन सभी तीनों सेनाओं में कार्यभार के अनुसार फैले हैं । सभी एम.आई. रूम, सिक बे, स्टेशन चिकित्सा केंद्र तथा विशेषज्ञ ओ.पी.डी. वर्ष 2010 में देश भर में 130 सैन्य अस्पतालों तथा बहुत–से नॉन बेड यूनिटों में ओ.पी.डी. कार्यभार लगभग 1 करोड़ 26 लाख था । अस्पताल दाखिलों में पिछले वर्ष संपूर्ण देश में सैन्य अस्पतालों में 7 लाख 40 हजार से अधिक रोगियों को दाखिल किया गया था और इलाज किया गया था ।

o"kZ ds nkSjku fy, x, egRoi.kZ uhfrxr fu.kZ;@xfrfof/k;kb

9.9 (I) ,-,Q-,e-,l- esa deh'ku

(क) flfoy lkzrksa ls ,l-,l-lh- % वर्ष 2011 में सिविल स्रोतों से 27 महिलाओं सहित 91 डॉक्टरों को शॉर्ट सर्विस कमीशन (एस.एस.सी.) प्रदान किया गया ।

(ख) ,-,Q-,e-lh- dSMVksa dks deh'ku iznku djuk% वर्ष 2011 के दौरान ए.एफ.एम.सी. से 103 कैडेटों को इस प्रकार कमीशन प्रदान किया गयाः–

(i) पीसी – 65 (13 महिलाओं समेत)

(ii) एस.एस.सी. – 38 (6 महिलाओं समेत)

(ग) foHkkxh; ih-lh-¼,-,e-lh-@,u-Vh-½ % वर्ष 2011 के दौरान ए.एम.सी. (एन.टी.) के 9 एसएससी अफसरों को स्थायी कमीशन प्रदान किया गया।

(घ) ih-ch-vks-vkj- dks ,-,e-lh- ¼,uVh½ esa ihlh@,l,llh% वर्ष 2010 के लिए रिक्तियों के लिए ए.एम.सी. (एनटी) में पीबीओआर को इस प्रकार कमीशन प्रदान किए गएः

(i) पीसी–6

(ii) एस.एस.सी. – 15

(II) ekun ijke'kZnkrk@lykgdkj % सशस्त्र सेनाओं को संपूर्ण चिकित्सा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न विशेषज्ञताओं में सुविख्यात सिविलियन डॉक्टरों को सेवा आवश्यकता, परामर्शदाता की विशेषज्ञता और मुफ्त सेवा उपलब्ध कराने की उनकी इच्छा के आधार पर उन्हें विभिन्न स्थानों पर मानद परामर्शदाता के रूप में नियुक्त किया जाता है । मानद परामर्शदाता के रूप में नियुक्त डॉम्टरों का नाम इस प्रकार है :

(i) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (रेस्पिरेटरी मेडिसिन)

(ii) डॉ. इन्दर तलवार (रेडियोलॉजी)

(iii) डॉ. पी.डी. अजगांवकर (शल्य चिकित्सा)

(III) l'kó lsukvksa esa ,p-vkbZ-oh-&,M~l % सशस्त्र सेनाओं में एच.आई.वी./एड्स नियंत्रण के लिए ए.एफ.एम.एस. एड्स नियंत्रण संगठन (ए.सी.ओ.) नॉडल संस्था है। इस संगठन ने सशस्त्र सेनाओं में एच.आई.वी. नियंत्रण में एक उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की है। सशस्त्र सेनाओं में नियंत्रण रणनीतियों के कड़े कार्यान्वयन से 2003–2010 की अवधि में एच.आई.वी. पॉजिटिव मामलों में बड़ी गिरावट आई है। वर्ष 2010 में एक नई एच.आई.वी. नीति आरंभ की गई है। अब सशस्त्र सेनाओं में रोगग्रस्तता, मृत्यु दर अथवा अशक्तता के बड़े कारणों में एच.आई.वी. को शामिल नहीं किया जाता।

(IV) izf'k{k.k@ikB~;Øe

(क) v/;;u NqV~Vh% अध्ययन छुट्टी रिक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। वर्ष 2012

शस्त्र सेना चिकित्सा सेवाएं शस्त्र सेना कार्मिकों और उनके परिवारों और भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करती हैं ।

के लिए 82 अफसरों (74 विशेषज्ञ तथा 8 चिकित्सा अधिकारी) को अध्ययन छुट्टी दी गई।

(ख) fo'o LokLF; l xBu&f'k{kk ofÙk d fy, vQljk dh rukrh: कुल मिलाकर 8 चिकित्सा अधिकारी विश्व स्वास्थ्य संगठन शिक्षा–वृत्ति के लिए तैनात किए गए, 12 अफसरों को सिविल संस्थानों में अल्पकालिक प्रशिक्षण/पाठ्यक्रम के लिए तैनात किया गया था और 5 चिकित्सा अधिकारियों को विदेशों में पाठ्यक्रम के लिए तैनात किया गया था।

(ग) LukrdkŸkj ikB¸kØek d fy, vQljk dk p;u % वर्ष 2011 के दौरान, 220 अफसरों को विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए तैनात किया गया जिनमें उन्नत पाठ्यक्रम (एमडी/एमएस) के लिए 192 स्थाई कमीशन प्राप्त अफसरों, एमडी/एमएस के लिए 7 अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अफसरों, डी एन बी पाठ्यक्रम के लिए 4 स्थाई कमीशन प्राप्त अफसरों तथा 17 अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अफसरों को तैनात किया गया।

(V) vu|l/kku dk;|dyki % पुणे में फरवरी, 2011 में आयोजित सशस्त्र सेना चिकित्सा अनुसंधान समिति की 49वीं बैठक में विभिन्न विषयों में 5.95 करोड़ रुपए की लागत से 119 अनुसंधान परियोजनाएं चलाने का अनुमोदन दिया गया है ।

(क) jkxh fpfdRlk lok e miyfC/k;k % luk vLirky ¼vkj- ,M vkj-½] fnYyh Nkouh%

(ख) vkeM Qkl t vkxu fjVhoy ,M VklIyV vkFk ¼,vkvkjVh,½ % सेना अस्पताल (रिसर्च एंड रैफरल), दिल्ली छावनी में 2007 में एओआरटीए की स्थापना की गई थी। एओआरटीए, सशस्त्र सेनाओं के लिए अंगदान रजिस्ट्री रखती है। ऐसे व्यक्ति जो मृत्यु के (ब्रेन डेथ) मामले में अपने अंग दान का प्रण करते हैं, उनके लिए एओआरटीए में एक केंद्रीय रजिस्टर रखा जाता है। अब तक 6275 सेवारत तथा सेवानिवृत्त कार्मिकों, सिविलियनों तथा उनके परिवारों ने अपने अंग दान का प्रण किया है।

(ग) ân; iR;kjki.k rFkk gkekxkQ okYo cd % कार्डियोथोरेसिस सर्जरी विभाग ने जनवरी, 2008 में कैडेवर वॉल्व हार्वेस्टिंग तथा बैंकिंग शुरु की थी। बहु अंग प्रत्यारोपण के एक भाग के रूप में मस्तिष्क मृत्यु (ब्रेन डेथ) दाताओं से कार्डियाक वाल्व्ज लिए गए और बाद में उनका इस्तेमाल बच्चों में वॉल्व प्रतिस्थापन के लिए किया गया। सेना अस्पताल (रिसर्च एंड रैफरल) देश के कुछ चयनित संस्थानों में से एक है जो इस प्रकार का उपचार करने में सक्षम हैं।

(घ) ;—r iR;kjki.k% सेना अस्पताल (रिसर्च एंड रैफरल), दिज्ली छावनी में यकृत प्रत्यारोपण केंद्र की शुरुआत वर्ष 2003 में हुई थी। अब तक कुल मिलाकर 56 यकृत प्रत्यारोपण किए जा चुके हैं।

(ड़) fdjkVk&jÝfDVo l tjh lVj ¼yfld yt j½% रिफ्रेक्टिव त्रुटियों वाले रोगियों के उपचार के लिए सेना अस्पताल (रिसर्च एंड रैफरल) में 2008 में लेसिक सर्जरी केंद्र की स्थापना की गई है। अब तक 561 आंखों का सफलतापूर्वक आप्रेशन किया जा चुका है।

(च) xkek ukbQ lVj% सेना अस्पताल

(रिसर्च एंड रैफरल), दिल्ली छावनी में वर्ष 2007 में गामा नाइफ सेंटर की शुरुआत की गई थी। गामा नाइफ में गामा किरणों का प्रयोग करते हुए तथा बिना चाकू के इस्तेमाल के बड़ी संख्या में इंट्राकार्नियल लीजंस का उपचार किया जाता है।

(छ) M d;j dhfe;kfFkjih lsVj% कैंसर के उपचार के लिए एक 30 बैड वाले डे–केयर कीमियोथिरेपी सेंटर की स्थापना की गई जिसमें सभी आधुनिक सुविधाएं तथा प्रक्रियाएं लगाई गई जिसमें आवश्यक रोगी सुविधाएं हैं जहां दो शिफ्टों में 60 रोगियों की कीमियोथिरेपी की जाती है।

(ज) vkfMVjh ocy Fkjih lsVj% भाषिक विकृत तथा कोचलर लगे रोगियों के लिए इसकी स्थापना की गई थी। माता–पिता सहित लगभग 50 बच्चे यहां नियमित रूप से प्रशिक्षण लेते हैं।

(VI) jk"Vh; ul vokM % 12 मई को अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय नर्सों को नर्सिंग के क्षेत्र में अनुकरणीय अंशदान के लिए राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार में एक मैडल, ऑर्डर ऑफ मेरिट तथा 50,000/– रुपए की राशि शामिल होती है। वर्ष 2011 के लिए मेजर जनरल जे.के.ग्रेवाल, वि.से.मे., अपर डीजीएमएनएस को भारत के राष्ट्रपति द्वारा यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया।

(VII) flfoy ikf/kdkfj;ks dks lgk;rk% संक्रिया सहायताः 18 सितंबर, 2011 को 18.12 बजे रिक्टर स्केल पर 6.9 तीव्रता का एक भूकंप आया और इससे प्रभावित मुख्य क्षेत्र उत्तरी सिक्किम, उत्तर–पूर्व सिक्किम तथा दार्जीलिंग थे। आपदाग्रस्त क्षेत्रों से सेना तथा सिविलियन दोनों हताहतों के उपचार, उन्हें निकालने तथा प्रबंध के लिए सेना द्वारा ''संक्रिया सहायता'' आरंभ की गई। कुछ अगम्य क्षेत्रों सहित संपूर्ण सिक्किम में चिकित्सा यूनिटों द्वारा समयबद्ध कार्रवाई करने के लिए सिविल प्राधिकारियों ने उनकी प्रशंसा की।

(VIII) lokR—"V deku vLirky ds fy, j{kk e=h VkQh % नौसेना चिकित्सा सेवाओं के ध्वजयुक्त अस्पताल, आई.एन.एच.एस. अश्विनी ने वर्ष 2010 के लिए 'सशस्त्र सेना के सवोत्कृष्ट कमान अस्पताल' आकर्षक 'रक्षा मंत्री ट्राफी' प्राप्त की।

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

9.10 रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, नई दिल्ली 62 छावनियों में रक्षा भूमि प्रबंधन एवं नागरिक प्रशासन से जुड़े मामलों में परामर्शदात्री एवं अधिशासी कार्य करता है। यह महानिदेशालय जम्मू, चंडीगढ़, कोलकाता, लखनऊ, पुणे एवं जयपुर स्थित छह प्रधान निदेशालयों के माध्यम से कार्य करता है। प्रधान निदेशालय रक्षा सम्पदा अधिकारी, सहायक रक्षा सम्पदा अधिकारी कार्यालय एवं छावनी बोर्डों जैसे अनेक फील्ड कार्यालयों का पर्यवेक्षण करते हैं। इन क्षेत्रीय कार्यालयों को देश–भर में फैली रक्षा भूमि तथा छावनी बोर्डों के दिन–प्रतिदिन के प्रबंधन का कार्य सौंपा गया है।

9.11 देश–भर में रक्षा मंत्रालय के पास 17.54 लाख एकड़ भूमि है जिसकी देखभाल तीनों सेनाओं तथा अन्य संगठनों, जैसे आयुध निर्माणी बोर्ड, डीआरडीओ, गुणता आश्वासन महानिदेशालय, सीजीडीए, आदि द्वारा की जाती

> **रक्षा मंत्रालय के पास संपूर्ण देश में लगभग 17.54 लाख एकड़ जमीन है। जिसका प्रबंधन तीनों सेनाओं और अन्य संगठनों जैसे आयुध निर्माणी बोर्ड, डी आर डी ओ, डी.जी.क्यू. ए., सी जी डी ए आदि द्वारा किया जाता है ।**

है। सेना के नियंत्रण और प्रबंधन में भूमि का सबसे अधिक भाग है जो 13.84 लाख एकड़ है। इसके बाद वायुसेना के पास 1.40 लाख एकड़ भूमि तथा नौसेना के पास 0.44 लाख एकड़ भूमि है। अधिसूचित छावनियों के भीतर लगभग 1.58 लाख एकड़ रक्षा भूमि है और शेष लगभग 15.96 लाख एकड़ भूमि छावनियों से बाहर है।

9.12 महानिदेशालय ने भूमि होल्डिंग डाटा के कम्प्यूटरीकरण का कार्य पूरा कर लिया है तथा छावनियों के बाहर रक्षा भूमियों के लिए रक्षा मंत्री द्वारा सेनाओं को 13 जुलाई, 2011 को एक डाटा–सीडी जारी की गई है। इसके अलावा, रक्षा भूमि के अभिलेखों की स्कैनिंग, इंडेक्सिंग तथा माइक्रोफिल्मिंग संबंधी परियोजनाएं तथा रक्षा भूमियों के सर्वे, सीमांकन तथा सत्यापन डीजीडीई द्वारा लागू किया जा रहा है। भूमि को कीमती प्राकृतिक संसाधन मानते हुए यह निर्णय लिया गया है कि भूमि की लेखा–परीक्षा का कार्य महानिदेशालय द्वारा पुनः शुरु किया जाएगा।

9.13 रक्षा सम्पदा विभाग सशस्त्र सेनाओं के लिए रिहायशी आवास एवं भूमि किराए पर लेता/अधिग्रहण करता है। जम्मू–कश्मीर में आर.ए.आई.पी. एक्ट 1968 के अंतर्गत अचल सम्पत्ति का अर्जन किया गया।

9.14 रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, छावनियों में रक्षा मंत्रालय की ओर से नागरिक प्रशासन के नियंत्रण, देखरेख व पर्यवेक्षण के लिए भी जिम्मेदार है। भारत में 62 छावनियां हैं। ये दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र समेत 19 राज्यों में स्थित हैं। छावनी बोर्ड 'बाडीज कार्पोरेट' है जो छावनी अधिनियम 2006 के प्रावधानों के अतर्गत केंद्र सरकार के समग्र नियंत्रण में कार्य करते हैं। छावनी बोर्डों के आधे सदस्य चुने जाते हैं। छावनी बोर्ड का अध्यक्ष स्टेशन कमांडर होता है। इन निकायों के कार्य का पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण मध्यवर्ती स्तर पर कमान के जनरल अफसर कमांडिंग–इन–चीफ व प्रधान निदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा और सर्वोच्च स्तर पर रक्षा सम्पदा महानिदेशक के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है। वर्तमान में सभी 62 छावनियों में निर्वाचित बोर्ड मौजूद है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सी ए ओ) रक्षा मंत्रालय के तहत तीनों सेना मुख्यालयों और अंतर सेवा संगठनों (आई एस ओ एस) के मुख्यालय कार्यालयों को जनशक्ति एवं अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान करता है।

9.15 छावनी बोर्डों के पास बहुत सीमित संसाधन हैं क्योंकि छावनी में सरकार का बहुत बड़ी सम्पत्ति पर स्वामित्व होता है जिस पर कोई कर नहीं लगाया जा सकता। तथापि, बोर्ड केंद्रीय सरकार की सम्पत्ति पर सेवा शुल्क लेता है। केंद्रीय सरकार ऐसे कुछेक छावनी बोर्डों के बजट को संतुलित करने के लिए कुछ सीमा तक सहायता अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करती है, जिनकी वित्तीय स्थिति कमजोर होती है। वित्तीय वर्ष 2011–12 में 30 नवंबर, 2011 तक वित्तीय रूप से कमजोर छावनी बोर्डों को 101.68 करोड़ रुपए का अनुदान दिया गया।

9.16 प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए छावनी बोर्ड प्राथमिक स्कूल चलाते हैं। बहुत–से छावनी बोर्ड हायर सेकेंडरी स्कूल और इन्टरमीडिएट/जूनियर कॉलेजों को भी चलाते हैं। छावनी बोर्डों द्वारा चलाए जाने वाले कुल स्कूलों तथा कालेजों की संख्या 197 है।

9.17 छावनियों की सामान्य जनता तथ आसपास के लोगों के लिए छावनी बोर्ड 40 अस्पताल भी चलाते हैं जिनमें 360 बैड और 39 डिस्पैंसरी हैं।

मुख्य प्रशासन अधिकारी का कार्यालय

9.18 मुख्य प्रशासन अधिकारी का कार्यालय (मु.प्र.अ.) रक्षा मंत्रालय के अधीन सेना मुख्यालयों और अंतर सेवा संगठनों (अं.से.सं.) के मुख्यालयों को सिविलियन जनशक्ति और अवसंरचनात्मक सहायता मुहैया कराता है। संयुक्त सचिव (प्रशिक्षण) मुख्य प्रशासन अधिकारी और निदेशक (सुरक्षा) का कार्य भी संभालते हैं।

9.19 मुख्य प्रशासन अधिकारी के कार्यालय के कार्य निम्नलिखित प्रभागों द्वारा किए जाते हैं:–

(क) i'kklu iHkkx% यह प्रभाग सेना मुख्यालयों और अतर सेवा संगठनों में कार्यरत लगभग 12000 सिविलियन कर्मचारियों से संबंधित प्रशासनिक कार्य देखता है।

(ख) dkfed iHkkx% यह प्रभाग तीनों सेना मुख्यालयों और 27 अंतर सेवा संगठनों को लगभग 200 ग्रेडों में सिविलियन कार्मिकों की तैनाती सहित संवर्ग प्रबंधन के लिए जिम्मेवार है।

(ग) tu'kfä ;kstuk vkSj Hkrh iHkkx% यह प्रभाग सशस्त्र सेना मुख्यालय (ए एफ एच क्यू) कैडर के विभिन्न वर्गों/संवर्ग–बाह्य पदों पर भर्ती, विभिन्न ग्रेडों के भर्ती नियम बनाने/उनमें संशोधन करने, संवेदनशील संगठनों में कार्यरत कर्मचारियों के चरित्र एवं पूर्ववृत्त का पुनः सत्यापन करने, सशस्त्र सेना मुख्यालय (ए एफ एच क्यू) के सिविलियन कैडरों की समीक्षा एवं पुनर्गठन तथा वेतन आयोग से संबंधित कार्य करने के लिए जिम्मेदार है।

(घ) foÙk ,oa lkexzh iHkkx% यह प्रभाग अंतर सेवा संगठनों को सामग्री संबंधी सहायता प्रदान करता है जिसमें कार्यालय उपकरण, भंडार, फर्नीचर, लेखन–सामग्री और सूचना एवं प्रौद्योगिकी उपकरणों की खरीद करना और उन्हें उपलब्ध कराना शामिल है।

(ड़) laink vkSj fuekZ.k dk;Z iHkkx% यह प्रभाग सशस्त्र सेना मुख्यालय में तैनात सैन्य अधिकारियों को रिहायशी आवास से संबिधित संपदा कार्यों को करता है और रक्षा मुख्यालयों में प्रमुख निर्माण कार्यों को समन्वित करता है ।

(च) foHkkxh; vuq'kklu] leUo; rFkk dY;k.k iHkkx% यह प्रभाग ए एफ एच क्यू के सिविलियन संवर्ग के कर्मचारियों के अनुशासनिक मामलों को देखता है। सीएओ कार्यालयों के भीतर तथा रक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव (प्रशिक्षण) एवं मु.प्र.अ. विंग में समन्वय, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी मामले, कार्यालय परिषद् जेसीएम, महिला प्रकोष्ठ, क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप, विभागीय कैंटीन, एएमए की नियुक्ति, रक्षा सिविलियन चिकित्सा सहायता निधि जैसे कल्याण कार्यकलाप भी प्रभाग द्वारा देखे जाते हैं।

(छ) j{kk eq[;ky; izf'k{k.k laLFkku% सेना मुख्यालयों तथा अंतर सेवा संगठनों में तैनात सिविलियन कार्मिकों की प्रशिक्षण आवश्यकताएं, सीएओ के अंतर्गत कार्य करने वाले रक्षा मुख्चयालय प्रशिक्षण संस्थान (डीएचटीआई) द्वारा पूरी की जाती हैं। वर्ष के दौरान डीएचटीआई ने 87 पाठ्यक्रमों का आयोजन किया, लगभगक 1870 सिविलियन तथा सैन्य कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया।

9.20 eq[; lqj{kk dk;kZy;% रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत मुख्य सुरक्षा अधिकारी संयुक्त सचिव (प्रशिक्षण) एवं मुख्य प्रशासन अधिकारी की देखरेख में कार्य करता है। यह मुख्यतः रक्षा मुख्यालय सुरक्षा क्षेत्र में वास्तविक सुरक्षा प्रदान करने, प्रवेश पर नियंत्रण करने और सुरक्षा भंग न होने देने और आग न लगने देने के लिए जिम्मेदार है।

जनसंपर्क निदेशालय

9.21 जनसंपर्क निदेशालय रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र सेनाओं तथा रक्षा मत्रालय के अधीन अंतर–सेवा संगठनों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की महत्वपूर्ण घटनाओं, कार्यक्रमों, उपलब्धियों तथा मुख्य नीतिगत निर्णयों के बारे मं मीडिया तथा जनता को सूचना प्रसारित करने के लिए एकमात्र प्राधिकृत एजेंसी है । इस निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है तथा इसके देश भर में 25 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो मीडिया सहायता एवं सेवाएं प्रदान करते हैं ताकि प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक प्रचार–प्रसार सुनिश्चित हो सके । यह नेताओं और रक्षा मंत्रालय तथा सशस्त्र सेनाओं के वरिष्ठ कार्मिकों

का संपर्क नियमित साक्षात्कारों, प्रेस कान्फ्रेंस तथा प्रेस यात्राओं के जरिए मीडिया के साथ संपर्क भी करते हैं।

9.22 गत वर्षों की भांति इस निदेशालय ने मीडिया के लोगों के लिए उनकी रक्षा विषयों पर जानकारी बढ़ाने/ ज्ञानवर्द्धन के लिए 16 अगस्त, 2011 से 17 सितंबर, 2011 तक रक्षा पत्राचार पाठ्यक्रम का आयोजन किया । संपूर्ण देश के इकतीस पत्रकारों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया । एक महीने के इस पाठ्यक्रम में उन्होंने कच्छ के रण से लगी समुद्री सीमा का दुर्लभ अनुभव प्राप्त किया तथा उन्हें जम्मू और कश्मीर के दूरवर्ती क्षेत्रों में भी ले जाया गया।

9.23 यह निदेशालय सशस्त्र सेनाओं के लिए 13 भाषाओं में पाक्षिक पत्रिका ''सैनिक समाचार'' प्रकाशित करता है। इस निदेशालय का प्रसारण अनुभाग 'सैनिकों के लिए' 40 मिनट के कार्यक्रम का समन्वय करता है जिसका प्रसारण सशस्त्र सेनाओं के कार्मिकों के लिए आकाशवाणी से प्रतिदिन किया जाता है। इसका फोटो अनुभाग रक्षा संबंधी महत्वपूर्ण घटनाओं की फोटो कवरेज उपलब्ध कराता है फोटो अनुभाग के फोटो अभिलेखागार को डिजीटाइज करने का प्रयास किया जा रहा है।

9.24 प्रमुख घटनाओं का मीडिया प्रचार डीपीआर द्वारा किया जाता है।

9.25 विभिन्न सेना युद्धाभ्यासों एवं एसाइनमेंट्स, जिनमें विदेशों में हुई इस प्रकार की गतिविधियां भी शामिल हैं, के लिए फोटो एवं न्यूज रिपोर्टों के रूप में कवरेज की व्यवस्था भी की गई।

9.26 रक्षा मंत्री एवं सशस्त्र सेना प्रमुखों की विदेश यात्राओं एवं विदेशी उच्च पदाधिकारियों की भारत यात्रा को भी प्रमुखता से कवर किया गया ।

9.27 केंद्रीय मंत्रिमण्डल एवं सशस्त्र सेनाओं सहित रक्षा मंत्रालय के प्रमुख निर्णयों का भी व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया ।

9.28 डीपीआर प्रमुख घटनाओं एवं दौरों से सुपरिचित होने के लिए देश भर में विभिन्न स्थानों के लिए मीडिया टूर भी आयोजित करता है।

9.29 यह निदेशालय गणतंत्र दिवस समारोह से जुड़ी सभी मीडिया सुविधाओं का प्रबंध भी करता है एवं राजपथ पर परेड का आंखों देखा हाल प्रसारित करता है। लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह, संयुक्त कमांडर्स कान्फ्रेंस एवं प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित एनसीसी रैली और राष्ट्रपति भवन में रक्षा अलंकरण समारोह जैसी अन्य महत्वपूर्ण सूचीबद्ध घटनाओं का भी यथोचित प्रचार किया गया।

सेना क्रय संगठन (ए.पी.ओ.)

9.30 सेना क्रय संगठन को रक्षा बलों के उपभोग के लिए सूखे राशन की अधिप्राप्ति एवं समय पर आपूर्ति की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह संगठन चावल व गेहूं भारतीय खाद्य निगम से खरीदता है और चीनी का आबंटन चीनी निदेशालय द्वारा विभिन्न चीनी मिलों को आबंटित लेवी कोटे में से किया जाता है। दालें, पशु राशन, खाद्य तेल एवं वनस्पति एवं दुग्ध उत्पाद जैसे अन्य सामान निविदाएं आमंत्रित करके तथा संविदाएं निष्पादित करके केंद्रीय एवं राज्य सार्वजनिक उपक्रमों एवं राष्ट्रीय/राज्य स्तर के सहकारी उपभोक्ता/विपणन परिसंघों से खरीदे जाते हैं। चाय एवं डिब्बाबंद सामान जैसे सब्जियां, फल, जैम, दूध, मांस एवं मछली, काफी, अंडा पाउडर, रेडी टू ईट भोजन (एम आर ई) आदि निजी पार्टियों सहित पंजीकृत आपूर्तिकर्ताओं से खरीदे जाते हैं। सेना क्रय संगठन सशस्त्र सेनाओं के लिए ऐसे पंजीकृत आपूर्तिकर्ताओं से रिटार्ट पाउच में सब्जियां व चिकन करी भी खरीदता है जिनके पास प्रौद्योगिकी होती है।

सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड

9.31 सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड (एस एस सी बी) एक शीर्षस्थ खेलकूद निकाय है जो तीनों सेनाओं में विभिन्न खेलकूद गतिविधियों का आयोजन एवं समन्वय करता है। क्रीड़ा के क्षेत्र में इसके उत्कृष्ट योगदान के कारण भारत के राष्ट्रपति द्वारा एस एस सी बी को वर्ष 2010

में प्रतिष्ठित राजीव गांधी खेल प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। यह बोर्ड सभी राष्ट्रीय खेल फेडरेशनों, भारतीय ओलंपिक संघ तथा युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के साथ निकट संपर्क रखता है। फरवरी, 2011 में एस एस सी बी का प्रशासन नौसेना से वायुसेना को सौंपा गया तथा एस एस सी बी के अध्यक्ष और सचिव का पद क्रमशः एयर मार्शल जे.एन.वर्मा, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएम तथा एयर कमोडोर एम. बालादित्य, वीएसएम को दिया गया।

9.32 एस एस सी बी के संरक्षण में 19 खेलों में चार टीमों (आर्मी रेड, आर्मी ग्रीन, इंडियन नेवी और इडियन एयरफोर्स) की अंतर–सैन्य चैंपियनशिप आयोजित की जाती है और राष्ट्रीय चैंपियनशिप खेलों में भाग लेने के लिए सेनाओं की टीम के चयन हेतु 10 खेलों के लिए ट्रायल आयोजित किए गए।

9.33 34o jk"Vh; [ky] Ökkj[kM 2011% 34वें राष्ट्रीय खेल झारखंड का आयोजन रांची में 12–26 फरवरी, 2011 में किया गया। खेलों के दौरान एस एस सी बी की टुकड़ी ने 70 स्वर्ण, 50 रजत तथा 42 कांस्य पदक जीतकर तथा प्रतिष्ठित राजा भालेन्द्र सिंह समग्र चैंपियनशिप ट्रॉफी 2011 जीतकर, सबसे अधिक पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

9.34 fj;k&fM&tufj;k] cktby e 16&24 tykb] 2011 dk 5o lhvkb,le lU; fo'o [ky% भारतीय सशस्त्र सेनाओं की 146 सदस्यीय टुकड़ी ने 16–24 जुलाई, 2011 में रियो–डि–जेनेरियो, ब्राजील में आयोजित 5वें सैन्य विश्व खेलों में 20 में से 12 प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। उद्घाटन समारोह 16 जुलाई, 2011 को रियो–डि–जेनेरियो में हुआ। सभी टीमों ने सैन्य वर्दी में उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

9.35 प्रतियोगिता का स्तर बहुत ऊंचा था क्योंकि विभिन्न देखों के कई ओलंपियनों ने भी भाग लिया था। भारतीय टुकड़ी ने बॉक्सिंग में एक व्यक्तिगत कांस्य पदक तथा एथलेटिक्स और शूटिंग में प्रत्येक में टीमों ने कांस्य पदक जीता।

9.36 भारतीय टाइक्वांडो दल को चैंपियनशिप की *Q;jIy VkQh* दी गई। इस प्रतिस्पर्धा से हमारे खिलाड़ियों को अच्छा अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त हुआ जससे उन्हें ओलंपिक में जगह सुनिश्चित करने की तैयारी में सहायता मिलेगी और कोरिया में 2015 में होने वाले सैन्य विश्व खेलों के अगले कार्यक्रम में तैयार होने के लिए उन्होंने एक निर्देश–चिह्न तैयार किया है।

9.37 jk"Vh; pfi;uf'ki% वर्ष के दौरान सेनाओं से सीनियर मैन्स चैंपियनशिप में 26 खेलों एवं चार ऐसे खेलों में जूनियर टीमों ने भाग लिया।

9.38 vrjk"Vh; Hkkxhnkjh% सेनाओं से कई उत्कृष्ट खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय टीम के एक भाग के रूप में देश का प्रतिनिधित्व किया है।

9.39 भारत के माननीय राष्ट्रपति ने अगस्त, 2011 में निम्नलिखित खिलाड़ियों को प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया:

(क) एमसीपीओआईआई पीटी एम. सूरनजॉय सिंह –बॉक्सिंग

(ख) हवलदार के. रवि कुमार –वेट लिफ्टिंग

9.40 mR—"V lU; f[kykMh vkj Vhe% सेनाओं, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप में प्रदर्शन के आधार पर तीनों सेनाओं में से एक उत्कृष्ट सैन्य खिलाड़ी का चयन किया जाता है। एमसीपीओआईआई पीटी एम. सूरनजॉय सिंह को वर्ष 2010–11 के लिए 'सर्वश्रेष्ठ सैन्य खिलाड़ी' चुना गया ।

9.41 eknd vk"k/k lou ij fu;=.k dk mik;% सेना के खेलों से मादक औषध सेवन संकट पर नियंत्रण पाने के लिए, सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड ने अंतर सेना स्तर पर अपनी ओर से पहले ही मादक औषध सेवन–रोधी परीक्षण शुरु किए गए हैं। इससे सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिपों में मादक

औषध से मुक्त खिलाड़ी भेजने में सक्षम हो सकेगा। उन सभी खिलाड़ियों को, जो रियो–डि–जेनेरियो, ब्राजील में हुए सैन्य विश्व खेलों में भागीदारी हेतु गए एक बड़े सशस्त्र सेना जत्थे का हिस्सा थे, मादक औषध संबंधी परीक्षणों से गुजरना पड़ा।

9.42 l'kó luk [kydn vk"k/k dæ ¼,-,Q-,l-,e-lh-½] i.k% सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड के अधीन कार्यरत ए.एफ.एस.एम.सी., जो घोरपाड़ी, पुणे में अवस्थित है, का सृजन सेनाओं के खिलाड़ियों के खेल प्रदर्शन में वृद्धि करने के लिए वैज्ञानिक सहायता प्रदान करने के लिए किया गया है। यह केंद्र सेना खेलकूद

एम सी पी ओ ॥ पी टी एम सुरनजॉय सिंह, एडमिरल एन वर्मा, पी वी एस एम ए वी एस एम ए डी सी, नौसेनाध्यक्ष तथा अध्यक्ष, सेनाध्यक्ष समिति से 'उत्कृष्ट सैन्य खिलाड़ी ट्राफी प्राप्त करते हुए

नियंत्रण बोर्ड की ओर से औषध सेवन संबंधी परीक्षण करने में भी सक्रियता से लगा हुआ है ।

9.43 वर्ष के दौरान, ए.एफ.एस.एम.सी., पुणे द्वारा पहली बार सशस्त्र सेनाओं के खिलाड़ियों के हित के लिए 'मैस्यूर' पाठ्यक्रम चलाया । कुल 23 विद्यार्थियों ने इस पाठ्यक्रम में सफलता पाई ।

9.44 इसके अलावा, ए.एफ.एस.एम.सी., पुणे ने हाल ही में एक 'शारीरिक क्षमता अनुकूलन' पाठ्यक्रम चलाया। कुल 22 विद्यार्थियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

9.45 स्थानापन्न सेमिनार एवं परीक्षणः राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खेलों और खेलकूदों में सेनाओं के कार्मिकों

लेफ्टिनेंट जनरल वी एस टोंक, पी वी एस एम ए वी एस एम डी सी ओ एस, एडमिरल एन वर्मा, पी वी एस एम ए वी एस एम ए डी सी (आई एस एवं टी)] नौसेनाध्यक्ष तथा अध्यक्ष, सेनाध्यक्ष समिति से रक्षा सेवा समग्र चैम्पियनशिप ट्राफी–2010–11 प्राप्त करते हुए

की संख्या बढ़ाने के लिए, सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड ने विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में क्लिनिक–सह–पाठ्यक्रम आयोजित करने शुरु किए हैं।

सेना चित्र प्रभाग

9.46 सेना चित्र प्रभाग रखा मंत्रालय का एक अंतर सेवा संगठन है जिसकी जिम्मेदारी मुख्यतः सेना मुख्यालयों और अन्य रक्षा संगठनों की प्रशिक्षण फिल्मों के निर्माण, अधिप्राप्ति और वितरण, फोटोग्राफों तथा आर्टवर्क आदि की जरूरतों को पूरा करना है ताकि प्रशिक्षण, हथियार प्रशिक्षण, सुरक्षा, रक्षा अनुसंधान, आसूचना, रिकार्ड एवं रक्षा मत्रालय के समारोहों की फोटो एवं वीडियो कवरेज की आवश्यकताएं पूरी की जा सकें।

9.47 ए.एफ.एफ.पी.डी. के पास दुर्लभ फिल्मों और चित्रों का बहुत मूल्यवान संकलन है। स्वतंत्रला पूर्व के दिनों से प्राप्त सामग्री अत्यधिक ऐतिहासिक मूल्य की है और यह इस प्रभाग के केंद्रीय रक्षा फिल्म पुस्तकालय में संरक्षित की गई है। इन चित्रों में भारतीय सेनाओं को द्वितीय विश्वयुद्ध, परेडों, समारोहों तथा त्यौहारों में कार्यरत दिखाया गया है और इनमें विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों तथा प्रशिक्षण संबंधी कार्यकलाप भी शामिल हैं। कुछ महत्वपूर्ण फिल्मों को भी सुरक्षित रखा जाता है।

9.48 केन्द्रीय रक्षा फिल्म लाइब्रेरी (सीडीएफएल) विभिन्न यूनिटों/फार्मेशनों/प्रशिक्षण स्थापनाओं/कमानों की विशिष्ट प्रशिक्षण फिल्में वितरित करने की जिम्मेदारी संभालती है। लाइब्रेरी में 35 मि.मी. आकार की 587 फिल्में, 16 मि.मी.आकार की 1165 फिल्में, वीएच एस प्रारूप में 228 फिल्में, यू–मैट्रिक प्रारूप में 272 फिल्में, वीसीडी प्रारूप में 34 फिल्में एवं डीवीडी और एचडी प्रारूप में 58 फिल्में उपलब्ध हैं। वर्ष 2011 के दौरान 38 फिल्में (16 मि.मी., 52 वी.एच.एस., 45 वी.सी.डी. तथा 2639 डीवीडी सेना/नौसेना/वायुसेना की विभिन्न यूनिटों/विरचनाओं को भेजी/जारी की गईं । आज की तारीख तक 8.983 नेगेटिवों को धोया गया और विभिन्न आकार के 7552 चित्र बनाए गए।

9.49 इस प्रभाग की चल सिनेमा यूनिट(एमसीयू) ने अग्रवर्ती क्षेत्रों में तैनात सैनिकों के लिए सांस्कृतिक और परिवार कल्याण मूल्यों की सूचना से संबंधित नई पत्र–पत्रिकाएं एवं डॉक्युमेंटरी फिल्में भी खरीदी और वितरित कीं। वर्ष 2011 के दौरान एमसीयू ने रक्षा स्थापना को उधार के आधार पर डीवीडी फार्मेट में लगभग 2280 प्रिंट जारी किए हैं।

राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज

9.50 राष्ट्रीय कालेज रक्षा मत्रालय की एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्था है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा एवं युद्ध–नीति शिक्षा का एक उत्कृष्ट केन्द्र है। इस कालेज में प्रशिक्षण के लिए भारतीय और विदेशी सशस्त्र बलों के ब्रिगेडियर/समकक्ष पदधारित तथा प्रशासनिक सेवा के निदेशक और उससे उच्च अफसर नामित किए जाते हैं। नामित अधिकारियों को ग्यारह माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा, सभी घरेलू आयामों, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों, आर्थिक, राजनैतिक, सैन्य और संगठनात्मक पहलुओं को समझकर भविष्य की राष्ट्रीय सामरिक महत्व की नीति का निर्धारण करना होता है । पाठ्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन के कैप्सूल, लेक्चर/विचार–विमर्श खंड, युद्ध–नीतिक अभ्यास गेम, युद्ध क्षेत्र भ्रमण, अनुसंधान कार्यकलाप/थीसिस एवं सेमिनार लिखना सम्मिलित है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस पाठ्यक्रम के लिए छह अध्ययन कैप्सूल आयोजित किए जाते हैं।

9.51 एन डी सी के 51वें पाठ्यक्रम में कुल 100 अधिकारी समाविष्ट थे जिनमें सेना(40), नौसेना(6), वायुसेना (12), सिविल सेवा(17), मित्र देशों से(25) समाविष्ट थे। पाठ्यक्रम 2 दिसंबर, 2011 को समाप्त हुआ।

9.52 ,u Mh lh ikB;kØe dk 49ok nh{kkr lekjkg % मद्रास विश्वविद्यालय (रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग), चेन्नई एवं एन डी सी, नई दिल्ली ने 8 जुलाई, 2011 को एक दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जिसमें भाग लेने वालों को रक्षा एवं सामरिक अध्ययन में एम फिल की डिग्री प्रदान की गई।

9.53 15 वीं एसीयान क्षेत्रीय प्रमुखोंफोरम की रक्षा विश्वविद्यालयों/कॉलेजों और शिक्षण संफोरमस्थानों के प्रमुखों की बैठक 29 नवम्बर 2011 से 2 दिसम्बर 2011 तक 'बाली' इंडोनेशिया में हुईं ।

9.54 एन डी सी नई दिल्ली में रक्षा से संबंधित विषय पर पी.एच.डी. डिग्री प्रदान करने के लिए मौखिक परीक्षा आयोजित की गई।

विदेशी भाषा विद्यालय

9.55 विदेशी भाषा विद्यालय रक्षा मंत्रालय के संरक्षण में एक अंतर सेवा संगठन है। यह एक ऐसा अनुपम संस्थान है जहां पर एक ही छत के नीचे बहुत–सी विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। यह भारत में वर्ष 1948 से विदेशी भाषा पढ़ाने का एक अग्रणी संस्थान है । इस समय यह भारतीय सशस्त्र सेनाओं की तीनों सेनाओं के कार्मिकों को 18 विदेशी भाषाओं के प्रशिक्षण में संलग्न है। यह भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों और विभागों, जैसेकि विदेश मंत्रालय, कैबिनेट सचिवालय, केन्द्रीय पुलिस संगठन अर्थात बी एस एफ, सी आर पी एफ, आई टी बी पी आदि की आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसके अलावा, सिविलियन विद्यार्थियों को

भी प्रवीणता प्रमाण–पत्र, उन्नत डिप्लोमा और दुभाषिया पाठ्यक्रमों में निर्धारित सरकारी नियमों के अनुसार प्रवेश दिया जाता है।

9.56 एस एफ एल में अरबी, भासा इंडोनेशिया, बर्मी, चीनी, फ्रैंच, जर्मन, फारसी, रूसी, स्पेनी, तिब्बती और जापानी भाषाएं नियमित आधार पर तथा पाक उर्दू, मलय, हिब्रू और तुर्की आदि अल्पकालिक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती है।

9.57 एस एफ एल द्वारा प्रवीणता पाठ्यक्रम, उन्नत डिप्लोमा पाठ्यक्रम, दुभाषिया पाठ्यक्रम और अल्पकालिक पाठ्यक्रम/कैप्सूल पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं ।

9.58 दुभाषिया पाठ्यक्रम एक पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है जिसके लिए सशस्त्र सेनाओं, रक्षा मंत्रालय, कैबिनेट सचिवालय और अन्य सरकारी विभागों द्वारा विद्यार्थी प्रायोजित किए जाते हैं। यह पाठ्यक्रम अपने विद्यार्थियों को दुभाषिए और अनुवाद के उच्च दक्षता कार्य में निपुणता प्रदान करता है। इसके अलावा उन्हें लक्षित भाषा को अत्यधिक धारा प्रवाह रूप से लिखने और बोलने में प्रशिक्षित किया जाता है। दुभाषिया पाठ्यक्रम आवश्यकता–उन्मुखी है। यह पाठ्यक्रम पूर्णतः सशस्त्र सेनाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन और तैयार किया गया है। यह एक अत्यंत विशेषीकृत पाठ्यक्रम है जिसके समान भारत में अन्यत्र कोई पाठ्यक्रम नहीं है। यह उल्लेखनीय है कि यह केवल विदेशी भाषा विद्यालय में ही है कि सिंहली, भाषा इंडोनेशिया, बर्मी, पश्तो, पाक उर्दू और तिब्बती जैसी सामरिक महत्व की भाषाएं राजनीतिक–सैन्य दृष्टिकोण से पढ़ाई जाती हैं। वस्तुतः संपूर्ण देश में यह एक मात्र संस्थान है जहां भासा इंडोनेशिया, पश्तो, थाई और बर्मी पढ़ाई जाती हैं।

9.59 अल्पकालिक पाठ्यक्रम, विशेषकर नामोदिष्ट सैन्य अताशे और संयुक्त राष्ट्रसंघ मिशनों पर भेने जा रहे अफसरों के लिए अथवा प्रयोक्ता संगठन की विशिष्ट जरुरत के अनुसार, आवश्यकतानुसार आयोजित किए जाते हैं।

9.60 एसएफएल, अन्य रक्षा संस्थाओं नामतः राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे और सेना शिक्षा कोर प्रशिक्षण केन्द्र एवं कालेज, पचमढ़ी का नियंत्रक संगठन है जहां विदेशी भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। यह परीक्षाओं का आयोजन करता है और सफल उम्मीदवारों को डिप्लोमा जारी करता है। भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए इस संस्थान द्वारा आयोजित उन्नत डिप्लोमा परीक्षा को उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। एसएफएल सारे देश में स्थित विभिन्न सेना यूनिटों में रेजिमेंटल भाषाओं अर्थात नेपाली में परीक्षा आयोजित करता है। सीखी गई भाषाओं को आत्मसात करने के लिए विभिन्न विदेशी भाषाओं में भाषा विशेष प्रवीणता परीक्षाएं तीनों सेनाओं हेतु अनन्य रूप से चलाई जाती हैं।

9.61 वर्ष 2011–12 के दौरान एसएफएल ने विभिन्न देशों के लिए नामोदिष्ट डीए/एम ए को संबंधित विदेशी भाषाओं अर्थात अरबी, जर्मन, फ्रैंच, जापानी और रूसी में प्रशिक्षण दिया है।

9.62 इसके अलावा, एस एफ एल द्वारा नौसेना कार्मिकों के लिए मुंबई में उनकी स्थापनाओं में रूसी भाषा में गहन पाठ्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

इतिहास प्रभाग

9.63 पहले ऐतिहासिक अनुभाग के रूप में जाने जाने वाले इतिहास प्रभाग की स्थापना 26 अक्तूबर, 1953 को स्वतंत्रता के समय से आज तक भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा चलाए गए सैन्य ऑपरेशनों के इतिहास को संकलित करने हेतु की गई थी। आज तक इसने जम्मू तथा कश्मीर में ऑपरेशनों का इतिहास 1947–48, ऑपरेशन पोलो, ऑपरेशन विजय(गोवा), भारत के सैन्य परिधान, वीरता की कहानियां, 1965 का भारत पाक युद्ध : एक इतिहास, आदि सहित 20 खंड संकलित व प्रकाशित किए हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ शांति स्थापना

मिशनों में भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा चलाए गए ऑपरेशनों को भी संकलित किया गया है और इनमें कांगो में संयुक्त राष्ट्रसंघ ऑपरेशनों में भारतीय सशस्त्र सेनाओं का इतिहास, सी एफ आई अथवा कोरिया में भारतीय सैनिक 1953–54, ऑपरेशन शांति (भारतीय सैनिक मिश्र में) और भयानक जिम्मेदारी(इंडो–चाइना में शांति के लिए लड़ाई) शामिल हैं। कुछ प्रकाशन हिंदी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किए गए हैं। इस समय, यह प्रभाग वीरता की कहानियां भाग III तथा भारत के युद्ध स्मारक शीर्षक वाली पुस्तकों पर काम कर रहा है ।

9.64 इतिहास प्रभाग रक्षा मंत्रालय और भारतीय सशस्त्र सेनाओं के अनुसंधान, अभिलेख और संदर्भ कार्यालय के रूप में भी कार्य करता है। इसे रक्षा मंत्रालय, तीनों सेना मुख्यालयों और विभिन्न यूनिटों से सैन्य मामलों से संबंधित विविध अभिलेख और संक्रियात्मक अभिलेख नियमित आधार पर संरक्षण तथा इस्तेमाल के लिए प्राप्त होते हैं। यह प्रभाग इस समय अभिलेखों का डिजिटाइजेशन करने में लगा हुआ है।

9.65 यह प्रभाग एक शिक्षावृत्ति योजना भी चलाता है जिसके तहत सैन्य इतिहास में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक तीन वर्ष में दो शिक्षावृत्तियां प्रदान की जाती हैं। अब तक सत्रह अनुसंधाताओं को इस योजना से लाभ मिला है।

9.66 इस प्रभाग का हेराल्डिक प्रकोष्ठ तीनों सेना मुख्यालयों और रक्षा मंत्रालय को समारोह संबंधी सभी मामलों जैसे नई स्थापनाओं के नामकरण और अधिग्रहण, बैजों और कलगियों का डिजाइन बनाने और स्मृति चिन्हों के निर्माण में सहायता प्रदान करता है।

9.67 विभागीय पुस्तकालय में कुछ दुर्लभ पुस्तकों, आवधिक पत्रिकाओं और सैन्य महत्व के विदेशी प्रकाशनों सहित पांच हजार से अधिक पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों की उपलब्धता की जानकारी के लिए पुस्तक–सूची को डिजिटाइज करने का भी प्रयास किया जा रहा है।

रक्षा प्रबंधन कॉलेज (सी डी एम)

9.68 रक्षा प्रबंधन कालेज (सीडीएम) तीनों सेनाओं की एक श्रेणी 'क' प्रशिक्षण स्थापना है जो पिछले चार दशकों से अस्तित्व में है । इसे सशस्त्र सेनाओं के वरिष्ठ नेतृत्व को समसामयिक प्रबंधन विचारणा, संकल्पनाओं और पद्धतियों की जानकारी देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

9.69 कालेज द्वारा आयोजित 44 सप्ताह की अवधि के आधारभूत पाठ्यक्रम अर्थात उच्चतर रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम को प्रबंधन अध्ययन संबंधी स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान करने हेतु उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता दी गई है ।

9.70 कालेज द्वारा चलाए जाने वाले अन्य पाठ्यक्रम रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम और वरिष्ठ रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम हैं जो प्रत्येक चार सप्ताह की अवधि का है। पड़ोसी देशों के अफसरों के लिए चलाए जाने वाले रक्षा अधिग्रहण प्रबंधन और रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम दोनों दो सप्ताह के हैं। इसके अलावा, परियोजना प्रबंधन,संगठन व्यवहार, वित्तीय प्रबंधन और प्रचालन अनुसंधान/पद्धति विश्लेषण के क्षेत्र में एक सप्ताह के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

रक्षा सेना स्टाफ कॉलेज (डी एस एस सी)

9.71 रक्षा सेवा स्टाम कालेज (डीएस एस सी) भारत की सबसे पुरानी सैन्य संस्थाओं में से एक है और वेलिंगटन में स्थित है। डी एस एस सी एक अंतर सेवा संस्था है जो मित्र देशों के 34 से भी अधिक अफसरों और केंद्रीय सिविल सेवाओं के कुछ चयनित अफसरों सहित रक्षा बलों के मध्यम स्तर के अफसरों को प्रशिक्षण देती है ।

9.72 तीनों सेनाओं के अफसरों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए स्टाफ पाठ्यक्रम की क्षमता को चरणबद्ध ढंग से बढ़ाकर 500 करने हेतु सम्मिलित प्रयास किए जा रहे हैं। पिछले एक वर्ष के दौरान प्रशिक्षण अवसंरचना पहले ही स्थापित कर ली गई थी और वर्ष 2014 तक

पाठ्यक्रम क्षमता को 500 तक बढ़ाने के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने हेतु आवास तथा अन्य सम्बद्ध अवसंरचना स्थापित करने के प्रयास जारी हैं। तथापि, पाठ्यक्रम की क्षमता अगले पाठ्यक्रम हेतु पहले ही लगभग 450 तक बढ़ा दी गई है। इसके अलावा, प्रशिक्षण अवसंरचना को आधुनिक बनाने के प्रयासों से गेमिंग और सिमुलेशन सुविधाओं के साथ मिशन प्लानिंग टूल, संयुक्त वार गेम पैकेज और सैंड मॉडल रूम्स के लिए सैंड हेतु डाटा वाल की अधिप्राप्ति में भी बढ़ोतरी हुई है।

रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय

9.73 रक्षा मंत्रालय पुस्तकालय दिल्ली स्थित रक्षा मंत्रालय, तीनों सेना मुख्यालयों, अंतर सेवा संगठनों और अन्य सम्बद्ध रक्षा स्थापनाओं में योजना एवं नीति निर्धारण से संबंधित विषयों पर साहित्य उपलब्ध करवाता है। सामान्य पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा इसे रक्षा तथा संबद्ध विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त है। वर्ष के दौरान इस पुस्तकालय ने 418 पुस्तकें खरीदीं और 133 पत्रिकाएं/आवधिक पत्रिकाएं तथा 28 समाचार पत्र मंगवाए।

रक्षा प्रबन्धन महाविद्यालय, सिकन्दराबाद

10

भर्ती एवं प्रशिक्षण

विद्रोह–रोधी प्रशिक्षण प्रगति पर

l शस्त्र सेनाओं में भर्ती स्वैच्छिक है और भारत का प्रत्येक नागरिक, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, धर्म और समुदाय का हो, सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के योग्य है और रक्षा क्षेत्र में बहुत सारी प्रशिक्षण संस्थाएं भर्ती किए गए बल को प्रशिक्षित करने के लिए एक–दूसरे के साथ समन्वय करके काम करती हैं

Lk'kL= lukvk e Hkrh

10.1 सशस्त्र सेनाएं सेवा, बलिदान, देशभक्ति और हमारे देश की मिली–जुली संस्कृति का प्रतीक हैं । सशस्त्र सेनाओं में भर्ती स्वैच्छिक है और भारत का प्रत्येक नागरिक, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग, धर्म और समुदाय का हो, सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के योग्य है बशर्ते कि वह निर्धारित शारीरिक, चिकित्सा और शैक्षिक मानदंडों पर खरा उतरता हो।

10.2 **l'kL= lukvk e l?k ykd lok vk;kx d ek/;e l deh'kuikIr vQljk dh Hkrh %** सशस्त्र सेनाओं में कमीशनप्राप्त अफसरों की भर्ती मुख्यतः संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से की जाती है जो इसके लिए निम्नलिखित दो अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाएं आयोजित करता है :

¼d½ **jk"Vh; j{kk vdkneh ¼,u Mh ,½ vkj ukSlsuk vdkneh ¼,u ,½ %** संघ लोक सेवा आयोग राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी में प्रवेश के लिए वर्ष में दो बार प्रवेश परीक्षा का आयोजन करता है। उम्मीदवार 10+2 परीक्षा पास करने पर या 12वीं कक्षा में पढ़ते हुए प्रतियोगिता में बैठने के पात्र हैं। संघ लोक सेवा आयोग की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् पात्र उम्मीदवारों को सैन्य चयन बोर्ड (एस एस बी) द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है । चिकित्सीय रूप से फिट होने एवं एन डी ए की मैरिट सूची में आने वाले सफल उम्मीदवार आवेदन के समय दिए गए सेवा के विकल्प के अनुसार राष्ट्रीय रक्षा अकादमी अथवा नौसेना अकादमी में प्रवेश पाते हैं । तीन वर्ष का प्रशिक्षण पाठयक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण के लिए संबंधित सेना अकादमियों में भेजा जाता है।

¼[k½ **l;qDr j{kk lok ijh{kk ¼lh Mh ,l b½ %** संघ लोक सेवा आयोग वर्ष में दो बार संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा का आयोजन करता है । विश्वविद्यालयों के स्नातक अथवा स्नातक के अंतिम वर्ष में पढ़ने वाले छात्र इस परीक्षा में बैठने के लिए पात्र हैं । लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हाने वाले उम्मीदवारों को एस एस बी साक्षात्कार एवं चिकित्सा जांच के लिए उपस्थित होना होता है । मेरिट लिस्ट में आने वाले उम्मीदवारों को स्थायी कमीशन के लिए भारतीय सैन्य अकादमी/वायुसेना अकादमी एवं नौसेना अकादमी में 18 महीने का आधारभूत सैन्य प्रशिक्षण एवं अल्प सेवा कमीशन अफसर (एस एस सी ओ) बनने के लिए अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए) में 11 महीने का सैन्य प्रशिक्षण लेना होता है । एस एस सी ओ 10 वर्ष की अवधि तक सेवा कर सकता है जिसे 14 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है । हालांकि वे 10 वर्ष की सेवा पूरी होने पर स्थायी कमीशन के लिए अथवा 5 वर्ष की सेवा पूरी होने पर सेवा छोड़ने का विकल्प ले सकते हैं, जिस पर अलग–अलग मामले के आधार पर विचार किया जाता है।

l uk

10.3 संघ लोक सेवा आयोग के जरिए प्रवेश के अलावा नीचे बताए तरीकों से भी कमीशनप्राप्त अफसरों की भर्ती की जाती है :–

¼d½ 10+2 rduhdh izos'k ;kstuk ¼Vh bZ ,l½ % जिन उम्मीदवारों ने भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित में कुल मिलाकर न्यूनतम 70% अंकों के साथ 10+2 सी बी एस ई/आई सी एस ई/राज्य बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की है, वे 10+2 तकनीकी प्रवेश योजना के तहत कमीशन पाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। सैन्य चयन बोर्ड (एस एस बी) में सफल रहने तथा चिकित्सा बोर्ड द्वारा योग्य घोषित किए जाने पर वे भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून में एक वर्ष का बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण लेते हैं और तत्पश्चात स्थायी कमीशन प्राप्त करने से पूर्व संबंधित शाखाओं में तीन वर्ष का इंजीनियरी डिग्री पाठ्यक्रम पूरा करते हैं। कमीशन प्रदान किए जाने के बाद उन्हें उस सेनांग/सेवा का एक वर्ष का विशेषीकृत प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें उन्हें कमीशन दिया गया है।

¼[k½ fo'ofo|ky; izos'k ;kstuk ¼;w bZ ,l½ %& अधिसूचित इंजीनियरी शाखाओं के अंतिम/अंतिम वर्ष से पूर्व के विद्यार्थी विश्वविद्यालय प्रवेश योजना के तहत सेना के तकनीकी सेनांगों में कमीशन अफसर के रूप में स्थायी कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। पात्र अभ्यर्थियों को सेना मुख्यालय द्वारा तैनात स्क्रीनिंग टीमों द्वारा कैम्पस साक्षात्कार के जरिए चुना जाता है। इन अभ्यर्थियों को एस एस बी और मेडिकल बोर्ड के सामने उपस्थित होना होता है। सफल अभ्यर्थियों को आई एम ए देहरादून में एक वर्षीय कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण लेना होता है । इस प्रवेश के माध्यम से कैडेट कमीशन मिलने पर दो वर्ष की पूर्व– दिनांकित वरिष्ठता के भी हकदार होते हैं।

¼x½ rduhdh Lukrd ikB~;Øe ¼Vh th lh½ % इंजीनियरी की अधिसूचित शाखाओं के इंजीनियरी ग्रेजुएट, अधिसूचित शाखा में न्यूनतम द्वितीय श्रेणी के कुल अंकों सहित, पोस्ट ग्रेजुएट सैन्य शिक्षा कोर के लिए और कृषि/डेयरी में एम एस सी सैन्य फार्म के लिए इस प्रवेश के माध्यम से स्थायी कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं । सैन्य चयन बोर्ड (एस एस बी) और चिकित्सा बोर्ड के पश्चात चुने गए उम्मीदवारों को कमीशन प्रदान किए जाने से पूर्व भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून में एक वर्ष का कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण लेना अपेक्षित है। इस प्रवेश के माध्यम से इंजीनियरी ग्रेजुएट कमीशन मिलने पर दो वर्ष की पूर्व– दिनांकित वरिष्ठता के हकदार होते है।

(?k½ vYi lsok deh'ku ¼rduhdh½ izos'k % अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी) प्रवेश योजना, पात्र तकनीकी स्नातकों/स्नातकोत्तरों को तकनीकी सेनांगों में भर्ती का अवसर देती है । एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड के बाद चुने गए अभ्यर्थियों को ओ टी ए, चेन्नई में 49 सप्ताह का कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है । प्रशिक्षण पूरा होने पर उन्हें अल्प सेवा कमीशनप्राप्त अफसर के रूप में प्रवेश दिया जाता है । इस प्रवेश के माध्यम से आए अभ्यर्थी भी कमीशन प्राप्त होने पर दो वर्ष की पूर्व–दिनांकित वरिष्ठता के हकदार होते हैं । अन्य अल्प सेवा कमीशन अफसरों के लिए शर्तें और निबंधन इस प्रविष्टि के लिए लागू हैं।

¼p½ ,u lh lh ¼fo'ks"k½ izos'k ;kstuk % न्यूनतम 'बी' ग्रेड का एन सी सी 'सी' प्रमाण–पत्र और स्नातक

न्यूनतम 'बी' ग्रेड सहित एन सी सी 'सी' प्रमाण पत्र एवं स्नातक परीक्षा में 50% कुल अंक प्राप्त करने वाले विश्वविद्यालय स्नातक एन सी सी (विशेष प्रवेश योजना) के माध्यम से अल्प कमीशन के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

परीक्षा में 50% अंक पाने वाले विश्वविद्यालय स्नातक योजना के माध्यम से अल्प सेवा कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। तृतीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्र भी इस एंट्री के लिए आवेदन कर सकते हैं बशर्ते उन्होंने पहले दो वर्षों में न्यूनतम 50% समग्र अंक प्राप्त किए हों। ऐसे उम्मीदवारों को साक्षात्कार में चुने जाने की स्थिति में 50% समग्र अंक प्राप्त करने होंगे अन्यथा उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी। ओ टी ए में प्रवेश लेने के समय उम्मीदवारों के पास स्नातक डिग्री होनी चाहिए अथवा तृतीय वर्ष में पढ़ रहे छात्रों को ओ टी ए में प्रशिक्षण आरंभ होने की तारीख से 12 सप्ताह के भीतर डिग्री प्रस्तुत करनी होगी। ऐसे कैडेटों को संघ लोक सेवा आयोग की लिखित परीक्षा में बैठने से छूट दी गई है और वे सीधे ही एस एस बी साक्षात्कार के लिए जाते हैं तथा उसके बाद उनकी डाक्टरी जांच की जाती है। योग्यता संबंधी अपेक्षाएँ पूरी करने वाले अभ्यर्थियों को राज्य स्तर पर विभिन्न एन सी सी ग्रुप हैडक्वार्टरों के माध्यम से आवेदन करना होता है। संबंधित ग्रुप हैडक्वार्टरों द्वारा स्क्रीनिंग के बाद राष्ट्रीय कैडेट कोर महानिदेशालय पात्र कैडेटों के आवेदन पत्र एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) के भर्ती निदेशालय को भेजता है।

¼N½ t t ,MokdsV tujy iso'k % एल एल बी में न्यूनतम 55% कुल अंकों सहित विधि स्नातक और 21 से 27 वर्ष के बीच की आयु वाले व्यक्ति जज एडवोकेट जनरल शाखा के लिए आवेदन कर सकते हैं। पात्र उम्मीदवारों को सीधे ही सैन्य चयन बोर्ड द्वारा साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है और तत्पश्चात् उनकी चिकित्सा जांच की जाती है। यह एक अल्प सेवा कमीशन प्रवेश है जिसमें योग्य उम्मीदवार बाद में स्थायी कमीशन का चुनाव कर सकते हैं।

(t½ vYi lsok deh'ku efgyk % पात्र महिला उम्मीदवारों को महिला विशेष प्रवेश योजना के माध्यम से सेना में अल्प सेवा कमीशन अफसर के रूप में भर्ती किया जाता है। कमीशन वैद्युत एवं यांत्रिक इंजीनियर कोर, इंजीनियर्स, सिग्नल, सेना शिक्षा कोर, सैन्य आसूचना कोर, जज एडवोकेट जनरल शाखा, सेना आयुध कोर, सेना आपूर्ति कोर और सेना वायु रक्षा में प्रदान किया जाता है। महिलाओं को तीन क्षेत्रों (स्ट्रीम) अर्थात गैर–तकनीकी स्नातक, तकनीकी और स्नातकोत्तर/विशेषज्ञ में 10 वर्ष की अवधि के लिए अल्प सेवा कमीशन प्रदान किया जाता है, जिसे स्वैच्छिक आधार पर 4 और वर्षों के लिए बढ़ाया जा सकता है। 10 वर्ष की सेवा पूरी करने पर अफसरों को सेना शिक्षा कोर एवं जज एडवोकेट जनरल शाखा में स्थायी कमीशन का विकल्प दिया गया है। अफसर प्रशिक्षण अकादमी, चेन्नई में प्रशिक्षण की अवधि 49 सप्ताह है। vYidkfyd lsok deh'ku efgyk ¼rduhdh½ iznf'kZr के लिए अधिसूचित शाखाओं में बी ई/बी टेक के उत्तीर्ण अथवा अंतिम वर्ष/सेमेस्टर के छात्र आवेदन करने के पात्र हैं। इसके पश्चात सीधे एस एस बी साक्षात्कार एवं चिकित्सा जांच होती है। gkykafd xSj&rduhdh Lukrd 'kk[kkvksa के लिए आवेदकों को संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से आवेदन करना अपेक्षित है और लिखित परीक्षा के बाद एस एस बी साक्षात्कार के लिए आना होता है जैसा कि अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त पुरूष अफसरों के मामले में किया जा रहा है। गैर–तकनीकी शाखा की 20% आबंटित सीटें ,u lh lh ^lh* izek.ki= धारक उन महिला उम्मीदवारों के लिए आरक्षित हैं जिन्होंने स्नातक परीक्षा में न्यूनतम ‘बी’ ग्रेड एवं 50% अंक प्राप्त किए हों। आवेदन एन सी सी निदेशालय के माध्यम से भेजे जाएंगे जैसा कि पुरुष अफसरों के लिए लागू है। t t ,MokdsV tujy 'kk[kk के लिए न्यूनतम

55% प्राप्त करने वाले विधि स्नातकों से सीधे एस एस बी साक्षात्कार के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। j{kk dkfeZdksa dh tks fo/kok,¡ पात्रता संबंधी निर्धारित मानदंडों को पूरा करती हैं, वे आयु में 4 वर्ष की छूट के लिए पात्र हैं और उनके लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम में 5% (तकनीकी और गैर–तकनीकी, प्रत्येक शाखा में 2.5%) सीटों का आरक्षण किया जाता है। उन्हें लिखित परीक्षाओं से छूट है और उन्हें सीधे अपर भर्ती महानिदेशालय,एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) को आवेदन करना होगा। अधिसूचना एस एस सी डब्ल्यू (तकनीकी) के साथ वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाएगी।

(झ) lsU; iosZ'k % अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर) की अफसर संवर्ग में भर्ती सेना चयन बोर्ड के माध्यम से की जाती है :–

(i) lsuk dSMsV dkWyst ¼,l lh lh½ iosZ'k% 10+2 परीक्षा पास किए हुए 20–27 वर्ष के आयु वर्ग के पात्र अन्य रैंक नियमित कमीशन के लिए आवेदन कर सकते हैं। एकीकृत मुख्यालय रक्षा मंत्रालय (सेना) द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा पास करने के बाद अभ्यर्थियों की एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्क्रीनिंग होती है जिसमें सफल रहने पर कैडेटों को सेना कैडेट कालेज विंग, देहरादून में तीन वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है जिसकी समाप्ति पर उन्हें स्नातक डिग्री मिलती है। इसके बाद आई एम ए, देहरादून में एक वर्ष का कमीशनपूर्व प्रशिक्षण दिया जाता है।

(ii) fo'ks"k deh'ku izkIr vQlj iosZ'k ¼,l lh vks½ ;kstuk % इस प्रवेश योजना के तहत सीनियर स्कूल प्रमाणपत्र प्राप्त (कक्षा 102 पैटर्न) 30–35 वर्ष आयु समूह के जे सी ओ/एन सी ओ/अन्य रैंक एस एस बी और चिकित्सा बोर्ड की स्क्रीनिंग के बाद स्थायी कमीशन के लिए पात्र हैं। उन्हें आई एम ए, देहरादून/ओ टी ए गया में एक वर्ष का कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण लेना होता है। मूल पदोन्नति एवं कार्यकारी पदोन्नति के नियम नियमित अफसरों की भांति ही हैं। इन अफसरों को यूनिटों में सब यूनिट कमांडर/क्वार्टर मास्टर और मेजर रैंक तक विभिन्न अतिरिक्त रेजिमेंटी पदों (ई आर ई) पर नियुक्त किया जाता है। वे अफसर के रूप में लगभग 20–25 वर्ष की सेवा करने के बाद 57 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त होते हैं। इस योजना से न केवल मौजूदा पी बी ओ आर की कैरियर संभावनाओं में सुधार होता है बल्कि सेना में सहायक कैडर अफसरों की कमी को पूरा करने में भी कुछ हद तक सहायता मिलती है।

(iii) LFkk;h deh'ku ¼fo'ks"k lwph½ ¼ih lh ,l ,y½%& इस प्रवेश के अंतर्गत 42 वर्ष तक की आयु एवं न्यूनतम 10 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले सीनियर स्कूल प्रमाण पत्र (10+2 पद्धति) पास जे सी ओ/एन सी ओ/अन्य रैंक के कार्मिक एस एस बी एवं चिकित्सा बोर्ड द्वारा स्क्रीनिंग के बाद कमीशन के पात्र होते हैं। आई एम ए में चार सप्ताह का अनुकूलन प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें स्थायी कमीशन (विशेष सूची) प्रदान किया जाता है।

10-4 HkrhZ % वर्ष के दौरान (01 दिसम्बर, 2011 तक) अफसर के रूप में कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण के लिए अभ्यर्थियों की भर्ती का ब्यौरा नीचे सारणी सं. 10.1 में दिया गया है ।

lkj.kh 10-1

क्रम सं0	एकादमी	एंट्री	प्रवेश
1.	एन डी ए	सेना	466
		नौसेना	144
		वायुसेना	83
		कुल	693
2.	आई एम ए	आई एम ए (डी ई)	309
		ए सी सी	129
		एस सी ओ	63
		पी सी (एस एल)	60
		कुल	561
3.	ओ टी ए	एस एस सी (एन टी)	209
		एस एस सी डब्ल्यू (टी)	87
		एस एस सी डब्ल्यू (एन टी)	53
		एन सी सी	56
		एन सी सी डब्ल्यू	18
		जे ए जी	06
		कुल	429
4.	तकनीकी प्रविष्टियां	यू ई एस	80
		एस एस सी (टी)	280
		10+2 टी ई एस	237
		टी जी सी	219
		कुल	816

10.5 चयन केंद्र, उत्तर की स्थापना

(क) पंजाब में दो सैन्य चयन बोर्डों के साथ सेना चयन केंद्र, उत्तर की स्थापना को 5 सितंबर, 2011 को अनुमोदित कर दिया गया है।

(ख) पंजाब में रूपनगर जिले में रोपड़ में 200 एकड़ भूमि के अधिग्रहण का कार्य प्रगति पर है।

10.6 tfu;j deh'kuikIr vQlj ,o vU; jSd ¼t lh vk@vk vkj½ dh Hkrh % सेना में ग्यारह जोनल भर्ती अफसर, दो गोरखा भर्ती डिपो, एक स्वतंत्र भर्ती कार्यालय एवं 59 सेना भर्ती कार्यालय हैं और इसके अलावा 47 रेजिमेंटल केन्द्र भी हैं जो अपने–अपने अधिकार क्षेत्र में रैलियों के माध्यम से भर्ती करते हैं।

10.7 सेना में जे सी ओ/ओ आर की भर्ती खुली रैलियों के माध्यम से की जाती है। जे सी ओ/ओ आर की भर्ती के लिए पहले रैली स्थल पर उम्मीदवारों की प्रारंभिक परीक्षा, संबंधित दस्तावेजों की जाँच, शारीरिक योग्यता की जांच, शारीरिक माप एवं चिकित्सा जांच की जाती है। इसके बाद हर प्रकार से स्वस्थ पाए गए उम्मीदवारों की लिखित परीक्षा ली जाती है । अंत में चुने गए उम्मीदवारों को प्रशिक्षण के लिए संबंधित प्रशिक्षण केन्द्रों पर भेजा जाता है। एक भर्ती वर्ष में, देश के प्रत्येक जिले को वर्ष में दो बार न सही परन्तु एक बार अवश्य कवर करने के प्रयास किए जाते हैं।

10.8 सेना में जे सी ओ/ओ आर की भर्ती के संबंध में हाल में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों/प्रमुख बातों का ब्यौरा इस प्रकार है :–

(क) Hkrh y{; %& भर्ती वर्ष 2010–11 के दौरान 70457 मांग के मुकाबले कुल 61269 रिक्तियां भरी गई हैं ।

(ख) ikjLifjd okd ifrfØ;k i.kkyh ¼vkbZ oh vkj ,l½ % जम्मू–कश्मीर एवं पंजाब को छोड़कर सभी राज्यों के लिए आई वी आर एस सफलतापूर्वक अधिष्ठापित कर दिए गए हैं। यह भर्ती रैली कार्यक्रम, भर्ती हेतु गुणात्मक आवश्यकता, परिणाम आदि के लिए सूचना उपलब्ध कराती है।

(ग) Hkrh lxBu dk Lopkyu ¼vk vkj½% देश के सभी सेना भर्ती कार्यालयों में स्वचालित भर्ती रैलियां प्रारंभ कर दी गई हैं। इससे

प्रक्रियाओं की सुचारुता सुनिश्चित होती है, मानवीय हस्तक्षेप में कमी एवं बायोमीट्रिक उपकरणों और डिजिटल फोटोग्राफों की वजह से छद्मवेश नहीं होता, पारदर्शिता बढ़ती है और त्रुटिहीन परिणाम प्राप्त होते हैं। इस प्रणाली से रैलियों के दौरान प्रयास एवं समय की पर्याप्त बचत सुनिश्चित होती है।

सेना में ग्यारह जोनल भर्ती अफसर, दो गोरखा भर्ती डिपो, एक स्वतंत्र भर्ती कार्यालय है एवं 59 सेना भर्ती कार्यालय हैं और इसके अलावा 47 रेजिमेंटल केंद्र हैं जो रैलियों के माध्यम से भर्ती करते हैं।

(घ) vU; jd VM vkoVu i.kkyh ¼vk vkj Vh , ,l½ % डी आई पी आर ने जे सी ओ/ओ आर के लिए ओ आर टी ए एस नामक ऐसा कम्प्यूटरीकृत ट्रेड बैटरी टेस्ट विकसित किया है जिससे रिक्रूटों को उनकी अभिरुचि के अनुसार ट्रेड आवंटन में सहायता मिलती है तथा यह ट्रायल मूल्यांकन में सफल सिद्ध हुआ है।

(च) dEI;Vj vk/kkfjr io'k ijh{kk ¼lh ch b Vh½ % एन ए ट्रेड कॉमन प्रवेश परीक्षा के लिए 'पेपर पेंसिल' आधारित परीक्षा का स्थान लेने के लिए विकसित सी बी ई टी सॉफ्टवेयर को सीमित रूप में कोलकाता, शिलांग, पुणे, दानापुर और जबलपुर में शुरू किया गया है। इसके ट्रायल सफल पाए गए। सी बी ई टी के लाभ इस प्रकार हैं:–

(i) संपूर्ण पारदर्शिता

(ii) प्रयोक्ता अनुकूलता

(iii) अफसरों के पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन बोर्ड की जरूरत नहीं होती जिससे मूल्यवान जनशक्ति की बचत होती है।

(iv) छद्मवेशधारण को रोकती है।

(v) तुरंत परिणाम मिलते हैं।

(छ) अधिक ट्रेडों एवं अधिक उम्मीदवारों को समावेशित करने के लिए परियोजना को विस्तृत बनाने एवं वाहन आधारित जांच माड्यूल एवं अपेक्षित हार्डवेयर प्रापण को शामिल करने के लिए अवसंरचना का विकास किया जा रहा है।

(ज) xfMx i.kkyh ij vk/kkfjr f'k{kk ik=rk Lrj lc/kh uhfr tkjh djuk% कक्षा X एवं XII के स्तर पर ग्रेडिंग प्रणाली के आधार पर उम्मीदवारों के शिक्षा मानदंडों के संबंध में पात्रता सुनिश्चित करने संबंधी नीति को सरल एवं कारगर बनाया गया है तथा सभी भर्ती क्षेत्रों तथा प्रशिक्षण केन्द्रों को जारी कर दी गई है।

नौसेना

10.9 नौसेना में भर्ती सभी नए एवं मौजूदा पोतों, पनडुब्बियों, विमानों एवं तटीय स्थापनाओं को अनुकूलतम स्तर तक प्रभावशाली ढंग से जनशक्ति तैनात करने की जरूरत के आधार पर की जाती है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नौसेना में भर्ती अखिल भारतीय आधार पर की जाती है। भर्ती किए गए कार्मिकों की संख्या पात्र आवेदकों (पुरूष और महिला) जो लिखित परीक्षा, सेवा चयन बोर्ड साक्षात्कार (एस एस सी), डॉक्टरी जांच में उत्तीर्ण हो सकें और योग्यता–सूची में उनकी सापेक्ष स्थिति पर निर्भर होती है। लिंग/धर्म/जाति/पंथ के

आधार पर भर्ती में अथवा उनकी सेवावधि के दौरान किसी भी समय कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।

10-10 Hkkjrh; ukSlsuk esa vQljksa dh HkrhZ % भारतीय नौसेना की भर्ती प्रणाली सुव्यवस्थित, पारदर्शी, द्रुत और उम्मीदवारों के अनुकूल प्रक्रिया है । भारतीय नौसेना में भर्ती दो तरीके से की जाती है, अर्थात्, संघ लोक सेवा आयोग भर्ती और संघ सेवा आयोग के अलावा भर्ती।

(क) l?k ykd lsok vk;ksx HkrhZ % संघ लोक सेवा आयोग राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) और भारतीय नौसेना अकादमी (आई एन ए) में स्थायी कमीशन (पी सी) अफसरों के रूप में भर्ती के वास्ते वर्ष में दो बार एक परीक्षा का आयोजन करता है। 10+2 (पी सी एम) परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके अथवा 12वीं कक्षा में पढ़ रहे उम्मीदवार इस परीक्षा में बैठने के पात्र होते हैं। लिखित परीक्षा के बाद संघ लोक सेवा आयोग उम्मीदवारों की छंटाई करता है। इसके उपरांत उम्मीदवारों को बेंगलूर, भोपाल और कोयम्बटूर में स्थित सेवा चयन बोर्डों के पास भेजा जाता है। अर्हताप्राप्त उम्मीदवारों के परिणाम संघ लोक सेवा आयोग को अंतिम योग्यता–सूची तैयार करने हेतु भेजे जाते हैं। डाक्टरी रूप से फिट अर्हक उम्मीदवारों को योग्यता–सूची के आधार पर अपर महानिदेशक (भर्ती) / रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (नौसेना) द्वारा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी / भारतीय नौसेना अकादमी में कैडेट के रूप में नियुक्ति के लिए सूचित किया जाता है। भारतीय रक्षा अकादमी / भारतीय नौसेना अकादमी में प्रशिक्षण पूरा होने पर उन्हें नौसेना समुद्री प्रशिक्षण के वास्ते कोच्चि में प्रशिक्षण पोतों पर भेजा जाता है। स्नातक विशेष भर्ती योजना के लिए संघ लोक सेवा आयोग वर्ष में दो बार संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा (सी डी एस ई) का आयोजन करता है। बी टेक डिग्री स्नातक भी इस परीक्षा में बैठने के पात्र होते हैं । सफल उम्मीदवारों को नौसेना अनुकूलन पाठ्यक्रम (एन ओ सी) के वास्ते केरल स्थित एझिमाला भारतीय नौसेना अकादमी में शामिल किया जाता है ।

नौसेना में कमीशनप्राप्त अफसरों की भर्ती स्थायी कमीशन के लिए गैर-संघ लोक सेवा आयोग प्रविष्टियों के माध्यम से एवं नौसेना में अल्पकालिक कमीशन के लिए सैन्य चयन बोर्ड के साक्षात्कारों के माध्यम से की जाती है।

(ख) l?k ykd lsok vk;ksx dk vykok HkrhZ% गैर–यू पी एस सी प्रवेश के माध्यम से की जाने वाली भर्तियां स्थायी कमीशन और अल्पकालिक सेवा कमीशन दोनों के लिए होती हैं। इस प्रकार की भर्तियों के लिए रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (नौसेना) में आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं तथा उनकी छंटाई की जाती है। तत्पश्चात् छांटे गए उम्मीदवारों को सेवा चयन बोर्ड के साक्षात्कार के लिए भेजा जाता है। उसके बाद रिक्तियों की उपलब्धता के अनुसार अर्हताप्राप्त उम्मीदवारों की एक मेरिट सूची बनाई जाती है। नौसेना की निम्नलिखित शाखाओं / संवर्गों के लिए सेवा चयन बोर्डों के साक्षात्कारों के माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग की भर्तियों के अलावा भर्ती की जाती है ।

(i) ,DthD;fVo % विश्वविद्यालय प्रवेश योजना (यू ई एस) के माध्यम से अल्प सेवा कमीशन एवं कार्यपालक (जी एस) / हवाई यातायात नियंत्रण / कानून / संभारिकी / नौसैनिक शस्त्र निरीक्षणालय (एन ए आई) / हाइड्रो / पायलट / प्रेक्षक के लिए अन्य अल्प सेवा कमीशन (एस एस सी) योजना एवं संभारिकी / कानून / एन ए आई संवर्गों के लिए स्थायी कमीशन

(ii) b thfu;jh ¼uk lsuk okLrqdkj lfgr½ विश्वविद्यालय प्रवेश योजना के माध्यम से अल्प सेवा कमीशन विश्वविद्यालय प्रवेश योजना (यू ई एस), विशेष नौसेना वास्तुकार प्रवेश योजना (एस एन ए ई एस) और एस एस सी (ई) योजनाएं। स्थायी कमीशन 10+2 (कैडेट प्रवेश योजना) के माध्यम से प्रदान किया जाता है।

(iii) oS|qr b thfu;jh % विश्वविद्यालय प्रवेश योजना और एस एस सी (एल) योजनाओं के माध्यम से अल्प सेवा कमीशन तथा 10+2 (कैडेट प्रवेश योजना) योजना के माध्यम से स्थायी कमीशन में प्रवेश।

(iv) f'k{kk 'kk[kk % इस शाखा के लिए स्थायी कमीशन और अल्प सेवा कमीशन योजनाएं मौजूद हैं।

(v) 10+2 ¼dSMsV izos'k ;kstuk½% यह योजना भारतीय नौसेना की कार्यपालक, इंजीनियरी और वैद्युत शाखाओं में स्थायी कमीशन के लिए है। इस योजना के तहत 10+2 (भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित में) अर्हताप्राप्त उम्मीदवार सैन्य चयन बोर्ड के माध्यम से चुने जाने के पश्चात बी टेक पाठयक्रम के लिए भारतीय नौसेना अकादमी में भेजे जाते हैं। इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर उन्हें भारतीय नौसेना में कार्यपालक, वैद्युत और इंजीनियरी शाखाओं में स्थायी कमीशन प्रदान किया जाता है।

(vi) fo'ofo|ky; izos'k ;kstuk ¼;w bZ ,l½% अगस्त, 2005 से यू ई एस अल्पकालिक सेवा कमीशन के रूप में पुनरारम्भ की गई है। सातवें और आठवें सेमेस्टर के इंजीनियरी छात्र नौसेना की एग्जीक्यूटिव एवं तकनीकी शाखाओं में प्रवेश के पात्र हैं। एकीकृत मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय (नौसेना) और कमान मुख्यालयों से नौसेना चयन दल उम्मीदवारों को छांटने के लिए पूरे देश में ए आई सी टी ई द्वारा अनुमोदित इंजीनियरी कालेजों का दौरा करते हैं। अखिल भारतीय मैरिट के आधार पर छांटे गए उम्मीदवारों को सेवा चयन बोर्ड में साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। इसके पश्चात सफल उम्मीदवारों की डाक्टरी जांच की जाती है। अंतिम चयन, सैन्य चयन बोर्ड साक्षात्कार में प्राप्त अंकों के आधार पर अखिल भारतीय योग्यता–क्रम पर आधारित होता है।

10-11 ,u lh lh ds ek/;e ls HkrhZ % न्यूनतम 'बी' ग्रेडिंग सहित स्नातक डिग्री परीक्षा में 50% अंक वाले एन सी सी 'सी' प्रमाण–पत्र धारक विश्वविद्यालय स्नातकों को नौसेना में नियमित कमीशन प्राप्त अफसरों के रूप में भर्ती किया जाता है। इन स्नातकों को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा में बैठने से छूट दी गई है और उनका चयन केवल एस एस बी साक्षात्कार के माध्यम से ही किया जाता है। वे सी डी एस ई कैडेटों के साथ ही नौसेना अभिमुखीकरण पाठयक्रम के लिए नौसेना अकादमी में प्रवेश लेते हैं।

10-12 fo'ks"k ukSlsuk okLrqf'kYi izos'k ;kstuk% सरकार ने हाल ही में एक विशेष योजना 'विशेष नौसेना वास्तुकार प्रवेश योजना' (एस एन ई ए एस) के तहत भारतीय नौसेना में अल्प सेवा कमीशन अफसरों के रूप में नौसेना वास्तुकार अफसरों को भर्ती किए जाने के लिए अनुमोदन प्रदान किया है। नौसेना का शक्तिप्राप्त दल आई आई टी खड़गपुर, आई आई टी चेन्नई, कोचिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सी यू एस ए टी) और आंध्र विश्वविद्यालय, जिनमें बी टेक (नौसेना वास्तुशिल्प) पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है, का

कैम्पस साक्षात्कार के माध्यम से उम्मीदवारों का चयन करने हेतु दौरा करता है। चुने हुए उम्मीदवारों की निकटतम मिलिटरी अस्पताल में मेडिकल जांच की जाती है और उपयुक्त पाए जाने पर प्रशिक्षण के लिए उनका चयन किया जाता है।

uk l fudk dh Hkrh

10.13 Hkrh dk rjhdk% नौसेना में भर्ती उपलब्ध रिक्तियों की संख्या के अनुसार भर्ती योग्य पात्र पुरुष आबादी की राज्य–वार मेरिट पर अखिल भारतीय आधार पर' की जाती है। राज्य विशेष से भर्ती हुए कार्मिकों की संख्या उन पात्र उम्मीदवारों की संख्या पर निर्भर होती है जो लिखित परीक्षा, शारीरिक फिटनेस टेस्ट और डाक्टरी जांच तथा मेरिट में उनकी अपनी–अपनी स्थिति के अनुरूप होती है। जाति/पंथ अथवा धर्म के आधार पर रिक्तियों का कोई कोटा नहीं होता है। पात्र वालंटियरों से आवेदन–पत्र मंगवाने हेतु सभी प्रमुख राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार–पत्रों और रोजगार समाचार में विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं। बहुत से स्कूलों/कॉलेजों और जिला सैनिक बोर्डों में भी प्रचार सामग्री भेजी जाती है। स्थानीय प्रशासन स्थानीय मीडिया के माध्यम से ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों में प्रचार अभियान चलाता है।

10.14 Hkrh dh fdLe% नौसेनिकों की भर्ती की विभिन्न प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैं (प्रत्येक प्रविष्टि के सामने शैक्षिक योग्यताओं सहित):–

(क) आर्टिफिसर अप्रेंटिस (ए ए) – 10+2 (पी सी एम)

(ख) सीनियर सैकेन्डरी रंगरूट (एस एस आर) – 10+2 (विज्ञान)

(ग) मैट्रिक भर्ती रंगरूट (एम आर) – रसोइया, स्टीवार्ड एवं संगीतकार की भर्ती के लिए – मैट्रिकुलेशन

(घ) नॉन–मैट्रिक एंट्री रंगरूट (एन एम आर), टोपास नौसैनिकों (सफाईवाला) की भर्ती के लिए–कक्षा VI

च) सीधी भर्ती (उत्कृष्ट खिलाड़ी)

Hkkjrh; ok;qlsuk

vQljk dh Hkrh

10.15 भारतीय वायुसेना में अफसरों के चयन की नीति पूरी तरह मेरिट पर आधारित है और सभी भारतीय नागरिक इसमें भाग ले सकते हैं । प्रौद्योगिकी आधारित सेना होने के नाते भारतीय वायुसेना कार्मिकों की भर्ती करने के लिए उच्च मानकों को बरकरार रखने का प्रयास है ।

10.16 vQljk dh Hkrh % संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और संयुक्त रक्षा सेवा परीक्षा भर्तियां अफसर संवर्ग के लिए प्रमुख स्रोत हैं। अफसर संवर्ग में गैर–संघ लोक सेवा आयोग (नॉन यू पी एस सी) भर्तियां इस प्रकार हैं : अल्प सेवा कमीशन (पुरुष और महिलाएं), उड़ान (फ्लाइंग), एन सी सी भर्ती (पुरुषों के लिए स्थायी कमीशन), ग्राउंड ड्यूटी ऑफिसर कमीशनिंग (गैर तकनीकी) (पुरुषों के लिए स्थायी कमीशन), एयरमैन भर्ती (एयर वारियर्स के लिए स्थायी कमीशन), अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी) (पुरुष और महिलाएं) और अल्प सेवा कमीशन (गैर–तकनीकी) (पुरुष और महिलाएं) ।

10.17 lU; p;u ckM dk ek/;e l Hkrh % भारतीय वायुसेना में उड़ान (पायलट), वैमानिकी इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रॉनिक्स), वैमानिकी इंजीनियरिंग (यांत्रिकी), शिक्षा, प्रशासन, संभारिकी, लेखा एवं मौसम विज्ञान शाखाओं के लिए भर्ती सेवा चयन बोर्डों/वायुसेना चयन बोर्डों के माध्यम से की जाती है ।

10.18 fo'ofo|ky; io'k ;ktuk % इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों मं अंतिम/अंतिम वर्ष से पूर्व वर्ष के विद्यार्थी विश्वविद्यालय प्रवेश योजना के अंतर्गत वायुसेना की तकनीकी शाखाओं में स्थायी कमीशनप्राप्त अफसर के रूप में भर्ती होने के पात्र हैं ।

10.19 lok ifof"V ;ktuk % इस प्रवेश के अंतर्गत न्यूनतम 10 वर्ष की सेवा (तकनीकी एवं गैर तकनीकी

ट्रेड) कर चुके 36–42 वर्ष आयु वर्ग वाले सार्जेंट एवं उससे ऊपर के रैंक वाले एयरमैन, जिनकी न्यूनतम शैक्षिक योग्यता 10+2 है, यूनिट स्तर पर स्क्रीनिंग के पश्चात् वायुसेना चयन बोर्ड परीक्षा एवं चिकित्सा जांच किए जाने पर कमीशन के पात्र हैं । तकनीकी ट्रेडों के सैन्य कार्मिकों को तकनीकी शाखा में भर्ती किया जाता है एवं गैर–तकनीकी ट्रेडों के कार्मिकों को ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं में भर्ती किया जाता है।

10.20 efgyk vQljksa dh Hkrh % पात्र महिलाओं को भारतीय वायुसेना की उड़ान, वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रॉनिक्स), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिकी), शिक्षा, प्रशासन, संभारिकी, लेखा और मौसम विज्ञान शाखाओं में अल्प सेवा कमीशनप्राप्त अफसरों के रूप में भर्ती किया जाता है। तथापि, भारतीय वायुसेना की शिक्षा, लेखा और प्रशासन (विधि) शाखाओं में जनवरी, 2009 में शुरू हुए प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में शामिल हुई महिलाएं उपलब्ध रिक्तियों, पात्रता मानदंडों एवं उपयुक्तता और सेवा आवश्यकताओं के आधार पर स्थायी कमीशन प्रदान किए जाने के लिए पात्र होंगी ।

10.21 jk"Vªh; dSMsV dksj ds ek/;e ls Hkrh% न्यूनतम 'बी' ग्रेडिंग के एन सी सी 'ग' प्रमाणपत्र धारक एवं स्नातक स्तर पर 60% अंक प्राप्त करने वाले विश्वविद्यालय स्नातकों को सेवा चयन बोर्डों के माध्यम से चयन करके नियमित कमीशनप्राप्त अफसरों के रूप में भारतीय वायुसेना में भर्ती किया जाता है ।

uohure miyfC/k;ka

10.22 भारतीय वायुसेना ने कम्प्यूटरीकृत पायलट चयन प्रणाली के क्रमिक उत्पादन के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी आर डी ओ) के साथ एक करार किया है। यह प्रणाली अगस्त 2013 तक सभी वायुसेना चयन बोर्डों में संस्थापित की जाएगी जो मौजूदा पायलट अभिरुचि बैटरी टेस्ट का स्थान लेगी। भारतीय वायुसेना की सभी शाखाओं के लिए अफसर संवर्ग में भर्ती के लिए प्रविष्टि स्तर की योग्यताओं को देश की शिक्षा नीति में नवीनतम प्रवृत्ति के अनुरूप युक्तिसंगत बनाया गया है।

vQlj jSad ls uhps ds dkfeZdksa ¼ih ch vks vkj½ dh Hkrh

10.23 अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर) के लिए उम्मीदवारों का चयन अखिल भारतीय आधार पर केन्द्रीकृत चयन प्रणाली के माध्यम से किया जाता है। वायुसैनिकों की भर्ती देश के विभिन्न भागों में अवस्थित चौदह वायुसैनिक चयन केन्द्रों (ए एस सी) की सहायता से केन्द्रीय वायुसैनिक चयन बोर्ड (सी ए एस बी) द्वारा की जाती है।

Hkkjrh; rVj{kd

10.24 vQljksa dh Hkrh % तटरक्षक संगठन में अफसरों की भर्ती वर्ष में दो बार की जाती है। तटरक्षक में सहायक कमांडेंटों की भर्ती का विज्ञापन दिसंबर/जनवरी और जून/जुलाई माह में रोजगार समाचार तथा सभी प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जाता है। भर्ती के लिए आयु सीमा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए पांच वर्ष तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लिए 3 वर्ष की छूट दी जाती है। अफसरों को निम्नलिखित शाखाओं में भर्ती किया जाता है :–

(क) lkekU; M~;wVh % 10+2+3 शिक्षा पद्धति के अंतर्गत बारहवीं कक्षा के स्तर तक गणित एवं भौतिकी पढ़े हुए 21 से 25 वर्ष की आयु वाले सभी पुरुष/महिला स्नातक अभ्यर्थी, सामान्य ड्यूटी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

;(ख) efgykvksa ds fy, lkekU; M~;wVh ¼vYi lsok fu;qfDr ;kstuk½ % शिक्षा की 10+2+3 शिक्षा पद्धति में 12 वीं कक्षा तक गणित और भौतिकी सहित स्नातक उपाधि वाली महिला उम्मीदवार, जो 21–25 के आयु वर्ग के बीच हों, सामान्य ड्यूटी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने की पात्र हैं।

(ग) lkekU; M~;wVh ¼ik;yV@uksapkyu½% स्नातक

के दौरान गणित एवं भौतिकी विषयों में बैचलर डिग्री रखने वाले 19–27 वर्ष की आयु के सभी पुरुष/महिला अभ्यर्थी, सामान्य ड्यूटी (पायलट/नौचालन) शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(घ) lkekU; M;Vh ¼lh ih ,y vYi lok ifof"V½ 10+2+3 शिक्षा पद्धति अथवा समकक्ष के अंतर्गत बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण महिला/पुरुष जो आवेदन प्रस्तुत करने की तारीख को वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस (सी पी एल) रखते हैं और जिनकी आयु 19–27 वर्ष के बीच है, वे वाणिज्यिक पायलट लाइसेंसधारक अल्प सेवा भर्ती के तहत अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

भारतीय वायुसेना में पी बी ओ आर का चयन अखिल भारतीय स्तर पर एक केन्द्रीकृत चयन प्रणाली के जरिए किया जाता है जिसमें देश के विभिन्न भागों में स्थित 14 वायुसैनिक चयन केंद्र केंद्रीय वायुसैनिक चयन बोर्ड की सहायता करते हैं।

(च) rduhdh 'kk[kk % 21–30 वर्ष आयु वर्ग के इंजीनियरिंग डिग्रीधारी (नौसेना वास्तुशिल्प/मैरीन/यांत्रिकी/इलेक्ट्रिकल/दूरसंचार एवं इलेक्ट्रानिक डिजाइन/उत्पादन वैमानिकी नियंत्रण इंजीनियरिंग) अथवा समकक्ष योग्यता वाले पुरूष तकनीकी शाखा में अफसर के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

10.25 vQljksa dk p;u % अफसरों (जनरल ड्यूटी/जनरल ड्यूटी (पायलट/नौचालन/वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस धारक (अल्प सेवा नियुक्ति), महिला एस एस ए और तकनीकी शाखा में अफसरों का चयन तटरक्षक चयन बोर्डों के माध्यम से किया जाता है।

10.26 v/khuLFk vQljksa dks vQlj ds :i esa Hkrh fd;k tkuk % चयन प्रक्रिया के अनुसार 48 वर्ष तक की आयु के उत्कृष्ट अधीनस्थ अफसरों का सामान्य ड्यूटी और तकनीकी शाखा में सहायक कमांडेंट के रूप में चयन किया जाता है।

10.27 vQlj jSad ls uhps ds dkfeZdksa ¼ih ch vks vkj½ dh Hkrh % पी बी ओ आर की तटरक्षक में भर्ती वर्ष में दो बार की जाती हे। नवंबर/दिसम्बर एवं जून/जुलाई माह में तटरक्षक में पी बी ओ आर की रिक्तियों का विज्ञापन रोजगार समाचार और प्रमुख समाचार–पत्रों में प्रकाशित किया जाता है। पी बी ओ आर निम्नलिखित शाखाओं में भर्ती किए जाते हैं :–

(क) ;kf=d % मैट्रिक के बाद यांत्रिकी/इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में तीन वर्षीय डिप्लोमाधारी 18–22 वर्ष के आयु वर्ग के पुरुष उम्मीदवार यांत्रिक के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ख) ukfod ¼lkekU; M;Vh½ % गणित एवं भौतिकी विषयों सहित इंटरमीडिएट (10+2) पास 18–22 वर्ष के आयु वर्ग के पुरुष उम्मीदवार नाविक (सामान्य ड्यूटी) के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

(ग) ukfod ¼?kjsyw 'kk[kk½ % 18–22 वर्ष के आयु वर्ग के मैट्रिक पास पुरुष उम्मीदवार नाविक (घरेलू शाखा) के लिए आवेदन करने के पात्र हैं।

j{kk laLFkku ds fy, izf'k{k.k

10.28 रक्षा क्षेत्र की बहुत-सी संस्थाएं एक दूसरे के साथ समन्वय करके कार्य करती हैं। कुछ महत्वपूर्ण संस्थाओं का निम्नलिखित पैराग्राफों में उल्लेख किया गया है:–

lSfud Ldwy %

10.29 सैनिक स्कूल केंद्र एवं राज्य सरकारों के संयुक्त उद्यम के रूप में स्थापित किए गए थे। ये सैनिक स्कूल सोसायटी के समग्र नियंत्रण में चलते हैं। इस समय देश

के विभिन्न भागों में कुल 24 सैनिक स्कूल हैं। रेवाड़ी (हरियाणा) स्थित सैनिक स्कूल मार्च 2009 में शुरू होने वाला सबसे नया सैनिक स्कूल है।

देश के विभिन्न भागों में 24 सैनिक स्कूल अवस्थित हैं। मार्च 2009 में आरंभ हुआ सैनिक स्कूल, रेवाड़ी नवीनतम सैनिक स्कूल है।

10.30 सैनिक स्कूलों का उद्देश्य बेहतर पब्लिक स्कूल शिक्षा को आम आदमी तक पहुँचाना, बच्चों के व्यकित्तव का सर्वांगीण विकास और सशस्त्र सेनाओं के अफसर संवर्ग में क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त करना है। सैनिक स्कूलों में लड़कों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में शामिल होने के लिए तैयार किया जाता है। उन्हें शैक्षिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार किए जाने के प्रमुख उद्देश्य के अनुरूप इन स्कूलों से राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में शामिल होने वाले कैडेटों की संख्या में वृद्धि का रुझान दिखाई दिया है।

10.31 सैनिक स्कूल लड़कों को कक्षा छठी एवं नौवीं में प्रवेश देते हैं। वर्ष की 01 जुलाई को कक्षा छठी के लिए उनकी उम्र 10–11 वर्ष एवं कक्षा नौवीं के लिए 13–14 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश प्रत्येक वर्ष जनवरी मास में आयोजित की जाने वाली अखिल भारतीय स्तर की प्रवेश परीक्षा में योग्यताक्रम (मेरिट) के आधार पर दिया जाता है।

10.32 सैनिक स्कूल सोसाइटी ने उत्कृष्ट शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अनेक उपाय किए हैं जिनके परिणामस्वरूप बोर्ड और एन डी ए के परिणामों में रिकार्ड वृद्धि हुई है। आज की तारीख में रक्षा सेनाओं के 8000 से अधिक अफसर सैनिक स्कूलों से पढ़े हुए हैं। शिक्षक दिवस पर प्रतिवर्ष माननीय राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाने के वास्ते सैनिक स्कूल के अध्यापकों में से कम से कम दो अध्यापकों का चयन किया जाता है।

jk"Vªh; fefyVªh Ldwy ¼vkj ,e ,l½

10.33 देश में पाँच मिलिट्री स्कूल कर्नाटक में, बेलगाम व बंगलौर, हिमाचल प्रदेश में चैल एवं राजस्थान में अजमेर और धौलपुर में स्थित है। 16 जुलाई, 1962 को धौलपुर में स्थापित राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल इनमें सबसे नया है। ये स्कूल सी बी एस ई से संबद्ध हैं। ये स्कूल लड़कों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके रक्षा सेनाओं में भर्ती होने के लिए तैयार करते हैं।

10.34 राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल एक सांझी प्रवेश परीक्षा के माध्यम से लड़कों को प्रवेश देते हैं। उम्मीदवारों की चार विषयों अर्थात अंग्रेजी, गणित, बुद्धिमता एवं सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। आर एम एस में 67% सीटें जूनियर कमीशंड अफसरों/अन्य रैंक के बच्चों के लिए आरक्षित, 20% सीटें कमीशंड अफसरों के बच्चों के लिए आरक्षित और बाकी 13% सीटें सिविलियनों के बच्चों के लिए होती हैं।

jk"Vªh; j{kk vdkneh ¼,u Mh ,½

10.35 राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) देश की प्रमुख अंतरसेवा प्रशिक्षण संस्था है। इसे सशस्त्र सेनाओं के अफसर कैडेटों को संयुक्त प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विश्व की प्रथम संस्थाओं में से एक संस्था होने का गौरव प्राप्त है।

10.36 राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में तीन वर्ष का पाठ्यक्रम छह सेमेस्टरों में पूरा किया जाता है जिसके दौरान एक–दूसरे की सेवा के साथ मैत्री तथा सम्मान की भावना विकसित होती है। इस प्रशिक्षण के सम्पन्न होने पर, सशस्त्र सेनाओं में अफसरों के रूप में कमीशन प्राप्त करने से पूर्व आगे के प्रशिक्षण हेतु कैडेट अपनी संबंधित सेना अकादमियों में चले जाते हैं।

jk"Vªh; bfM;u fefyVªh dkyst ¼vkj vkbZ ,e lh½

10.37 राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज (आर आई एम सी) की स्थापना चयनित लड़कों को राष्ट्रीय मिलिट्री अकादमी (एन डी ए) एवं नौसेना अकादमी (एन ए)

में प्रवेश के लिए तैयार करने के उद्देश्य से 1922 में की गई थी। वर्ष में दो बार (जनवरी एवं जुलाई) बिना किसी आरक्षण के अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रत्येक सत्र में 25 कैडेटों को प्रवेश दिया जाता है।

10.38 आर आई एम सी के लिए लड़कों का चयन राज्य सरकारों के माध्यम से आयोजित एक लिखित–सह–मौखिक परीक्षा द्वारा किया जाता है । संबंधित राज्यों के लिए सीटें जनसंख्या के आधार पर आरक्षित की जाती हैं । कॉलेज लड़कों को कक्षा VIII में प्रवेश देता है ।

Hkkjrh; lSU; vdkneh ¼vkbZ ,e ,½] nsgjknwu

10.39 वर्ष 1932 में स्थापित भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून का उद्देश्य सेना में अफसरों के रूप में शामिल होने वाले कैडेटों के बौद्धिक, नैतिक एवं शारीरिक गुणों का पूर्णतः विकास करना है। भारतीय सैन्य अकादमी में प्रवेश के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :–

(क) एन डी ए से स्नातक होने पर।

(ख) सेना कैडेट कॉलेज से, जो आई एम ए की ही एक विंग है, स्नातक होने पर।

(ग) सीधी भर्ती स्नातक कैडेट, जो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण करके सैन्य चयन बोर्ड द्वारा चुने जाते हैं।

(घ) तकनीकी स्नातक पाठ्यक्रम (टी जी सी) के लिए।

(च) इंजीनियरिंग कॉलेजों के अंतिम/अंतिम वर्ष से पूर्व वर्ष के छात्रों के लिए विश्वविद्यालय प्रविष्टि योजना (यू ई एस) के अंतर्गत।

(छ) 10+2 तकनीकी प्रविष्टि योजना (टी ई एस) के माध्यम से।

10.40 आई एम ए मित्र देशों के जैंटलमैन कैडेटों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

vQlj if'k{k.k vdkneh ¼vks Vh ,½] pUub

10.41 वर्ष 1963 में स्थापित अफसर प्रशिक्षण स्कूल (ओ टी एस) के 25 वर्ष पूरे होने पर 01 जनवरी, 1988 को इसे अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओ टी ए) का नाम दिया गया। वर्ष 1965 से पहले इसका मुख्य कार्य इमरजेंसी कमीशन प्रदान करने के लिए जैंटलमैन कैडेटों को प्रशिक्षित करना था । 1965 के बाद अकादमी ने अल्प सेवा कमीशन के लिए कैडेटों को प्रशिक्षित करना आरंभ कर दिया ।

10.42 21 सितम्बर, 1992 से सेना में महिला अफसरों के प्रवेश के पश्चात ओ टी ए से हर वर्ष लगभग 100 महिला अफसर सेना सर्विस कोर, सेना शिक्षा कोर, जज एडवोकेट जनरल विभाग, इंजीनियर्स कोर, सिग्नल तथा इलैक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल इंजीनियर्स कोर में कमीशन प्राप्त करती हैं।

10.43 ओ टी ए निम्नलिखित के लिए कमीशन–पूर्व प्रशिक्षण प्रदान करती है :–

(क) स्नातकों के लिए अल्प सेवा कमीशन (गैर–तकनीकी)

(ख) स्नातकों के लिए अल्प सेवा कमीशन (तकनीकी)

(ग) स्नातक/स्नातकोत्तर महिला कैडेटों के लिए अल्प सेवा कमीशन (महिला)

vQlj if'k{k.k vdkneh ¼vks Vh ,½] x;k

10.44 3 दिसम्बर, 2009 को सुरक्षा संबंधी मंत्रिमंडल समिति ने गया, बिहार में दूसरी अफसर प्रशिक्षण अकादमी स्थापित किए जाने के प्रस्ताव को अनुमोदित किया। 18 जुलाई, 2011 से प्रशिक्षण प्रारंभ हो गया है। 135 जेंटलमैन कैडेटों को लेने की योजना के मुकाबले प्रथम सत्र में 149 कैडेटों ने प्रवेश लिया। जनवरी, 2012 से आरंभ होने वाले सत्र में कुल 319 जेंटलमैन

कैडेट अकादमी में प्रशिक्षण ले रहे हैं। क्रमिक रूप से इसकी क्षमता बढ़ाकर 750 जेंटलमैन कैडेटों की कर दी जाएगी।

luk ;|) dkly t] eg

10.45 15 जनवरी, 2003 से पुनः नामोद्दिष्ट सेना युद्ध कॉलेज को पूर्ववर्ती समाघात कॉलेज, इंफेन्ट्री स्कूल में से सृजित किया गया था और 01 अप्रैल, 1971 को इसे स्वतंत्र संस्था के रूप में स्थापित किया गया था। एक अग्रणी संस्था के रूप में अफसरों को सभी शस्त्रास्त्र सामरिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ–साथ सेना युद्ध कॉलेज सामरिकी एवं संभारिकी के क्षेत्रों में नई संकल्पनाओं एवं सिद्धांतों के मूल्यांकन का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

tfu;j yhMl foxx ¼t ,y MCY;½] cyxke

10.46 बेलगाम में जूनियर लीडर्स विंग सब यूनिट लेवल टेक्टिकल और विशेष मिशन तकनीकों में जूनियर अफसरों, जे सी ओ एवं एन सी ओ को प्रशिक्षण देता है ताकि वे भीषण तनाव और दबाव में विभिन्न भूभागों में सौंपे गए संक्रियात्मक मिशनों तथा युद्ध एवं शांतिकाल में अपनी उप–यूनिटों की कमान और प्रशासन प्रभावी रूप से संभाल सकें। यह सेना, अर्ध सैनिक बलों, केन्द्रीय पुलिस संगठनों और मित्र देशों के अफसरों और एन सी ओ को कमांडो प्रकार की संक्रियाओं में प्रशिक्षण देती है ताकि उन्हें सभी प्रकार के भूभागों और संक्रियात्मक परिवेश में या तो विशेष मिशन समूहों का हिस्सा बनाया जा सके अथवा स्वतंत्र मिशनों का नेता बनाया जा सके।

tfu;j yhMl vdkneh ¼t ,y ,½] jkex<

10.47 प्रशिक्षण के लिए और अधिक सुविधाओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बिहार के रामगढ़ में 2001 में एक और जे एल ए की स्थापना करने का निर्णय लिया गया था। जे एल ए रामगढ़ जे एल ए बरेली के अनुरूप ही संगठित की गई है। यह संस्था फरवरी 2003 से प्रतिवर्ष 648 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर रही है।

mPp rxrk ;|) i}fr Ldy ¼,p , MCY; ,l½] xyexl

10.48 इस विद्यालय का उद्देश्य उच्च तुंगता (एच ए) पर्वतीय युद्धपद्धति से जुड़े सभी पहलुओं में चुने गए कार्मिकों को प्रशिक्षित करना तथा ऐसे भूभागों में लड़ने के लिए तकनीकें विकसित करना है। एच ए डब्ल्यू एस अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ के लिए पाठ्यक्रमों की दो श्रृंखलाएं–पर्वतीय युद्धपद्धति (एम डब्ल्यू) तथा शीतकालीन युद्धपद्धति (डब्ल्यू डब्ल्यू), क्रमशः सोनमर्ग तथा गुलमर्ग में चलाता है। प्रशिक्षण की अवधि सामान्यतः जनवरी से अप्रैल तक तथा मई से अक्टूबर तक होती है। इस स्कूल के कार्मिकों ने माउंट एवरेस्ट, माउंट कंचनजंगा तथा सं0रा0 अमरीका की माउंट मैकिनले जैसी विश्व की कुछ प्रमुख चोटियों पर चढ़ने में सफलता पाई है।

ifrfonkfgrk rFkk txy ;|) i)fr Ldy ¼lh vkbl t MCY;½] ohjkxVs

10.49 सी आई जे डब्ल्यू अधिकारियों तथा जे सी ओ/एन सी ओ के लिए प्रतिविद्रोहिता तकनीकों तथा असमिया, बोडो, नागामीज, मणिपुरी/तंगखुल भाषाओं के पाठ्यक्रम आयोजित करता है तथा उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में भेजने से पहले सभी यूनिटों के लिए तैनाती–पूर्व प्रशिक्षण भी आयोजित करता है।

ifrfonkfgrk rukrh&iol if'k{k.k ;|) Ldy

10.50 सी आई जे डब्ल्यू स्कूल की सीमित क्षमता तथा विशिष्ट संक्रियात्मक परिस्थितियों व यूनिटों के संचलन में आने वाली प्रशासनिक समस्याओं के कारण यह आवश्यक समझा गया कि यूनिटों को उनके संक्रिया क्षेत्रों के निकट ही प्रशिक्षण दिया जाए। सेना के संसाधनों

में से ही उत्तरी कमान में संचलन करने वाली यूनिटों के लिए खेरू, सरोल एवं भालरा में तथा असम तथा मेघालय में संचलन करने वाली यूनिटों के लिए ठाकुरबाड़ी में और कोर युद्ध स्कूल स्थापित किए गए हैं। प्रतिविद्रोहिता प्रशिक्षण के साथ–साथ ये स्कूल विशेषकर उत्तरी कमान में यूनिटों को नियंत्रण रेखा तथा उच्च तुंगता के संबंध में उनकी भूमिका के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं।

सेना सेवा कोर, सेना शिक्षा कोर, जज एडवोकेट जनरल विभाग, इंजीनियर, सिग्नल तथा इलैक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल इंजीनियर कोरों की लगभग 100 महिला अफसर प्रतिवर्ष ओ टी ए से कमीशन प्राप्त करती हैं।

bUQUVªh Ldwy] eg

10.51 इन्फैन्ट्री स्कूल भारतीय सेना की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी सैन्य प्रशिक्षण संस्था है। इन्फैन्ट्री स्कूल में यंग आफिसर्स पाठ्यक्रम, प्लाटून वेपन पाठ्यक्रम, मोर्टार पाठ्यक्रम, एंटी टैंक एण्ड गाइडेड मिसाइल पाठ्यक्रम, मीडियम मशीन गन एवं आटोमैटिक ग्रेनेड लॉन्चर (जे/एन) पाठ्यक्रम, सेक्शन कमांडर्स पाठ्यक्रम, ऑटोमैटिक डेटा प्रोसेसिंग पाठ्यक्रम, स्नाइपर पाठ्यक्रम तथा सपोर्ट वेपन पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यह संस्था केवल इंफेंट्री के ही नहीं बल्कि अर्ध सैनिक बलों एवं सिविल पुलिस संगठनों के साथसाथ अन्य सेनांगों एवं सेनाओं के अफसरों, जे सी ओ एवं अन्य रैंकों को भी प्रशिक्षण प्रदान करती है। यह संस्था इस समय एक वर्ष में 7,000 से भी अधिक अफसरों, जे सी ओ एवं एन सी ओ को प्रशिक्षित कर रही है।

lkexh izc/ku dkyst

10.52 यह कॉलेज अक्टूबर, 1925 में किरकी में स्थापित भारतीय सेना आयुध कोर (आई ए ओ सी) अनुदेश स्कूल की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। बाद में फरवरी, 1939 में इस स्कूल को आई ए ओ सी प्रशिक्षण केंद्र नाम दिया गया और इसे जबलपुर में इसके मौजूदा स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। जनवरी, 1950, में आई ए ओ सी स्कूल का नाम सेना आयुध कोर (ए ओ सी) स्कूल कर दिया गया। ए ओ सी स्कूल का नाम फिर से बदलकर सामग्री प्रबंधन कॉलेज (सी एम एम) रख दिया गया और 1987 में इसे जबलपुर विश्वविद्यालय (रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय) से संबद्ध कर दिया गया। 1990 में सी एम एम स्वायत्तशासी हो गया। यह कालेज विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में 'सरकारी कॉलेज' के रूप में भी पंजीकृत है। इसे अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए आई सी टी ई) का अनुमोदन भी प्राप्त है।

10.53 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम के तहत् गठित नेशनल असेसमेन्ट एंड एक्रिडिटेशन काउंसिल (एन ए ए सी), जो एक स्वायत्त निकाय है, ने कॉलेज को पांच सितारा (उच्चतम) मान्यता प्रदान की है। कॉलेज, भारतीय सेना में आयुध सहायता प्रबंधन संबंधी कार्यों में लगे ए ओ सी के सभी रैंकों और सिविलियनों को आवश्यक संस्थागत प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह सभी सेनांगों तथा सेवाओं के चयनित अफसरों, जे सी ओ तथा अन्य रैंकों को भी यूनिट प्रशासन और सामग्री प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

rksi[kkuk Ldwy] nsoykyh

10.54 तोपखाना स्कूल, देवलाली विज्ञान और तोपखाना युद्ध–पद्धति के विज्ञान और प्रणाली विज्ञान की विविध उपशाखाओं का शैक्षणिक केन्द्र है जो हवाई प्रेक्षण चौकी ड्यूटी के लिए पायलटों को प्रशिक्षण देने के साथ–साथ अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ को तोपखाना हथियारों और प्रणाली का तकनीकी प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय तथा विदेशी तोपखाना उपस्कर सिद्धांतों की समीक्षा, अध्ययन और परीक्षण भी किया जाता है।

10.55 स्कूल ने भारतीय सेना के कई अफसरों, जे सी ओ तथा एन सी ओ के साथ–साथ वर्ष के दौरान मित्र

देशों के कई अफसरों और कार्मिकों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया है।

Lkuk gokbl j{kk dkyst] xkikyij

10.56 सेना हवाई रक्षा कॉलेज (ए ए डी सी) ने पहले अक्टूबर 1989 तक तोपखाना स्कूल देवलाली की एक विंग के रूप में कार्य किया, जब इसे तोपखाने की मुख्य शाखा से हवाई रक्षा तोपखाने के अलग होने से पूर्व गोपालपुर लाया गया। यह कॉलेज वायुरक्षा तोपखाने के कार्मिकों, अन्य सेनांगों और मित्र देशों के सशस्त्र बलों के कार्मिकों को वायु रक्षा संबंधी विषयों में प्रशिक्षण प्रदान करता है।

10.57 सेना हवाई रक्षा कॉलेज कई पाठ्यक्रम चलाता है। इनमें से कुछ हैं – गनरी स्टाफ कोर्स (अफसर), युवा अफसर कोर्स, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध–पद्धति कोर्स, वरिष्ठ कमान हवाई रक्षा कोर्स, लॉन्ग गनरी स्टाफ कोर्स, जूनियर कमीशंड अफसर/नॉन कमीशंड अफसर, तकनीकी अनुदेशक फायर नियंत्रण कोर्स, वायुयान पहचान कोर्स, यूनिट अनुदेशक और चालक दल आधारित प्रशिक्षण और ऑटोमेटेड डाटा प्रोसेसिंग कोर्स।

luk lok dkj ¼, ,l lh½ dUn ,o dkyst] cxykj

10.58 बंगलौर में सेना सेवा कोर केन्द्र एवं कॉलेज की स्थापना के लिए 01 मई, 1999 को सेना सेवा कोर केन्द्र (दक्षिण) और सेना यांत्रिक परिवहन स्कूल को बंगलौर में ए एस सी केन्द्र के साथ मिला दिया गया। यह विविध विषयों जैसे संभारिकी प्रबंधन, परिवहन प्रबंधन, भोजन, ऑटोमेटेड डाटा प्रोसेसिंग, इत्यादि में अफसरों, जूनियर कमीशंड अफसरों, अन्य रैंकों और अन्य सेनांगों और सेवाओं, सेना सेवा कोर के रंगरूटों को मूलभूत और उन्नत प्रशिक्षण देने वाला एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान है।

10.59 1992 से ए एस सी कॉलेज संभारिकी एवं संसाधन प्रबंधन में डिग्री एवं डिप्लोमा प्रदान करने के लिए रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से संबद्ध किया गया है।

luk f'k{kk dkj if'k{k.k dkyst ,o dUn] ipe<h

10.60 सेना शिक्षा कोर प्रशिक्षण कॉलेज एवं केन्द्र, पंचमढ़ी सशस्त्र सेनाओं में शैक्षिक प्रशिक्षण देनेवाला एक उत्कृष्ट रक्षा संस्थान है । यह बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से संबद्ध एक स्वायत्तशासी कॉलेज भी है जिसे अपने पाठ्यक्रमों और डिग्रियों की रूपरेखा तैयार करने, उनको संचालित करने, परीक्षा लेने और डिग्री प्रदान करने की शैक्षणिक और प्रशासनिक शक्तियां प्राप्त हैं ।

10.61 मानचित्र शिल्प विभाग ए ई सी अफसरों और भारतीय सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर), अर्ध सैनिक बलों और मित्र देशों के कार्मिकों के लिए 10 सप्ताह का मैप रीडिंग अनुदेशक कोर्स चलाता है ।

10.62 12–सप्ताह का यूनिट शिक्षा अनुदेशक पाठ्यक्रम भारतीय सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अन्य रैंकों को अपनी यूनिटों में सक्षम शिक्षा अनुदेशक बनने के लिए प्रशिक्षित करता है।

10.63 विदेशी भाषा विंग (एफ एल डब्ल्यू), जो ए ई सी प्रशिक्षण कॉलेज व केन्द्र के तीन प्रभागों में से एक है, न केवल सशस्त्र सेनाओं में अपितु राष्ट्रीय शैक्षणिक परिवेश में भी विदेशी भाषा प्रशिक्षण का एक अग्रणी संस्थान है। इसकी दो डिजिटाइज़्ड भाषा प्रयोगशालाएँ हैं जो 20–20 छात्रों को प्रशिक्षण देती हैं।

fefyVh lxhr fox] ipe<h

10.64 मिलिट्री संगीत विंग की स्थापना ए ई सी ट्रेनिंग कॉलेज एंड सेंटर, पचमढ़ी के एक भाग के रूप में अक्टूबर 1950 में तत्कालीन कमांडर–इन–चीफ (बाद में फील्ड मार्शल) जनरल के एम करियप्पा, ओ बी ई के संरक्षण में की गई थी। इसके पास 200 से भी अधिक सैन्य संगीत रचनाओं का समृद्ध खजाना है। इसने नए

भर्ती हुए बैंडमैनों, पाइपरों या ड्रमरों को प्रशिक्षण देने के लिए भिन्न–भिन्न श्रेणियों के पाठ्यक्रमों के माध्यम से, भारत में मिलिट्री संगीत का उच्च स्तर बनाए रखने में विशिष्टता हासिल की है।

fjekmV vkj Ik'kfpfdRlk dkj dUn rFkk Ldy] ejB

10.65 मेरठ स्थित रिमाउंट और पशुचिकित्सा कोर (आर वी सी) केन्द्र तथा स्कूल का उद्देश्य सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसरों और अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों (पी बी ओ आर) को पशु प्रबंधन तथा पशुचिकित्सा से जुड़े विभिन्न पहलुओं के विषय में प्रशिक्षण देना है। संस्थान में अफसरों के लिए ग्यारह कोर्स तथा पी बी ओ आर के लिए छह कोर्स चलाए जाते हैं। यहां कुल 250 छात्रों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

luk [kydn lLFkku ¼, ,l vkb½] i.k

10.66 भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में पदक विजेता तैयार करने के उद्देश्य से देश में विभिन्न स्थानों पर चुने हुए विषयों में सेना खेलकूद केन्द्रों के साथ–साथ पुणे में एक सेना खेलकूद संस्थान की स्थापना की गई है। आधुनिकतम आधारभूत सुविधाओं एवं उपस्करों के साथ–साथ भोजन, रहन–सहन, विदेशी दौरों एवं विदेशी प्रशिक्षकों के अधीन प्रशिक्षण के लिए समुचित निधि की व्यवस्था की गई है।

'kkjhfjd if'k{k.k luk Ldy] i.k

10.67 शारीरिक प्रशिक्षण सेना स्कूल (ए एस पी टी) एक प्रमुख संस्था है जो यूनिटों और सब यूनिटों में शारीरिक प्रशिक्षण देने के संबंध में सेना कार्मिकों को सुव्यवस्थित तथा व्यापक प्रशिक्षण दे रहा है। यह सेना में खेल–कूद का स्तर सुधारने और शारीरिक प्रशिक्षण में मनोरंजन को शामिल करके उसे अधिक पूर्ण बनाने की दृष्टि से खेल–कूद का बुनियादी प्रशिक्षण भी देता है। इन पाठ्यक्रमों में सेना, अर्धसैनिक बलों के अफसर, जे सी ओ और अन्य रैंक तथा मित्र देशों के सेना कार्मिक भाग लेते हैं। ए एस पी टी ने राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान के सहयोग से बॉक्सिंग, बॉलीबाल, बॉस्केटबाल, तैराकी और जीवनरक्षा, जूडो और योग पाठ्यक्रमों में छह सम्बद्ध खेलकूद पाठ्यक्रम आरंभ किए हैं।

lek?kkr luk foekuu if'k{k.k Ldy ¼lh , , Vh , l½ ukfld jkM

10.68 समाघात सेना विमानन प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना मई, 2003 में नासिक रोड पर की गई थी। इसका उद्देश्य विमान चालकों को विमानन कौशल तथा विभिन्न युद्ध संक्रियाओं में विमानन यूनिटों का बंदोबस्त करने का प्रशिक्षण देना, विमानन अनुदेशकों को मानक प्रचालन प्रक्रियाओं के विकास में प्रशिक्षित करना तथा भू–स्थित सैनिकों के सहयोग से विमानन सामनिकी सिद्धांत के विकास में सेना प्रशिक्षण कमान की मदद करना है। स्कूल में चलाये जाने के लिए जिन पाठ्यक्रमों की पहचान की गई है, वे प्री–बेसिक पायलट पाठयक्रम, बेसिक सेना विमानन पाठयक्रम, प्री–क्वालिफाइड उड़ान अनुदेशक पाठयक्रम, विमानन अनुदेशक हेलिकॉप्टर पाठयक्रम, हेलिकॉप्टर कंवर्शन ऑन–टाइप, उड़ान कमांडर्स पाठयक्रम तथा नव उपस्कर पाठयक्रम हैं।

fefyVh bthfu;jh dkyt ¼lh ,e b½] i.k

10.69 पुणे स्थित मिलिट्री इंजीनियरी कॉलेज (सी एम ई) एक प्रमुख तकनीकी संस्थान है जहां इंजीनियरी कोर, अन्य सेनांगों और सेवाओं, नौसेना, वायुसेना, अर्धसैनिक बलों, पुलिस और सिविलियन कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा, मित्र देशों के कार्मिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यह कॉलेज बी–टेक और एम–टेक डिग्रियाँ देने के लिए जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। सी एम ई द्वारा चलाए जाने वाले स्नातक और स्नातकोत्तर कोर्सों को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए आई सी टो ई) की मान्यता भी प्राप्त है। कॉलेज

प्रति वर्ष औसतन 1500 अफसरों और अफसर रैंक से नीचे के 800 कार्मिकों को प्रशिक्षित करता है।

lU; byDVkfuDl rFkk edfudy bthfu;jh dkyt ¼,e lh b ,e b½] fldnjkckn

10.70 एम सी ई एम ई का कार्य सिविलियनों सहित, ई एम ई के सभी रैंकों को इंजीनियरी, शस्त्र प्रणालियों तथा उपस्करों के विभिन्न विषयों में और ख़ास तौर से उनके रख–रखाव, मरम्मत और जांच के संबंध में, तकनीकी शिक्षा देना तथा वरिष्ठ, मध्यम और पर्यवेक्षक स्तरों पर प्रबंधन और सामरिकी का प्रशिक्षण देना है। एम सी ई एम ई में सभी रैंकों के 1760 कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। यहां अफसरों के लिए 13 कोर्स और पी बी ओ आर के लिए 61 कोर्स चलाए जाते हैं।

10.71 कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण पैकेज और डिजिटल चार्ट भी विकसित किए गए हैं जिनमें एम सी ई एम ई में पढ़ाए जाने वाले उपस्करों के वैद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिकी भाग की कार्यप्रणाली, मरम्मत, रखरखाव, सर्विसिंग पहलुओं और सही प्रयोग की विस्तृत तकनीकी जानकारी मौजूद है।

fefyVh ifyl dkj dUn vkj Ldy] cxykj

10.72 इस स्कूल का उद्देश्य अफसरों और पी बी ओ आर को कानून, जांच–पड़ताल, यातायात नियंत्रण आदि से जुड़ी मिलिट्री और पुलिस डयूटियों के बारे में प्रशिक्षित करना है। वर्तमान में अफसरों के लिए चार और पी बी ओ आर के लिए चौदह कोर्स चलाए जा रहे हैं। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्रों की कुल संख्या 910 है।

Lkuk foekuokfgr if'k{k.k Ldy] vkxjk

10.73 सेना विमानवाहित प्रशिक्षण स्कूल (ए ए टी एस) पहले सेना हवाई यातायात सहायता स्कूल (ए ए टी एस एस) कहलाता था । संपूर्ण विमानवाहित प्रशिक्षण को एक ही एजेन्सी के अंतर्गत लाने की आवश्यकता के मद्देनजर सेना वायु परिवहन सहायता स्कूल का नाम बदलकर 15 जनवरी, 1992 से सेना विमानवाहित प्रशिक्षण स्कूल कर दिया गया।

njlpkj btfu;fjx fefyVh dkyt ¼,e lh Vh b½] eÅ

10.74 एम.सी.टी.ई, मऊ सिग्नल अधिकारियों को समाधात संचार, इलेक्ट्रॉनिक युद्धपद्धति, संचार इंजीनियरी, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, रेजीमेंटल सिग्नल संचार एवम् बीजलेखन के संबंध में प्रशिक्षित करना है। पाँच प्रशिक्षण संकायों एवम् विंगों के अलावा, कॉलेज के पास एक प्रशासनिक विभाग है जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों को प्रशासनिक एवं संभारिकी सहायता प्रदान करता है तथा एक अवधारणात्मक अध्ययन प्रकोष्ठ है जो संचार सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने का काम करता है। कॉलेज में एक आधुनिक और् पुस्तकों से भरापूरा पुस्तकालय तथा अपना एक प्रिंटिंग प्रेस भी है। प्रशिक्षणार्थियों को एक औपचारिक परिवेश में अध्ययन एवम् प्रशिक्षण का मौका दिया जाता है ताकि वे वर्तमान एवम् भावी कार्यों के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं से परिपूर्ण हो सकें।

lU; vklpuk if'k{k.k Ldy vkj fMik ¼,e-vkb-,u-Vh-,l-Mh-½] i.k

10.75 सैन्य आसूचना प्रशिक्षण स्कूल और डिपो (एम आई एन टी एस डी) भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना और अर्धसैनिक बलों के सभी रैंकों को आसूचना अर्जन, जवाबी आसूचना और सुरक्षा पहलुओं पर प्रशिक्षण देने के लिए उत्तरदायी एक प्रमुख स्थापना है । स्कूल मित्र देशों के कार्मिकों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता है । राजस्व आसूचना विभाग के सिविलियन अफसरों को भी इस स्थापना में प्रशिक्षण दिया जाता है । यह स्कूल एक बार में सभी सेनांगों के 90 अफसरों और 130 जूनियर कमीशनप्राप्त/गैर–कमीशनप्राप्त अफसरों को प्रशिक्षण प्रदान कर सकता है । स्कूल प्रतिवर्ष लगभग 350 अफसरों और 1100 जूनियर कमीशनप्राप्त अफसरों/

गैर–कमीशनप्राप्त अफसरों को प्रशिक्षण देता है।

byDVkfudh vkj ;kf=d bthfu;jh Ldy ¼bl ,e b½] cMknjk

10.76 इलैक्ट्रॉनिकी और यांत्रिक इंजीनियरी स्कूल अधिकारियों के लिए स्नातकोत्तर स्तर के पाठयक्रम तथा पी बी ओ आर के लिए डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र स्तर के पाठयक्रम चलाता है । मित्र देशों के अनेक अफसर और पी बी ओ आर, ई एम ई स्कूल में संचालित विभिन्न पाठयक्रमों में भाग ले रहे हैं।

lU; fof/k lLFkku] dkeBh

10.77 सैन्य विधि संस्थान की स्थापना शिमला में की गई थी । 1989 में संस्थान को कामठी स्थानांतरित कर दिया गया । स्कूल के डयूटी चार्टर में सेना के सभी सेनांगों और सेवाओं के अफसरों को व्यापक विधिक शिक्षा प्रदान करना शामिल है । यह संस्थान सैन्य और संबद्ध विधि के क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान, विकास और प्रचार का कार्य करता है।

dofpr dkj dUn ,o Ldy] vgenuxj

10.78 वर्ष 1948 में प्रशिक्षण विंग, रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र और कवचित कोर डिपो और रिकार्ड को अहमदनगर स्थानांतरित कर दिया गया, जहां लड़ाकू वाहन स्कूल पहले से ही कार्यरत था। यहां इन सभी को मिलाकर कवचित कोर केन्द्र एवं स्कूल और कवचित कोर रिकार्ड बना दिया गया। इसमें छह विंग नामतः – कवचित युद्ध–पद्धति स्कूल, तकनीकी प्रशिक्षण स्कूल, बेसिक ट्रेनिंग रेजिमेंट, ड्राइविंग एवं मेंटिनेंस रेजिमेंट, ऑटोमोटिव रेजिमेंट और आयुध एवं इलैक्ट्रॉनिकी रेजिमेंट हैं जो इन विषयों में विशेषीकृत प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

fonf'k;k dk if'k{k.k

10.79 भारतीय सेना स्थापनाओं में प्रशिक्षण पाने के लिए विदेशी सेनाओं की बढ़ती हुई दिलचस्पी के चलते पड़ोसी देशों, दक्षिण–पूर्व एशिया, मध्य एशियाई गणतंत्रों, अफ्रीकी महाद्वीप और कुछ विकसित देशों के सेना कार्मिकों को भारत में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुछ शाखाओं में भारतीय अफसर भी विकसित देशों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

10.80 विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार विकासशील और अल्प विकसित देशों को सहायता उपलब्ध कराती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विकासशील देशों के कार्मिक सैन्य संस्थाओं में निःशुल्क अथवा रियायती दरों पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। विकसित पश्चिमी देश भी अपने अफसरों को पारस्परिक आधार और प्रशिक्षण और अन्य सम्बद्ध प्रभारों की लागत के भुगतान के आधार पर इन संस्थाओं में प्रशिक्षण के लिए भेजते हैं।

11

भूतपूर्व सैनिकों का पुनर्वास तथा कल्याण

रक्षा राज्य मंत्री द्वारा ई सी एच एस पॉलीक्लिनिक, शाहपुर का उद्घाटन

भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग देश में भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण एवं पुनर्वास के लिए विभिन्न नीतियां तथा कार्यक्रम बनाता है

11.1 भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग देश में भूतपूर्व सैनिकों के पुनर्वास एवं कल्याण हेतु विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम बनाता है। विभाग के दो प्रभाग हैं अर्थात पुनर्वास एवं पेंशन, और इसके 3 संबद्ध कार्यालय, जिनके नाम केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सचिवालय, महानिदेशालय (पुनर्वास) तथा केन्द्रीय संगठन, भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना हैं । केन्द्रीय सैनिक बोर्ड भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों के कल्याण और कल्याण निधियों के प्रशासन हेतु भी उत्तरदायी होता है। केंद्रीय सैनिक बोर्ड की उसके कार्य करने में सहायता हेतु 32 राज्य सैनिक बोर्ड ओर 371 जिला सैनिक बोर्ड होते हैं,जो संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन होते हैं। पुनर्वास महानिदेशालय का कार्यालय सेवानिवृत्ति से पहले/बाद का प्रशिक्षण, पुनःरोजगार, स्व–रोजगार इत्यादि जैसी विभिन्न नीतियों/योजनाओं/कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करता है। पुनर्वास महानिदेशालय की सहायता हेतु 5 कमानों में से प्रत्येक कमान में एक–एक डी आर जेड है। ईसीएचएस भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखती है।

dY;k.k

11.2 केन्द्रीय सैनिक बोर्ड भारत सरकार का एक शीर्ष निकाय है जो भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के कल्याण हेतु निर्मित सरकार की नीतियों के कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी है। इस बोर्ड के अधीन 32 राज्य सैनिक बोर्ड और 371 जिला सैनिक बोर्ड हैं। इन राज्य सैनिक बोर्डों/जिला सैनिक बोर्डों की स्थापना का खर्च पहले 50:50 के अनुपात में केन्द्र और राज्यों द्वारा बराबर वहन किया जाता था। माननीय रक्षा मंत्री ने अब विशेष दर्जे वाले 11 राज्यों अर्थात अरुणाचल प्रदेश, असम, जम्मू एवं कश्मीर, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के संबंध में निधि के वित्त पोषण के पैटर्न को बढ़ाकर 75:25 और अन्य राज्यों के संबंध में 60:40 कर दिया है ताकि ये सुदृढ़ हो सकें, उनकी कार्य प्रणाली कारगर हो सके और वे भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण हेतु और अधिक प्रतिबद्ध हो सकें। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड इन कल्याणकारी योजनाओं को सशस्त्र बल झंडा दिवस निधि के माध्यम से प्रशासित करता है। कल्याणकारी योजनाएं भूतपूर्व सैनिकों, निःशक्त भूतपूर्व सैनिकों/आश्रितों/भूतपूर्व सैनिकों के बच्चों का ध्यान रखने के लिए बनाई जाती हैं। भूतपूर्व सैनिकों/आश्रितों को रक्षा मंत्री विवेकाधीन निधि के अंतर्गत गरीबी अनुदान, बालक शिक्षा अनुदान इत्यादि जैसे अनुदानों के रूप में वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराई जाती है। वर्ष 2011–12 के दौरान (31.12.2011 तक) इस निधि के अंतर्गत 5.29 करोड़ रुपए की राशि की वित्तीय सहायता वितरित की जा चुकी है।

jkT; ,oa ftyk lSfud cksMksZa dk iqu% lqn`<+dj.k

11.3 वर्ष 2011–12 के दौरान इस दिशा में निम्नलिखित उपाए किए गए है:–

(क) dsUnzh; lSfud cksMZ dh cSBd dk vk;kstu% केन्द्रीय सैनिक बोर्ड की 29वीं बैठक माननीय रक्षा

मंत्री की अध्यक्षता में 27 जून, 2011 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

(ख) dEI;Vjhdj.k% राज्य सैनिक बोर्डों तथा जिला सैनिक बोर्डों के लिए कंप्यूटर हार्डवेयर खरीदने के लिए अनुदान उपलब्ध करवाए गए हैं। फिलहाल, सभी 32 सैनिक बोर्ड तथा 344 (371 में से) जिला सैनिक बोर्ड इंटरनेट से जुड़े हुए हैं और उनके पास सरकारी ई–मेल आईडी कार्य कर रहे हैं।

(ग) rhu u;s ftyk lfud ckMl [kky tuk% जम्मू और कश्मीर में कारगिल, हरियाणा में पलवल तथा गुजरात में कच्छ में प्रत्येक में एक–एक नए सैनिक बोर्ड/जिला सैनिक कल्याण कार्यालय मंजूर किए गए हैं।

(घ) i'ku lk¶Vo;j *lfoK* ij if'k{k.k% इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि भूतपूर्व सैनिक अपने हक की पेंशन ठीक तरह से और समय पर प्राप्त कर सकें, सुविज्ञ साफ्टवेयर पैकेज विकसित किया गया था ताकि भूतपूर्व सैनिक अपनी वास्तविक हकदारी की गणना कर सकें। सभी राज्य सैनिक बोर्डों के प्रतिनिधियों को पेंशन साफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। 29 राज्य सैनिक बोर्डों ने अपने जिला सैनिक बोर्डों/स्टाफ को आगे प्रशिक्षण प्रदान किया है और भूतपूर्व सैनिक समुदाय के सुविधाजनक उपयोग हेतु 327 जिला सैनिक बोर्डों में इस साफ्टवेयर को संस्थापित किया गया है।

l'kó luk ÖkMk fnol fuf/k

11.4. डीएसई बजट के अलावा, सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि, भूतपूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों की कल्याणकारी योजनाओं को धन प्रदान करने के लिए एक बड़ा स्रोत है। इस वर्ष एक समेकित प्रयास करके अब तक 13.20 लाख रुपए एकत्रित किए गए हैं। केन्द्रीय सैनिक बोर्ड "सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि" के माध्यम से कई कल्याणकारी योजनाओं का संचालन करता है। पैराप्लेजिक होम्स, चैशायर होम्स, सेंट डस्टन आफ्टर केयर आर्गेनाईजेशन (दृष्टिहीन सैनिकों के लिए) जैसे संस्थानों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

j{kk e=h foodk/khu fuf/k ¼vkj,eMh,Q½

11.5 सशस्त्र सेना झंडा दिवस निधि की आमदनी के एक भाग से जरूरतमंद भूतपूर्व सैनिकों, शहीदों की विधवाओं एवं उनके बच्चों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है जिसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों जैसे पुत्री के विवाह, तंगहाल भूतपूर्व सैनिकों/तंगहाल विधवाओं की सहायता, गृह मरम्मत, बाल शिक्षा अनुदान, विधवाओं हेतु अंतेष्टि अनुदान, अनाथों एवं विधवाओं को सहायता इत्यादि के लिए किया जाता है।

i/kku e=h Nk=ofÙk ;kstuk

11.6 इस योजना के अंतर्गत भूतपूर्व सैनिकों/विधवाओं के लिए वार्षिक रूप से 4000 छात्रवृत्तियां उपलब्ध हैं । इस योजना का राष्ट्रीय रक्षा निधि से वित्तपोषण किया जाता है । इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित राशि की छात्रवृत्ति उपलब्ध हैः

(क) बालकों हेतु 1250/–रुपए प्रतिमाह (भुगतान वार्षिक रूप में) ।

(ख) बालिकाओं हेतु 1500/–रुपए प्रतिमाह (भुगतान वार्षिक रूप में) ।

इस योजना के शुरू होने से अब तक 44.59 करोड़ रुपए उन विद्यार्थियों को वितरित किए जा चुके हैं जो एआईसीटीई, एमसीआई इत्यादि जैसे भारतीय विनियामक निकायों द्वारा विधिवत मान्यताप्राप्त व्यावसायिक डिग्री पाठ्यक्रमों में पढ़ रहे हैं। 2011–12 के दौरान (2 फरवरी 2012 तक) प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत 13250 विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। इसके अंतर्गत 21.31 करोड़ रुपए वितरित किए जा चुके हैं।

इस योजना का विस्तृत रूप से प्रचार करने के लिए ब्रोशर

एवं आवेदन रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट www.mod.nic. पर अपलोड किया गया है और इसकी सॉफ्ट कॉपी सभी राज्य जिला सैनिक बोर्डों/तटरक्षक मुख्यालय को अग्रेषित की जा चुकी है।

वर्ष 2011-12 के दौरान (2 फरवरी, 2012 तक) 13250 विद्यार्थियों ने प्रधानमंत्री छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत लाभ प्राप्त किया। इसके अन्तर्गत 21.31 करोड़ रुपए की धनराशि वितरित कर दी गई है।

vU; dY;k.kdkjh ;kstuk,a

11.7 fpfdRlk@nar fpfdRlk egkfo|ky;ksa esa vkjf{kr lhVsa केन्द्रीय सैनिक बोर्ड सैन्य कार्मिकों के आश्रितों हेतु भारत सरकार के नामिति के रूप में (प्राथमिकता I से V) कतिपय सीटों का आबंटन करता है। वर्ष 2011–12 में कुल मिलाकर 25 एम बी बी एस और 2 बीडीएस सीटों का आबंटन किया गया है।

11.8 शैक्षणिक अनुदानः युद्ध विधवाओं/युद्ध में निःशक्त हुए उन कार्मिकों के आश्रितों को जो युद्ध/युद्ध जैसी स्थिति में निःशक्त हुए/मारे गए हैं, क्रमशः 900 रुपए व 450 रुपए प्रति बालक प्रति माह शैक्षणिक अनुदान उपलब्ध करवाया जाता है। इस योजना के अंतर्गत कुल 9.95 लाख रु. और 2.99 लाख रुपए की राशि वितरित की जा चुकी है।

iquokZl

11.9 हर वर्ष लगभग 60,000 सैन्य कार्मिक सेवामुक्त अथवा कार्यमुक्त हो जाते हैं और उनमें से ज्यादातर तुलनात्मक रूप से 35–45 वर्ष की आयु के होते हैं जिन्हें अपना दूसरा कैरियर चुनना होता है। ये कार्मिक मुख्य रूप से अनुशासित, सुप्रशिक्षित और एक समर्पित समूह होता है जिसका उपयोग राष्ट्र निर्माण में होना चाहिए। यह निम्नलिखित तरीके से प्राप्त किया जाना चाहिए–

(क) भूतपूर्व सैनिकों हेतु उपयुक्त रोजगार की मांग करके, उनको नये रोजगार ग्रहण करने हेतु तैयार करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण देकर उनके कौशल में वृद्धि करके।

(ख) सरकारी/अर्ध सरकारी/सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए सतत प्रयास।

(ग) कारपोरेट सेक्टर में भूतपूर्व सैनिको को पुनः रोजगार दिलाने के लिए पूर्व नियोजित कार्रवाई।

(घ) स्व रोजगार हेतु योजनाओं के माध्यम से नौकरी उपलब्ध कराना।

(ङ) उद्यम वाले उपक्रमों में सहायता।

पुनर्वास महानिदेशालय को सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों को अपना दूसरा जीवन शुरू करने के लिए तैयार करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। चूंकि ध्यान भूतपूर्व सैनिकों और सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों को सिविल लाइफ में पुनर्वासित करने के लिए प्रशिक्षण पर केन्द्रित होता है इसलिए सार्वजनिक/निजी एवं कारपोरेट क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं।

31 जनवरी, 2012 तक 793 अधिकारियों और 20, 381 जेसीओ/ओआरएस को विभिन्न प्रशिक्षण दिए गए। इन पाठ्यक्रमों की अधिकारियों द्वारा अत्याधिक प्रशंसा की गई और इसके परिणामस्वरूप कार्पोरेट सेक्टर में 70-80% अधिकारियों को अच्छे रोज़गार के अवसर प्राप्त हुए।

vf/kdkjh izf'k{k.k

31 जनवरी, 2012 तक 793 अफसरों, 20,381 जेसीओ/ओआर को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इन पाठ्यक्रमों से अफसरों की तरफ से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है जिसके परिणामस्वरूप कारपोरेट क्षेत्र में अच्छी नौकरियां पाने वाले अफसरों की तादाद 70–80% है।

11.10 पुनर्वास महानिदेशालय

लघु एवं दीर्घ अवधि दोनों प्रकार के पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रायोजित करता है। इन पाठ्यक्रमों का संचालन विभिन्न क्षेत्रों में करवाया जाता है। 6 माह की अवधि के प्रबंधन पाठ्यक्रम, प्रबंधन विकास संस्थान, गुड़गांव और भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद, इंदौर, लखनऊ, नर्सी मोजी प्रबंधन अध्ययन संस्थान, मुंबई, एक्सएलआरआई जमशेदपुर एवं एमिटी विश्वविद्यालय, नौएडा में संचालित किए जा रहे है।

11.11 बिग्रेडियर एवं इससे ऊपर और इनके समकक्ष रैंक के वरिष्ठ अफसरों को पुनर्वास अवसर उपलब्ध कराने के लिए पुनर्वास महानिदेशालय ने एमडीआई गुड़गांव, आईएफआईएम, बंगलौर में एनजीओ का प्रबंधन और एमिटी शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, नौएडा में शैक्षणिक संस्थानों के प्रबंधन में 'स्वतंत्र निदेशक' पाठ्यक्रम भी शुरू किया है। समुद्री गमन और सीपीएल पाठ्यक्रम भी क्रमशः मर्चेंट नेवी एवं विमानन उद्योग में अफसरों को रोजगार दिलाने हेतु संचालित किए जाते हैं।

t:lhvk@vkvkj if'k{k.k

11.12 पुनर्वास महानिदेशालय विभिन्न देशों में 3 माह से लेकर 12 माह की अवधि वाले पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिसमें सरकारी, अर्ध सरकारी एवं निजी संस्थानों में छः माह की अवधि वाले प्रबंधन पाठ्यक्रम भी शामिल है। बड़ी संख्या में कार्मिक अपने सेवानिवृत्ति पूर्व प्रशिक्षण हेतु इन कार्यक्रमों का लाभ उठा रहे हैं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न रेंज वाले विषयों जैसे सुरक्षा एवं अग्नि से बचाव, प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर, व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे पोल्ट्री डेयरी लगाना, बेकरी, प्रिंटिंग, वाहन मरम्मत, विधिक सहायता इत्यादि में होते हैं। प्रबंधन पाठ्यक्रमों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है जिसके परिणामस्वरूप अच्छे रोजगार प्राप्त हुए हैं। 31 जनवरी, 2012 तक 20,381 जेसीओ/ओआर और इसके समकक्ष कार्मिकों को विभिन्न पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

ub| igy%

11.13 सैन्य कार्मिकों विशेषकर इंफैन्ट्री एवं आर्टिलरी में सुरक्षा पाठ्यक्रम बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। पुनर्वास महानिदेशालय सभी रेजीमेंटल केन्द्रों पर सुरक्षा पाठ्यक्रमों की संख्या में बढ़ोतरी कर रहा है।

11.14 जेसीओ/ओआर और इनके समकक्ष कार्मिकों का थल सेना, नौसेना एवं वायुसेना की तकनीकी और गैर तकनीकी विषयों का विशेष ज्ञान होता है। तथापि, सिविल साइड में सेवानिवृत्ति के उपरांत बदला हुआ कैरियर एक चुनौती होता है विशेषकर कई वर्षों के उपरांत सशस्त्र बलों से सेवानिवृत्त होने के बाद। निम्नलिखित कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर वे स्वयं में कमी पाते हैः

(क) कंप्यूटर दक्षता में कमी।

(ख) संप्रेषण कला की कमी।

(ग) सिविल परिस्थितियों में आने वाले बदलावों का सीमित ज्ञान ।

(घ) सिविल नौकरियों में पारगमन की योग्यता।

11.15 पुनर्वास महानिदेशालय ने कई रेजीमेंटल केन्द्रों पर कंप्यूटर संकल्पनाओं और व्यक्तित्व विकास पाठ्यक्रमों के संचालन द्वारा सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों को शिक्षित करने के लिए कदम उठाए हैं। इन प्रयासों से काफी बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं । पुनर्वास महानिदेशालय ने रेजिमेंटल प्रशिक्षण केन्द्रों पर रचनात्मक और सकारात्मक प्रतिक्रिया के आधार पर बेसिक कंप्यूटर साक्षरता, संप्रेषण एवं व्यक्तित्व विकास और वित्तीय कार्यक्रमों के संचालन तथा इनका प्रशिक्षण प्रदान करने का निर्णय लिया है । भूतपूर्व सैनिक प्रशिक्षण योजना मुख्य तौर पर उन सैनिकों के लिए होती है जो सेवा के दौरान पुनर्वास प्रशिक्षण सुविधा प्राप्त नहीं कर सके हैं और इसे भूतपूर्व सैनिकों के आश्रितों/विधवाओं तक विस्तारित किया जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा उनके कौशल को बढ़ाने हेतु अनुमोदित तथा राज्य सरकारों के

सैनिक कल्याण/जिला सैनिक कल्याण कार्यालय विभाग द्वारा सूचीबद्ध विभिन्न संस्थानों में चलाए जाते हैं। 31 जनवरी, 2012 तक 261 भूतपूर्व सैनिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

iqu% jkt xkj

11.16 केन्द्र एवं राज्य सरकारें भूतपूर्व सैनिकों को केन्द्र/राज्य सरकार के विभाग में पुनः रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कई छूट प्रदान करती है। इनमें पदों का आरक्षण/आयु और शैक्षिक अर्हताओं में छूट, आवेदन/परीक्षा की फीस के भुगतान से छूट तथा अनुकंपा आधार पर दिवंगत सैन्य कार्मिकों के आश्रितों और अशक्त भूतपूर्व सैनिकों को रोजगार में प्राथमिकता शामिल है।

11.17 सरकारी नौकरियों में आरक्षणः केन्द्र सरकार ने भूतपूर्व सैनिकों के लिए नौकरियों में निम्नलिखित आरक्षण उपलब्ध कराया हैः

(क) समूह 'ग' के पदों में 10%

(ख) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों एवं राष्ट्रीय बैंकों में समूह 'ग' के पदों में 14.5%

(ग) अर्द्ध सैन्य बलों के सहायक समादेशक के पदों में 10%

(घ) रक्षा सुरक्षा कोर में 100%

ज्यादातर राज्य सरकारें, राज्य सरकार की नौकरियों में भी इनको आरक्षण उपलब्ध करवाती हैं। सरकारी तंत्र को छोटा करने और मल्टी टास्किंग स्टाफ के पद शुरू होने के परिणामस्वरूप सरकार/अर्ध सरकारी क्षेत्रों में भूतपूर्व सैनिकों हेतु रोजगार के अवसर कम हुए हैं।

केन्द्र एवं राज्य सरकारें भूतपूर्व सैनिकों को केन्द्र/राज्य सरकार के विभाग में पुनः रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कई रियायतें प्रदान करती हैं। इनमें पदों का आरक्षण/आयु और शैक्षिक अर्हताओं में छूट, आवेदन/परीक्षा की फीस के भुगतान से छूट तथा अनुकंपा आधार पर दिवंगत सैन्य कार्मिकों के आश्रितों और अशक्त भूतपूर्व सैनिकों को रोजगार में प्राथमिकता शामिल है।

11.18 jkt xkj fn;k tkuk % कारपोरेट सेक्टर में भूतपूर्व सैनिकों के रूप में अमूल्य मानव संसाधन की उपलब्धता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और कारपोरेट सेक्टर/निजी क्षेत्रों में भूतपूर्व सैनिकों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि वाले दोहरे उद्देश्य सहित विभाग के लगातार प्रयत्नों के परिणामस्वरूप कारपोरेट सेक्टर से अब इनकी बड़ी मांग आनी शुरू हुई है। चालू वर्ष में 31 जनवरी, 2012 तक 38,278 भूतपूर्व सैनिकों को रोजगार मिला है। कुछ मुख्य स्थापनाओं के ब्योरे निम्न प्रकार हैः

(क) lqj{kk ,tfl;k % पुनर्वास महानिदेशालय विभिन्न केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और निजी क्षेत्र के उद्योगों में सुरक्षा गार्ड उपलब्ध कराने के लिए भूतपूर्व सैनिकों द्वारा चलाई जा रही निजी सुरक्षा एजेंसियों को सूचीबद्ध/प्रायोजित करता है। इस योजना से सेवानिवृत्त अफसरों को स्व–रोजगार के अवसर मिलते हैं और सेवानिवृत्त जेसीओ/ओआर अथवा इनके समकक्ष रैंकों को उस क्षेत्र में जिसमें वे निपुण हैं, रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती है। 2011 के दौरान रोजगार पाने वाले भूतपूर्व सैनिकों की संख्या 44,258 है जिसमें से 1678 अनुरोध पीएसयू/सरकारी विभागों से प्राप्त हुए हैं। 2011 के दौरान 212 एजेंसियों को पैनलबद्ध किया गया है जो अब संख्या में 2710 हो गई है।

(ख) vf/kdkfj;k dk jkt xkj% वर्ष 2011 के दौरान 45 अधिकारियों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

Lo&jkt xkj gsrq ;kstuk

11.19 पुनर्वास महानिदेशालय

ने भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवारों के पुनर्वास हेतु स्व–रोजगार के विभिन्न उपाय किए हैं। स्व–रोजगार योजनाओं का ब्यौरा एवं उपलब्धियों का विवरण उत्तरवर्ती पैराओं में दिया गया है।

11.20 dky VklikVi'ku Ldhe % यह एक प्रसिद्ध योजना है जो पिछले 30 वर्षो से चल रही है। भूतपूर्व सैनिकों द्वारा संचालित कोल कंपनियों की कुल संख्या 83 है जो विभिन्न सहायक कोल कंपनियों अर्थात महानदी कोल फील्ड लिमिटेड, पश्चिमी कोल फील्ड लिमिटेड, दामोदर वैली कारपोरेशन और दक्षिण पूर्वी कोल फील्ड के साथ कार्य कर ही है। इस योजना के माध्यम से 249 भूतपूर्व सैनिकों (अफसर) और लगभग 2075 सेवानिवृत्त जेसीओ/ओआर एवं समकक्षों को लाभ पहुंचा है।

11.21 dky fVij Ldhe% यह कल्याण योजना विधवाओं/निशक्त सैनिकों के लिए है जो कोल ट्रांसपोरेशन से जुड़ी हुई है। इस वर्ष इस योजना के माध्यम से कुल 43 विधवाएं/निशक्त सैनिक लाभान्वित हो चुके हैं।

11.22 rsy mRiknu ,tfl;ksa dk vkcaVu% पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में तेल उत्पादन एजेंसियों का 8% भाग (अर्थात वितरक, पेट्रोल पंप एवं वृहत केरोसीन तेल का वितरण इत्यादि) रक्षा कार्मिकों के लिए आरक्षित किया गया है जिसमें युद्धकाल/शांतिकाल में मारे गए सैंनिकों की विधवाएं और निःशक्त सैनिक शामिल होते हैं। इस उद्देश्य हेतु पात्र अभ्यर्थियों को पुनर्वास महानिदेशालय द्वारा प्रायोजित किया जाता हे। 26 जनवरी, 2012 तक अभ्यर्थियों को 446 पात्रता प्रमाण पत्र जारी किए जा चुके हैं।

11.23 vkbZvkslh,y vkj chihlh,y dh dksdks fjVsy vkmVysV % मै. भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड एवं मै. इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड कोको योजना (कंपनी द्वारा संचालन कंपनी द्वारा खरीदी गई) के अंतर्गत समस्त भारत में अपने रिटेल आउटलेटों के प्रबंधन हेतु रक्षा कमीशनप्राप्त अधिकारियों को रोजगार उपलब्ध करवा रही है। वर्ष 2011 के दौरान 348 भूतपूर्व सैनिकों के नाम 30 दिसंबर, 2011 को 78 स्थानों हेतु प्रायोजित किए गए थे। तथापि, कोको आउटलेट आबंटित किए गए लाभार्थियों की कुल संख्या को संबंधित तेल कंपनियों द्वारा सूचित नहीं किया गया है।

11.24 enj Ms;jh cFk@lQy Qy ,oa lfCt;ka dk vkmVysV % यह भूतपूर्व सैनिकों/ओआर और इसके समकक्ष रैंकों के लिए स्व रोजगार की काफी अच्छी योजना है। दिल्ली में मिल्क बूथों एवं सफल दुकानों को चला रहे भूतपूर्व सैनिकों ने अपनी क्षमता साबित कर दी है जिससे मै. मदर डेयरी पात्र भूतपूर्व सैनिक उपलब्ध करवाने के लिए पूर्णतः पुनर्वास महानिदेशालय पर आश्रित है। इस योजना को मदर डेयरी के साथ परामर्श करके एनसीआर के अन्य शहरों जैसे गुड़गांव, नौएडा, फरीदाबाद एवं गाजियाबाद तक विस्तारित कर दिया गया है। जबकि कुल 873 जेसीओ/ओआर समकक्ष इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं इसलिए जनवरी, 2012 तक चयनित और प्रायोजित भूतपूर्व सैनिकों का ब्यौरा इस प्रकार हैः–

		enj Ms;jh n/k forj.k dUæ	enj Ms;jh Qy ,oa lCth ¼lQy½ 'kkWi
क	प्रायोजित पूर्व सैनिक	921	219
ख	चयनित पूर्व सैनिक	370	49

11.25 jk"Vªh; jkt/kkuh {ks= esa iqu%lfud vQljka }kjk lh,uth LVs'kuka dk izca/ku % इस योजना को हाल ही में संशोधित किया गया है । वेतन की दरें 25,000 रु. प्रति माह से बढाकर 45,000 रु. प्रति माह कर दी गई है। इस योजना का विस्तार संपूर्ण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में किया गया है, जिसमें नोएडा, फरीदाबाद और गुडगांव को शामिल किया गया है। हालांकि वर्ष 2011 के दौरान,

इस योजना से कुल 68 पूर्व सैनिक लाभान्वित हो रहे हैं, 31 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार 33 पूर्व सैनिक अफसरों को इस योजना के तहत प्रायोजित किया गया है।

luk vf/k'k"k okguk dk vkcVu

11.26 पूर्वसैनिक तथा सेवाकाल के दौरान दिवंगत रक्षा कार्मिकों की विधवाएं सेना अधिशेष श्रेणी V– "बी" वाहनों के आंबटन के लिए आवेदन करने हेतु पात्र हैं। वर्ष 2011 के दौरान 31 दिसंबर, 2011 तक पुनर्वास महानिदेशालय में 238 पूर्व सैनिकों का पंजीकरण किया गया। वर्ष के दौरान 221 पूर्व सैनिकों को सेना अधिशेष वाहनों का आंबटन किया गया।

ऋण से सम्बन्धित कल्याण योजनाएं

m|eh ;ktuk,

11.27 सरकार ने पूर्व सैनिकों को पुनर्वास हेतु उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए योजनाएं तैयार की हैं। वर्तमान में पूर्व सैनिकों के लिए स्वरोजगार की विभिन्न योजनाएं सेम्फैक्स II, सेम्फैक्स III और प्रधानमन्त्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजी) लागू की गई हैं। इन योजनाओं के अन्तर्गत ग्रामीण, अर्द्ध–शहरी और शहरी इलाकों में कृषि, उद्योग और सेवा सेक्टर से संबंधित उद्यम शुरू करने के लिए प्रशिक्षण और सब्सिडी प्राप्त दरों पर ऋण दिए जाते हैं। ऋणदाता संस्थान नामित राष्ट्रीयकृत बैंक, क्षेत्रीय/ग्रामीण बैंक, सहकारी बैंक, वित्तीय संस्थान आदि हैं। इन योजनाओं के लिए 25–30 प्रतिशत तक सब्सिडी/सॉफ्ट लोन उपलब्ध है। पूर्वसैनिकों को ऋण प्राप्ति के लिए आवेदन सीधे बैंक को संबंधित जिला सैनिक बोर्ड/कल्याण कार्यालय के माध्यम से जमा करवाने होते हैं।

lEQDl II ;ktuk ¼'kó l Qkel rd½

11.28 वर्ष 1988 में लागू की गई इस योजना के लिए वित्तीय सहायता राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण बैंक (नाबार्ड) प्रदान करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, ग्रामीण उद्योग में उद्यमशीलता और सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कृषि/खाद्य प्रसंस्करण यूनिट ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में स्थापित की जा सकती है। परियोजना की 25% तक की लागत का आसान ऋण उपलब्ध करवाया जाता है। गत 8 वर्षों में 1451 पूर्व सैनिकों ने 2019 लाख रू. ऋण प्राप्त कर इस योजना का लाभ उठाया है।

lEQDl III (सेना से ग्रामोद्योग)

11.29 यह योजना खादी एवं ग्रामोद्योग की सहायता से चलाई जा रही है, इसे वर्ष 1992 में आरम्भ किया गया है। इसके असंख्य क्षेत्र हैं। ऋण सीमा 25 लाख प्रति परियोजना निर्धारित की गई है। पांच लाख के ऋण हेतु कोलेटरल गांरटी की आवश्यकता नहीं है। ऋण पर ब्याज की दर 4 प्रतिशत है जो कि सब्सिडी को एडजस्ट करके तय की जाती है। गत 8 वर्षों में 332 पूर्व सैनिकों ने 695 लाख ऋण प्राप्त कर इस योजना का लाभ उठाया है।

i/kkueU=h jktxkj mRikndrk dk;Øe ¼ih,eblthih½

11.30 यह योजना भी खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा प्रायोजित की जा रही है। इस योजना के अधीन सभी पूर्व सैनिक ऋण प्राप्ति के लिए आवेदन करने हेतु पात्र हैं। यह योजना ग्रामीण, अर्ध शहरी या शहरी क्षेत्रों में निर्माण उद्योगों और सर्विस सेक्टर में व्यवहार्य परियोजना स्थापना हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है। इस योजना में परियोजना के लिए ऋण सीमा बढ़ाकर एक करोड़ रू. तक की गई है, बशर्ते परियोजना व्यवहार्य हो और व्यक्ति/संगठन की परियोजना स्थापित करने और इसे लाभपूर्वक चलाने की क्षमता भी ध्यान में रखी जाती है। गत 3 वर्षों में 5400 पूर्व सैनिकों ने इस योजना का लाभ उठाया है।

u;h igy

11.31 सरकार इच्छुक पूर्वसैनिकों को उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन और सहायता प्रदान करने के

लिए प्रतिबद्ध है। वह पूर्व सैनिकों को अन्य लाभकारी उद्यम जैसे कि बागबानी, फूलों की खेती, फ्रैन्चाइजिंग और औषधीय पौधे और जडी–बूटियों की खेती करने के लिए प्रोत्साहन देती है। राज्य सैनिक बोर्डों/जिला सैनिक बोर्डों, खादी ग्रामोद्योग आयोग, नाबार्ड, हार्टिक्लचर बोर्ड, मेडिसनल प्लान्ट बोर्ड,ऋणदाता संस्थान और उद्यमी पूर्वसैनिकों के बीच परस्पर संवाद के परिणामस्परूप अधिकाधिक पूर्वसैनिकों ने इन उद्यमों का विकल्प चुना है। मै. बाटा इंडिया लिमिटेड ने "देश रक्षक डिलरशिप योजना" के अर्न्तगत व्यवसाय आंरभ करने का अवसर दिया है। जिसके अर्न्तगत पूर्वसैनिक देशभर में छोटे कस्बों में कम निवेश और पूर्ण मार्गदर्शन में बाटा आउटलेट खोल सकते हैं। इन्हें उत्पादों की बिक्री पर उचित कमीशन प्राप्ति का प्रावधान है और वे विभिन्न प्रोत्साहनों के हकदार हैं। पुनर्वास महानिदेशालय और राज्य सैनिक बोर्डों से मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त करने के बाद गई पूर्व सैनिकों ने अपने व्यवसाय स्थापित किए हैं। वे इन व्यवसायों को सफलतापूर्वक चला रहे हैं और इनके आय का साधन सुरक्षित है।

ipkj

11.32 पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों एवं नीतियों का व्यापक प्रचार करना अत्यंत आवश्यक है ताकि यह देश में फैली प्रत्येक इकाई और पूर्व सैनिकों/विधवाओं तक पहुंचे । ऐसा सैनिक पुनर्वास न्यूज फ्लायर्स, हिन्दी पत्रिका पुनर्वास भारती जैसी आवधिक पत्रिकाओं के प्रकाशन, ब्रोशरों, पर्चों, सैनिक समाचार तथा बातचीत में लेखों, प्रदर्शनियों/सेमिनारों व सेना मेलों और पूर्वसैनिक रैलियों के माध्यम से किया जाता है। पुनर्वास महानिदेशालय के प्रकाशन कमान मुख्यालयों, राज्य सैनिक बोर्डों, जिला सैनिक बोर्डों, रेजिमेन्टल सेन्टरों, रिकार्ड कार्यालयों, ईसीएचएस पॉलिक्लिनिक और पूर्वसैनिकों को निःशुल्क वितरित किए जाते हैं। कमान मुख्यालयों, सैनिक कल्याण विभागों (राज्यों) और सैनिक सम्मेलनों द्वारा उपलब्ध करवाए जाने वाले अन्य फोरम का भी प्रचार के लिए उपयोग किया जाता है।

भूतपूर्व सैनिकों को व्यापार के अवसर प्रदान करने के लिए मैसर्स बाटा इंडिया लिमिटेड के साथ बाटा की दुकानें खोलने के लिए शुरू की गई '' देश रक्षक डीलरशिप योजना''

स्वास्थ्य देखभाल

11.33 भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना 1 अप्रैल, 2003 से शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों को देश भर में फैले ई सी एच एस पोलिक्लीनिकों, सैन्य चिकित्सा सुविधाओं और पैनलीकृत/सरकारी अस्पतालों के एक तंत्र के जरिए गुणवत्तायुक्त चिकित्सा देखभाल प्रदान करना है। इस योजना की संरचना सी जी एच एस की तर्ज पर तैयार की गई है ताकि जहां तक संभव हो, रोगियों को नगदी रहित लेनदेन सुनिश्चत किया जा सके। यह योजना पूरी तरह भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है।

;kstuk dh e[; fo'ks"krk,a

11.34 ईसीएचएस का केन्द्रीय संगठन दिल्ली में स्थित है और यह रक्षा मंत्रालय में पूर्व सैनिक कल्याण विभाग के अधीन कार्य करता है। केन्द्रीय संगठन का प्रमुख एक सेवारत मेजर जनरल, प्रबन्ध निदेशक होता है ।

11.35 ईसीएचएस पोलिक्लीनिक बहिःरोगी चिकित्सा मुहैया कराने के लिए बनाए गए हैं जिनमें परामर्श, आवश्यक जांच और औषधियों की व्यवस्था शामिल है। विशिष्ट परामर्श, जांच, अंतरंग चिकित्सा (अस्पताल में भर्ती करना) सैन्य अस्पतालों में उपलब्ध अतिरिक्त क्षमता के माध्यम से और ईसीएचएस में पैनलीकृत सिविल अस्पतालों के माध्यम से उपलब्ध कराए जाते हैं।

11.36 सरकार द्वारा 182 अतिरिक्त पालीक्लीनिकों और 17 सचल क्लीनिकों की स्वीकृति देकर अक्तूबर 2010 में ईसीएचएस नेटवर्क के विस्तार

को मंजूरी दी गई है जिससे ईसीएचएस क्लीनिकों की कुल सख्या 426 हो गई है। इन्हें नीचे सारणीबद्ध किया गया है :–

ek StnkfLFkfr

		vkjfHkd	vfrfjä	dqy
(क)	सैनिक	106	06	112
(ख)	असैनिक	121	176	297
(ग)	सचल क्लीनिक	–	17	17
	dqy	227	199	426

11.37 गत वर्ष चिकित्सोपचार पर 970 करोड़ रूपए खर्च किए गए ।

11.38 31 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार, कुल 12,24,746 पूर्व सैनिक और उनके 26,90,790 आश्रित इस योजना में शामिल हुए। इस प्रकार, योजना के कुल लाभार्थियों की संख्या 39,15,536 है।

ikyhDyhfudksa dk oxhZdj.k

(उस क्षेत्र में रह रहे पूर्व–सैनिकों की संख्या के आधार पर)

(i)	टाइप ए	20,000 से अधिक
(ii)	टाइप बी	10,000 से अधिक
(iii)	टाइप सी	5,000 से अधिक
(iv)	टाइप डी	1,500 से अधिक
(v)	टाइप ई (सचल)	800 से अधिक (दूरदराज के क्षेत्रों के लिए)

11.39 31 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार, मौजूदा 227 पालीक्लीनिकों के अतिरिक्त 37 पालीक्लीनिकों ने कार्य करना आरंभ कर दिया है। सरकार ने आज तक 1348 सिविल अस्पतालों को ईसीएचएस के पैनल में शामिल करने की मंजूरी दी है । लगभग 70 पालीक्लिनिकों के अभी भी उनके शहर/कस्बे में पैनल में शामिल अस्पताल नहीं हैं।

11-40 gky dh miyfC/k;k

(क) सरकार द्वारा ईसीएचएस के विस्तार का अनुमोदन किया गया।

(ख) ई सी एच एस नेपाल अधिवासी गोरखाओं (एनडीजी) के लिए का विस्तार।

(ग) काठमांडु पोखरा और धारान में एम आई रूमों का पलीक्लीलिकों के स्तर तक उन्नयन जिसमें उपर्युक्त पालीक्लीनिकों में प्रत्येक में एक टाईप ई सचल पालीक्लीनिक शामिल है, करके नेपाल में नेपाल अधिवासी गोरखाओं के लिए ईसीएचएस सुविधाओं का विस्तार।

(घ) निःशक्तता पेंशन प्राप्त कर रहे जवानों के आश्रितों के लिए ईसीएचएस लाभों का विस्तार।

(ड.) ईसीएचएस में विशेष फ्रंटियर बलों के पेंशनभोगियों को शामिल करना।

(च) अस्पतालों को पैनल में शामिल करने की प्रक्रियाओं में सुधार किया गया है। अब आगे से नेशनल एक्रीडिटेशन बोर्ड फोर हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स (एनएबीएच) पैनल में शामिल करने के लिए अस्पतालों का मूल्यांकन करेगा।

(छ) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सफल प्रायोगिक परियोजना के बाद अधिक दबाव वाले पालीक्लीनिकों का ऑटोमेशन प्रगति पर है ।

(ज) ईसीएचएस सदस्यों की सहायता के लिए कॉल सेंटर की सुविधा सहित एक 24X7 हेल्पलाइन शुरू की गई है। सहायता के लिए, सदस्य 1800–103–8666 और 080 – 43004300 पर डायल कर सकते हैं अथवा वे +019714794300

पर एसएमएस के जरिए अपनी शंका भेज सकते हैं।

(झ) ईसीएचएस की वेबसाइट और ई–सीआरएमएस (इलेक्ट्रोनिक कंपलेन्ट्स रेजॅल्युशन एंड मेनेजमेंट सिस्टम) का फील्ड परीक्षण किया जा रहा है और इन्हें शीघ्र आरंभ किया जाएगा।

11.41 **u, mik;%** ईसीएचएस द्वारा भूतपूर्व सैनिकों को गुणवत्ता वाली चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा रहे हैं :–

(क) सीजीएचएस द्वारा अपनाए जा रहे मापदण्डों के अनुसार जनशक्ति उपलब्ध कराने संबंधी मंत्रिमंडल हेतु टिप्पणी को अंतिम रूप दिया जा रहा है ।

(ख) औषधियों की आपूर्ति में सुधार लाने के लिए उपायः

- (i) औषधियों की लागत की प्रतिपूर्ति की अनुमति देना (सीजीएचएस की तरह)
- (ii) वर्धित स्थानीय खरीद की सीमाएं
- (iii) पालीक्लीनिकों की फार्मेसी की आउटसोर्सिंग प्रतिष्ठित फार्मास्युटिकल कम्पनियों को करने संबंधी प्रायोगिक परियोजना ।

(ग) सीजीएचएस की तर्ज पर बिल प्रोसेसिंग का कार्य बिल प्रोसेसिंग एजेन्सी को देकर अस्पतालों को समय पर भुगतान।

(घ) सीजीएचएस की तुलना में सुविधाओं में विसंगतियों को दूर करना।

(ङ) ईसीएचएस में कागज रहित लेनदेन शुरू करने के लिए प्रक्रियाओं का सरलीकरण और ईसीएचएस प्रकियाओं का ऑटोमेशन।

(च) पालीक्लीनिकों के निर्माण के लिए भूमि के शीघ्र अधिग्रहण हेतु राज्य सरकारों से वार्ता।

isa'ku

11.42 **l'kó lsuk dkfeZdksa dks isa'ku% vuqekur%** 17.70 लाख रक्षा पेंशनभोगियों को पेंशन का संवितरण संपूर्ण भारत में फैले सार्वजनिक क्षेत्र के 27 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों अर्थात् एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, एक्सिस बैंक और आई.डी.बी.आई. बैंक, 640 कोषागारों, 61 रक्षा पेंशन संवितरण कार्यालयों, 2 डाक घरों, 5 लेखा और वेतन कार्यालयों के माध्यम से किया जाता है। इसमें नेपाल स्थित तीन पेंशन भुगतान कार्यालय शामिल हैं।

11.43 **lsokfuoʼfr@lsok isa'ku%** 1.1.2006 से सेवानिवृत्त होने वाले कमीशन–प्राप्त अफसर/सेवानिवृत्त होने वाले अथवा अशक्तता के आधार पर सेवामुक्त किए जाने वाले पी बी ओ आर की सेवानिवृत्ति पेंशन की गणना अब अतिम आहरित परिलब्धियों अथवा गत 10 माह के दौरान की गई संगणीय परिलब्धियों की 50ः की दर से की जाएगी।

11.44 **fu%'kärk isa'ku%** 1.1.2006 के बाद विभिन्न रैंक पदों के लिए 100% निःशक्तता के लिए निःशक्तता अंश की दर अंतिम आहरित परिलब्धियों का 30% होगा और उससे कम अशक्तता के लिए आनुपातिक रूप से कम किया जाएगा।

11.45 **gky gh esa fd, x, lq/kkj%**

(i) **fu;r esfMdy HkŸks esa of)%** उन क्षेत्रों में जो ईसीएचएस के अंतर्गत कवर नहीं होते हैं,रहने वाले सशस्त्र बलों के पेंशन भोगियों के लिए छठे केन्द्रीय वेतन आयोग के बाद नियत मेडिकल भत्ते की दर 1 सितम्बर, 2008 से 100 रू. से बढ़ाकर 300 रू. कर दी गई है।

(ii) **lkoZtfud {ks= ds miØeksa esa vkesfyr dkfeZdksa dks vfrfjä o`)koLFkk isa'ku esa of)%** सशस्त्र बलों के उन कार्मिकों, जिन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में उनके आमेलन के

समय एकमुश्त भुगतान आहरित किया था, को कमीशनप्राप्त अधिकारियों को 43 प्रतिशत और अन्य रैकों को 45 प्रतिशत के स्थान पर पूर्ण मूल पेंशन पर निर्धारित दरों पर अतिरिक्त वृद्धावस्था पेंशन अब प्राधिकृत कर दी गई है ।

(iii) l'kó cyk d ,l dkfedk@i'kuHkkfx;k] tk vpkud ykirk gk tkr g vkj ftudk irk&fBdkuk eky e ugh gkrk g] dk ifjokj i'ku etj djuk % अब तक सशस्त्र बल कार्मिकों/ पेंशन भोगियों के परिवार जो अचानक लापता हो जाते हैं और जिनका पता–ठिकाना मालूम नहीं होता है प्राथमिकी दर्ज कराने की तारीख के एक साल बाद से परिवार पेंशन मंजूर किए जाने के लिए पात्र होते हैं । अब यह निर्णय लिया गया है कि सशस्त्र बलों के ऐसे कार्मिकों/ पेंशन भोगियों के परिवारों को प्राथमिकी दर्ज कराने की तारीख से छह महीने की अवधि के बाद परिवार पेंशन तथा मृत्यु–उपदान स्वीकृत किए जा सकते हैं ।

(iv) ;) ?kk;y i'ku d ;) ?kk;y v'k e l'kk/ku% युद्ध घायल पेंशन के युद्ध घायल अंश की दर को रक्षा मंत्रालय के 15 फरवरी, 2011 के पत्र द्वारा संशोधित कर दिया गया है। अब यह निर्णय लिया गया है कि युद्ध घायल अंश की संशोधित दर वेतन बैंड (पी बी) + ग्रेड वेतन (जी पी) + सैन्य सेवा वेतन (एमएसपी) + समूह X वेतन जहां लागू हो, अथवा 100% निशक्तता में न्यूनतम वेतन अशक्तता के मामले में 100% तथा सेवानिवृत्ति/वर्खास्तगी के मामले में 60% से कम नहीं होगी। 1 जुलाई, 2009 से युद्ध घायल पेंशन पर अधिकतम सीमा हटा दी गई है ।

(v) 1 tu] 1953 l iwo d ok;ljk; deh'ku ikIr vf/kdkfj;k cuke ekun deh'ku ikIr vfèkdkfj;k dh i'ku e gb fol xfr dk nj djuk% सरकार के दिनांक 8 मार्च, 2010 के पत्र में तालिका 133 असावधानीवश शामिल कर दी गई थी जिसमें 1 जून, 1953 के पूर्व के सेवानिवृत्त वायसराय कमीशनप्राप्त अधिकारियों की पेंशन 2006 के पूर्व के नियमित कमीशनप्राप्त अधिकारियों से अधिक दिखाई गई थी। इसे बाद में 15 अप्रैल 2011 के शुद्धि पत्र द्वारा हटाकर सही कर दिया गया था।

(vi) v'kärk d dkj.k lok l gVk, x, l'kó cyk d dkfedk dk vuxg jkf'k% 100% निशक्तता वाले अशक्तता के आधार पर कार्यमुक्त किए गए सशस्त्र बलों के कार्मिकों को 1 अप्रैल 2011 से 9 लाख रू. अनुग्रह राशि दी जाती है। इससे कम 20: से 99: तक निशक्तता के लिए इसमें आनुपातिक रूप से कमी की जाएगी।

(vii) lrkughu fo/kok dk ifjokj i'ku etj djuk% 1 जनवरी, 2006 से पूर्व शहीद सशस्त्र बलों के अधिकारियों/अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों की विधवाओं को परिवार पेंशन देना, जो उसके पुनर्विवाह करने पर बंद कर दी गई थी, कुछ शर्तों के अधीन 1 जनवरी, 2006 से बहाल कर दी जाएगी।

जनवरी-दिसम्बर, 2011 के बीच, कालीकट (केरल), ककिनाडा (आंध्रप्रदेश), फतेहगढ़ (उत्तरप्रदेश), लुधियाना (पंजाब), सोनीपत (हरियाणा) और उदयपुर (राजस्थान) में छः रक्षा पेंशन अदालतें लगाई गईं।

12

सशस्त्र बलों एवं सिविल प्राधिकारियों के बीच सहयोग

nश की सीमाओं की सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी के अलावा, सशस्त्र बल सिविल प्राधिकारियों को कानून एवं व्यवस्था और/अथवा आवश्यक सेवाएं बनाए रखने के साथ ही प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव एवं राहत कार्यों में सहायता पहुंचाते हैं

12.1 देश की सीमाओं की सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी के अलावा, सशस्त्र बल सिविल प्राधिकारियों को कानून एवं व्यवस्था और/अथवा आवश्यक सेवाएं बनाए रखने में और प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव एवं राहत कार्यों में सहायता पहुंचाते हैं। उक्त अवधि के दौरान सशस्त्र बलों द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायता का विवरण उत्तरवर्ती पैराग्राफों में दिया गया है ।

सेना

12.2 समीक्षाधीन अवधि के दौरान सिविल प्राधिकारियों की सहायता हेतु 147 इकाइयां, 23 चिकित्सा टीमें और 40 इंजीनियर टास्क फोर्स की तैनाती की गई थी। यह सहायता ऑपरेशन सहायता (सिक्किम), इस्तेमाल न हुई युद्ध सामग्री को नष्ट करना, बाढ़ सहायता ऑपरेशन, बचाव एवं राहत ऑपरेशन इत्यादि में उपलब्ध कराई गई थी। चलाए गए कुछ महत्वपूर्ण ऑपरेशनों का विवरण उत्तरवर्ती पैराग्राफों में दिया गया है।

12.3 **vkijs'ku lgk;rk ¼flfDde½** 18 सितम्बर, 2011 को सिक्किम राज्य में रिक्टर स्केल पर 6.8 पैमाने का एक जोरदार भूकम्प आया था । इस भूकम्प का मुख्य केंद्र गंगटोक के उत्तर–पश्चिम में 64 किलोमीटर में स्थित था। वहां पर सेना राहत एवं बचाव कार्यों में मुख्य रूप से शामिल थी और उसने प्रभावित लोगों को तत्काल रूप से सहायता पहुंचाने में और राज्य में जनजीवन को सामान्य बनाए रखने में राज्य प्रशासन को मदद पहुंचाने हेतु मुख्य भूमिका निभाई थी। इसके द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायता इस प्रकार हैः–

(क) **rSukr dh xbZ dqy bdkb;k¡%** 126 इकाइयां (दो विशेष सैन्य इकाइयों समेत) राहत एवं बचाव कार्यों हेतु तैनात की गई थीं जिसमें लगभग 5850 सैनिक तैनात थे।

(ख) **rSukr dh xbZ bathfu;j bdkbZ%** भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में सड़क संचार व्यवस्था को सामान्य बनाने हेतु 27 इकाइयों की तैनाती की गई थी । सीमा सड़क संगठन की सहायता से सेना द्वारा 10 बड़े राजमार्गों को खोला गया था । दार्जिलिंग–लेबोंग रोड पर तत्काल रूप से संचार व्यवस्था को सामान्य बनाने के लिए 150 फीट की ऊंचाई वाला एक बैली ब्रिज भी सिविल प्रशासन हेतु (ऋण पर) उपलब्ध करवाया गया था।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान ऑपरेशन सहायता (सिक्किम), इस्तेमाल न हुई युद्ध सामग्री को नष्ट करने, बाढ़ सहायता ऑपरेशनों, बचाव एवं राहत ऑपरेशनों, आदि के संबंध में सिविल प्राधिकारियों की सहायता हेतु 147 इकाइयों, 23 चिकित्सा टीमों और 40 इंजीनियर टास्क फोर्स की तैनाती की गई थी।

(ग) r|ukr dh xbl fpfdRlk bdkb;k% घायलों को तत्काल रूप में चिकित्सा राहत उपलब्ध कराने के लिए 20 चिकित्सा इकाइयां तैनात की गई थी; मिलिटरी अस्पतालों में 940 से ज्यादा सिविलियन हताहतों का उपचार किया गया था।

(घ) j lkbl ?kjk dk fuekZ.k% सेना द्वारा भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में 11 रसोई घरों की स्थापना की गई थी । इसके अलावा खाने के 3310 पैकेट उन क्षेत्रों में हवाई व्यवस्था से पहुंचाए गए थे जहां पर सड़क संचार व्यवस्था अवरुद्ध हो चुकी थी।

(ङ) jkgr dEi% सेना द्वारा 10 राहत कैम्पों की स्थापना की गई थी जिसमें 2736 व्यक्तियों को आश्रय प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सिविल प्रशासन को राहत कैम्पों की स्थापना और उनको चलाने हेतु समस्त आवश्यक सहायता प्रदान की गई थी।

(च) मंगन में सिविल प्रशासन के साथ राहत कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए एक एकीकृत कमान केंद्र की स्थापना की गई थी ।

(छ) सेना की राहत इकाइयां भूकंप द्वारा प्रभावित लगभग 106 गांवों में पहुंची थी ।

(ज) gfy dkIVj }kjk i;kl%

(i) भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में जनजीवन को सामान्य बनाने के लिए और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति हेतु और प्रभावित व्यक्तियों को वहां से निकालने के लिए एवं हताहतों को हटाने के लिए 300 घंटों से भी ज्यादा की उड़ान भरी गई थी।

(ii) i;Vdk@flfofy;uk dk lqjf{kr

LFkku rd igqpkuk% 12 विदेशी पर्यटकों समेत 999 व्यक्तियों को सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा निकाला गया था ।

(iii) grkgrksa dks lqjf{kr LFkku rd igqpkuk% सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा 33 सिविलियन हताहतों को भी सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया गया था।

bLrseky u dh xbZ ;q) lkexzh dk u"V djuk

12-4 ce fuf"Ø; nLrksa dh rSukrh% उत्तरी कमान में निम्नलिखित ऑपरेशनों में बम निष्क्रिय दस्तों की तैनाती की गई थीः–

(क) राष्ट्रीय राजमार्ग 1–ए पर 169 मील पत्थर के पास आईईडी की टोह.

(ख) राष्ट्रीय राजमार्ग 1–ए पर 183–184 मील पत्थर के पास आईईडी की टोह.

(ग) डोडा से लगभग 15 किलोमीटर दूर सुडाना बेली गांव के नजदीक आईईडी की टोह.

12.5 vkWijs'ku lg;ksx II %सेना ने मई, 2011 में वर्ष 2004 से आईसीडी, तुगलकाबाद में पड़ी हुई इस्तेमाल न की गई युद्ध सामग्री (कुल 4484) को नष्ट करने हेतु ऑपरेशन सहयोग II का संचालन किया। उच्च स्तर के जोखिम वाला यह ऑपरेशन 13 मई, 2011 को शुरू हुआ जिसमें आईसीडी, तुगलकाबाद से यूएक्सबी को अलग करना, इस अलग हुई यूएक्सबी

को कंटेनर में लोड करना, इसको तिलपत रेंज में ले जाना, तिलपत रेंज में इस यूएक्सबी को खाली करना और बाद में इसको निष्क्रिय करना शामिल था। इस ऑपरेशन का सफलतापूर्वक समापन 15 जून, 2011 को हुआ ।

12.6 ck< jkgr vkij'ku% निम्नलिखित क्षेत्रों में बाढ़ राहत ऑपरेशन किए गए:

(क) कोलारास, जिला शिवपुरी, मध्य प्रदेश।

(ख) अपर असम के धेमाजी जिले के सीमन सापरी एवं सीसीबार गांव।

(ग) सर्या गांव, बालमकोला ब्लॉक, जिला रायगढ़, छत्तीसगढ़।

(घ) हुसैनाबाद गांव, जिला पलामू, झारखण्ड।

12.7 iqy dk fuekZ.k ¼lcjhekyk½

(क) केरल के पतनमित्तता जिले में पश्चिमी घाट पर स्थित सबरीमाला एक बहुत पुराना हिंदू तीर्थ स्थल है, जिसमें समस्त भारत से वर्ष में 40–50 मिलियन श्रद्धालू आते हैं ।

(ख) सेना से इस नए प्रस्तावित निकास मार्ग पर एक पुल के निर्माण हेतु अनुरोध किया गया था जो श्रद्धालुओं को वहां से सुरक्षित निकालने के लिए आवश्यक था । सेना के इंजीनियरों ने यह कार्य 04 अक्तूबर, 2011 को पूरा किया । पुल को विनियमन एवं श्रद्धालुओं के आने–जाने के लिए 17 अक्तूबर, 2011 को देवासोम श्राइन बोर्ड को सौंप दिया गया है ।

भारतीय नौसेना

12.8 xkrk[kkjh ¼Mkbçox½ lgk;rk% सिविल एजेंसियों/सरकारी/राज्य प्राधिकारियों को तलाशी एवं बचाव कार्य के लिए सहायता प्रदान करने के लिए जनवरी, 2011 से विभिन्न कमानों से 55 बार डाइविंग टीमें तैनात की जा चुकी हैं।

12.9 pedkjk ugj e xkrk[kkjh vfHk;ku% केरल सरकार की तरफ से एक आपातकालीन अनुरोध पर दक्षिण ी नौसेना कमान से गोताखोरों की एक टीम 26 सितम्बर, 2011 को तलाशी एवं बचाव अभियान के लिए डोर्नियर विमान द्वारा तैनात की गई थी। प्राइमरी स्कूल के 30 बच्चों (10–12 वर्ष की आयु के) को ले जा रही एक स्कूल बस का संतुलन बिगड़ गया और वह कन्हैयापुरम, तिरूवनन्तपुरम के नजदीक चमकारा नहर में गिर गई। नौसेना के गोताखोरों ने लगातार गोताखोरी अभियानों के उपरांत गुम हुए सभी बच्चों को निकाल लिया।

12.10 fprjh e jy n?kVuk% 13 सितम्बर, 2011 को चितेरी रेलवे स्टेशन पर हुई एक बड़ी रेल दुर्घटना में लगभग 15 लोग मारे गए और 100 से ज्यादा लोग घायल हुए थे । आईएनएस, राजाली से एक नौसैन्य टीम, जिसमें दो डॉक्टर, एक अफसर और 40 कार्मिक शामिल थे, तुरंत दुर्घटना स्थल पर पहुंचे । यह नौसैन्य टीम दुर्घटना स्थल पर पहुंचने वाला पहला बचाव दल था जिसने पीड़ितों को समय पर आवश्यक सहायता उपलब्ध करवाई ।

विभिन्न सिविल एजेंसियों/ सरकारी/ राज्य प्राधिकारियों को सहायता प्रदान करने के लिए जनवरी, 2011 से विभिन्न कमानों से 55 बार गोताखोरी टीमें तैनात की गई।

12.11 flfoy {k= e vfXu&'keu vfHk;ku% 19 अगस्त, 2011 को गोवा में "वरुणापुरी" में, जो नौसेना परिसर के समीप है, नैप्थलीन गुज़रने वाली एक संवाहक पाइप में रिसाव होने की वजह से एक बड़ी आग दुर्घटना हो गई थी । इस दुर्घटना का फैलाव जनसंख्या बहुल एवं प्रतिबंधित क्षेत्र के बहुत नजदीक था । नौसेना की सुरक्षा सेवाएं तत्काल रूप से दुर्घटना स्थल पर पहुंची और लोगों को सुरक्षित निकाला। अग्नि–शमन के कार्मिकों ने इस बड़ी आग को नियंत्रित करने के लिए विषम परिस्थितियों में असाधारण साहस और पेशेवर कुशलता का परिचय दिया अन्यथा वहां बहुत बड़ी आपदा हो सकती थी।

12.12 ekvkoknh iHkkfor {k=k e mMku vfHk;kuk dk foLrkj% चित्राकोंडा में बचाव एवं

खोज प्रयासों हेतु पुलिस प्राधिकारियों को गोताखोरों और हेलिकॉप्टरों ने सतत सहायता उपलब्ध करवाई जहां माओवादियों ने ग्रे हाउंड जवानों के एक समूह पर घात लगा कर हमला किया था। इस अभियान के संचालन के लिए 65 घंटे की उड़ान की गई थी।

12.13 ck< jkgr&vkfM'kk% ओडिशा में 11–15 सितम्बर, और 25–26 सितम्बर, 2011 को बाढ़ राहत अभियान चलाए गए। दो यूएच3एच एवं एक चेतक की वहां तैनाती की गई और राहत सामग्री को इनके द्वारा पीड़ितों तक पहुंचाया गया।

12.14 lcjhekyk HkxnM vkink gr uk l uk fpfdRlk jkgr Vhe% 15 जनवरी, 2011 को केरल के वंदीपरियार में सबरीमाला भगदड़ आपदा में आईएनएचएस, संजीवनी ने चिकित्सा राहत प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूर्ण रूप से सुसज्जित एक चिकित्सा टीम दो घंटे के भीतर हेलिकॉप्टर द्वारा आपदा स्थल पर पहुंची और तत्काल चिकित्सा राहत अभियान शुरू किया।

वायुसेना

12.15 भारतीय वायुसेना विभिन्न सिविल सहायता राहत उपायों से जुड़ी हुई है। प्राकृतिक आपदाओं और दुर्घटनाओं के दौरान भारतीय वायुसेना का परिवहन एवं हेलिकॉप्टर बेड़ा केंद्र एवं राज्य सरकारों को सहायता प्रदान करने में एक मुख्य भूमिका निभाता है। इस परिवहन एवं हेलिकॉप्टर बेड़े की एयर लिफ्ट क्षमता में लम्बी रेंज वाले विशेष अभियानों सी–130जे विमान के शामिल करने से एक बड़ी बढ़ोतरी हुई है जो सिक्किम में भूकंप आने के बाद राहत अभियानों में साबित हो चुकी है। परिवहन एवं हेलिकॉप्टर बेड़ा उसको दिए गए कार्यों को पूरी क्षमता से करते हुए लगातार अच्छे परिण ाम दे रहा है। इसकी ज्यादातर उड़ानें अशरण्य भूभाग और विषम जलवायु परिस्थितियों में होती हैं। इसकी कुछ उपलब्धियों को उत्तरवर्ती पैराग्राफों में दर्शाया गया है।

mÙkjh ,o mÙkj&iwohZ {k= eas gokbZ vuqj{k.k

12.16 भारतीय वायुसेना के परिवहन एवं हेलिकॉप्टर बेड़े द्वारा हवाई अनुरक्षण अभियान देश के उत्तरी एवं उत्तरी–पूर्वी भागों के दूर–दराज के क्षेत्रों और अशरण्य भूभागीय परिस्थितियों में चलाए जाते हैं । ये ऑपरेशन पूरा वर्ष चलते रहते हैं जिसमें खाद्य–सामग्री, वस्त्र, चिकित्सा उपकरणों इत्यादि को हवाई व्यवस्था से पहुंचाना शामिल है । हवाई अनुरक्षण गतिविधियों का सर्दी के महीनों में विशेष महत्व होता है जब बर्फबारी और विषम जलवायु परिस्थितियों की वजह से इन क्षेत्रों में सामान्य सतही परिवहन अवरोधित हो जाता है ।

12.17 11 अप्रैल, 2011 से अब तक उत्तर–पूर्वी सेक्टर के लिए 2995 टन और उत्तरी सेक्टर के लिए कुल 15,930 टन की संभारिकी सहायता प्रदान की गई है। सर्दी के महीनों के दौरान कारगिल से जम्मू और श्रीनगर तक

भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टर द्वारा सैनिकों को सप्लाई पहुंचाते हुए

नियमित उड़ानों का संचालन किया जाता है।

12.18 lhek lMd laxBu ¼chvkjvk½ dks lHkkfjdh lgk;rk% भारतीय वायुसेना के परिवहन एवं हेलिकॉप्टर बेड़े ने अंतर्राष्ट्रीय सीमा के साथ–साथ सीमा सड़क संगठन को उसके केंद्रीय एवं उत्तरी क्षेत्रों में 640 मीट्रिक टन के भार को उठाने में हवाई व्यवस्था से सहायता की ।

ekuoh; lgk;rk ,o vkink jkgr vfHk;ku

12.19 jly nq?kZVuk% भारतीय वायुसेना ने कानपुर के

पास 10 जुलाई, 2011 को हुई हावड़ा–कालका रेल दुर्घटना के बाद राहत एवं बचाव अभियान में भाग लिया। कुल 148 यात्रियों को हवाई मार्ग से सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया गया और इसके साथ ही 600 कि.ग्रा. की चिकित्सा आपूर्ति भी की गई।

12.20 **flfDde esa HkwdEi%** 18 सितम्बर, 2011 को सिक्किम में भूकम्प आने के दो घंटे के भीतर दिल्ली से दो सी–130जे विमानों ने 13 टन की बचाव सामग्री और 220 राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल के कार्मिकों सहित उड़ान भरी। 11 अक्तूबर, 2011 तक विभिन्न विमानों द्वारा 527 बार कार्रवाई की गई जिसमें 294 घंटों की उड़ान शामिल थी और हेलिकॉप्टरों द्वारा लगातार चलने वाले इस अभियान में 252 टन की राहत सामग्री पहुंचाई गई और 1714 लोगों को वहां से निकाला गया। भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टरों ने जिस बचाव अभियान में हिस्सा लिया उसमें कुल 525 कार्मिकों को दुर्गम क्षेत्रों से सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर सेना की इकाइयों द्वारा विभिन्न खेप पहुंचाई गई जिसमें डीज़ल, ईंधन एवं आपातकालीन राशन की सप्लाई शामिल थी।

12.21 **Hkkjrh; ok;qlsuk ¼vksfM'kk½ esa ck<+ lgk;rk%** सितम्बर, 2011 में ओडिशा राज्य में जबरदस्त बाढ़ आई थी जिससे 16 लाख लोग प्रभावित हुए थे । राज्य सरकार द्वारा सहायता मांगे जाने की प्रतिक्रिया में भारतीय वायुसेना ने प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को तात्कालिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए इस अभियान में एक चेतक और सात एमआई–17 हेलिकॉप्टरों को तैनात किया था । भारतीय वायुसेना के कार्य बल ने 90 खेपों में कुल 118.64 टन की राहत सामग्री को वहां पहुंचाया था जिसमें 116 घंटों की उड़ान भरी गई थी ।

12.22 **fons'kh ukxfjdksa dks lqjf{kr fudkyk tkuk%** भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टर बेड़े ने अप्रैल, 2011 से जम्मू–कश्मीर, उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश के उच्च तुंगता वाले दुर्गम क्षेत्रों से 28 विदेशी नागरिकों को सुरक्षित निकाला।

सिक्किम के भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री को लादते हुए एवं बांटते हुए

Hkkjrh; ok;qlsuk }kjk tEew&d'ehj ?kkVh esa fctyh vkiwfr dks iqu% 'kq: djuk

12.23 जम्मू–कश्मीर में 06 जनवरी, 2012 को भीषण बर्फबारी हुई जिस कारण समस्त श्रीनगर घाटी में बिजली आपूर्ति अवरुद्ध हो गई थी । भारतीय वायुसेना ने जम्मू–कश्मीर सरकार के अनुरोध पर घाटी में बिजली आपूर्ति को पुनः शुरू करने के लिए पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया की सहायता करने हेतु एक चुनौतीपूर्ण कार्य को अपने हाथों में लिया । रामबन से बनिहाल तक बिजली लाइनों के वायु सर्वेक्षण के उपरांत रामसू गांव के नज़दीक क्षतिग्रस्त टावर को बिजली अवरुद्ध होने का मुख्य कारण माना गया ।

12.24 एक मरम्मत टीम 08 जनवरी, 2012 को

एमआई–17 हेलिकॉप्टरों से विषम जलवायु एवं बर्फीली हवाओं के दौरान मौके पर पहुंची थी जबकि उस क्षेत्र में कोई हेलिपैड भी नहीं था । कुछ ही घंटों में टावर को ठीक किया गया और समस्त घाटी में बिजली आपूर्ति को पुनः शुरू किया गया । अगले ही दिन इन्हीं कार्मिकों ने इसी तरह का कार्य अपने हाथ में लिया जिसमें विषम जलवायु में ही मरम्मत करने के लिए चार कार्मिकों को नीचे उतारा गया ।

fon's'kh vfHk;ku

12.25 **lkdZ f'k[kj lEesyu %** भारतीय वायुसेना के एक 32 परिवहन विमान को चरणों में 22–28 अक्तूबर, 2011 और 02–15 नवंबर, 2011 को सार्क शिखर के संबंध में सैन्य टुकड़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए माले में तैनात किया गया था ।

12.26 **la;qä jk"Vª fe'ku %** भारतीय विमानन की सैन्य टुकड़ी को बुकावू (कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य)

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान हेतु तैनात हेलिकॉप्टर

में तैनात किया गया था जिसमें 303 कार्मिकों सहित 6 एमआई–17 और 4 एमआई–35 हेलिकॉप्टर शामिल थे जिनको दो चरणों में प्रत्यावर्तित किया गया था जो सितम्बर, 2011 में पूरा हुआ था । भारतीय वायुसेना के हेलिकॉप्टर बेड़े ने इन मिशनों पर तैनाती के दौरान अप्रैल से सितम्बर, 2011 के दौरान 280 घंटों की उड़ान सहित कुल 235 खेपें पहुंचाई थी ।

y¶V Çox vfroknh fojks/kh vfHk;ku

12.27 वर्ष 2011 में असम, पश्चिमी ओडिशा और अरुणाचल प्रदेश मुख्य तौर पर लेफ्ट विंग अतिवादी गतिविधियों का गवाह रहे हैं। भारतीय वायुसेना के 4 एमआई–17 हेलिकॉप्टर 20 दिसम्बर, 2009 से ही नक्सल विरोधी अभियानों हेतु गृह मंत्रालय की सहायता करने के लिए तैनात किए गए हैं। 4 हेलिकॉप्टरों को लेफ्ट विंग अतिवादी विरोधी अभियान में सशस्त्र बलों की सहायता हेतु तैनात किया गया है। इस अभियान के शुरू होने से ही हताहतों, यात्रियों और लोड को वहां से निकालने वाले अभियानों की सहायता में 2,492 घंटों की उड़ान सहित कुल 3,602 बार कार्रवाई की जा चुकी है। इसके अलावा, गृह मंत्रालय के अनुरोध पर सैनिकों के स्लिथरिंग (फिसलकर चलना) प्रशिक्षण का संचालन किया गया है जिसमें 1142 सैनिकों को अब तक प्रशिक्षित किया जा चुका है।

13

राष्ट्रीय कैडेट कोर

रक्षा मंत्री और लेफ्टिनेंट जनरल पी एस भल्ला, एवीएसएम महानिदेशक, राष्ट्रीय कैडेट कोर रक्षा मंत्री पदक और प्रशस्ति पत्र प्राप्तकर्ताओं के साथ

,न सी सी देश के युवाओं को प्रतिबद्धता, समर्पण, स्व–अनुशासन तथा नैतिक मूल्यों की भावना के साथ–साथ उनका सर्वांगीण विकास करके उन्हें अच्छे नागरिक बनने के अवसर प्रदान करता है

13.1 राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन सी सी) की स्थापना एन सी सी अधिनियम, 1948 के अंतर्गत हुई। यह अपने अस्तित्व के 63 वर्ष पूरे कर चुका है। एन सी सी प्रतिबद्धता, समर्पण, स्व–अनुशासन और नैतिक मूल्यों की भावना के साथ–साथ देश के युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए अवसर मुहैया कराने का प्रयास करता है। इसका मुख्य लक्ष्य युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनाना है। राष्ट्रीय कैडेट कोर का आदर्श वाक्य है– Þ,drk vkj vu'kkluAÞ

13.2 एन सी सी की कुल स्वीकृत नफरी 15 लाख कैडेट है। इसमें 2010 में स्वीकृत 2 लाख कैडेट भी शामिल हैं जिन्हें 2010–11 से 2014–15 तक की अवधि के दौरान एनसीसी की नई यूनिटों को गणित करके 5 चरणों में शामिल किया जाएगा। वर्ष 2011–12 के लिए एन सी सी में कैडेटों की स्वीकृत नफरी 13,40, 000 की है । चालू वित्त वर्ष में 01 ग्रुप मुख्यालय और 12 यूनिटें खड़ी करने का पहला चरण पूरा हो गया है। एन सी सी देश के 630 जिलों तक फैला हुआ है जिसमें कुल 15879 शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं।

13.3 मौजूदा नामांकित कैडेट नफरी का स्कंध–वार विवरण इस प्रकार हैः–

(क)	सेना स्कंध	–	7, 93,147
(ख)	वायुसेना स्कंध	–	55,345
(ग)	नौसेना स्कंध	–	53, 451
(घ)	सेना छात्रा स्कंध	–	3, 34,395
	d|y	&	12]36]338

मुख्य उपलब्धियां

13.4 iFke pj.k e ,u lh lh ub ;fuV [kMh djuk% प्रथम चरण के अंतर्गत जनवरी 2011 में रक्षा मंत्रालय द्वारा 01 ग्रुप मुख्यालय, 09 सेना यूनिटें, 02 वायुसेना यूनिटें तथा 01 नौसेना यूनिट खड़ी करने की स्वीकृति दी गई है। सभी यूनिटें खड़ी कर दी गई हैं।

13.5 ub vkj ,M oh ;fuV [kMh djuk % पिछले वर्ष दो आर एंड वी यूनिटें खड़ी की गई हैं जिनमें से एक भटिंडा (पंजाब) में तथा दूसरी पणजी (गोवा) में। इस प्रकार आर एंड वी की कुल 19 यूनिटें हो गई हैं।

13.6 ftyk e ,u lh lh dk foLrkj % इस समय एन सी सी देश के 630 जिलों तक फैला हुआ है।

13.7 Nk=k dMVk dh l[;k e of) % छात्रा कैडेट वर्तमान में एन सी सी कैडेटों की कुल नामांकित नफरी का 25.17% है जो पिछले वर्ष 24.38% थी। इस वर्ष छात्रा कैडेटों की भर्ती में 11475 की वृद्धि हुई है।

if'k{k.k

13.8 राष्ट्रीय कैडेट कोर मुख्यतः एक प्रशिक्षण संगठन है जो युवाओं के निर्माण में जुटा है और एन सी सी की दिनों–दिन बढ़ती इतनी बड़ी छात्र संख्या इसकी सार्थकता का प्रमाण है। आज के बदलते परिवेश में एन सी सी भी अपने पाठ्यक्रम में अपेक्षित परिवर्तन करने जा रहा है। इसके लिए एन सी सी द्वारा एक बड़ा कदम उठाया गया है जिसके अंतर्गत एन सी सी के प्रशिक्षण को और अधिक पारस्परिक अनुक्रिया–शील व सार्थक बनाने के लिए सभी संबंधितों से प्रतिक्रिया जानने हेतू क्षेत्रीय स्तर पर सेमिनार आयोजित किए गए हैं और

अप्रैल 2012 में राष्ट्रीय स्तर पर भी एक ऐसा सेमिनार आयोजित करने की योजना है।

13.8 एन सी सी प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं :–

(क) सांस्थानिक प्रशिक्षण
(ख) शिविर प्रशिक्षण
(ग) साहसिक प्रशिक्षण
(घ) समाज सेवा तथा सामुदायिक विकास गतिविधियां
(च) युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम

13-10 **lkLFkkfud izf'k{k.k%** सांस्थानिक प्रशिक्षण में सेना, नौसेना तथा वायुसेना के विषयों का प्राथमिक प्रशिक्षण शामिल है जिसमें शिविर के रहन–सहन से भी अवगत कराया जाता है। इस प्रशिक्षण का लक्ष्य युवाओं को जीवन के संगठित रूप से परिचित कराना है और उनमें अनुशासन, व्यक्तित्व विकास और नियम पालन का संचार करना है। सभी नामांकित कैडेट अपने–अपने स्कूल/कॉलेजों में एन सी सी की प्रत्येक विंग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में यह सांस्थानिक प्रशिक्षण लेते हैं।

13-11 **f'kfoj izf'k{k.k%** शिविर प्रशिक्षण एन सी सी पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग है। ये शिविर साहचर्य, टीम–भावना, परिश्रम का महत्व और आत्मविश्वास के विकास में सहायक होते हैं। इनका सबसे महत्वपूर्ण पहलू है– Þ,drk vkSj vuq'kkluß का विकास करना। एन सी सी ने अपने कैडेटों के लिए व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में मानव मूल्यों की कक्षाएं भी शुरू की हैं।

(क) **okÆ"kd izf'k{k.k f'kfoj ¼,Vh lh½%** वार्षिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन राज्य निदेशालयों द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि कनिष्ठ प्रभाग (जे डी/जे डब्ल्यू) के कम से कम 50 प्रतिशत कैडेट और वरिष्ठ प्रभाग के 100 प्रतिशत कैडेट, जिनकी संख्या लगभग 8.5 लाख है, वर्ष में एक ऐसे शिविर में अवश्य भाग लें। हर वर्ष ऐसे लगभग 1700 शिविर लगाए जाते हैं।

¼[k½ **jk"Vªh; ,drk f'kfoj ¼,u vkbZ lh½%** हर वर्ष कुल 37 एन आई सी आयोजित किए जाते हैं और सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों से कुल 24200 कैडेट इन शिविरों में शामिल होते हैं। इस वर्ष अभी तक 26 एन आई सी आयोजित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित किए जाने का कार्यक्रम बनाया गया :–

Øe la-	LFkku tgka fo'ks"k jk"Vªh; f'kfoj dk vk;kstu fd;k x;k	vof/k	izfrHkkfx;ksa dh la[;k
(i)	विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, लेह	11–22 जुलाई, 2011	180
(ii)	विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, पुगलवां (नागालैंण्ड)	28 मई–08 जून, 2011	600
(iii)	विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, बड़ाबाग (जैसलमेर)	08–19 दिसम्बर, 2011	300
(iv)	विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, पेडापुरम (काकीनाड़ा)	19–30 अक्तूबर, 2011	300

(ग) **ok;q lSfud f'kfoj ¼oh ,l lh½%** वायु सेना स्कंध के वरिष्ठ प्रभाग/वरिष्ठ स्कंध कैडेटों के लिए जाकुर एयरफील्ड (बेंगलूर) में प्रति वर्ष 12 दिन की अवधि के लिए अखिल भारतीय वायु सैनिक शिविर का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यह शिविर 30 अक्तूबर से 10 नवम्बर, 2011 तक आयोजित किया गया। इस शिविर में 17 एन सी सी निदेशालयों के कुल 600 वरिष्ठ प्रभाग/वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने भाग लिया।

शिविरों से कैडेटों में साहचर्य, टीम भावना, परिश्रम के प्रति निष्ठा, आत्म-विश्वास और सबसे बढ़कर ''एकता और अनुशासन'' का विकास होता है।

(घ) uk lfud f'kfoj ¼,u ,l lh½% यह शिविर भी प्रति वर्ष 12 दिनों के लिए आयोजित किया जाता है और इसमें नौ सेना स्कंध के वरिष्ठ प्रभाग व वरिष्ठ स्कंध के कैडेट भाग लेते हैं। इस वर्ष शिविर का आयोजन विशाखापट्टनम में 01 से 12 नवम्बर, 2011 तक किया गया। इस शिविर में सभी 17 एन सी सी निदेशालयों से कुल 590 वरिष्ठ स्कंध/वरिष्ठ प्रभाग कैडेटों ने भाग लिया।

(च) Fky lfud f'kfoj ¼Vh ,l lh½% हर वर्ष गणतंत्र दिवस परेड ग्राउंड, दिल्ली छावनी में दो टी एस सी का साथ–साथ आयोजन किया जाता है। जिनमें से एक वरिष्ठ प्रभाग छात्रों के लिए तथा एक वरिष्ठ स्कंध छात्राओं के लिए होता है। इस वर्ष इन शिविरों का आयोजन 02 से 13 सितम्बर, 2011 तक किया गया। इस शिविर के साथ ही छात्र व छात्रा कैडेटों दोनों के लिए अन्तर–निदेशालय निशानेबाजी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें 561 कैडेटों ने भाग लिया। सभी 17 एन सी सी निदेशालयों से कुल 1360 कैडेटों ने इस शिविर में भाग लिया।

(छ) urRo f'kfoj% ये शिविर अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। हर वर्ष वरिष्ठ प्रभाग, कनिष्ठ प्रभाग, वरिष्ठ स्कंध, वरिष्ठ प्रभाग, (नौसेना) प्रत्येक के लिए एक–एक ऐसे चार एडवांस लीडरशिप शिविरों (ए एल सी) का आयोजन किया जाता है और (वरिष्ठ प्रभाग, वरिष्ठ स्कंध और कनिष्ठ स्कंध के लिए एक–एक) प्रति वर्ष तीन बेसिक लीडरशिप शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष सितम्बर से दिसम्बर, 2011 के दौरान कुल 3373 कैडेटों ने इन शिविरों में भाग लिया।

(ज) jkd Dykbçcx if'k{k.k f'kfoj% कैडेटों को बेसिक रॉक क्लाइबिंग की जानकारी देने के लिए और उनमें साहस की भावना का संचार करने के लिए इस वर्ष 08 रॉक क्लाइबिंग शिविरों का आयोजन किया गया इनमें से चार मध्य प्रदेश के ग्वालियर में तथा अन्य चार का आयोजन केरल में त्रिवेन्द्रम के नजदीक नैय्यर बांध पर किया गया। मई, 2011 से नवम्बर, 2011 के दौरान 1080 कैडेटों ने इन शिविरों में भाग लिया।

(झ) x.kr= fnol f'kfoj 2012% गणतंत्र दिवस शिविर 2012 का आयोजन 01 जनवरी से 31 जनवरी, 2012 तक दिल्ली में किया गया। इस शिविर में देश भर से 2000 कैडेटों ने भाग लिया। युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत मित्र देशों से आए 75 कैडेटों ने भी 15 से 30 जनवरी, 2012 तक इस शिविर में भाग लिया।

13.12 x.kr= fnol ijM % दो एन सी सी मार्चिंग दस्तों और तीन एन सी सी बैंडों (दो छात्रा बैंड तथा एक छात्र बैंड) ने 26 जनवरी, 2012 को राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया।

13.13 vVpeV if'k{k.k % एन सी सी कैडेट सशस्त्र सेना यूनिटों से जुड़कर महत्वपूर्ण प्राथमिक अनुभव प्राप्त करते हैं। इस वर्ष में नियोजित/संचालित अटैचमेंट इस प्रकार रहेः–

(क) महिला अफसरों सहित 440 अफसरों ने और 500 वरिष्ठ स्कंध की छात्रा कैडेट सहित 20,000 कैडेटों ने नियमित सेना यूनिटों के साथ अटैचमेंट प्रशिक्षण में भाग लिया।

महिला अफसरों सहित 440 अफसरों ने और 500 वरिष्ठ स्कंध की छात्रा कैडेटों सहित 20,000 कैडेटों ने नियमित सेना यूनिटों के साथ अटैचमेंट प्रशिक्षण में भाग लिया।

(ख) 120 वरिष्ठ प्रभाग कैडेटों ने भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून में अटैचमेंट प्रशिक्षण में भाग लिया और 48 वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने अफसर प्रशिक्षण अकादमी, चैन्नई में अटैचमेंट प्रशिक्षण में भाग लिया। दोनों ही

अटैचमेंट की अवधि 2–2 सप्ताह की थी।

(ग) 1000 वरिष्ठ विंग कैडेटों को विभिन्न सैन्य अस्पतालों में अटैचमेंट पर तैनात किया गया।

(घ) वायुसेना स्कंध के 100 कैडेटों (वरिष्ठ प्रभाग के 76 कैडेटों और वरिष्ठ स्कंध के 24 कैडेटों) को वायुसेना अकादमी, डुंडीगल में अटैचमेंट प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण वर्ष में दो बार क्रमशः जून व अक्तूबर में 13–13 दिन के लिए आयोजित किया जाता है।

13.14 ekbØkykbV ¶ykbax % माइक्रोलाइट फ्लाइंग सुविधाएं 47 एन सी सी एयर स्क्वाड्रनों में उपलब्ध कराई जाती हैं। धीरे–धीरे ग्लाइडर्स के समाप्त किए जाने की योजना के बावजूद पिछले वर्ष एन सी सी एयर स्क्वाड्रनों ने 700 उड़ानें भरीं। ग्लाइडर्स के स्थान पर माइक्रोलाइट विमान लाये जा रहे हैं। जिनकी खरीद प्रक्रिया भारतीय वायु सेना के माध्यम से चल रही है। एन सी सी में वायु स्कंध (वरिष्ठ प्रभाग) के कैडेटों को हवाई अनुभव दिलाने के लिए माइक्रोलाइट फ्लाइंग का आयोजन किया जाता है।

13.15 ukSlsuk ikr vVpesaV % नौसेना स्कंध के 300 कैडेटों ने नौसेना के मुंबई, कोच्ची और विशाखापट्टनम में तैनात जहाजों पर 12 दिन की अटैचमेंट के दौरान समुद्री प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस दौरान इन कैडेटों को सेना के विभिन्न विषयों का गहन प्रशिक्षण दिया गया और इन्हें समुद्र में नौसेना के अभ्यास देखने का अवसर मिला।

13-16 fons'k leæ ;k=k :

ukS lsuk Øwt %

(i) 07 कैडेटों ने 06 मार्च से 02 अप्रैल, 2011 तक इंडियन नेवल कैडेट ट्रैनिंग शिपों पर पारस की खाड़ी (मस्कट, बेहरीन तथा साऊदी अरब) का दौरा किया।

(ii) 10 कैडेटों ने 09 अगस्त से 20 सितम्बर 2011 तक नौसेना के पोतों भा.नौ.पो तीर तथा भा.नौ.पो. कृष्णा पर दक्षिण–पूर्व एशिया (फुकेट, पोर्ट केलांग, सिंगापुर तथा जकार्ता) का दौरा किया।

13.17 ukSlsuk vdkneh vVpesaV izf'k{k.k % हर वर्ष वरिष्ठ स्कंध कैडेटों के लिए वार्षिक प्रशिक्षण शिविर तथा वरिष्ठ प्रभाग कैडेटों के लिए अटैचमेंट प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है। लेकिन स्थान न मिलने के कारण इस वर्ष ये शिविर 30 जनवरी से 10 फरवरी, 2012 तक विशाखापट्टनम में आयोजित किये जा रहे हैं और 170 वरिष्ठ स्कंध कैडेट तथा 25 वरिष्ठ प्रभाग कैडेट इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं। ग्लाइडर्स के स्थान पर माइक्रोलाइट एयर क्राफ्ट लाये जा रहे हैं और फिलहाल इन्हें भारतीय वायु सेना के माध्यम से खरीदने की प्रक्रिया चल रही है।

13.18 ,Mokal yhMjf'ki dSai ¼, ,y lh½ % हर वर्ष टुटुकुडी (तूतीकोरिन) में नौसेना बेस पर एक ए एल सी आयोजित किया जाता है। इस वर्ष 22 दिसम्बर, 2011 से 02 जनवरी, 2012 तक यह शिविर आयोजित किया गया जिसमें वरिष्ठ प्रभाग के कुल 150 कैडेटों ने भाग लिया। इसके दौरान कैडेटों ने नौ सेना संस्थापनाओं के दौरे के अलावा साहसिक प्रशिक्षण, सुरक्षा अभ्यास और टीम भावना व अन्य वैयक्तित्व विकास के गुणों को विकसित करने के लिए आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

13.19 ukSlsuk Lda/k dsfy, rduhdh ,u lh lh dSEi % इंजीनियरिंग के 15 वरिष्ठ प्रभाग/वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने 05 से 12 जून तथा 14 से 17 जून, 2011 तक चैन्नई में आयोजित वार्षिक तकनीकी शिविर में भाग लिया। इन कैडेटों को अध्ययन दौरे पर आई एन एस शिवाजी/आई एन एन एस वट्सुरा तथा नौसेना डॉकयार्ड, विशाखापट्टनम स्थित नौसेना इंजीनियिरिंग स्थापनाओं में भी ले जाया गया।

साहसिक प्रशिक्षण

13.20 fpYdk esa vf[ky Hkkjrh; ukSdk nkM% सभी एन सी सी निदेशालयों से 51 वरिष्ठ प्रभाग और 51

वरिष्ठ स्कंध कैडेटों ने 17 से 24 नवम्बर, 2011 तक भा.नौ.पो. चिल्का पर आयोजित अखिल भारतीय नौका दौड़ में भाग लिया। बांग्लादेश एन सी सी के 01 अधिकारी व 06 कैडेटों ने भी इस दौड़ में भाग लिया।

13.21 ukdk;u vfHk;ku % यह अभियान नौसेना प्रशिक्षण का एक रोचक अंग है और प्रत्येक एन सी सी निदेशालय 12 दिन की अवधि के लिए कम से कम एक नौकायन अभियान नियोजित और संचालित करता है जिसमें 400 से 500 किलोमीटर की कुल दूरी तय की जाती है और इस गतिविधि में प्रत्येक निदेशालय से 40 से 60 कैडेट भाग लेते हैं। वर्ष 2011–2012 में एन सी सी के विभिन्न निदेशालयों द्वारा ऐसे कुल 15 अभियानों का आयोजन किया गया।

नौसेनाध्यक्ष एडमिरल निर्मल वर्मा, वीपीएसएम, एवीएसएम, एडीएम, और महानिदेशक एनसीसी लेफ्टिनेंट जनरल पी एस भल्ला, एवीएसएम एनसीसी कैडेटों के साथ बातचीत करते हुए

13.22 स्कूबा डाइविंग : भारतीय नौसेना के गोताखोर दल की सहायता से कोच्ची, विशाखापट्टनम, मुम्बई, चैन्नई तथा दिल्ली में 05 स्कूबा डाइविंग कैम्प आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष कुल 150 कैडेटों ने इन कैम्पों में भाग लिया।

13.23 ÇoM lÉQx D;kÇdx% नौसेना स्कंध के कैडेटों को विंडसर्फिंग तथा क्याकिंग का भी मूल–भूत प्रशिक्षण दिया जाता है और इसका अभ्यास भी कराया जाता है।

13.24 io`rkjkg.k vfHk;ku % प्रशिक्षण वर्ष 2011–12 के दौरान 444 कैडेटों ने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी, हिमालय पर्वतारोहण संस्थान दार्जिलिंग, जे आई एम एंड डब्ल्यू एस नुनवान पहलगाँव और पर्वतारोहण तथा अलाइड स्पोर्ट्स निदेशालय मनाली में विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लिया।

13.25 io`rkjkg.k vfHk;ku % इस वर्ष छात्र कैडेटों के एक दल ने भारत खुंटा चोटी (ऊंचाई 6578 मीटर/21576 फुट) पर चढ़ाई की, छात्रा कैडेटों के दल ने थेलू चोटी (ऊंचाई 6000 मीटर/19680 फुट) पर चढ़ाई की। इनमें से 16 कैडेट व 13 छात्रा कैडेट इन चोटियों पर चढ़ने में सफल रहे।

13.26 lkbfdy rFkk ekVj lkbfdy vfHk;ku % कैडेटों में साहस की भावना का संचार करने के लिए चालू वर्ष के दौरान विभिन्न निदेशालयों द्वारा अनेक मोटर साइकिल अभियानों का आयोजन किया गया। इन अभियानों के दौरान देश के सामने मौजूद अनेक सामाजिक चुनौतियों के प्रति जागरूकता फैलाने का संदेश दिया गया।

13.27 VªSdx vfHk;ku % 2011–12 के दौरान कुल 15 ट्रैकिंग अभियानों का आयोजन किया गया, जिनमें देशभर से कुल 1459 कैडेटों ने भाग लिया।

13.28 ijk lÇyx % एन सी सी के वरिष्ठ प्रभाग/वरिष्ठ स्कंध के कैडेटों के लिए प्रत्येक ग्रुप मुख्यालय स्तर पर पैरा–सेलिंग का आयोजन किया जाता है। पिछले वर्ष के दौरान 5168 कैडेटों ने इस गतिविधि में भाग लिया। इसके प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए दिल्ली, कोलकाता, बंगलूरू, शोलापुर तथा कामठी में 05 पैरा–सेलिंग नोड्स स्थापित किए गए हैं।

13.29 ijk cfld dkl % वरिष्ठ प्रभाग के 40 तथा वरिष्ठ स्कंध की 40 कैडेटों ने सेना उड़ान प्रशिक्षण स्कूल, आगरा में 24 दिन के पैरा बेसिक कोर्स में भाग लिया।

हॉर्स शो के दौरान एनसीसी अश्वारोहियों द्वारा टैंट पैगिंग प्रदर्शन

13.30 fLyçjx in'ku % जनवरी, 2011 में प्रधान मंत्री रैली के दौरान वरिष्ठ प्रभाग के 37 तथा वरिष्ठ स्कंध की 22 छात्रा कैडेटों ने स्लिदरिंग प्रदर्शन में भाग लिया।

13.31 MtV ÅV lQkjh % 09 से 20 नवंबर, 2011 के दौरान जैसलमेर में आयोजित डैजर्ट सफारी में 20 भारतीय कैडेटों के साथ सिंगापुर के 02 अफसरों तथा 10 कैडेटों और कजाकिस्तान के 01 अफसर तथा 06 कैडेटों ने भाग लिया।

13.32 0gkbV okVj jkQçVx % रायवाला (हरिद्वार), मंडी (हिमाचल प्रदेश) तथा गंगटोक (सिक्किम) में व्हाइट वाटर राफटिंग नोड स्थापित किए गये हैं। अखिल भारतीय एकता शिविर–1 के दौरान 21–24 जून, 2011 तक उत्तराखंड निदेशालय द्वारा अनसूया घाट तथा मुनि की रेती में व्हाइट वाटर राफ्टिंग आयोजित किये गए तथा वर्ष 2011 की गर्मियों में वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के दौरान पश्चिम बंगाल व सिक्किम निदेशालय द्वारा तिस्ता नदी में व्हाइट वाटर राफ्टिंग आयोजित किया गया। इन शिविरों में कुल 700 कैडेटों ने भाग लिया।

13.33 gkV ,;j cyçux % दिल्ली निदेशालय द्वारा 26 नवंबर, 2011 को हॉट एयर बैलूनिंग का आयोजन किया गया जिसमें 100 कैडेटों ने भाग लिया।

13.34 ;ok vknku&inku dk;Øe d fon'kh nkj% वर्ष 2011–12 में दिसम्बर, 2011 तक युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 07 विदेशी दौरे किए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है:–

13.35 ;ok vknku&inku dk;Øe d vrxr fon'kh ifrfuf/keMyk }kjk nkjk % वर्ष 2011–12 के दौरान दूसरे देशों से आये/आने वाले विदेशी प्रतिनिधि मण्डलों के दौरे इस प्रकार हैं :–

Ø-l-	n'k	vQlj	dMV
(क)	सिंगापुर (वायु सेना स्कंध)	01	04
(ख)	सिंगापुर (नौ सेना स्कंध)	01	04
(ग)	रूस	–	–
(घ)	श्रीलंका	01	10
(च)	मालदीव	–	–
(छ)	बांग्लादेश	02	20
(ज)	सिंगापुर (सेना स्कंध)	02	10
	dy	07	48

Ø-l-	n'k	vQlj	dMV
(क)	सिंगापुर व कजाकिस्तान एन सी सी कैडेटों द्वारा डैजर्ट सफारी के लिए दौरा	03	20
(ख)	बांग्लादेश (सेलिंग रिगेट्टा)	01	06
(ग)	बांग्लादेश बेलगांव ट्रेक	01	08
(घ)	रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, बांग्ला देश, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, और वियतनाम सहित 08 देशों के प्रतिनिधि मंडलों ने गणतंत्र दिवस शिविर –2012 में भाग लिया।	13	75

(च)	गणतंत्र दिवस शिविर 2012 में विभागाध्यक्ष आए	04	–
	dqy	22	109

lekt lsok rFkk lkeqnkf;d fodkl%&

13.36 कैडेटों में निःस्वार्थ सामुदायिक सेवा, परिश्रम के प्रति निष्ठा एवं सहायता का महत्व, पर्यावरण सुरक्षा की आवश्यकता और समाज के कमजोर वर्गों के विकास में सहायता करने की भावना पैदा करने के उद्देश्य से एन सी सी द्वारा समाज सेवा तथा सामुदायिक विकास के कार्य किए जाते हैं। ये कार्य प्रौढ़ शिक्षा, वृक्षारोपण, रक्तदान, वृद्धाश्रमों, विकलांग बच्चों के स्कूलों व अनाथालयों का दौरा करने, मलिन बस्तियों की सफाई, ग्रामीण उत्थान एवं विभिन्न सामाजिक योजनाओं के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से किए जाते हैं। एन सी सी कैडेटों ने निम्नलिखित सामुदायिक विकास गतिविधियों में हिस्सा लिया है :–

(क) o{kkjksi.k %& एन सी सी कैडेट पौधे लगाते हैं और संबंधित राज्य विभागों/कॉलेजों/स्कूलों तथा गांवों के सहयोग से उनकी देखभाल करते हैं। इस वर्ष पर्यावरण सुरक्षा एवं बचाव अभियान के अंतर्गत एन सी सी कैडेटों ने 4.5 लाख पौधे लगायें।

(ख) jä nku % जब भी अस्पतालों/रेडक्रास को जरूरत होती है एन सी सी कैडेट स्वेच्छा से रक्त दान करते रहे हैं। इस वर्ष एन सी सी दिवस समारोह के अवसर पर एन सी सी के राज्य निदेशालयों द्वारा विभिन्न कस्बों और गावों में "रक्तदान अभियान" का आयोजन किया गया जिसमें कैडेटों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

(ग) o)kJe % मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, जम्मू–कश्मीर तथा महाराष्ट्र निदेशालय के 11255 कैडेटों ने वृद्धजनों की सहायता करने के लिए अनेक वृद्धाश्रमों का दौरा किया।

(घ) vkink jkgr % एन सी सी कैडेटों ने प्राकृतिक व अन्य आपदाओं तथा दुर्घटनाओं के समय हमेशा पीड़ितों की सहायता की है। वर्षों से एन सी सी कैडेट बाढ़, भूकम्पों, तूफानों, रेल दुर्घटनाओं के समय उत्कृष्ट सहायता प्रदान करते आये हैं। तथा दंगा प्रभावित क्षेत्रों में सौहार्द बनाने में सहायता करते आये हैं और इन कार्यों में एन सी सी की महत्वपूर्ण भूमिका की सभी ने प्रशंसा की है। इस वर्ष 14184 एन सी सी कैडेटों ने देशभर से इस अभियान में भाग लिया। इसमें जुलाई, 2011 में मुम्बई सीरियल बम धमाके तथा सितम्बर, 2011 के सिक्किम के विनाशकारी भूकम्प के पीड़ितों को दी गई सहायता भी शामिल है।

(च) ,M~l tkx:drk dk;Øe % एन सी सी कैडेटों ने देशभर में आयोजित एड्स/ एच आई वी जागरूकता अभियानों में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और ये अभियान चलाये हैं। विभिन्न शिविरों के दौरान एच आई वी/एडस पर लेक्चर तथा बातचीत के दौर आयोजित किए गए । इस वर्ष 01 दिसम्बर, 2011 को एडस जागरूकता दिवस मनाया गया जिसमें सभी 17 निदेशालयों से 37600 एन सी सी कैडेटों ने भाग लिया।

(छ) ngst vkSj dU;k Hkw.k gR;k jksdus dh 'kiFk% पूरे देश में एन सी सी कैडेटों ने दहेज तथा कन्या भ्रूण हत्या रोकने की शपथ ली।

एन सी सी में प्रौढ़ शिक्षा, वृक्षारोपण, रक्त-दान, अनाथालयों, विकलांग बच्चों के स्कूलों, वृद्धाश्रमों के दौरों, मलिन बस्तियों की साफ-सफाई गांवों के विकास तथा अन्य अनेक सामाजिक योजनाओं के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज सेवा व सामुदायिक विकास के कार्य किये जाते हैं।

(ज) u'kkjk/kh jSyh % देश के प्रमुख शहरों और कस्बों में लगभग 40000 एन सी सी कैडेटों ने नशारोधी रैलियों में भाग लिया।

(झ) iYl iksfy;ks Vhdkdj.k %& एन सी सी कैडेटों ने राष्ट्रीय कार्यक्रम के अनुसार देशभर में सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न पोलियो उन्मूलन कार्यक्रमों में भी भाग लिया।

(ट) izkS<&f'k{kk % शिक्षा की आवश्यकता पर बल देने और प्रौढ शिक्षा के कार्यक्रम के संचालन में सहायता करने के लिए एन सी सी कैडेटों ने दूर–दराज के इलाकों, गावों और विकासाधीन क्षेत्रों का दौरा किया।

(ठ) lkeqnkf;d dk;Z % एन सी सी के कैडेटों ने ग्रामीण तथा शहरी सामुदायिक विकास परियोजनाओं और ग्रामीण सड़क सुधार, गलियों तथा तालाबों की सफाई तथा स्वच्छता अभियानों आदि जैसे अन्य विकास कार्यों में भाग लिया।

(ड) dq"B&jks/kh vfHk;ku % एन सी सी कैडेटों ने देशभर में कुष्ठ रोधी अभियान का आयोजन किया तथा वे इस क्षेत्र में विभिन्न स्वैच्छिक/सरकारी संस्थानों की सहायता भी कर रहे हैं।

(ढ़) dSlj tkx:drk dk;Øe % लगभग 43000 एन सी सी कैडेटों ने विभिन्न शहरों में आयोजित कैंसर जागरूकता कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। एक गैर–सरकारी संगठन कैंसर केयर इंडिया (सी ए सी आई) तथा एन सी सी ने साथ मिलकर देशभर में कैंसर जागरूकता अभियान का आयोजन करने के लिए हाथ मिलाया है। हर वर्ष गणतंत्र दिवस शिविर के दौरान एक कैंसर जागरूकता प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है।

(ण) rEckd&fujks/kh vfHk;ku % 31 मई, 2011 को मनाए गए तंबाकू–निरोधी दिवस में सभी निदेशालयों के लगभग 39000 कैडेटों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इस दिन सभी एन सी सी निदेशालयों में तंबाकू के कुप्रभावों के बारे में आम जनता में जागरूकता फैलाने के लिए एन सी सी कैडेटों द्वारा विभिन्न रैलियों, रोड–शो/नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया।

(त) f'k"Vkpkj Hkkouk vkSj rRlac/kh fu;eksa ds izfr tkx:drk % एन सी सी कैडेट विभिन्न शहरों आयोजित यातायात नियमों के प्रति जागरूकता के अभियानों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। इस अवधि के दौरान कैडेट विभिन्न यातायात जांच चौकियों (ट्रैफिक चैक–पोस्टों) पर विद्यमान रहते हैं और स्थानीय यातायात पुलिस के संसाधनों में अनुपूरक का काम करते हैं।

(थ) ubZ igy % अनेक एन सी सी कैडेट विश्व–वानिकी दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस, तम्बाकू निषेद्ध दिवस, अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति और अवैध व्यापार रोधी दिवस, राष्ट्रीय आपदा नियंत्रण संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय दिवस तथा विश्व एड्स दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस वर्ष के दौरान एन सी सी ने अनेक सामाजिक मुद्दों पर आम जनता के बीच जागरूकता का प्रसार करने के लिए सात अंतर्राष्ट्रीय दिवसों को शामिल किया है और सम–सामायिक मुद्दों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए निम्नलिखित अभियान चलाये हैं:–

(i) xkao@efyu {ks=ksa dks xksn ysuk %& एन सी सी ने गांवों व मलिन बस्तियों की साफ–सफाई तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए देशभर में 200 गांवों/मलिन बस्तियों को गोद लिया है। इससे एन सी सी कैडेटों को समाज के विभिन्न वर्गों और गांवों में रहने वाले लोगों के बीच अपनी पहचान बनाने का अवसर भी मिलता है।

(ii) Åtkz cpkvks vfHk;ku %& इस अभियान के अंतर्गत एन सी सी कैडेटों ने बहुमूल्य विधुत ऊर्जा के फिजूल खर्च को बचाने के लिए एक राष्ट्र–व्यापी जागरूकता अभियान

प्रारंभ किया है। इसके प्रति जागरूकता का प्रसार करने के लिए सभी राज्यों के शहरों और कस्बों में रैलियों व नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। एन सी सी के युवाओं ने प्रति दिन लगभग 10 मिनट तक स्वेच्छा से बिजली बन्द रखकर इस अभियान में स्वयं एक आदर्श स्थापित किया है।

(iii) vijEijkxr Åtk lkrk dk mi;kx%& ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देने के लिए एन सी सी ने एक अभियान प्रारंभ किया। विभिन्न एन सी सी शिविरों के दौरान एन सी सी कैडेटों को सौर और जैविक ऊर्जा उपकरणों का प्रयोग करने के लिए अभिप्रेरित किया जाता है।

(iv) ufn;k dk in"k.k&eqä djuk%& नदियों के बढ़ते प्रदूषण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए भी एन सी सी के कैडेटों ने अभियान चलाये हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर खेल गतिविधियां

13.37 tokgj yky ug: gkdh di VukeV%& एन सी सी की जूनियर छात्र और जूनियर छात्रा वर्ग की टीमों ने प्रतिष्ठित जवाहर लाल नेहरू हॉकी टूर्नामेंट–2011 में भाग लिया और जूनियर एन सी सी छात्रा टीम सेमी फाइनल में पहुंची।

13.38 lqcrk di QVcky VukeV % एन सी सी की दो जूनियर छात्र टीमें प्रतिष्ठित सुब्रोतो कप फुटबाल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंची और इन में से एक टीम फाइनल में पहुंची तथा उसने सुब्रोतों कप फुटबाल टूर्नामेंट 2011 जीता। इस टीम के कैप्टन को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी तथा गोलकीपर को सर्वश्रेष्ठ गोल कीपर घोषित किया गया।

13.39 vf[ky Hkkjrh; th- oh ekoydj fu'kkuckth pfEi;uf'ki ¼, vkb th oh ,e ,l lh ½ इस वर्ष 35 एन सी सी निशानेबाजों को 55वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता चैम्पियनशिप के लिए चुना गया है। एन सी सी की निशानेबाजी टीम ने विभिन्न निशानेबाजी चैम्पियनशिपों में निम्नलिखित पदक जीते हैं: –

		जीवी मावलंकर	राष्ट्रीय निशानेबाजी
(1)	स्वर्ण	3	3
(2)	रजत	2	2
(3)	कांस्य	5	3

14

विदेशों के साथ रक्षा सहयोग

रक्षा मंत्री, नवंबर, 2011 में टोक्यों में जापानी रक्षा मंत्रालय में पहुंचने पर सम्मान गारद का निरीक्षण करते हुए

jक्षा सहयोग में संघर्ष रोकने, परस्पर सुरक्षा के हित में विश्वास पैदा करने तथा उसे बनाए रखने के लिए सशस्त्र सेनाओं के साथ–साथ रक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए सभी संपर्क एवं आदान–प्रदान शामिल हैं

14.1 भारत के रक्षा सहयोग संबंधी कार्यकलापों में मित्र विदेशी देशों के साथ रक्षा संबंधों को सुदृढ़ करना शामिल है। इस संबंध में रक्षा मंत्रालय और सशस्त्र बलों द्वारा किए गए सभी सम्पर्कों और विनिमयों का लक्ष्य, संघर्षों को रोकना और उसके समाधान के लिए उल्लेखनीय योगदान करना तथा विश्वास पैदा करना और उसे बनाए रखना है।

14.2 भारत vQxkfuLrku द्वारा अपनी राजनैतिक और सुरक्षा स्थिति को स्थिर करने के लिए किए गए प्रयासों में सहयोग करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है। भारत अफगान राष्ट्रीय सेना को सैन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, चिकित्सा प्रशिक्षण और चिकित्सा सहायता तथा उपस्कर और हार्डवेयर सहायता के संदर्भ में सहयोग करता रहा है। अफगानिस्तान के रक्षा मंत्री जनरल अब्दुल रहीम वारडाक ने 31 मई से 04 जून, 2011 तक भारत का दौरा किया।

14.3 ckXykn'k के साथ रक्षा सहयोग द्विपक्षीय यात्राओं तथा रक्षा संबंधी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के आदान–प्रदान द्वारा सुदृढ़ हुआ। नौसेनाध्यक्ष ने 04 से 06 अप्रैल, 2011 के दौरान बांग्लादेश की यात्रा की। सेनाध्यक्ष ने 20–23 जून, 2011 तक बांग्लादेश की यात्रा की। बांग्लादेश के सेनाध्यक्ष जनरल मोहम्मद अब्दुल मुबीन ने 28 नवंबर–01 दिसम्बर, 2011 तक भारत की यात्रा की तथा एनडीए, पुणे में पासिंग आउट परेड की समीक्षा की। भारत–बांग्लादेश संयुक्त सेनाभ्यास सम्प्रीति–II सिल्हेट, बांग्लादेश में 08–23 अक्तूबर, 2011 तक आयोजित किया गया।

14.4 भारत के HkVku के साथ ऐतिहासिक दृष्टि से निकट रक्षा संबंध रहे हैं। 1963 में भूटान में स्थापित भारतीय सैन्य प्रशिक्षण टीम (आईएमटीआरएटी) शाही भूटानी सेना के कार्मिकों के प्रशिक्षण में उसकी सहायता करती है। रक्षा राज्य मंत्री, श्री एम.एम. पल्लमराजू ने 24–26 अप्रैल, 2011 तक दंतक परियोजना के स्वर्ण जयंती समारोह में शामिल होने के लिए भूटान की यात्रा की। भूटान सेना के चीफ ऑपरेशन अफसर मेजर जनरल बाटू शेरिंग ने 18–20 नवंबर, 2011 तक भारत की यात्रा की।

14.5 भारत और phu के बीच चौथी वार्षिक रक्षा वार्ता (एडीडी) 09 दिसम्बर, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की तरफ से रक्षा सचिव श्री शशि कांत शर्मा ने प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया तथा चीनी

थिम्पू में दंतक स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान रक्षा राज्य मंत्री भूटान के प्रधान मंत्री, श्री ल्योंगचेन जिग्मी वाई. थिनली के साथ

पक्ष की तरफ से पीपल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के जनरल स्टाफ के उपाध्यक्ष जनरल मा जियाओत्यान ने नेतृत्व किया। उत्तरी कमान के मेजर जनरल गुरमीत सिंह के नेतृत्व में एक मल्टी कमान प्रतिनिधि मंडल ने 19–23 जून, 2011 के बीच चीन की यात्रा की। एयर वाइस मार्शल पी.एस.मान के नेतृत्व में 15 सदस्यीय स्टाफ अफसर प्रतिनिधि मंडल ने 10–13 जनवरी, 2012 के बीच चीन की यात्रा की। चीनी पक्ष की तरफ से सीमा सैन्य प्रतिनिधि मंडल ने 07–09 नवंबर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की। 27 सदस्यीय पीएलए स्टाफ अफसर प्रतिनिधि मंडल ने 25–30 दिसम्बर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की।

14.6 ekynho के साथ रक्षा सहयोग दोनों देशों की साझा समुद्री सुरक्षा चिंताओं पर आधारित है। रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री श्री थोलहाथ इब्राहिम केलेफानू ने 11–16 सितम्बर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की। नौसेनाध्यक्ष ने 11–14 जनवरी, 2012 के बीच मालदीव की यात्रा की। भारत–मालदीव संयुक्त सैन्याभ्यास इकूवेरिन–11 5–18 दिसम्बर, 2011 के बीच मालदीव में आयोजित किया गया। मालदीव सरकार के अनुरोध पर भारतीय नौसेना ने नवंबर, 2011 में मालदीव के आस–पास समुद्रवर्ती निगरानी अभियान चलाया।

14.7 रक्षा सहयोग भारत–म्यांमार द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। म्यांमार के साथ चल रहे रक्षा सहयोग संबंधी कार्यकलापों में यात्राओं का नियमित आदान–प्रदान, भारतीय नौसेना के जहाजों द्वारा पोर्ट कॉल्स तथा प्रशिक्षण आदान–प्रदान शामिल है। नौसेनाध्यक्ष ने 24–26 अगस्त, 2011 के बीच म्यांमार की यात्रा की। सेनाध्यक्ष ने 6–9 जनवरी, 2012 के बीच म्यांमार की यात्रा की।

14.8 भारत uiky के साथ विशेष रक्षा संबंध विकसित करने के लिए प्रयत्नशील है। प्रत्येक वर्ष भारतीय रक्षा संस्थानों में काफी संख्या में नेपाल सेना के कार्मिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। 14–27 मार्च के बीच काउंटर इंटेलीजेंस तथा जंगल वारफेयर स्कूल वैरेंगटे में भारत–नेपाल संयुक्त सेनाभ्यास आयोजित किया गया था। नेपाल सेना के साथ द्वितीय संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास

रक्षा सचिव, श्री शशिकांत शर्मा और चीनी पी एल ए के जनरल स्टाफ के उपाध्यक्ष, जनरल मा जियाओत्यान 9 दिसम्बर, 2011 को नई दिल्ली में चौथी वार्षिक रक्षा वार्ता में भाग लेते हुए

9–22 दिसम्बर, 2011 के बीच नेपाल में सीआईजेडब्ल्यू अमलेखगंज में आयोजित किया गया था। नेपाल के उप प्रधान मंत्री, गृह और रक्षा मंत्री श्री बिजय गछदर ने 18–20 जनवरी, 2012 के बीच भारत की यात्रा की।

14.9 भारत और ikfdLrku के रक्षा सचिवों के बीच सियाचिन वार्ता का बारहवां दौर 30–31 मई, 2011 के बीच नई दिल्ली में आयोजित किया गया था । भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व रक्षा सचिव श्री प्रदीप कुमार द्वारा किया गया था तथा पाकिस्तानी पक्ष का नेतृत्व रक्षा सचिव लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अथर अली द्वारा किया गया था।

14.10 वर्ष के दौरान Jhyadk के साथ रक्षा संबंधों में गति आई। वायुसेनाध्यक्ष ने 17–19 जनवरी, 2011 के बीच श्रीलंका की यात्रा की। लेफ्टिनेंट जनरल जगत जयसूर्या, सीओएएस श्रीलंका ने 5–10 दिसम्बर, 2011 के बीच भारत की तथा आईएमए, देहरादून में पासिंग आउट परेड की समीक्षा की। तीसरी वायुसेना स्टाफ वार्ता 20–22 सितम्बर, 2011 के बीच कोलम्बो में आयोजित की गई । श्रीलंका के साथ प्रारंभिक सेना स्टाफ वार्ता 29 जून–02 जुलाई, 2011 के बीच नई दिल्ली में आयोजित की गई। प्रारंभिक नौसेना स्टाफ वार्ता 07–09 सितम्बर, 2011 के बीच दिल्ली में आयोजित की गई। भारत–श्रीलंका संयुक्त नौसेना अभ्यास स्लिनेक्स–2011 श्रीलंका में 19–23 सितम्बर, 2011 के बीच आयोजित किया गया। दोनों देशों के बीच प्रारंभिक वार्षिक रक्षा वार्ता 31 जनवरी, 2012 को संपन्न हुई। रक्षा सचिव श्री शशि कांत शर्मा ने भारतीय प्रतिनिधि मंडल की अध्यक्षता की। श्रीलंका के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व श्रीलंका के रक्षा सचिव श्री गोताबाया राजपक्ष द्वारा किया गया।

14.11 bMkuf'k;k के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं। नौसेनाध्यक्ष ने जनवरी, 2011 में इंडोनेशिया की यात्रा की। भारतीय नौसेना और इंडोनेशियाई नौसेना ने 28 सितम्बर से 13 अक्तूबर, 2011 के दौरान समन्वित गश्त (कोरपेट्स) आयोजित की ।

14.12 tkiku के साथ भारत के रक्षा संबंधों में उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान–प्रदान तथा प्रशिक्षण के आदान–प्रदान के कारण निरंतर सतत बढ़ोतरी हुई है। जापान के साथ सेना से सेना के बीच सातवीं वार्ता 20 मई, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। नौसेना स्टाफ वार्ता 21–23 जून, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। रक्षा मंत्री ने 1–3 नवंबर, 2011 के बीच जापान की यात्रा की तथा अपने समकक्ष श्री यासूओ इचिकावा के साथ चर्चा की।

14.13 eyf'k;k के साथ रक्षा संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं। मलेशिया–भारत रक्षा सहयोग समिति (मिडकॉम) की नौवीं बैठक के लिए रक्षा सचिव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने 16–17 जनवरी, 2012 के बीच मलेशिया की यात्रा की। वायुसेनाध्यक्ष ने 31 जनवरी–03 फरवरी, 2012 के बीच मलेशिया की यात्रा की। चौथी भारतीय वायुसेना–रॉयल मलेशियाई वायुसेना स्टाफ वार्ता अक्तूबर, 2011 में मलेशिया में आयोजित की गई। भारतीय सेना और रॉयल मलेशियाई सेना ने अपनी दूसरी स्टाफ वार्ता अक्तूबर, 2011 में भारत में आयोजित की।

14.14 फिलीपीन्स के साथ रक्षा संबंध गति प्राप्त कर रहे हैं। संयुक्त रक्षा सहयोग समिति नामक एक संस्थागत तंत्र स्थापित किया गया। इस समिति की प्रथम बैठक 18 जनवरी, 2012 को मनीला में आयोजित की गई। भारतीय नौसेना के जहाजों ने मार्च, 2011 तथा मई, 2011 में फिलीपीन्स स्थित बंदरगाहों की यात्रा की।

14.15 भारत और सिंगापुर के बीच रक्षा संबंधों में गति आई है। सेना स्टाफ वार्ता का छठा दौर फरवरी, 2011 में भारत में आयोजित किया गया था। वायुसेना स्टाफ वार्ता का पांचवां दौर 9–11 मार्च, 2011 के बीच सिंगापुर में आयोजित किया गया। सातवीं भारत–सिंगापुर रक्षा नीति वार्ता 22 मार्च, 2011 को सिंगापुर में आयोजित की गई। वार्ता की सह–अध्यक्षता रक्षा सचिव श्री प्रदीप कुमार तथा श्री चियांग ची फू, परमानेंट सेक्रेटरी (रक्षा), सिंगापुर द्वारा की गई। आर एंड डी सहयोग संबंधी रक्षा प्रौद्योगिकी संचालन समिति की सातवीं बैठक 12 अक्तूबर,

2011 को भारत में आयोजित की गई। भारत–सिंगापुर रक्षा कार्य समूह की छठी बैठक 10 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। दोनों देशों की सेनाओं द्वारा 4–21 जनवरी, 2011 के दौरान देवलाली (पूर्व अग्नि वारियर) में तोपखाना अभ्यास तथा 01–31 मार्च, 2011 के दौरान बबीना (पूर्व बोल्ड कुरूक्षेत्र) में कवचित अभ्यास आयोजित किया गया। भारतीय नौसेना और सिंगापुर गणराज्य की नौसेना के बीच संयुक्ताभ्यास (सिम्बेक्स) 18–25 मार्च, 2011 के दौरान आयोजित किया गया। भारतीय वायुसेना तथा सिंगापुर गणराज्य की वायुसेना के बीच संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण 14 अक्तूबर–09 दिसम्बर, 2011 के बीच कलाईकुंडा में आयोजित किया गया।

14.16 FkkbyS.M तथा भारत के रक्षा मंत्रालय के स्तर पर रक्षा वार्ता वर्ष के दौरान स्थापित की गई । इस वार्ता की प्रारंभिक बैठक 23 दिसम्बर, 2011 को आयोजित की गई। थाईलैंड के प्रधान मंत्री की यात्रा के दौरान 25 जनवरी, 2012 को थाईलैंड के साथ रक्षा सहयोग संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। दूसरी वायुसेना स्टाफ वार्ता 14–16 फरवरी, 2011 के दौरान थाईलैंड में आयोजित की गई। भारतीय सेना और रॉयल थाई सेना के बीच 'मैत्री' नामक संयुक्ताभ्यास सितम्बर, 2011 में थाईलैंड में आयोजित किया गया। चौथी नौसेना स्टाफ वार्ता जुलाई, 2011 में आयोजित की गई। भारतीय नौसेना तथा रॉयल थाई नौसेना के बीच समन्वित गश्त (कोरपेट) का 13वां चक्र नवम्बर, 2011 में आयोजित किया गया।

14.17 भारत–वियतनाम रक्षा संबंध मैत्रीपूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण रहे हैं। वियतनाम पीपल्स नौसेना के कमांडर–इन–चीफ तथा नेशनल डिफेंस के उप मंत्री वाइस एडमिरल न्यूएन वेन हेन ने जून, 2011 में भारत की यात्रा की। छठी भारत–वियतनाम सुरक्षा वार्ता 14 सितम्बर, 2011 को हनोई में आयोजित की गई। रक्षा सचिव ने भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया जबकि नेशनल डिफेंस के उप मंत्री लेफ्टिनेंट जनरल न्यूएन ची विन्ह द्वारा वियतनाम के प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया गया । वियतनाम के राष्ट्रपति श्री तुरोंग तेन सेंग की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान 12 अक्तूबर, 2011 को नई दिल्ली में रक्षा मंत्री ने उनसे मुलाकात की।

14.18 vkLVªsfy;k के साथ रक्षा आदान–प्रदान में संतोषजनक प्रगति हुई है। वायुसेनाध्यक्ष ने 28 फरवरी–03 मार्च, 2011 के बीच ऑस्ट्रेलिया की यात्रा की। ऑस्ट्रेलिया के साथ 5वीं नौसेना स्टाफ वार्ता 06–08 अप्रैल, 2011 के बीच भारत में आयोजित की गई। ऑस्ट्रेलिया के रक्षा मंत्री श्री स्टीफन स्मिथ ने 06–10 दिसम्बर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की। दोनों पक्षों की नौसेनाओं के जहाजों ने एक–दूसरे के बंदरगाहों की यात्रा जारी रखी। ऑस्ट्रेलियाई जहाज एचएमएएस स्टुआर्ट ने 03–06 जून, 2011 के बीच मुम्बई की यात्रा की।

14.19 U;wthySaM के साथ भारत के रक्षा संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं। न्यूज़ीलैंड के रक्षा विज्ञान तथा इनोवेशन मंत्री डॉ. वायने मेप्प ने 27–28 अप्रैल, 2011 के बीच भारत की राजकीय यात्रा की। उन्होंने 27 अप्रैल, 2011 को रक्षा मंत्री से मुलाकात की।

14.20 रक्षा अधिप्राप्ति, उत्पादन तथा विकास पर भारत–bTjkby उप कार्य समूह की छठी बैठक 11 जनवरी, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की तरफ से श्री विवेक राय, महानिदेशक (अधिग्रहण) तथा इजराइली पक्ष की तरफ से श्री श्माया अवियेली, निदेशक सिबात (रक्षा सहयोग तथा रक्षा निर्यात विभाग), रक्षा मंत्रालय, इजराइल द्वारा इसकी सह–अध्यक्षता की गई। इजराइल के साथ सातवीं नौसेना स्टाफ वार्ता 31 जनवरी से 2 फरवरी, 2011 के दौरान इजराइल में आयोजित की गई। रक्षा सहयोग पर भारत– इजराइल संयुक्त कार्य समूह की नवीं बैठक 15 मई, 2011 को तेल अवीव में आयोजित की गई। भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व रक्षा सचिव श्री प्रदीप कुमार द्वारा किया गया जबकि इजराइली प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व इजराइली रक्षा मंत्रालय के महानिदेशक मेजर जनरल (आरईएस) इहुद शानी द्वारा किया गया।

इजराइली वायुसेनाध्यक्ष ने 21–24 नवंबर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की।

14.21 भारत के vkeku के साथ प्रगाढ़ रक्षा संबंध हैं। 5वीं वायुसेना स्टाफ वार्ता 14–15 फरवरी, 2011 को ओमान में आयोजित की गई थी। मैकेनाइज़्ड बलों के महानिदेशक ने मई, 2011 में ओमान की यात्रा की। भारत–ओमान संयुक्त सैन्य सहयोग समिति (जेएमसीसी) की पांचवीं बैठक नई दिल्ली में 26 सितम्बर, 2011 को आयोजित की गई। भारतीय पक्ष का नेतृत्व रक्षा सचिव द्वारा किया गया जबकि ओमानी पक्ष का नेतृत्व ओमान सल्तनत के रक्षा मंत्रालय में अंडर सेक्रेटरी श्री मोहम्मद बिन नासिर अल–रस्बी द्वारा किया गया। वायुसेना का दूसरा संयुक्त अभ्यास 'एक्स ईस्टर्न' ब्रिज अक्तूबर, 2011 में जामनगर में आयोजित किया गया। ओमान सल्तनत में रक्षा कार्य मंत्री श्री बद्र बिन सौद बिन ह्रिब अल बुसैदी ने 28 दिसम्बर, 2011 को भारत की राजकीय यात्रा की। यात्रा के दौरान 06 दिसम्बर, 2005 को हस्ताक्षरित सैन्य सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन को 05 वर्षों की अवधि के लिए बढ़ाया गया।

14.22 भारत–;,b संयुक्त रक्षा सहयोग समिति की चौथी बैठक 10 अप्रैल, 2011 को आबू धाबी में आयोजित की गई।

14.23 पारस्परिक विश्वास और समझ के आधार पर भारत और : l के दीर्घकालीन रक्षा संबंध रहे हैं। रूस भारत को रक्षा उपस्कर की आपूर्ति करने वाला महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। यह एकमात्र देश है जिसके साथ दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों के स्तर पर भारत का संस्थागत वार्षिक रक्षा सहयोग तंत्र मौजूद है।

14.24 भारत–रूस उच्च स्तरीय प्रबोधन समिति की चौथी बैठक 14–16 जून, 2011 को मास्को में आयोजित की गई। बैठक की सह–अध्यक्षता रक्षा सचिव श्री प्रदीप कुमार तथा श्री एम.ए. दिमित्रेव, निदेशक, एफएसएमटीसी, रूस द्वारा की गई। जहाज निर्माण, उड्डयन तथा

रक्षा मंत्री और ओमान सल्तनत के रक्षा कार्य मंत्री, श्री बदर बिन सौद हरीब अल बुसैदी सैन्य सहयोग पर समझौता ज्ञापन को आगे बढ़ाने हेतु दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हुए

भूमि व्यवस्था पर भारत–रूस कार्य समूह (एसएलएएस डब्ल्यूजी) तथा सैन्य तकनीकी सहयोग पर कार्य समूह (एमटीसी डब्ल्यूजी) की बैठकें 7–8 सितम्बर, 2011 के बीच सेंट पीटर्सबर्ग, रूस में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की तरफ से इन बैठकों की सह–अध्यक्षता क्रमशः श्री आर.के.सिंह, सचिव (रक्षा उत्पादन) तथा श्री विवेक रॉय, महानिदेशक (अधिग्रहण) द्वारा की गई।

14.25 सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत–रूस अंतर–सरकारी आयोग (आईआरआईजीसी–एमटीसी) की 11वीं बैठक 4 अक्तूबर, 2011 को मास्को में आयोजित की गई। बैठक की सह–अध्यक्षता रक्षा मत्री तथा श्री ए.ई. सेरद्यूकोव, रक्षा मंत्री, रूस द्वारा की गई। दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने 11वीं आईआरआईजीसी–एमटीसी बैठक की समाप्ति पर प्रोटोकोल पर हस्ताक्षर किए।

14.26 वायुसेनाध्यक्ष ने 23–27 मई, 2011 को रूस की यात्रा की। नौसेनाध्यक्ष ने भी 12–17 जुलाई, 2011 को रूस की यात्रा की।

14.27 r|d|efuLrku के रक्षा उप मंत्री कर्नल जेपबार अक्य्येव ने 31 मई से 03 जून, 2011 के बीच भारत की यात्रा की।

14.28 बिश्केक स्थित किर्गिज़–भारतीय जैव चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (केआईएमबीएमआरसीं) के उद्घाटन के लिए रक्षा मंत्री ने 5–6 जुलाई, 2011 को fdfx tLrku की यात्रा की। इसको संयुक्त रूप से रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) तथा राष्ट्रीय हृदय विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय औषधि केंद्र (एनसीसीआईएम), बिश्केक द्वारा स्थापित किया गया है। इसके पश्चात किर्गिज़ रक्षा मंत्री मेजर जनरल अबीबिला कुदईबिर्दिएव ने 07–10 सितम्बर, 2011 के बीच भारत की यात्रा की।

14.29 रक्षा मंत्री ने 03 अक्तूबर, 2011 को r tkfdLrku की यात्रा की तथा तजाकी रक्षा मंत्री के साथ चर्चा की।

रूस एकमात्र ऐसा देश है जिसके साथ भारत का दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों के स्तर पर संस्थागत वार्षिक रक्षा सहयोग तंत्र मौजूद है।

14.30 सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत–d tk[kLrku संयुक्त कार्य समूह की दूसरी बैठक 6–7 सितम्बर, 2011 के बीच नई दिल्ली में आयोजित की गई। सेनाध्यक्ष ने 16–19 नवंबर, 2011 के दौरान उज़बेकिस्तान और कज़ाखस्तान की यात्रा की।

14.31 exkfy;k के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंध मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण रहे हैं तथा इसमें उच्च स्तरीय यात्राएं, प्रशिक्षण सहयोग तथा संयुक्त अभ्यास परिलक्षित होते हैं। रक्षा सहयोग पर भारत–मंगोलिया संयुक्त कार्य समूह की चौथी बैठक 5 मई, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। 28 जुलाई, 2011 को राष्ट्रपति की मंगोलिया यात्रा के दौरान मंगोलिया के साथ रक्षा मामलों में सहयोग संबंधी एक करार पर हस्ताक्षर किए गए थे। सेनाध्यक्ष ने सितम्बर, 2011 में मंगोलिया की यात्रा की और मंगोलियाई सेना के शताब्दी समारोह में भाग लिया। भारतीय सेना और मंगोलियाई सशस्त्र बलों के बीच 'नोमेडिक एलिफेंट' नामक संयुक्ताभ्यास सितम्बर, 2011 में मंगोलिया में आयोजित किया गया।

14.32 भारत और p|d x.kjkT; के बीच रक्षा संबंधों में तीव्र गति से निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत–चेक संयुक्त रक्षा समिति (जेडीसी) की चौथी बैठक 27 सितम्बर, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक की सह–अध्यक्षता श्री विवेक राय, महानिदेशक (अधिग्रहण) तथा चेक गणराज्य के रक्षा अधिग्रहण उप मंत्री श्री रूडोल्फ ब्लाज़ेक द्वारा की गई।

14.33 भारत के Lykokfd;k के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध है। स्लोवाक के रक्षा मंत्री श्री लुबोमीर गाल्को और स्लोवाक गणराज्य के वित्त मंत्री डॉ. जुराज मिस्कोव ने भारत की यात्रा की तथा 13 अप्रैल, 2011 को रक्षा राज्य मंत्री श्री एम.एम.पल्लमराजू के साथ चर्चा की।

14.34 l|;qä jkT; vejhdk के साथ भारत के संबध दोनों देशों के

रक्षा मंत्री और किर्गिज राष्ट्रपति सुश्री रोजा ओटनबेवा बिश्केक, किर्गिजस्तान में माउंटेन बायोमेडिकल रिसर्च सेंटर का उद्घाटन करते हुए

बीच व्यापक सामरिक सहभागिता के महत्वपूर्ण तत्व हैं। द्विपक्षीय रक्षा सहयोग में वृद्धि हुई है जैसा कि नियमित रूप से किए जाने वाले सैन्य सहयोग कार्यकलापों, विशेषज्ञों के नियमित आदान–प्रदान, परस्पर उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान–प्रदान, रक्षा अनुसंधान में संवर्धित सहयोग तथा संयुक्त अभ्यासों के नियमित संचालन द्वारा प्रदर्शित होता है।

14.35 भारत–अमरीका रक्षा उत्पादन एवं अधिप्राप्ति समूह (डीपीपीजी) की नौवीं बैठक 01–02 मार्च, 2011 को वाशिंगटन डीसी, अमरीका में आयोजित की गई। श्री विवेक राय, महानिदेशक (अधिग्रहण) तथा वाइस एडमिरल विलियम लैंदे, निदेशक, रक्षा सुरक्षा सहयोग एजेंसी (डीएससीए), अमरीकी रक्षा विभाग ने क्रमशः भारत और अमरीकी पक्ष का नेतृत्व किया।

14.36 भारत–अमरीका रक्षा उत्पादन समूह (डीपीजी) की ग्यारहवीं बैठक 3–4 मार्च, 2011 को वाशिंगटन डीसी, अमरीका में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की तरफ से डीपीजी बैठक की सह–अध्यक्षता रक्षा सचिव तथा अमरीकी पक्ष की तरफ से रक्षा नीति के अंडर सेक्रेटरी (यूएसडीपी) द्वारा की गई।

संयुक्त राज्य अमरीका के साथ भारत के रक्षा संबंध, दोनों देशों के बीच व्यापक सामरिक सहभागिता का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

14.37 भारत–अमरीका उत्पादन एवं अधिप्राप्ति समूह (डीपीपीजी) की 10वीं बैठक 16–17 नवंबर, 2011 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित की गई। श्री विवेक राय, महानिदेशक (अधिग्रहण) तथा वाइस एडमिरल विलियम लैंदे, निदेशक, रक्षा सुरक्षा सहयोग एजेंसी (डीएससीए), अमरीकी रक्षा विभाग ने क्रमशः भारत और अमरीकी पक्ष का नेतृत्व किया।

14.38 1995 में "रक्षा परामर्शदात्री समूह हेतु विचारार्थ विषय" पर हस्ताक्षर के साथ भारत और fcVu के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग वार्ता स्थापित हो गई थी। तब से भारत और ब्रिटेन के बीच रक्षा संबंधों में सतत वृद्धि हो रही है। दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं, प्रशिक्षण और विशेषज्ञों का आदान–प्रदान तथा रक्षा उत्पादन के लिए संयुक्त परियोजनाओं का नियमित आदान–प्रदान होता है।

14.39 ब्रिटेन के डिफेन्स सेक्रेटरी ऑफ स्टेट डॉ. लिएम फॉक्स ने 08 जुलाई, 2011 को भारत की यात्रा की। ब्रिटेन के नौसेनाध्यक्ष एडमिरल सर मार्क स्टेनहोप ने जनवरी, 2011 में भारत की यात्रा की। ब्रिटेन के चीफ ऑफ जनरल स्टाफ, जनरल सर पीटर वाल ने मई, 2011 में भारत की यात्रा की। रक्षा परामर्शदात्री समूह की 14वीं बैठक 08 फरवरी, 2012 को आयोजित की गई।

14.40 भारत और Ýkl के बीच सौहार्दपूर्ण एवं परस्पर लाभप्रद रक्षा संबंध हैं। सर्विस–टू–सर्विस स्टाफ वार्ता (सेना, नौसेना और वायुसेना) तथा सैन्य उप समिति (एमएससी) की बैठक क्रमशः 12–13 दिसम्बर, 2011 तथा 14 दिसम्बर, 2011 को सम्पन्न हुई।

14.41 फ्रांस के रक्षा मंत्री श्री गेरार्ड लोंगेट ने मई, 2011 में भारत की यात्रा की। जनरल जीन पॉल पालोमेरोस, वायुसेनाध्यक्ष, फ्रांस ने सितम्बर, 2011 में भारत की यात्रा की।

14.42 t euh के साथ रक्षा संबंध लगातार आगे बढ़े हैं। भारत–जर्मनी उच्च रक्षा समिति (एचडीसी) की 5वीं

बैठक 6–7 अप्रैल, 2011 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। भारतीय पक्ष की तरफ से रक्षा सचिव श्री प्रदीप कुमार तथा जर्मन पक्ष की तरफ से रक्षा संबंधी फेडरल स्टेट सेक्रेटरी श्री रूडीगर वॉल्फ द्वारा एचडीसी बैठक की सह–अध्यक्षता की गई।

14.43 डॉ. थॉमस डी मैजैरे, फैडरल रक्षा मंत्री, जर्मनी ने मई, 2011 में भारत की यात्रा की ।

14.44 ukos के रक्षा उप मंत्री श्री रोजर इंजेब्रिगस्टन के निमंत्रण पर रक्षा राज्य मंत्री श्री एम.एम.पल्लमराजू के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने 26–30 सितम्बर, 2011 को नॉर्वे की यात्रा की।

14.45 भारत और rqdh के सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंध हैं और रक्षा संबंधों में बढ़ोतरी हो रही है। अध्यक्ष, चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी तथा वायुसेना अध्यक्ष (सीओएससी एवं सीएएस) ने 18–21 अप्रैल, 2011 को तुर्की की यात्रा की। नौसेनाध्यक्ष ने भी 12–17 जून, 2011 को तुर्की की यात्रा की।

14.46 भारत के ekt kfEcd के साथ परम्परागत रूप से काफी घनिष्ठ संबंध रहे हैं। मोज़ाम्बिक के रक्षा मंत्री श्री फिलिप जासिंटो न्यूस्सी ने 27 जून–01 जुलाई, 2011 के बीच भारत की यात्रा की तथा रक्षा मंत्री के साथ चर्चा की।

14.47 भारत और ukehfc;k के घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंध हैं। नामीबिया के रक्षा मंत्री ने 9–13 फरवरी, 2011 को बेंगलूर में आयोजित एरो–इंडिया में भाग लिया। श्री पीट्रस पीटर शिवूते, परमानेंट सेक्रेटरी, रक्षा मंत्रालय, नामीबिया ने 5–9 फरवरी, 2011 को भारत की यात्रा की।

14.48 भारत और ls'kYl के दीर्घकालीन रक्षा संबंध रहे हैं जो उच्च स्तरीय यात्राओं, प्रशिक्षण आदान–प्रदान तथा रक्षा परिसम्पत्तियों की आपूर्ति और तैनाती में प्रदर्शित होते हैं। भारत–सेशल्स संयुक्त सैन्याभ्यास लमित्ये–II 14–27 नवंबर, 2011 को सेशल्स में आयोजित किया गया। सेशल्स के विदेश मंत्री श्री जीन पॉल एडम ने फरवरी, 2012 में भारत की यात्रा की। उन्होंने 16 फरवरी, 2012 को रक्षा मंत्री के साथ चर्चा की।

14.49 भारत–cktsy संयुक्त रक्षा समिति (जेडीसी) की दूसरी बैठक 18–20 अक्तूबर, 2011 को ब्राज़ील में आयोजित की गई। भारत और ब्राज़ील पक्षों की तरफ से क्रमशः श्री आर.के.माथुर, विशेष सचिव तथा जनरल फ्रांसिस्को कारलोस मोडेस्टो, चीफ ऑफ स्ट्रेटेजिक इंटेलिजेंस, रक्षा मंत्रालय द्वारा सह–अध्यक्षता की गई।

14.50 विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद की bDokMkj की यात्रा के दौरान 02 मार्च, 2011 को इक्वाडोर गणराज्य के रक्षा मंत्रालय तथा भारत गणराज्य के रक्षा मंत्रालय के बीच रक्षा सहयोग संबंधी एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए ।

14.51 मित्र देशों के साथ रक्षा सहयोग संबंधी क्रियाकलापों की विस्तृत परिधि का लक्ष्य वैश्विक सद्भावना और सौहार्द में योगदान देने के उद्देश्य से क्षेत्र में शांति और स्थिरता का वातावरण सृजित करना है।

15

समारोह और अन्य कार्यकलाप

गणतंत्र दिवस परेड–2012

रक्षा मंत्रालय स्वायत्त संस्थाओं के माध्यम से अकादमिक और साहसिक दोनों ही प्रकार के कार्यकलापों को प्रोत्साहित करता है

समारोह और अन्य कार्यकलाप

15.1 रक्षा मंत्रालय स्वायत्त संस्थाओं को नियमित रूप से आर्थिक सहायता देकर अकादमिक तथा साहसिक दोनों प्रकार के कार्यकलापों को प्रोत्साहन देता है। ये संस्थाएं हैं :

(i) रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली;

(ii) दार्जिलिंग और उत्तरकाशी स्थित पर्वतारोहण संस्थान; और

(iii) पहलगांव स्थित जवाहर पर्वतारोहण एवं शीत क्रीड़ा संस्थान।

15.2 समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इन संस्थानों के महत्वपूर्ण कार्यकलाप आगे के पैराओं में दिए जा रहे हैं।

रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान(आई डी एस ए)

15.3 नवंबर, 1965 में स्थापित रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण स्थान(आई डी एस ए), समय–समय पर संशोधित 1860 के सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम–III (पंजाब संशोधन अधिनियम 1957) के तहत पंजीकृत संस्था है। आई डी एस ए का मुख्य अधिदेश राष्ट्रीय सुरक्षा तथा रक्षा नीति के आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों सबंधी प्रभाव के मुद्दों का अध्ययन तथा अनुसंधान करना है। वर्ष 2011 में, राष्ट्रीय एवं अतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलन, संगोष्ठियां, गोलमेज संभाए, व्याख्यान तथा अन्य विचारकों के साथ वार्ताएं आयोजित की गईं।

15.4 vrjk"Vh; vkj jk"Vh; lEeyu@ lxk"Bh@ lokn % 13 वां एशियाई सुरक्षा सम्मेलन(16–18 फरवरी, 2011) 'एक नई एशियाई व्यवस्था की ओर' विषय पर आयोजित किया गया। इसका उद्घघाटन रक्षा मंत्री द्वारा किया गया। सम्मेलन में क्षेत्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर विचार–विमर्श किया गया। संस्थान ने 15–16 नवंबर, 2011 को 'दक्षिण एशिया के लिए सहयोगी सुरक्षा रूपरेखा' पर 5वां दक्षिण एशियाई सम्मेलन आयोजित किया। रक्षा मंत्री द्वारा मुख्य अभिभाषण दिया गया। उपर्युक्त के अलावा, संस्थान ने निम्नलिखित सम्मेलन, आदि भी आयोजित किए :–

- अंतरिक्ष और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा शीर्षक से एक 2 दिवसीय सम्मेलन, 30–31 मार्च, 2011 को आयोजित।
- रक्षा अधिप्राप्ति पर एक 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय

संगोष्ठी, 12–14 जुलाई, 2011 को आयोजित।

- 'एशिया में स्थायित्व की ओर' विषय पर चौथी एमईए–आई आई एस एस–आई डी एस ए विदेश नीति वार्ता 21 नवंबर, 2011 को आयोजित।
- 'भारत–अफ्रीका सामरिक वार्ता' विषय पर एक 2 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 24–25 नवंबर, 2011 को आयोजित।
- 'सीमा–पार नदियां : सहयोग के लिए बहुपक्षीय रूपरेखा' पर आईडीएसए–पीआरआईओ (पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑस्लो) सम्मेलन, 2011, 30 नवंबर, 2011 को आयोजित।

15.5 fo'k"k@fof'k"V 0;fä;ksa dk 0;k[;ku % संस्थान ने वर्ष के दौरान विशेष/विशिष्ट व्यक्तियों के बहुत–से व्याख्यान आयोजित किए । इस श्रृंखला में प्रो. कान्ति बाजपेयी द्वारा "भारत और चीन : क्या एशिया के दिग्गज सहयोग कर सकते हैं ?" पर दिया गया व्याख्यान महत्वपूर्ण था। इसकी अध्यक्षता जम्मू तथा कश्मीर के राज्यपाल, श्री एन.एन.वोहरा ने की।

15.6 f}i{kh; fopkj&foe'k % आईडीएसए–आईएफएस (नॉर्वे का रक्षा अध्ययन संस्थान) कार्यशाला 'न्यूक्लियर हथियार और संगठन सिद्धान्त' 08 जनवरी, 2011 को आयोजित किया गया। यह कार्यशाला अप्रसार के मुद्दों, नाभिकीय ऊर्जा और युद्ध तथा शांति के समय न्यूक्लियर हथियारों की उपयोगिता के संबंध में सैद्धांतिक रूपरेखा तथा महत्वपूर्ण संगठनात्मक पहलुओं पर संकेंन्द्रित थी।

15.7 द्वितीय आईडीएसए–आईएफएस द्विपक्षीय वार्ता 'एक जटिल विश्व के लिए सामरिक आयोजना' विषय पर 4–5 अप्रैल, 2011 को आयोजित की गई। उद्घाटन अभिभाषण नॉर्वे के विदेश मंत्रालय के उप मत्री, एस्पेन बार्थ आइड द्वारा दिया गया। वैश्विक सामरिक प्राथमिकताओं; भारत के पड़ोस में सामरिक प्राथमिकताओं; और भारत की महत्वपूर्ण रणनीति पर पुनर्विचार पर एक परिचर्चा आयोजित की गई।

15.8 आईडीएसए–सीआईसीआईआर (चीनी समसामयिक अंतर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान) द्विपक्षीय वार्ता 21 अप्रैल, 2011 को आयोजित की गई। स्वागत टिप्पणी सीआईसीआईआर के उपाध्यक्ष, जी झिए द्वारा की गई और विशेष अभिभाषण राजदूत टी सी ए रंगाचारी द्वारा दिया गया। चीन–भारत संबंधः अर्थव्यवस्था और व्यापार; चीन–भारत संबंधः राजनीतिक और सामरिक मुद्दों; क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों तथा भारत चीन सहयोग व वैश्विक मामलों पर भारतीय एवं चीनी परिप्रेक्ष्य पर भी विचार–विमर्श किया गया।

15.9 आई डी एस ए– बी आई आई एस एस(बांग्लादेश अंतर्राष्ट्रीय एवं सामरिक अध्ययन संस्थान) द्विपक्षीय वार्ता 9–10 मई, 2011 को आयोजित की गई। बी आई आई एस एस प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व मेजर जनरल मोहम्मद इमरुल क्यायस द्वारा किया गया। बांग्लादेश में भारत के पूर्व उच्चायुक्त, राजदूत बीणा सीकरी ने उद्घाटन अभिभाषण दिया। भारत में बांग्लादेश के उप उच्चायुक्त ने मुख्य अभिभाषण दिया ।

15.10 iLrd ifjppk ep% संस्थान के संपर्क (आउटरीच) कार्यक्रम के भाग रूप में, वर्ष 2009 में एक पुस्तक परिचर्चा मंच की शुरूआत की गई। इसका उद्देश्य उन अध्येताओं के साथ बातचीत करना है जिनके कार्य का भारत की सुरक्षा और विदेश नीति के उद्देश्यों और अभिमुखीकरण से संबंध है।

15.11 इस श्रृंखला का प्रथम विचार–विमर्श श्री गिरिधारी नायक, अपर महानिदेशक (एस आई बी एवं प्रशिक्षण), छत्तीसगढ़ द्वारा लिखित "नव नक्सल चुनौती : मुद्दे और विकल्प" शीर्षक वाली पुस्तक पर 4 मार्च, 2011 को किया गया । आई एन एस पी पुस्तक विचार–विमर्श मंच के एक हिस्से के रूप में प्रोफेसर पी.आर. कुमारस्वामी, अध्यक्ष, पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र, एसआईएस, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय ने 9 मार्च, 2011 को अपनी नवीनतम पुस्तक 'भारत की इजराइल नीति' पर वार्ता की। नीति अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली में वरिष्ठ

अनुसंधान सहायक, डॉ. जयश्री विवेकानंदन द्वारा अपनी नवीनतम पुस्तक "इंटैरोगेटिंग इन्टरनेशनल रिलेशंसः इंडिया'ज स्ट्रेटेजिक प्रेक्टिस एंड दि रिटर्न ऑफ हिस्टरी" पर 14 मार्च, 2011 को विचार–विमर्श आयोजित किया गया।

15.12 vkbZ Mh ,l , izdk'ku% आई डी एस ए के अध्येताओं द्वारा संपादित, वर्ष 2011 के दौरान महत्वपूर्ण प्रकाशनों में "एशिया 2030 : दि अनफोल्डिंग फ्यूचर "(डॉ. नम्रता गोस्वामी, विंग कमांडर अजय लेले और ब्रिगेडियर रुमेल दहिया (सेवानिवृत्त); "इमेजिनिंग एशिया इन 2030" (विंग कमांडर अजय लेले और डॉ. नम्रता गोस्वामी द्वारा संपादित); "दि टैरर चैलेंज इन साउथ् एशिया एंड प्रोस्पेक्ट ऑफ रीजनल कोऑपेरेशन" (डॉ. आनन्द कुमार द्वारा संपादित); नॉन–स्टेट ऑर्म्ड ग्रुप्स इन साउथ एशियाः ए प्रिलिमिनेरी स्ट्रक्चर्ड फोकस्ड कम्पेरीजन" (डॉ. अर्पिता अनन्त द्वारा संपादित) और "टूवर्डस ए न्यू एशियन ऑर्डर "(कर्नल अली अहमद, डॉ. प्रशांत कुमार सिंह और डॉ जगन्नाथ पांडा द्वारा संपादित) शामिल थे।

15.13 if'k{k.k ikB~;Øe% आईडीएसए ने भारत सरकार के सिविलियन और सैन्य अफसरों के लिए अपने अल्प अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी जारी रखे, जिनमें संस्थान के अध्येताओं और बाहर के चुने हुए विशेषज्ञों ने राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यान दिए। चलाए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से कुछ मुख्यालय एकीकृत रक्षा स्टाफ के लिए आसूचना अभिमुखीकरण पाठ्यक्रम, भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अफसरों के लिए रक्षा और सुरक्षा मॉड्यूल हेतु आयोजित व्याख्यान; सीमा सुरक्षा बल के उप महानिदेशकों के लिए रक्षा सुरक्षा मॉड्यूल लेवल–II; वरिष्ठ बी एस एफ कमांडेंट पाठ्यक्रम और भारतीय पुलिस सेवा पाठ्यक्रम थे।

15.14 47oka vkbZMh,l, LFkkiuk fnol% 11 नवंबर, 2011 को मनाया गया। रक्षा मत्री और आईडीएसए के अध्यक्ष ने अध्यक्षीय अभिभाषण दिया तथा उत्कृष्टता के लिए 5वां के. सुब्रह्मण्यम पुरस्कार व अध्यक्षीय पुरस्कार प्रदान किए। 5वां के. सुब्रह्मण्यम पुरस्कार प्रोफेसर श्रीनाथ राघवन को प्रदान किया गया जो सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च में सीनियर फैलो हैं। रक्षा मत्री ने आई डीएसए के छह अध्येताओं, विंग कमांडर अजय लेले, श्री जॉय थॉमस करक्काट्टू, डॉ. सरिता आजाद, श्री लक्ष्मण कुमार बेहरा, ब्रिगेडियर हरिन्दर सिंह और श्री अनित मुखर्जी को उत्कृष्टता के लिए अध्यक्ष का पुरस्कार भी प्रदान किया। तत्पश्चात, "टुवर्डस ए नेशनल सिक्योरिटी स्ट्रेटेजी" विषय पर एक परिचर्चा भी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री श्याम सरन पूर्व विदेश सचिव तथा प्रधानमंत्री के विशेष राजदूत द्वारा की गई।

पर्वतारोहण संस्थान

15.15 रक्षा मंत्रालय, संबंधित राज्य सरकारों के साथ मिलकर तीन पर्वतारोहण संस्थान – पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग स्थित हिमालय पर्वतारोहण संस्थान, उत्तराखंड में उत्तरकाशी स्थित नेहरू पर्वतारोहण संस्थान तथा

जम्मू–कश्मीर में पहलगाम स्थित जवाहर पर्वतारोहण संस्थान एवं शीत क्रीड़ा संस्थान चलाता है। ये संस्थान स्वायत्त पंजीकृत समितियों के रूप में चलाए जाते हैं और उन्हें स्वायत्तशासी निकायों का दर्जा प्रदान किया गया है। रक्षा मंत्री इन संस्थानों के अध्यक्ष होते हैं और संबंधित राज्य के मुख्य मंत्री संस्थान के उपाध्यक्ष होते हैं। इन संस्थानों का प्रशासन कार्यकारी परिषदों द्वारा चलाया जाता है जिनमें प्रत्येक संस्थान की आम सभा द्वारा चुने गए सदस्य, दानदाताओं और/अथवा संस्थान के उद्देश्य को बढ़ावा देने वाले व्यक्तियों में से नामित सदस्य तथा केंद्र व राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

15.16 ये संस्थान पर्वतारोहण को एक खेल के रूप में प्रोत्साहन देते है, पर्वतारोहण को बढ़ावा देते हैं और युवाओं में साहसिक भावना उत्पन्न करते हैं। पर्वतारोहण संस्थानों के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

(क) पर्वतारोहण तथा चट्टानों पर चढ़ने की तकनीकों के विषय में सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण देना;

(ख) पर्वतों तथा अन्वेषण में रुचि एवं प्रेम उत्पन्न करना; और

(ग) शीत–क्रीड़ाओं के प्रति प्रोत्साहित करना तथा उनका प्रशिक्षण देना।

15.17 ये पर्वतारोहण संस्थान आधार–भूत और उन्नत पर्वतारोहण पाठ्यक्रम, अनुदेश पद्धति पाठ्यक्रम, खोज व बचाव पाठ्यक्रम और साहसिक क्रियाकलाप संबंधी पाठ्यक्रम आयोजित करते हैं। इन पाठ्यक्रमों में सेना, वायुसेना, नौसेना, भारत–तिब्बत सीमा पुलिस, सीमा सुरक्षा बल, राष्ट्रीय कैडेट कोर के कार्मिक और भारतीय नागरिकों के साथ ही विदेशी भी प्रशिक्षण लेते हैं। इन पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए पाठ्यक्रम, अवधि, ग्रेडिंग और अन्य ब्यौरा हिमालय पर्वतारोहण संस्थान की वेबसाइट www.hmidarj@gmail.com पर और नेहरू पर्वतारोहण की वेबसाइट www.nimindia.net पर और जवाहर पर्वतारोहण संस्थान की वेबसाइट www.jawaharinstitutepahalgam.com पर उपलब्ध है।

15.18 fu;fer ikBØe% संस्थानों द्वारा अप्रैल से दिसंबर 2011 तक आयोजित पाठ्यक्रम और इन पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित पुरुषों और महिलाओं की संख्या तालिका 15.1 में दी गई है ।

15.19 विशेष पाठ्यक्रम : हिमालय पर्वतारोहण संस्थान ने एनएसएस असम, सैनिक स्कूल और अन्य के 511 पुरुषों और महिलाओं के लिए चार विशेष पाठ्यक्रम भी आयोजित किए। इसके अलावा, संस्थान ने रॉयल भूटान आर्मी के तीस प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक राष्ट्रीय

lkj.kh la[;k 15-1

laLFkku	vk/kkj&Hkr ikBÓØe		mUUkr ikBÓØe		lkgfld ikBÓØe		vuns'k i)fr ikBÓØe		[kkt o cpko ikBÓØe	
	ikBÓ Øeka dh la[;k	if'k{kvka dh la[;k	ikBÓ Øeka dh la[;k	if'k{kvka dh la[;k	ikBÓ Øeka dh la[;k	if'k{kvka dh la[;k	ikBÓ Øeka dh la[;k	if'k{kvka dh la[;k	ikBÓ Øeka dh la[;k	if'k{kvka dh la[;k
हिमालय पर्वतारोहण	5	324	3	114	1	60	–	–	–	–
नेहरू पर्वतारोहण	5	323	3	78	5	295	1	23	1	32
जवाहर पर्वतारोहण	6	152	1	34	2	37	3	12	..	..

आपदा और बचाव पाठ्यक्रम तथा 150 प्रशिक्षणार्थियों के लिए तीन अन्य पाठ्यक्रम चलाए ।

15.20 जवाहर पर्वतारोहण संस्थान ने 1683 विद्यार्थियों के लिए 35 विशेष साहसिक पाठ्यक्रम, 23 विद्यार्थियों के लिए एक बुनियादी पैरा–ग्लाइडिंग पाठ्यक्रम चलाए और 12 परिवेश जागरूकता शिविर आयोजित किए जिनमें 866 विद्यार्थियों (पुरुष और महिलाएं दोनों) ने भाग लिया।

15.21 नेहरू पर्वतारोहण संस्थान ने विभिन्न संगठनों के लिए 11 विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किए जिनमें 347 पुरुषों और महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। संस्थान ने अपने अनुदेशात्मक स्टाफ के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के रूप में अत्यधिक चुनौतीपूर्ण माउंट थाले सागर(690 मीटर) पर एक पर्वतारोहण अभियान भेजा और उसकी चोटी पर नौ पर्वतारोहियों को पहुंचाने में सफलता प्राप्त की। थाले सागर एक कठिन चढ़ाई मानी जाती है क्योंकि इसमें उच्चतम कोटि की आरोहण दक्षता की आवश्यकता होती है।

समारोह, सम्मान व पुरस्कार

15.22 गणतंत्र दिवस परेड, समापन समारोह, शहीद दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय समारोहों के आयोजन की जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय की है । वीरता तथा विशिष्ट सेवा पुरस्कार प्रदान किए जाने के लिए राष्ट्रपति भवन में रक्षा अलंकरण समारोहों का आयोजन भी रक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रपति सचिवालय के साथ मिलकर किया जाता है । वर्ष 2011–12 के दौरान आयोजित समारोह संबंधी आयोजनों का ब्यौरा आगामी पैराओं में दिया गया है ।

15.23 Lor=rk fnol /otkjg.k lekjkg % स्वतंत्रता दिवस समारोह का शुभारंभ, लालकिले पर स्कूली बच्चों द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओ में सामूहिक देशभक्ति गान के साथ हुआ । तीनों सेनाओं तथा दिल्ली पुलिस ने प्रधानमंत्री को गारद सम्मान दिया । तत्पश्चात, प्रधानमंत्री ने सेनाओं के बैंड द्वारा बजाए गए राष्ट्रीय गान के साथ ही लाल किले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर 21 तोपों की सलामी दी गई। प्रधानमंत्री के राष्ट्र को संबोधन के बाद समारोह का समापन दिल्ली के स्कूलों से आए बच्चों और एन सी सी कैडटों द्वारा राष्ट्रीय गान तथा गुब्बारे छोड़ने के साथ हुआ। बाद में दिन के दौरान, राष्ट्रपति ने उन जवानों को श्रद्वाजलि अर्पित करते हुए इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पर फूल–माला चढ़ाई जिन्होनें मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

15.24 स्वतंत्रता दिवस 2011 के अवसर पर वीरता पुरस्कारों की घोषणा की गई जो तालिका 15.2 में दिए गए हैं।

lkj.kh l[;k 15-2

i|jLdkj	d|y	ej.kksijkr
शौर्य चक्र	14	3
सेना मेडल बार(जी)	3	.
सेना मेडल(जी)	114	7
नौसेना मेडल (जी)	3	.
वायु सेना मेडल (जी)	3	.

15.25 fot; fnol 16 दिसंबर, 2011 को विजय दिवस मनाया गया । इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर फूलमाला चढ़ाई ।

15.26 vej toku T;kfr lekjkg] 2012 % प्रधानमंत्री ने प्रातःकाल 26 जनवरी, 2012 को इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर पुष्पमाला चढ़ाई। उन जवानों को श्रद्वांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया जिन्होंने देश की अखंडता की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

रक्षा मंत्रालय गणतंत्र दिवस परेड, समापन समारोह, शहीद दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय समारोह आयोजित करता है ।

15.27 x.kra= fnol lekjksg] 2012 % राजपथ पर राष्ट्रीय ध्वज पहराने के साथ ही गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ हुआ । राष्ट्रपति के अंगरक्षकों ने सेनाओं के बैडों द्वारा बजाए गए राष्ट्र गान और 21 तोपों की सलामी के बाद राष्ट्रीय सलामी दी । इस अवसर पर थाईलैंड राजतंत्र की प्रधानमंत्री, महामहिम, सुश्री यिंगलक शिनावात्रा मुख्य अतिथि थी । एक अलंकरण समारोह में भारत के राष्ट्रपति ने मरणोपरांत 'अशोक चक्र' पुरस्कार प्राप्तकर्ता के निकट संबंधी को प्रदान किया ।

15.28 61 पर्वतारोही घुडसवारों का दस्ता, टैंक टी–72 और स्मर्च /पिनाका मल्टी बैरल लांचर प्रणाली वाला यंत्रीकृत सैन्य दस्ता, आणविक जैविक रासायनिक जल शुद्धि प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैमर, एडवांस लाइट हेलिकाप्टर द्वारा पुष्प वर्षा, मार्चिंग दस्ते तथा विभिन्न सेवाओं के वाद्य, अर्ध सैन्य बल, दिल्ली पुलिस, राष्ट्रीय कैडेट कोर, राष्ट्रीय समाज सेवा, इत्यादि इस वर्ष की परेड के हिस्सा थे । रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के उपस्कर दस्ते में 'अग्नि–IV' और 'प्रहार' प्रक्षेपास्त्र और 'रुस्तम–I' मानवरहित वायु वाहन और 'बर्फ एवं अवधाव के जोखिम एवं उनको कम करने की योजना' विषय पर एक झांकी शामिल थी ।

15.29 जिन 24 बच्चों को वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया उनमें से पांच को मरणोपरांत वीरता पुरस्कार प्रदान दिया गया। । 19 वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों ने सेना की सुसज्जित जीपों पर सवार होकर परेड में भाग लिया । राज्यों की झांकियां, केंद्रीय मंत्रालयों तथा विभागों एवं विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक विषयों का प्रदर्शन इस बार की परेड का अन्य आकर्षण थे । 23 झांकियों तथा स्कूली बच्चों के 5 कार्यक्रमों ने देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रस्तुत किया । सीमा सुरक्षा बल के जवानों द्वारा मोटर साइकिल पर प्रदर्शन और तत्पश्चात् भारतीय वायुसेना के विमानों की सलामी के साथ परेड का समापन हुआ ।

15.30 गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषित वीरता तथा विशिष्ट सेवा पुरस्कारों का ब्यौरा सारणी संख्या 15.3 में दिया गया है ।

lkj.kh la[;k 15-3

iqjLdkj	dqy	ej.kksijkar
ohjrk iqjLdkj		
अशोक चक्र	1	1
कीर्ति चक्र	3	1
शौर्य चक्र	16	5
सेना मेडल बार (वीरता)	3	–
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल (वीरता)	78	2
fof'k"V iqjLdkj		
परम विशिष्ट सेवा मेडल	28	–
उत्तम युद्ध सेवा मेडल	1	–
अति विशिष्ट सेवा मेडल बार	6	–
अति विशिष्ट सेवा मेडल	45	–
युद्ध सेवा मेडल	4	–
सेना मेडल बार (कर्त्तव्यपरायणता)	3	–
सेना मेडल/ नौसेना मेडल/ वायु सेना मेडल (कर्त्तव्यपरायणता)	59	1
विशिष्ट सेवा मेडल बार	6	–
विशिष्ट सेवा मेडल	115	1

15.31 lekiu lekjksg] 2012 समापन समारोह सदियों पुरानी उन दिनों की सैन्य परंपरा है जब सूर्यास्त होने पर सेना युद्ध बंद कर देती थी। समापन समारोह गणतंत्र दिवस समारोहों में भाग लेने के लिए दिल्ली में एकत्र हुई सैन्य टुकड़ियों के प्रत्यागमन का सूचक है। यह समारोह 29 जनवरी, 2012 को विजय चौक पर आयोजित किया गया जो गणतंत्र दिवस उत्सवों का पटापेक्ष था। इस समारोह में तीनों सेनाओं के बैंडों ने भाग लिया। समारोह के समापन के अवसर पर राष्ट्रपति भवन, नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, संसद भवन और इंडिया गेट की प्रकाश–सज्जा भी की गई।

15.32 'kghn fnol lekjksg] 2012 % 30 जनवरी, 2012 को, राष्ट्रपति ने राजघाट पर महात्मा गांधी की

समाधि पर फूलमाला चढ़ाई। उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, रक्षा मंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी पुष्पाजंलि अर्पित की। इसके बाद 1100 बजे उनको श्रद्वांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

राजभाषा प्रभाग

15.33 संघ सरकार की राजभाषा नीति को रक्षा मंत्रालय(सचिवालय), तीनों सेना मुख्यालयों, सभी अंतर सेवा संगठनों और रक्षा उपक्रमों में कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग को सौंपी गई है। यह प्रभाग इस प्रयोजनार्थ राजभाषा अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के प्रावधानों तथा इस संबंध में नोडल विभाग अर्थात राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से समय–समय पर प्राप्त निर्देशों का संपूर्ण रक्षा संगठन में अनुपालन किए जाने हेतु कार्रवाई सुनिश्चित करता है। मंत्रालय तथा इसके सभी अधीनस्थ कार्यालयों, आदि में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति देने तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्य की मॉनीटरी माननीय रक्षा मंत्री जी की अध्यक्षता में गठित दो अलग–अलग हिंदी सलाहकार समितियों की बैठकों और दो विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों, रक्षा संगठनों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा व उनके संयुक्त राजभाषायी निरीक्षणों के माध्यम से की जाती है।

15.34 okf"kd dk;Øe % संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2011–12 हेतु जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किए जाने के प्रयास जारी हैं। हिंदी में मूल पत्राचार को बढ़ाने, धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजातों को द्विभाषी रूप में जारी करने और हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि) में तेजी लाए जाने पर मुख्य रूप से बल दिया जा रहा है। विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में एतदसंबंधी प्रगति की नियमित रूप से समीक्षा की जाती है।

समापन समारोह 2012

15.35 vuqokn dk;Z% राजभाषा कार्यान्वयन के एक हिस्से के रूप में, प्रभाग का स्टाफ वर्ष भर अनुवाद कार्य में व्यस्त रहा। मंत्रालय के विभिन्न अनुभागों और कार्यालयों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के कागजातों के अलावा संसद सदस्यों/विशिष्ट व्यक्तियों से प्राप्त पत्रों, रक्षा मंत्री/रक्षा राज्य मंत्री के पत्रोत्तरों, मंत्रिमंडल प्रस्तावों, संसद प्रश्नोत्तरों और आश्वासनों, लेखा परीक्षा पैराओं, रक्षा स्थायी समिति तथा परामर्शदात्री समिति से संबंधित सामग्री व मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, आदि का अनुवाद किया गया ।

15.36 jktHkk"kk ls lacaf/kr lfefr;k¡% मंत्रालय में दो हिंदी सलाहकार समितियां हैं। दोनों ही समितियों अर्थात रक्षा विभाग रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग और भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग की हिंदी सलाहकार समिति और रक्षा उत्पादन विभाग की हिंदी सलाहकार समिति का पुनर्गठन कर लिया गया है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान मंत्रालय की दोनों विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की चार–चार बैठकें आयोजित की गईं।

15.37 j{kk laca/kh fo"k;ksa ij ewy :i ls Çgnh esa fy[kh iqLrdksa lac/kh iqjLdkj ;kstuk% वर्ष 2005–07 की योजना के पुरस्कार रक्षा राज्य मंत्री जी द्वारा विजेताओं को 06 जून, 2011 को हुई हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में प्रदान किए गए। वर्ष 2007–09 की योजना के अंतर्गत कोई भी पुस्तक उपयुक्त नहीं पाई गई। अब 2009–11 की अवधि की

योजना पर कार्रवाई की जा रही है।

15.38 Çgnh i[kokMk% सरकारी कामकाज हिंदी में किए जाने हेतु अनुकूल वातावरण बनाने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु मंत्रालय में 14 से 28 सितंबर, 2011 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि, निबंध लेखन की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसके अलावा, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गईं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे उम्मीदवारों को नकद पुरस्कार एवं उपहार प्रदान किए गए।

15.39 lalnh; jktHkk"kk lfefr }kjk fofHkUUk j{kk lxBuk d fujh{k.k% संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों में स्थित कई रक्षा कार्यालयों का निरीक्षण दौरा किया। मंत्रालय ने निरीक्षणाधीन कार्यालयों का समुचित मार्गदर्शन किया और उनके द्वारा निरीक्षण के अवसर पर दिए गए आश्वासनों की पूर्ति हेतु भी आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की गई।

नि:शक्त व्यक्तियों का कल्याण

15.40 रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन विभाग को छोड़कर) तथा रक्षा उत्पादन विभाग के सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में समूह "क", "ख", "ग" और "घ" में अशक्त व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व क्रमशः सारणी संख्या 15.4 और

rkfydk la[;k 15-4

lokvk e fu%'kä rk oky 0;fä ;k d ifrfuf/kRo dk n'kku okyk okf"kd fooj.k ¼1 tuojh] 2011 dh fLFkfr d vuqlkj½

leg	depkfj;k dh la[;k				
	dqy	igpku x, ink ij	nf"Vfoghu	cf/kj	vfLFk lac/kh fodykxrk
समूह क	3193	569	0	0	7
समूह ख	16076	3855	12	9	62
समूह ग	157737	7507	116	230	1099
समूह घ	85013	14427	202	202	423
;kx	262019	26358	330	441	1591

rkfydk la[;k 15-4

j{kk mRiknu foHkkx d vrxr lEc) vkj v/khuLFk dk;ky;k e lokvk e fu%'kä rk oky 0;fä ;k dk ifrfuf/kRo n'kku okyk okf"kd fooj.k ¼1 tuojA 2011 dh fLFkfr d vuqlkj½

leg	depkfj;k dh la[;k				
	dqy	igpku x, ink ij	nf"Vfoghu	cf/kj	vfLFk lac/kh fodykxrk
समूह क	2129	35	11	5	2
समूह ख	33779	478	8	17	192
समूह ग	71549	2578	149	171	1074
समूह घ	62	0	0	0	0
;kx	107519	3091	168	193	1268

15.5 में प्रस्तुत किया गया है ।

15.41 l'kó cy % निःशक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों की संरक्षा तथा पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 की धारा 33 और 47 के तहत किए गए उपबंधों में निःशक्त व्यक्तियों के लिए सेवा में भर्ती तथा उन्हें सेवा में बनाए रखने के मामले में सुरक्षोपाय निर्धारित किए गए हैं। तथापि, सशस्त्र सेना कार्मिकों द्वारा निष्पादित की जाने वाली ड्यूटियों की प्रकृति के मद्देनजर, सभी समाघात पदों को, सामाजिक न्याय तथा अधिकारिता मंत्रालय द्वारा जारी की गई विशेष अधिसूचनाओं के कारण उक्त धाराओं की प्रयोज्यता से छूट दी गई है।

सभी समाघात पदों को निःशक्त व्यक्ति (समान अअवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 की धारा 33 तथा 47 से छूट दी गई है।

15.42 j{kk mRiknu foHkkx% रक्षा मंत्रालय के तहत सभी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में निःशक्त व्यक्तियों को आरक्षण का लाभ उपलब्ध कराने के लिए निःशक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 के प्रावधानों का अनुपालन किया जा रहा है। सरकार द्वारा जो रियायतें और छूट निर्धारित की गई हैं उनके अलावा बहुत–सी रियायतें एवं छूट निःशक्त व्यक्तियों को प्रदान की जाती हैं।

15.43 j{kk vuqla/kku ,oa fodkl laxBu% निःशक्त व्यक्तियों के कल्याण के संबंध में सरकार की नीतियों एवं अनुदेशों को लागू करने में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन वचनबद्ध है। भर्ती एवं पदोन्नति में 3% आरक्षण सरकार के अनुदेशों के अनुसार निःशक्त व्यक्तियों को प्रदान किया जा रहा है।

15.44 HkwriwoZ lSfud dY;k.k foHkkx% युद्ध के दौरान या दुर्घटनाओं एवं अन्य कारणों से कुछ सैनिक निःशक्त हो जाते हैं और उन्हें सेवा से बाहर निकाल दिया जाता है। इन भूतपूर्व सैनिकों को विशेष चिकित्सा देखभाल और स्वावलंबी होने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। ऐसे कार्मिकों का देखरेख एवं पुनर्वास केंद्रीय सैनिक बोर्ड द्वारा वित्तीय रूप से समर्थित विशेष संस्थाओं में किया जाता है।

(क) bZ,l,e v/kjxk?kkr ihfM+rk dk eksVjh—r VkblkbZdyks dh HksV% निःशक्तता 50: से ज्यादा होने या चिकित्सा प्राधिकारियों की सिफारिश के आधार पर केएसबी, निःशक्त ईएसएम को मोटरीकृत ट्राइसाइकिल उपलब्ध करवाता है।

(ख) HkwriwoZ lSfud rduhf'k;uksa ds fy, Vwy fdV% सशस्त्र सेना झण्डा दिवस निधि में से ईएसएम तकनीशियनों को 8000/–रु. से अनधिक की टूल किट प्रदान की जाती है।

(ग) ;q) Lekjd gkLVyksa ds fy, vuqnku% युद्ध विधवाओं के बच्चों, युद्ध में निःशक्त हुए सैन्य कर्मियों, आदि को आश्रय मुहैया कराने के लिए युद्ध स्मारक होस्टलों के निर्माण तथा कार्यकरण हेतु प्रत्येक रेजिमेंटल केंद्र को गैर–आवर्ती अनुदान उपलब्ध कराया गया था। केएसबी द्वारा युद्ध कारणों तथा गैर–युद्ध कारणों के मामलों में रक्षा कार्मिकों के बच्चों के लिए क्रमशः 900 रुपये प्रति माह तथा 450 रुपए प्रतिमाह युद्ध स्मारक होस्टलों के लिए आवर्ती अनुदान भी उपलब्ध कराये जाते हैं।

(घ) v/kjxk?kkr jksxh iquokZl dsUæ ds fy, vuqnku% खड़की तथा मोहाली स्थित अधरंगाघात रोगी पुनर्वास केंद्र, अधरंगाघात तथा पूर्णांगघात ई एस एम सहवासियों, जिन्होंने सक्रिय सेवा के दौरान अपने अंग खो दिए, की देखभात करते हैं। इन अधरंगाघात रोगी पुनर्वास केंद्रों को केएसबी द्वारा प्रति सहवासी प्रति वर्ष 14,600 रुपए की दर से अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है।

(ङ) p s'kk;j gkse dks vuqnku% केंद्रीय सैनिक

बोर्ड द्वारा चैशायर होम्स को प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 9000 रुपये की दर से वार्षिक अनुदान मुहैया किया जाता है ,जो कुष्ठ, मानसिक रूप से विकलांग, क्रोनिक स्पास्टिक/ अधरंगाघात और टीबीईएसएम रोगियों की देखभाल करता है।

(च) lsV MLVu vk¶Vj d;j vkxZukbts'ku] ngjknwu dk vuqnku% सैंट डंस्टन का संगठन दृष्टिहीन सैनिकों, नौसैनिकों तथा वायु–सैनिकों को अंधेपन के आघात पर काबू पाने के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता उपलब्ध कराता है तथा समाज में अपना स्थान पाने के लिए दृष्टिहीन भूतपूर्व सैनिकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है तथा देखभाल सेवाएं उपलब्ध कराता है।

15.45 fu%'kä l'kó lsuk dkÆedksa dks isa'ku@minku % चिकित्सा–आधार पर सेवा–मुक्त होने वाले कैडेटों सहित निःशक्त हुए अथवा सेवा के दौरान घायल हुए सशस्त्र सेना कार्मिक संवर्धित दरों पर निम्नलिखित विभिन्न पेंशन संबंधी तथा अन्य लाभों के हकदार हैं :–

(क) fu%'kärk isa'ku % कोई व्यक्ति, जिसे सेवा से किसी बीमारी या चोट की वजह से जो सैन्य सेवा के कारण हुई हो अथवा सैन्य सेवा के कारण उसमें वृद्धि हुई हो, मुक्त किया गया हो तो वह निःशक्तता पेंशन का हकदार है बशर्ते निःशक्तता को चिकित्सा बोर्ड द्वारा 20 प्रतिशत या इससे अधिक आंका गया हो। निःशक्तता पेंशन में दो तत्व शामिल हैं अर्थात सेवा तत्व और निःशक्तता तत्व। 100 प्रतिशत निःशक्तता के लिए निःशक्तता की दर संगणनीय परिलब्धियों की 30ः है जो निःशक्तता की कमतर प्रतिशतता होने पर आनुपातिक रूप से घटा दी जाती है। छठे वेतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर, जब किसी सशस्त्र सेना कार्मिक को ऐसी निःशक्तता के बावजूद, जो सेना सेवा के कारण हुई हो अथवा सैन्य सेवा के कारण उसमें वृद्धि हुई हो, और जिसने उस निःशक्तता के बदले में एकमुश्त मुआवजा छोड़ दिया हो, सेवानिवृत्ति/ सेवा से मुक्त किए जाते समय, जो भले ही स्वैच्छिक अथवा अन्यथा हो, सेवानिवृत्ति/सेवा पेंशन अथवा सेवानिवृत्ति/सेवा उपदान के अलावा निःशक्तता तत्व भी दिया जाता है। यह 1 जनवरी, 2006 से लागू है।

(ख) ;q) ?kk;y isa'ku % युद्ध घायल पेंशन उन कार्मिकों को प्रदान की जाती है जो युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति अथवा उग्रवादियों या असामाजिक तत्वों के विरुद्ध युद्ध के दौरान घायल अथवा निःशक्त हो जाते हैं। इसमें सेवा तत्व व युद्ध घायल तत्व शामिल होते हैं। युद्ध घायल तत्व 100 प्रतिशत निःशक्तता के लिए अंतिम आहरित संगणनीय परिलब्धियों के बराबर देय है। युद्ध में चोट के बावजूद प्रतिधारण के मामले में व्यक्ति के पास विकल्प होता है कि वह या तो युद्ध चोट तत्व को छोड़ते हुए युद्ध चोट तत्व के बदले एकमुश्त क्षतिपूर्ति ले अथवा सेवानिवृत्ति/ सेवामुक्त किए जाने के समय युद्ध चोट तत्व ले।

(ग) v'kärk isa'ku% अशक्तता पेंशन उन मामलों में अनुमेय है जहां व्यक्ति को ऐसी निःशक्तता के आधार पर सैन्य सेवा से बाहर कर दिया जाता है जो न तो सैन्य सेवा के कारण हुई हो और न ही सैन्य कारणों से इसमें वृद्धि हुई हो। ऐसे मामलों में की गई वास्तविक सेवा 10 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए। अशक्तता उपदान का भुगतान 10 वर्ष से कम की सेवा के मामले में किया जाता है। अशक्तता पेंशन निशक्तता पेंशन के सेवा तत्व के बराबर होती है जो उस मामले में स्वीकार्य होती है जहां यह सैन्य सेवा के कारण हुई या सैन्य सेवा के कारण इसमें वृद्धि हुई हो और निःशक्तता उपदान प्रत्येक 6 माह की अर्हक

सेवा की अवधि के लिए आधे माह की संगणनीय परिलब्धियों के बराबर होता है ।

(घ) dSMsVks ¼lh/ks½ dh e`R;q dk ekeys esa vuqxzg jkf'k iznku djuk % सैन्य प्रशिक्षण के कारणों से कैडेट (सीधे) के अशक्त होने/उसमें वृद्धि होने पर उसे चिकित्सा आधार पर सेवामुक्त करने की स्थिति में निम्नलिखित दरों पर अनुग्रह अवार्ड देय होते हैं:–

(i) 3500/–रुपये प्रति माह की मासिक अनुग्रह राशि।

(ii) 100 प्रतिशत निःशक्तता के लिए 6500/–रुपये प्रतिमाह की दर से अनुग्रही निःशक्तता अवार्ड। निःशक्तता की मात्रा 100 प्रतिशत से कम होने पर अनुग्रही निःशक्तता अवार्ड से धनराशि आनुपातिक रूप में कम कर दी जाती है।

16

सतर्कता इकाइयों के कार्यकलाप

सतर्कता प्रभाग प्रक्रियाओं की समीक्षा करता है और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अन्य उपाय शुरू करता है

16.1 रक्षा मंत्रालय में सतर्कता प्रभाग को रक्षा मंत्रालय तथा इसके अधीन विभिन्न इकाइयों के कर्मचारियों के संबंध में भ्रष्ट आचरण, कदाचार, अनियमितता इत्यादि से संबंधित शिकायतों पर कार्रवाई का कार्य सौंपा गया है। यह प्रभाग सतर्कता संबंधी मामलों तथा शिकायतों के संबंध में रक्षा मंत्रालय की ओर से केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) इत्यादि के साथ कार्रवाई करने हेतु एक नोडल बिन्दु के रूप में कार्य करता है। सतर्कता प्रभाग प्रक्रियाओं की समीक्षा करता है तथा भ्रष्टाचार को रोकने हेतु अन्य उपाय करता है।

16.2 प्रशासनिक सुविधा के लिए रक्षा विभाग (रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग और भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग सहित) और रक्षा उत्पादन विभाग की बाबत सतर्कता कार्य उनके संबद्ध मुख्य सतर्कता अधिकारियों द्वारा देखा जा रहा है।

16.3 केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निदेशों के अनुसार रक्षा मंत्रालय के अधीन सभी विभागों/ संगठनों/यूनिटों ने वर्धित सुरक्षा के महत्व पर जोर देने और भ्रष्टाचार के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के आशय से 25 अक्तूबर से 01 नवम्बर , 2011 की अवधि तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया था ।

रक्षा विभाग

16.4 सेना की सर्वोच्च परम्पराओं को कायम रखते हुए, सम्पूर्ण सशस्त्र सेनाओं को सभी स्तरों पर प्रशिक्षण चरण से ही नियमित रूप से भ्रष्ट आचरण के खिलाफ जागरूक बनाया जाता है।

16.5 वर्ष के दौरान 5 कार्मिकों पर बड़ी शास्ति लगाई गई और छह कार्मिकों पर लघु शास्ति लगाई गई। केन्द्रीय सतर्कता आयोग से प्राप्त 41 शिकायतों की जांच करके न्यायोचित कार्रवाई की गई।

16.6 23 नवंबर, 2011 को बंगलूरू में मुख्य सतर्कता आयोग (सीवीसी) द्वारा ली गई वार्षिक क्षेत्रीय पुनरीक्षा बैठक, 2011 के दौरान सी वी सी ने इन उपलब्धियों का संज्ञान लिया कि रक्षा मंत्रालय में कोई भी अभियोजन के लिए मंजूरी लंबित नहीं है और सी वी सी द्वारा संदर्भित शिकायतों की लंबित स्थिति में पिछले दो वर्षों के दौरान पर्याप्त सुधार आया है।

रक्षा उत्पादन विभाग

16.7 vk;q/k fuekZ.kh cksMZ % निर्माणियों के आवधिक सतर्कता निरीक्षण किए जाते हैं और विशिष्ट शिकायतों पर जांच की जाती हैं। तथापि, केन्द्रीय सतर्कता आयोग तथा केन्द्रीय जांच ब्यूरो के माध्यम से प्राप्त शिकायतों पर विशेष जोर दिया जाता है जिनकी समग्रता से जांच की जाती है। जांच के निष्कर्षों के आधार पर अनुशासनिक कार्यवाही, निवारक प्रशासनिक उपाय, व्यवस्था में सुधार हेतु अनुदेश

रक्षा विभाग (रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग तथा भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग सहित) और रक्षा उत्पादन विभाग के बारे में सतर्कता कार्य उनके संबंधित मुख्य सतर्कता अधिकारियों द्वारा देखा जा रहा है।

सहित आवश्यक सतर्कता कार्रवाई की जाती है।

16.8 इसके अतिरिक्त निवारक सतर्कता कार्रवाई तथा अनुशासनिक उपायों के साथ–साथ कतिपय प्रणाली सुधार पहलों की शुरूआत की गई है ताकि अनियमितता तथा कदाचार की संभावना को कम किया जा सके। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के दिशा–निर्देशों की अनुपालना में निर्माणियों के संवेदनशील क्षेत्रों की देखभाल कर रहे अफसर तथा स्टाफ को गैर–संवेदनशील क्षेत्रों में तथा एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर नियमित आधार पर स्थानांतरित किया जाता है।

lkoltfud {k= d j{kk miØe

16.9 fgUnLrku ,jkukfVDl fyfeVM% निवारक सतर्कता के भाग के रूप में इस कंपनी के सभी प्रभागों में एक पारस्परिक विचार विनिमय सत्र 'सम्पर्क' आयोजित किया जा रहा है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान 35 शिकायतों को जांच के लिए चुना गया था। संबंधित अनुशासनिक प्राधिकारियों को 14 मामलों में रिपोर्ट प्रस्तुत की जा चुकी है। 7 शिकायतों का निपटान कर दिया गया है और शेष की जांच की जा रही हैं। इस अवधि के दौरान निवारक सतर्कता के दृष्टिकोण से कुल 137 औचक निरीक्षण और 524 नेमी निरीक्षण किए गए थे। विभिन्न निवारक जांचों के कारण 12 करोड़ रु0 (लगभग) की सीधी बचत प्राप्त की गई थी।

16.10 Hkkjr byDVkfuDl fyfeVM % वर्ष 2010–11 के दौरान सतर्कता विभाग का कार्य–निष्पादन संतोषजनक रहा है। वर्ष के दौरान 1400 खरीद आदेशों/संविदाओं और 451 उच्च मूल्य आर्डरों/संविदाओं की पुनरीक्षा/गहन जांच की गई है और इन्हें सही पाया गया। केन्द्रीय सतर्कता आयोग/सी टी ई के दिशा–निर्देशों के अनुसार निर्माण कार्य संविदाओं के निरीक्षण के लिए 2 दलों और खरीद आर्डरों के निरीक्षण के लिए 2 दलों का गठन किया गया है। 2010–11 के दौरान, 11 कार्य संविदाओं और 16 उच्च मूल्य के खरीद आर्डरों का गृह–निरीक्षण दलों द्वारा निरीक्षण किया गया ।

16.11 वर्ष के दौरान, 2630 नियमित/औचक निरीक्षण किए गए थे। विभिन्न यूनिट/सतर्कता समितियों द्वारा नियमित रूप से मासिक सतर्कता पुनरीक्षा बैठकें की गईं और वर्ष के दौरान 239 बैठकें हुईं। कार्यपालकों को नैसर्गिक न्याय एवं घरेलू जांच प्रशिक्षण कार्यक्रम और सतर्कता जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के सिद्धांतों में प्रशिक्षित किया गया। 3 वर्ष और उससे अधिक समय तक संवेदनशील क्षेत्रों में कार्य कर रहे 39 कार्यपालकों और 32 गैर–कार्यपालकों के विभिन्न पदों पर स्थानांतरित किया गया है। भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड की वेबसाइट (डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू बी ई एल – इंडिया. कॉम) पर एक नया सतर्कता का पेज शामिल किया गया है। ई–अधिप्राप्ति का विकास किया जा रहा है और इसके शीघ्र ही कार्यान्वित होने की आशा है। ई सी एस/ई एफ टी को लागू किया जा चुका है।

16.12 xkMu jhp f'ki fcYMl ,M bthfu;l fyfeVM ¼th vkj ,l b½ % निवारक सतर्कता, पूर्व सक्रिय सतर्कता और प्रणाली सुधार पर बल दिया गया ताकि दंडात्मक सतर्कता के सहारे की आवश्यकता को न्यूनतम किया जा सके। यह नीति सी वी सी और इस मंत्रालय की हाल के निर्देशों के अनुरूप थी।

16.13 विक्रेता द्वारा बैंक गारंटी का नवीकरण, हिंदी पुस्तकें जुटाने, रद्दीमाल को निपटान से पूर्व श्रेणीवार अलग–अलग करने आदि जैसे कई प्रणाली सुधार कार्य किए गए। एक पोत मरम्मत के मामले में माप के साथ विक्रेता द्वारा प्रस्तुत किए गए बिलों की तुलना करने पर 28.49 लाख रुपए की सीधी बचत हुई। सभी यूनिटों के औचक जांच और नेमी निरीक्षण किए गए। सी वी सी में मुख्य तकनीकी जांचकर्ता के कार्यालय से एक टीम ने यार्ड आधुनिकीकरण के एक भाग के रूप में यार्ड में काम के लिए शामिल की जा रही 250 मीट्रिक टन गोलिश क्रेन के निरीक्षण के लिए जी आर एस ई का दौरा किया।

16.14 जी आर एस ई की सरकारी वेबसाइट में सतर्कता को एक पृथक स्थान प्रदान किया गया।

समेकित समझौतों, निविदाओं, विक्रेताओं को भुगतान की स्थिति, दी गई संविदाओं, विक्रेता पंजीकरण हेतु प्रक्रिया, आदि जैसी विभिन्न सूचनाओं को वेबसाइट पर डाला गया। ई–निविदा के माध्यम से अधिप्राप्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। एक अधिकारी के विरुद्ध मुख्य दंड हेतु अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू की गई।

16.15 xkok f'ki;kM fyfeVM% इस वर्ष के दौरान, विगत की तरह, सहभागिता सतर्कता और समग्र जागरूकता पैदा करने पर बल दिया गया। विभिन्न क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण और औचक जांच की गईं। सतर्कता का समग्र उद्देश्य संगठन में पारदर्शिता को प्रोत्साहित करना और नागरिकों में आत्म–विश्वास पैदा करना रहा है। सरकार के निर्देशों के परिणाम के रूप में गोवा शिपयार्ड लिमिटेड ई–अधिप्राप्ति को लागू करने में उन्नत स्तर पर है।

16.16 fgUnqLrku f'ki;kM fyfeVM ¼,p ,l ,y½% एच एस एल में कार्यरत सतर्कता विभाग एच एस एल के विभिन्न कार्यकलापों पर सतत निगरानी रखता है। उपर्युक्त के अलावा, सतर्कता विभाग जब कभी आवश्यकता होती है, आवश्यक सहायता/मार्ग–निर्देश उपलब्ध कराता है।

16.17 ekÖkxko Mkd fyfeVM ¼,e Mh ,y½% सतर्कता विभाग इस कंपनी में निवारक और दंडात्मक सतर्कता के लिए कार्रवाई करता है। यह एम डी एल में अधिप्राप्ति, उप संविदा, भर्ती, आदि सहित विभिन्न कार्यकलापों में पारदर्शिता और स्वच्छता को बढ़ाता है। सतर्कता विभाग सी टी ई प्रकार, खरीद/उप संविदा/सर्विस आर्डर्स की गहन जांच के कंपनी के कार्यों के सभी पहलुओं में सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने का भी प्रयास करता है। सतर्कता विभाग द्वारा मौके पर औचक जांच भी की जा रही है। एम डी एल के सतर्कता विभाग और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ–साथ प्रमुख संविदाकारों/आपूर्तिकर्ताओं के साथ एक विक्रेता बैठक भी बुलाई गई थी।

16.18 ch bl ,e ,y fyfeVM % इस संगठन में सतर्कता विभाग में पांच क्रियाशील विंग हैं तथा इन विंगों के निर्धारित कार्य हैं और वर्ष के दौरान क्रियाकलाप इस प्रकार हैं :–

(i) अन्वेषण विंग सी वी सी, सी बी आई, मीडिया, लेखा–परीक्षा, प्राप्त की गई सीधी शिकायतें, अन्वेषणों की प्रगति की अनुवीक्षा जैसे स्रोतों से प्राप्त शिकायतों पर कार्रवाई करना तथा स्रोत सूचना के आधार पर संदेहास्पद अनियमितताओं के लिए फाइलों का सत्यापन करना।

(ii) अनुशासनिक विंग विभिन्न जांच रिपोर्टों, अनुशासनिक कार्रवाईयों तथा निरीक्षण रिपोर्टों के मामलों पर अनुवर्ती कार्रवाई पर कार्य करती है। ये विंग सतर्कता मामलों से संबंधित आरोप–पत्र की जांच करती है और सभी सतर्कता मामलों की जांच संबंधी कार्रवाईयों की प्रगति की अनुवीक्षा करती है।

(iii) भ्रष्टाचार–रोधी विंग आय से अधिक सम्पत्ति रखने, गैर–कानूनी परितोषण से संबंधित मामलों पर कार्रवाई करना, परितोषण, प्रक्रिया से हटना आदि, ओ डी आई सूची/सहमत सूची को तैयार करना और सी बी आई तथा सी वी सी आदि से सम्पर्क करना, इसके कार्य हैं ।

(iv) निवारक सतर्कता विंग औचक जांच, प्रणाली सुधार अध्ययन पी ओ तथा संविदा आदि की छटाई करता है और सतर्कता संबंधी सेमिनार/कार्यशालाएं तथा सतर्कता जागरूकता प्रशिक्षण चलाता है।

(v) तकनीकी विंग सिविल, इलेक्ट्रिकल/मकैनिकल हार्ट/ निर्माण, भंडार आदि के सी टी ई प्रकार के निरीक्षण करता है, सी टी ई दल द्वारा प्रस्तुत की गई रिपोर्टों की जांच करता है तथा इसे तकनीकी टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत करता है और बी ई एम एल में सी टी ई के साथ उनके द्वारा निरीक्षण

करने के लिए समन्वय करता है ।

16.19 Hkkjr Mk;ukfeDl fyfeVM ¼ch Mh ,y½ वर्ष 2011 में सतर्कता विभाग का मुख्य उद्देश्य था:–

i. बिलों के भुगतान, निविदा देने और विक्रेता संबंधों में पारदर्शिता में सुधार लाना ।

ii. ई–अधिप्राप्ति को लागू करना और ई–भुगतान की प्रतिशतता में वृद्धि करना ।

iii. सत्यनिष्ठा संविदा को लागू करना ।

iv. सामग्री प्रबंधन और कार्मिक मैनुअलों की पुनरीक्षा करना ।

सत्यनिष्ठा संविदा को अधिप्राप्ति में पारदर्शिता, समानता और प्रतियोगितात्मकता में सुधार लाने के लिए अपनाया गया है।

16.20 feJ /kkrq fuxe fyfeVM % 25 अक्तूबर से 01 नवंबर, 2011 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया था । प्रमुख सतर्कता व्यावसायिकों द्वारा चर्चाएं आयोजित की गईं जिससे कंपनी के कर्मचारी लाभान्वित हुए ।

16.21 b&vf/kkfIr vfHk;ku % सरकारी संगठनों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए ई–अधिप्राप्ति शुरुआत को लागू करने के बारे में मुख्य सतर्कता आयोग के मार्ग–निर्देशों के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों और आयुध निर्माणी बोर्ड में ई–अधिप्राप्ति को लागू करने के लिए रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा एक अभियान की शुरुआत की गई है ताकि व्यवस्था में और अधिक पारदर्शिता और जिम्मेदारी लाई जा सके । रक्षा उत्पादन विभाग के ई–अधिप्राप्ति कार्यक्रम को मंत्रिमंडल सचिवालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अनुवीक्षा किए जाने वाले एक अच्छे प्रबंधन की शुरुआत के रूप में चुना गया है। इस कार्यक्रम को सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों और आयुध निर्माणी बोर्ड द्वारा 31 मार्च, 2012 तक हर हालत में पूरे किए जाने की आवश्यकता है ।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग

16.22 वर्ष के दौरान रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की सतर्कता यूनिटों के मुख्य क्रियाकलाप निम्नवत थे:–

- सतर्कता पहलुओं के संबंध में विभिन्न स्तरों पर अफसरों तथा स्टाफ को सजग करना।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्थायी अनुदेशों तथा आदेशों का कार्यान्वयन किया जा रहा है, प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं का निरीक्षण।
- कदाचारों के खिलाफ गोपनीय जांच करना तथा दोषी पर कानूनी कार्रवाई करना।
- सतर्कता मामलों/जांचों पर कार्रवाई करना और आरोप पत्रों के लिए दस्तावेज तैयार करना।
- केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय जांच ब्यूरो और अन्य एजेंसियों द्वारा विभाग के ध्यान में लाए गए सतर्कता मामलों की जांच करना ।

17

महिलाओं का सशक्तीकरण और कल्याण

रडार परिसर में कार्यरत एक तकनीकी अधिकारी

सशस्त्र सेनाओं की संभारिकी और विधि जैसी विभिन्न अयोधी शाखाओं में महिलाओं की भर्ती से उनके लिए व्यापक भूमिका की परिकल्पना की गई है

17.1 राष्ट्रीय रक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका में निरन्तर वृद्धि हो रही है। रक्षा उत्पादन यूनिटों, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और सशस्त्र सेनाओं में डॉक्टर और नर्सिंग अफसर के रूप में महिलाओं को नियुक्त किया जाता है। सशस्त्र सेनाओं की सांभरिकी और विधि जैसी विभिन्न अयोधी शाखाओं में महिलाओं की भर्ती से उनके लिए व्यापक भूमिका की परिकल्पना की गई है।

भारतीय सेना

17.2 luk e efgyk vQlj % सशस्त्र सेनाओं में महिला अफसर लगभग 80 वर्षों से सेवा कर रही हैं। इन्हें सैन्य परिचर्या सेवा में 1927 में तथा चिकित्सा अफसर सवर्ग में 1943 में शामिल किया गया था। सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा में स्थायी और अल्पकालीन सेवा कमीशन, दोनों प्रकार के अफसर हैं।

17.3 एक महत्वपूर्ण उपाय के रूप में, सेना में महिला अफसरों के अल्पकालीन सेवा कमीशन की अवधि को 10 वर्ष से बढ़ाकर 14 वर्ष कर दिया गया है जिससे सेना में और अधिक महिलाएं भर्ती होंगी। इसके अलावा, उनके पदोन्नति के अवसरों में पर्याप्त रूप से वृद्धि की गई है। वे पहले केवल एक पदोन्नति अर्थात् 5 वर्ष की सेवा के बाद मेजर रैंक में पदोन्नति के लिए ही पात्र थीं। महिला अल्पकालीन सेवा कमीशन अफसरों को क्रमशः 2, 6 तथा 13 वर्ष की संगणनीय सेवा के बाद क्रमशः कैप्टन, मेजर तथा लेफ्टि. कर्नल तक के समय–मान में पदोन्नतियां दी जाती हैं। यह स्थाई सेवा कमीशन अफसरों को उपलब्ध पदोन्नतियों के समान है। इसके अलावा, लिंग समानता सुनिश्चित करने की दृष्टि से सेना में अल्पकालीन सेवा कमीशन में महिला अफसरों की प्रशिक्षण अवधि 24 सप्ताह से बढ़ाकर 49 सप्ताह कर दी गई है जो पुरुष अल्पकालीन सेवा कमीशन अफसरों के समान है।

17.4 राष्ट्र की रक्षा और देश की प्रादेशिक अखंडता का संरक्षण करने में सशस्त्र सेनाओं की भूमिका और जिम्मेदारी को दृष्टिगत रखते हुए सशस्त्र सेनाओं में महिलाओं की भर्ती और रोजगार संबंधी भावी नीति का निरूपण नवम्बर, 2011 में किया गया है, जो इस प्रकार है :–

(i) तीनों सेनाओं में जिन शाखाओं/कोरों में महिला अफसरों को इस समय भर्ती किया जा रहा है वहां उन्हें अल्पकालिक कमीशन अफसर (एस एस सी ओ) के रूप में भर्ती किया जाता रहे;

(ii) महिला एस एस सी ओ तीनों सेनाओं की विशिष्ट शाखाओं अर्थात सेना की जज एडवोकेट जनरल और सेना शिक्षा कोर और नौसेना तथा वायुसेना में उनके तदनुरूप शाखाओं; नौसेना में नेवल कंस्ट्रक्टर व वायुसेना में लेखा शाखा में पुरुष एस एस सी ओ के साथ स्थायी कमीशन प्रदान किए जाने के लिए विचारार्थ पात्र होंगी।

(iii) उपर्युक्त के अलावा, वायुसेना में तकनीकी, प्रशासन, संभारिकी तथा मौसम विज्ञान शाखाओं में स्थायी कमीशन प्रदान किए जाने हेतु महिला एस एस सी ओ पुरुष एस एस सी ओ के साथ विचारार्थ पात्र होंगी।

17.5 स्थायी कमीशन प्रदान किया जाना उम्मीदवार की रजामंदी और प्रत्येक सेना द्वारा यथानिर्धारित सेना विशेष की आवश्यकताओं, रिक्तियों की उपलब्धता, उपयुक्तता, उम्मीदवार की मेरिट की शर्त के अध्यधीन है।

भारतीय नौसेना

17.6 efgyk vQlj % महिलाओं को नौसेना में कार्यपालक (प्रेक्षक, ए.टी.सी., विधि और संभारिकी संवर्ग), शिक्षा शाखा और इंजीनियरी शाखा के नौसेना वास्तुशिल्प संवर्ग में अल्प सेवा कमीशन अफसरों के रूप में भर्ती किया जा रहा है।

17.7 efgyk vQljksa dk LFkk;h deh'ku % रक्षा मंत्रालय ने कार्यपालक शाखा (विधि संवर्ग), शिक्षा शाखा और इंजीनियरी शाखा (नौसेना वास्तुशिल्प) की अल्प सेवा कमीशन महिला अफसरों के लिए भविष्यलक्षी प्रभाव से स्थायी कमीशन प्रदान करना शुरू किया है।

17.8 ckfydk if'k{kq if'k{k.k % मुंबई डॉकयार्ड में पांच बालिका प्रशिक्षुओं ने पिछले 14 महीनों में प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया है। ग्यारह बालिका प्रशिक्षुओं का दो व्यवसायों में प्रशिक्षण चल रहा है जो नवम्बर 2011 में पूर्ण हो गया।

भारतीय वायुसेना

17.9 1990 के दशक तक भारतीय वायुसेना की चिकित्सा अथवा दंत चिकित्सा शाखाओं में ही महिलाओं को भर्ती किया जाता था। वर्ष 1991 में भारत सरकार ने अल्पकालीन सेवा कमीशन के माध्यम से ग्राउंड ड्यूटी गैर–तकनीकी शाखाओं में और बाद में 1992–93 में तकनीकी और उड़ान शाखाओं (परिवहन और हेलिकॉप्टर शाखा) में भी महिला अफसरों की भर्ती को अनुमोदित किया था। इस समय, लड़ाकू शाखा को छोड़कर, महिलाओं को भारतीय वायुसेना की सभी शाखाओं में एस एस सी संवर्ग में नियुक्त किया जाता है।

17.10 Hkkjrh; ok;q lsuk esa efgyk vQlj % महिला अफसर भारतीय वायुसेना में अफसर संवर्ग का एक अंग हैं और उनके लिए कोई अलग संवर्ग मौजूद नहीं है। उड़ान और ए ई शाखाओं में एस एस सी अफसरों के लिए वर्तमान उच्चतम सीमा स्थापना की 20% है गैर–तकनीकी ग्राउंड ड्यूटी शाखाओं में 25% है। 1 जनवरी, 2012 की स्थिति के अनुसार महिला अफसरों की संख्या–शक्ति 1166 है, जिसमें चिकित्सा अफसर भी शामिल हैं। भारतीय वायुसेना में अफसर रैंक से नीचे के कार्मिकों की श्रेणी में महिलाओं को भर्ती नहीं किया जाता है।

17.11 Hkkjrh; ok;q lsuk ¼mMku 'kk[kk½ esa ifjogu ik;yVksa ds :i esa efgyk vQljksa dh fu;qfä% भारतीय वायुसेना में पायलटों के रूप में महिलाएं इस समय परिवहन, हेलिकॉप्टर और नेविगेटर शाखा में नियुक्त हैं। उनके द्वारा उड़ाए जाने वाले विमान ए.एन. 32, एवरो,

भारतीय वायुसेना महिला पायलेट उड्डयन की चुनौतियों का सामना करने हेतु सदैव तैयार

आई एल–76, डोर्नियर और चेतक/ चीता बेड़े हैं। महिलाओं के लिए रोजगार और स्थानन प्रोफाइल उनके पुरुष सहकर्मियों के समतुल्य है।

17.12 rduhdh 'kk[kk,% भारतीय वायुसेना में तकनीकी क्षमताओं के सभी फलकों में महिलाओं को नियुक्त किया गया है, जिनमें विमान प्रणालियां, भू–शस्त्र और अन्य एरियल और भू–आधारित प्रणालियां शामिल हैं। महिलाओं के स्थानन प्रोफाइल उनके पुरुष सहकर्मियों के समतुल्य हैं।

17.13 xSj rduhdh 'kk[kk,% महिलाएं प्रशासन, हवाई यातायात नियंत्रण, युद्धक नियंत्रण, संभारिकी, लेखा, शिक्षा, मौसम विज्ञान, चिकित्सा और दंत चिकित्सा जैसी सभी शाखाओं में नियुक्त हैं।

एक डॉक्टर ड्यूटी पर

17.14 efgyk vQljksa }kjk ,ojsLV fot;% भारतीय वायुसेना के साहसिक प्रकोष्ठ के संरक्षण में, एक भारतीय वायुसेना पर्वतारोही दल, जिसमें छः महिलाएं भी थीं, ने विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर) पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रस्थान किया। 25 मई, 2011 को भारतीय वायुसेना की तीन महिला अफसरों ने चोटी पर पताका फहराई और भारतीय वायुसेना का नाम रोशन किया।

17.15 loZ efgyk LdkbZ MkbZfoax ny% पहली भा.वा.से. सर्व महिला विरचना स्काईडाइविंग दल की ओर से छः महिला अफसरों ने खुले आसमान में शानदार प्रदर्शन किया । एरीजोना, अमेरिका के विश्व प्रसिद्ध स्काई डाइव प्रशिक्षण स्कूल में 45 दिनों के कठिन प्रशिक्षण के उपरांत ये नौसिखिए स्काई डाइवर व्यावसायिक स्काई डाइवर बन गए । इन्होंने तब से विभिन्न समारोहों में

सर्व महिला भा.वा.से. स्काईडाइविंग दल प्रदर्शन करते हुए

प्रदर्शन किया जिनमें हिन्डन में 8 अक्तूबर 2011 को 79वीं वायुसेना दिवस परेड भी शामिल है ।

17.16 dY;k.k% सेवारत भा.वा.से. अधिकारियों से विवाहित लगभग 71% महिला अधिकारी उनके साथ ही रहती हैं। प्रसवकाल के दौरान महिला अफसरों को हल्के कार्य पर लगाया जाता है। महिला अफसर/फ्लाइट कैडेट और अन्य महिला कार्मिकों को अनुकूल कार्य वातावरण दिया जाता है। भारतीय वायुसेना में स्त्री–पुरुष की बराबरी पर विशेष बल दिया जाता है और लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए इस विषय पर प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न कैप्सूल तथा कार्यशालाएं भी शुरू की गई हैं।

भारतीय तटरक्षक

17.17 rVj{kd esa efgyk vQlj% भारतीय तटरक्षक में 1997 से सहायक कमांडेंट के पद पर महिला अफसरों की भर्ती की जा रही है। भारतीय तटरक्षक में महिला उम्मीदवार सामान्य ड्यूटी (स्थायी), सामान्य ड्यूटी (पायलट/नेविगेटर) और सामान्य ड्यूटी (कानून) शाखाओं में प्रवेश ले सकती हैं । इस सेवा में महिला

अफसरों की भर्ती को बढ़ाने के लिए सामान्य ड्यूटी और सामान्य ड्यूटी (सी पी एल धारक) में महिला अफसरों के लिए अल्पकालिक सेवा नियुक्ति को भी लागू किया गया है । महिलाओं की चयन प्रक्रिया पुरुष अभ्यर्थियों के

सर्व महिला भा.वा.से. स्काईडाइविंग दल प्रदर्शन करते हुए

समान ही है । महिला अफसरों की तैनाती ऐसे पदों पर की जाती है जहां समुद्र में नहीं जाना पड़ता । भारतीय तटरक्षक में अल्पकालिक सेवा योजना के तहत नियुक्त अफसरों को छोड़कर महिला अफसरों के पास अधिवर्षिता की आयु तक सेवा करने का विकल्प मौजूद है। इस समय भारतीय तटरक्षक में 65 महिला अफसर हैं।

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन

17.18 रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन अपनी महिला कर्मचारियों के सशक्तीकरण और कल्याण के प्रति संवेदनशील है। इस विषय पर जारी सरकारी अनुदेशों और निदेशों का पूरी तरह अनुपालन किया जा रहा है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि महिला कर्मचारियों को अपनी कार्यकुशलता और जानकारी को बढ़ाने, अपनी प्रभावकारिता को परिपूर्ण करने और संगठनात्मक उद्देश्यों को बढ़ाने में उनके योगदान को प्रबंधन द्वारा समझा गया है और उसे सम्यक रूप से मान्यता दी गई है। सरकारी आदेशों के अनुसार रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन की प्रयोगशालाओं और स्थापनाओं को महिला कर्मचारियों के कल्याण के लिए महिला प्रकोष्ठ गठित करने के अनुदेश जारी किए गए हैं। इस प्रयोजन के लिए इसी तरह का एक प्रकोष्ठ रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन मुख्यालय में भी गठित किया गया है।

महिला तटरक्षक प्रशिक्षु पायलट

17.19 इसी प्रकार संगठन में महिला कर्मचारियों के लिए कई कल्याणकारी उपाय किए गए हैं। संपूर्ण भारत में डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में कल्याणकारी उपाय के रूप में शिशुगृह भी खोले गए हैं।

रक्षा उत्पादन विभाग

17.20 Çgn़Lrku ,jksukfVDl fy- ¼,p , ,y½ हि. ए. लि. में 31 दिसम्बर, 2011 की स्थिति के अनुसार महिला कर्मचारियों की संख्या 2413 है। बड़ी संख्या में महिलाएं सुपरवाइजरी और कार्यकारी संवर्गों में हैं और उनके कैरियर की प्रोन्नति के लिए उन्हें समान अवसर मुहैया कराए गए हैं। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए प्राप्त दिशानिर्देशों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की गई है। इस संबंध में सी डी ए नियम और प्रमाणित स्थाई आदेशों में संशोधन किया गया है। शिकायत समितियां भी बनाई गई हैं।

17.21 Hkkjr bysDVªkfuDl fyfeVsM% भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की विभिन्न यूनिटों/कार्यालयों में इस समय लगभग 2295 महिला कर्मचारी नियुक्त हैं। भर्ती, कैरियर प्रोन्नति, सीखने एवं विकास, कल्याणकारी उपाय आदि में समान अवसर मुहैया कराए गए हैं। महिला अधिकारी अपने अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए व्यापार यूनियनों एवं अधिकारी संघ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कार्य–स्थल पर महिला कर्मचारियों का यौन उत्पीड़न रोकने के संबंध में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के मद्देनजर भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की सभी यूनिटों/कार्यालयों में एक वरिष्ठ महिला कार्यपालक के नेतृत्व में गठित 'शिकायत समिति' कार्य कर रही है।

17.22 xkMu jhp f'kifcYMlZ ,oa bathfu;lZ fy- ¼thvkj,lbZ½ महिला शक्ति को एकत्र करने और उसका उपयोग करने तथा लिंग भेद से लड़ने और सामाजिक विकास के लिए कंपनी ने निम्नलिखित उपाय किए हैं :–

(क) कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की शिकायतों के समाधान के लिए एक महिला अफसर की अध्यक्षता में एन जी ओ के एक प्रतिनिधि सहित एक 11 सदस्यीय शिकायत समिति का गठन किया गया है । कर्मचारियों को उनके अधिकारों तथा दायित्वों की जानकारी देने, ताकि वे कार्य स्थल पर बिना लिंग भेद के कार्य कर सकें, के लिए आवधिक रूप से कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है और इस विषय में महिला कर्मचारियों से नियमित पूरक जानकारी ली जाती है ।

(ख) efgykvksa dks leku jkstxkj volj% वर्ष 2011 में दस महिला कर्मचारियों को कंपनी में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया गया।

17.23 Çgn़Lrku f'ki;kMZ fy- ¼,p ,l ,y½% प्रबंधन ने एक महिला प्रकोष्ठ तथा एक जेंडर बजटिंग प्रकोष्ठ बनाया है । चार महिला अफसर अपनी ड्यूटियों और कार्यों के अलावा जेंडर बजटिंग प्रकोष्ठ के कार्यों का निर्वाह भी कर रही हैं।

17.24 ekÖkxkao Mkd fy- ¼,eMh,y½ % वर्ष 2009–10 की तुलना में वर्ष 2010–11 में महिला कर्मचारियों की प्रतिशतता में 13.16% की वृद्धि हुई है। यौन उत्पीड़न की शिकायतों के समाधान के लिए एक समिति गठित की गई है ताकि एम डी एल की महिला कर्मचारी अपनी ड्यूटियों का निष्पादन सम्मानजनक ढंग से

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन सुनिश्चित करता है कि महिला कर्मचारियों की अपनी कार्य कुशलता और जानकारी को बढ़ाने और अपनी प्रभावकारिता को परिपूर्ण करने हेतु समान अवसर प्रदान किए जाएं और संगठनात्मक उद्देश्यों को बढ़ाने में उनके योगदान को प्रबंधन द्वारा समझा जाए।

और बेखौफ कर सकें। इसके अतिरिक्त, अपने महिला कार्यबल पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने के साथ–साथ नियमित प्रशिक्षण कार्यशालाएं, प्रोत्साहनात्मक कार्यक्रम, कार्य–स्थल पर सुरक्षा के लिए प्रशिक्षण इत्यादि भी आयोजित किए गए हैं।

17.25 ch b| ,e ,y fyfeVM% बी ई एम एल लि. एक समान अवसर प्रदान करने वाला नियोक्ता है तथा तदनुसार संगठन से संबंधित नीतियां और नियम पुरुष व महिला कर्मचारियों पर समान रूप से लागू होते हैं। महिला कर्मचारियो/अफसरों को समान अवसर मुहैया कराए गए हैं। इसके अलावा फैक्टरी एक्ट, मैटरनिटी बेनिफिट एक्ट आदि के अंतर्गत लागू सांविधिक प्रावधानों का अक्षरशः पालन किया जा रहा है। कंपनी ने अपनी सभी उत्पादन यूनिटों तथा कारपोरेट कार्यालय में महिला प्रकोष्ठों का गठन किया है ताकि महिला कर्मचारियों/अफसरों की शिकायतों का समाधान हो सके। ऐसी महिला कर्मचारियों/अफसरों को 100 रू. शिशुगृह भत्ता दिया जाता है जिनके बच्चे की आयु 5 वर्ष से कम हो। सभी महिला कर्मचारियों को उनके वेतन समूह पर ध्यान दिए बिना 12 दिन की आकस्मिक छुट्टी दी जाती है जबकि पुरूष कर्मचारियों को 7 दिन की आकस्मिक छुट्टी दी जाती है।

17.26 Hkkjr Mk;ukfeDl fy ¼ch Mh ,y½ % बी डी एल में 280 महिला कर्मचारी कार्यरत हैं। इनमें से 67 कार्यपालक और 213 गैर–कार्यपालक हैं और ये कंपनी के कुल कर्मचारियों का 9.9 % हिस्सा हैं। कंपनी ने अपने स्थाई आदेशों तथा सी डी ए नियमों में संशोधन किया है और 'कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के यौन उत्पीडन की रोकथाम' नामक अध्याय इसमें जोड़ा है, जिसे कदाचार माना जाता है । यौन उत्पीड़न की किसी भी शिकायत की जांच के लिए एक वरिष्ठ महिला अफसर की अध्यक्षता में एक 'शिकायत समिति' का गठन किया गया है ।

17.27 feJ /kkr| fuxe fy- ¼fe/kkfu ½ % मिधानि सांविधिक नियमों के अनुसार महिला कर्मचारियों के कल्याण के लिए सभी सुविधाएं मुहैया करा रहा है। आज की तारीख में महिला कर्मचारियों की संख्या 53 है। कार्यपालक तथा गैर–कार्यपालक सहित सभी महिला कर्मचारियों को विभागीय तथा बाह्य कार्यक्रमों के लिए नामांकित किया जाता है। महिला सशक्तीकरण के लिए 'मिधानि' की वचनबद्धता के भाग के रूप में, गुणवत्ता फास्टनर जो टिटेनियम तथा टिटेनियम एलॉय और स्पेशल स्टील से बनाए जाते हैं, के निनिर्माण के लिए एक संयंत्र लगाया जा रहा है जिसमें महिला कर्मचारियों को रखा जाएगा।

भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग

17.28 भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग लगभग 27 लाख भूतपूर्व सैनिकों, जिनमें भूतपूर्व सशस्त्र सेना कार्मिकों की विधवाएं तथा उनके आश्रित पारिवारिक सदस्य भी शामिल हैं, के लिए पुनर्वास तथा कल्याण संबंधी कार्य करता है। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लड़कियों एवं महिलाओं को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। वर्ष 2011–12 के दौरान, भूतपूर्व सैनिकों की 6261 पुत्रियों और 2602 विधवाओं को इन योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित किया गया।

j{kk e=ky; d foHkkxk d dk;k dh lph

क रक्षा विभाग

1 भारत और उसके प्रत्येक भाग की रक्षा करना, इसमें रक्षात्मक तैयारियां तथा ऐसे सभी काम आते हैं जो युद्ध के समय युद्ध को ठीक ढंग से चलाने तथा युद्ध के बाद सेना को कारगर ढंग से विसंघटित करने के लिए सहायक हैं।

2. संघ की सशस्त्र सेनाएं अर्थात सेना, नौसेना, वायुसेना।

3. रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय जिनमें सेना मुख्यालय, नौसेना मुख्यालय, वायुसेना मुख्यालय और रक्षा स्टाफ मुख्यालय भी शामिल हैं।

4. सेना , नौसेना और वायुसेना के रिजर्व ।

5. प्रादेशिक सेना।

6. राष्ट्रीय कैडेट कोर।

7. सेना, नौसेना और वायुसेना से संबंधित कार्य।

8. रिमाउंट, वेटरीनरी और फार्म संगठन ।

9. कैंटीन भंडार विभाग ।

10. सिविलियन सेवाएं जिनके लिए रक्षा प्राक्कलनों से भुगतान किया जाता है।

11. हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण और नेवीगेशनल चार्ट बनाना।

12. छावनियों की स्थापना, छावनी क्षेत्रों की हदबंदी और कुछ क्षेत्रों को उसकी सीमा के बाहर निकालना, ऐसे क्षेत्रों के स्थानीय स्वायत्त शासन, ऐसे क्षेत्रों में छावनी बोर्डों का गठन तथा प्राधिकारी और उनकी शक्तियां तथा उनमें आवास संबंधी विनियम (इसमें किराया नियंत्रण भी शामिल है)।

13. रक्षा प्रयोजनों के लिए भूमि और संपत्ति का अर्जन, अधिग्रहण, अभिरक्षा और उसकी वापसी । अनधिकृत कब्जा करने वालों को रक्षा भूमि और संपत्ति से बेदखल करना।

14. रक्षा लेखा विभाग।

15. खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग को जिस खाद्य सामग्री की खरीद का काम सौंपा गया है उसे छोड़कर, सेना की जरूरतों की पूर्ति के लिए खाद्य सामग्री की खरीद और उसका निपटान।

16. तटरक्षक संगठन से संबंधित सभी मामले जिनमें निम्नांकित भी शामिल हैं –

(i) तेल बिखराव के प्रति समुद्री क्षेत्र की निगरानी;

(ii) बंदरगाहों के जल क्षेत्र और अपतटीय खोज और उत्पादन प्लेटफार्मों, तटीय रिफाइनरियों और अनुषंगी सुविधाओं जैसे कि सिंगल बॉय मूरिंग (एस बी एम), क्रूड तेल टर्मिनलों (सी ओ टी) और पाइपलाइनों के 500 मीटर के भीतर के सिवाए विभिन्न समुद्री क्षेत्रों में तेल बिखराव के प्रति उपाय;

(iii) तटीय तथा विभिन्न समुद्री क्षेत्रों के समुद्री पर्यावरण में तेल प्रदूषण को दूर करने के लिए केन्द्रीय समन्वय एजेंसी;

(iv) तेल बिखराव आपदा हेतु राष्ट्रीय आकस्मिकता योजना का कार्यान्वयन; और

(v) तेल बिखराव रोकथाम और नियंत्रण कार्य हाथ में लेना, देश में जलपोतों और अपतटीय प्लेटफार्मों का निरीक्षण कार्य करना, इसमें वाणिज्य, पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के

अनुसार बंदरगाहों की सीमाओं के भीतर का क्षेत्र शामिल नहीं है।

17. देश में गोताखोरी और संबंधित कार्यकलापों से संबंद्ध मामले।

18. केवल रक्षा सेवाओं के लिए अधिप्राप्ति ।

ख रक्षा उत्पादन विभाग

1. आयुध निर्माणी बोर्ड और आयुध निर्माणियां

2. हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

3. भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड

4. माझगांव डाक लिमिटेड

5. गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड

6. गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

7. भारत डायनामिक्स लिमिटेड

8. मिश्र घातु निगम लिमिटेड

9. गुणता आश्वासन महानिदेशालय और वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय सहित रक्षा गुणता आश्वासन संगठन ।

10. मानकीकरण निदेशालय सहित रक्षा उपस्करों और भंडारों का मानकीकरण ।

11. भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड

12. हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड

13. वैमानिकी उद्योग का विकास और नागर उड्डयन मंत्रालय तथा अंतरिक्ष विभाग से संबंधित प्रयोक्ताओं को छोड़कर अन्य के बीच समन्वय ।

14. रक्षा उपस्करों का स्वदेशीकरण, विकास तथा उत्पादन और रक्षा उपस्करों के निर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी ।

15. रक्षा निर्यात और रक्षा उत्पादन में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ।

ग रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति का राष्ट्रीय सुरक्षा पर होने वाले प्रभाव का जायजा लेकर रक्षा मंत्री को उसकी जानकारी और सलाह देना।

2. हथियारों, हथियार–प्लेटफार्मों , सैन्य संक्रियाओं, निगरानी, सहायता और संभारिकी आदि से संबंधित सभी वैज्ञानिक पहलुओं के संबंध में और संघर्ष के सभी संभावित क्षेत्रों में रक्षा मंत्री, तीनों सेनाओं और अंतर सेवा संगठनों को सलाह देना।

3. ऐसी प्रौद्योगिकियों, जिनका भारत को निर्यात विदेशी सरकारों के राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी नियंत्रण का विषय है, के अर्जन के बारे में विदेशी सरकारों के साथ समझौता प्रलेखों से संबंध सभी मामलों पर रक्षा मंत्रालय की नोडल समन्वय एजेंसी के रूप में विदेश मंत्रालय की सहमति लेकर कार्य करना ।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान तथा डिजाइन, विकास, परीक्षण और मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम तैयार करना और उसे कार्यान्वित करना।

5. विभाग की एजेंसियों, प्रयोगशालाओं, स्थापनाओं, रेजों, सुविधाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं का निर्देशन और प्रशासन ।

6. वैमानिकी विकास एजेंसी।

7. सैन्य विमानों के डिजाइन, उड़ान योग्यता का प्रमाणन, उनके उपस्करों तथा भंडारों से संबंधित मामले।

8 संसाधन जुटाने के लिए विभाग के कार्यकलापों से तैयार प्रौद्योगिकियों के संरक्षण और हस्तांतरण से संबंधित सभी मामले।

9. रक्षा मंत्रालय द्वारा प्राप्त की जाने वाली सभी शस्त्र प्रणालियों और तत्संबंधी प्रौद्योगिकी के अधिग्रहण और मूल्यांकन के कार्यों में भाग लेना तथा वैज्ञानिक विश्लेषण में सहायता करना।

10. उत्पादन यूनिटों और उद्यमों द्वारा सशस्त्र सेनाओं के लिए उपस्कर और भंडारों के विनिर्माण या विनिर्माण के प्रस्तावों के लिए प्रौद्योगिकी के आयात के प्रौद्योगिकीय तथा बौद्धिक संपदा संबधी सभी पहलुओं पर सलाह देना।

11. पेटेंट अधिनियम 1970 (1970 का 39) की धारा 35 के अंतर्गत प्राप्त मामलों पर कार्रवाई करना।

12. राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी अध्ययन और जनशक्ति को प्रशिक्षण संबंधी अध्ययन और जनशक्ति को प्रशिक्षण देने के लिए व्यक्तियों, संस्थाओं तथा कार्पोरेट निकायों को वित्तीय तथा अन्य सामग्री संबंधी सहायता देना ।

13 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर विदेश मंत्रालय के परामर्श करके निम्नलिखित मामलों सहित राष्ट्रीय सुरक्षा में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की भूमिका से संबद्ध मामले :–

(i) अन्य देशों और अंतः सरकारी एजेंसियों के अनुसंधान संगठनों से संबंधित मामले विशेष रूप से जो राष्ट्रीय सुरक्षा के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय पहलुओं के साथ–साथ उनसे संबंधित हैं।

(ii) इस विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्यरत भारतीय वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकी–विदों को प्रशिक्षण और विदेशी छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने के लिए विदेश स्थित विश्वविद्यालयों, शैक्षिक और अनुसंधान–उन्मुख संस्थाओं के साथ व्यवस्था करना।

14. विभाग के बजट से निर्माण कार्य करना और भूमि खरीदना जो विभाग के बजट के नामे डाले जाते हैं।

15. विभाग के नियंत्रणाधीन कार्मिकों से संबंधित सभी मामले।

16. इस विभाग के बजट से सभी प्रकार के भंडारों, उपकरणों और सेवाओं का अर्जन।

17. विभाग से संबंधित वित्तीय मंजूरिया।

18. राष्ट्रीय सुरक्षा के वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं को प्रभावित करने वाले कार्यकलापों से संबंधित भारत सरकार के किसी अन्य मंत्रालय, विभाग, एजेंसी के साथ समझौता अथवा व्यवस्था करके इस विभाग को सौंपे गए और इस विभाग द्वारा स्वीकार किए गए कोई भी अन्य कार्य ।

घ भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग

1. भूतपूर्व सैनिकों से संबंधित मामले, जिनमें पेंशनभोगी भी शामिल हैं।

2. भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना ।

3. पुनर्वास महानिदेशालय तथा केन्द्रीय सैनिक बोर्ड से संबंधित मामले।

4. निम्नलिखित का प्रशासन :

(क) सेना के वास्ते पेंशन विनियम, 1961 (भाग 1 और 2);

(ख) वायुसेना के वास्ते पेंशन विनियम, 1961 (भाग 1 और 2);

(ग) नौसेना पेंशन विनियम, 1964; और

(घ) सशस्त्र सैन्य कार्मिकों को हताहत पेंशनरी अवार्डों के हकदारी विनियम, 1982

ङ रक्षा (वित्त) प्रभाग

1. सभी रक्षा मामलों की वित्त संबंधी जांच करना ।

2. रक्षा मंत्रालय और सेना मुख्यालयों के विभिन्न अधिकारियों को वित्तीय सलाह देना।

3. रक्षा मंत्रालय के एकीकृत वित्त प्रभाग के रूप में कार्य करना।

4. व्यय संबंधी सभी योजनाओं/प्रस्तावों को तैयार करना और उनके कार्यान्वयन में सहायता करना।

5. रक्षा योजनाएं तैयार करने और उनके कार्यान्वयन में सहायता करना।

6. रक्षा सेनाओं के लिए रक्षा बजट और अन्य प्राक्कलन, रक्षा मंत्रालय के सिविल प्राक्कलन, रक्षा पेंशनों के संबंध में प्राक्कलन तैयार करना और बजट के अनुरूप योजनाओं की प्रगति पर निगरानी रखना।

7. बजट बनाने के बाद यह सुनिश्चित करना कि व्यय न तो बहुत कम हो और न ही अनपेक्षित रूप से अधिक हो।

8. सशस्त्र सेना मुख्यालयों की शाखाओं के प्रमुखों को अपने वित्तीय दायित्व का निर्वाह करने के लिए सलाह देना।

9. रक्षा सेवाओं के लिए लेखा प्राधिकारी के रूप में कार्य करना ।

10. रक्षा सेवाओं के लिए विनियोजन लेखा तैयार करना।

11. रक्षा लेखा महानियंत्रक के माध्यम से रक्षा व्यय के भुगतानों और आंतरिक लेखापरीक्षा के दायित्व का निर्वाह करना।

1 tuojh] 2011 l vkx inklhu e=h] luk/;{k vkj lfpo

j{kk e=h

Jh ,-d-vUVuh — 24 väcj] 2006 l vkx

j{kk jkT; e=h

Jh ,e-,e- iYye jkt — 28 eb] 2009 l vkx

j{kk lfpo
Jh inhi dekj
31 जुलाई, 2009 (अपराह्न)से 14 जुलाई, 2011 (पूर्वाह्न) तक
Jh 'kf'k dkr 'kek
14 जुलाई, 2011(पूर्वाह्न) से आगे
lfpo j{kk mRiknu
Jh vkj-d-Çlg
31 जुलाई, 2009 (अपराह्न) से 24 जून, 2011(अपराह्न) तक
Jh 'k[kj vxoky
6 जुलाई, 20011(पूर्वाह्न) से आगे
lfpo Hkr iol lfud dY;k.k
Jherh uhye ukFk
1 जून, 2009 से 30 सितंबर, 2011(अपराह्न) तक
Jh lehjUæ pVth
5 अक्तूबर, 2011(पूर्वाह्न) से आगे
lfpo¼j{kk vuql/kku ,o fodkl½ rFkk j{kk e=h d oKkfud lykgdkj
Mk- oh-d-lkjLor
31 अगस्त, 2009 (अपराह्न) से आगे
lfpo j{kk foÙk
Jherh uhrk dij
1 जून, 2010 (पूर्वाह्न) से 31 मार्च, 2011(अपराह्न) तक
Mk- fot;y{eh d xIrk
1 अप्रैल, 2011 (पूर्वाह्न) से 31 दिसंबर, 2011(अपराह्न) तक'
Jh ,-d-pkiMk u foÙk lykgdkj¼ j{kk lok,½ के रूप में 31 दिसंबर, 2011(अपराह्न) से आगे प्रभार संभाला ।

luk/;{k
tujy oh d Çlg]
ihoh,l,e],oh,l,e] okbl,l,e],Mhlh
31 मार्च, 2010 (अपराह्न) से आगे

ukluk/;{k
,Mfejy fuely oek]
ihoh,e,e] ,oh,l,e] ,Mhlh
31 अगस्त, 2009 (अपराह्न) से आगे

ok;lluk/;{k
,;j phQ ek'ky ihoh uk;d]
ihoh,l,e] oh,l,e] ,Mhlh
31 मार्च, 2009 (अपराह्न) से 31 जुलाई, 2011 (अपराह्न) तक

,;j phQ ek'ky ,u,d ckmu]
ihoh,l,e],oh,l,e]oh,e],Mhlh
31 जुलाई, 2011 (अपराह्न) से आगे

v/;{k] lh vk ,l lh
,;j phQ ek'ky ihoh uk;d
31 मार्च, 2010 से 31 जुलाई, 2011 (अपराह्न) rd

,Mfejy fuely oek
31 जुलाई, 2011(अपराह्न) से आगे

आदर्श को–ऑपरेटिव हाउसिंग, मुंबई के संबंध में नियंत्रक–महालेखापरीक्षक की वर्ष 2011–12 की रिपोर्ट सं. 11 संबंधी संक्षिप्त विवरण

ifronu d e[; y[kkijh{kk fu"d"k fuEu idkj Fk%

* आदर्श को–ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, मुम्बई का मामला राष्ट्रीय सुर्खियों में छाया रहा है। सी.एण्ड ए. जी. का यह प्रतिवेदन दस्तावेजी प्रमाण प्रस्तुत करता है कि किस तरह से चुनिंदा कर्मचारियों का एक वर्ग मुम्बई के हृदय में स्थित प्रमुख सरकारी भूमि को कारगिल हीरोज, युद्ध विधवाओं, भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण आदि के नाम पर हथियाने के लिए नियमों और विनियमों को विकृत कर सकता था। एजेन्सियों में, अन्य के अलावा, रक्षा कार्यालय, महाराष्ट्र सरकार के विभाग तथा एजेन्सियां तथा भारत सरकार का पर्यावरण एवं वन मंत्रालय सम्मिलित थे।

* महाराष्ट्र सरकार तथा साथ ही रक्षा संपदा कार्यालय मुम्बई के अभिलेखों से एकत्रित किए गए तथ्य पक्के तौर से साबित करते हैं कि भूमि थलसेना के अधिकार में थी, एक सच्चाई जिसकी महाराष्ट्र सरकार के कर्मचारियों, एम.एण्ड जी. एरिया मुख्यालय तथा रक्षा संपदा कार्यालय को जानकारी होनी चाहिए थी, परन्तु जिससे उन्होंने संभवतः अनजान रहना बेहतर समक्षा। भूमि का टाइटल तथापि स्पष्ट नहीं था चूंकि इसे रक्षा मंत्रालय को औपचारिक तौर से कभी भी हस्तांतरित नहीं किया गया था।

* मौलिक रूप से सोसायटी का गठन मुख्यतया ''सैनिकों, भूतपूर्व सैनिकों तथा उनकी विधवाओं'' की सहायता के लिए किया गया था, परन्तु जैसे–जैसे स्थितियां सामने आईं इसकी सदस्यता का, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों, राजनेताओं तथा उनके रिश्तेदारों तथा अन्य वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को सम्मिलित करने के लिए, बड़ी मात्रा में विस्तार कर दिया गया। दिसम्बर 2010 को सोसायटी के सदस्यों की संख्या 102 थी।

lkslk;Vh d lnL;k dh cnyrh g, jpuk

o"k	j{kk ft le j{kk l lcf/kr flfofy;u lxBu lfEefyr g	j{kk d vykok	d y lnL;
2000	40	0	40
2002	38	33	71
2003	45	50	95
2010	37	65	102

* इस मामले में मानदंडों की अवहेलना सरकारी भूमि के अनुचित विनियोजन तक ही सीमित नहीं थीं। प्रायः हरेक बार महाराष्ट्र सरकार द्वारा सोसायटी को महत्वपूर्ण रियायतें दी गईं। बहुत से अधिकारी–दोनों सिविलियन तथा सेनाओं के–जो इस मामले के निपटान से जुड़े थे तथा उन निर्णयों को लेने में माध्यम बने थे, आखिरकार सोसायटी के सदस्य बन गये। कुछ मामलों में, इन अधिकारियों के रिश्तेदार सदस्य बन गए।

* सोसायटी को समायोजित करने के लिए एम.एम. आर.डी.ए. विकास योजना क्षेत्र में संशोधन किया गया और सड़कों के लिए आरक्षित क्षेत्र को आवासीय क्षेत्र में परिवर्तित किया गया।

* सार्वजनिक भूमि के एक और टुकड़े, अर्थात बी. ई.एस.टी. द्वारा अपने डिपो तक पहुँच मार्ग के रूप में उपयोग में लाए जाने वाले 2669.68 वर्ग मीटर के सटे हुए प्लॉट के एफ.एस.आई. का हस्तांतरण करके सेना के अधिकार वाली भूमि के दुर्विनियोजन में और बढ़ोत्तरी की गई।

* मनोरंजन क्षेत्र (आर.जी.) के बदले में अतिरिक्त एफ.एस.आई. प्रदान करने के लिए और आगे छूट दी गई। सोसायटी ने सरकार द्वारा अतिरिक्त एफ.एस.आई. मंजूरी किए जाने की स्थिति में ''आदर्श को–ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी में आवास उपलब्ध कराये जाने के लिए'' अतिरिक्त नाम भेजे। मुख्यमंत्री ने एफ.एस.आई. गणना से 15% आर.जी.एरिया घटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी।

* हाई राइज इमारतों के मानदंडों का उल्लघंन किया गया। सोसायटी के इमारत के विकास नियंत्रण नियम (डी.सी.आर.) 1967 के तहत स्वीकार्य अधिकतम ऊँचाई 45.6 मीटर थी। सोसायटी को 28 मंजिलों का निर्माण करने के लिए अनुमति दे दी गई तथा इमारत की कुल ऊँचाई 107.55 मीटर है।

* सदस्यों के पक्ष में पात्रता शर्तों में ढील दी गई। महाराष्ट्र सरकार ने फरवरी 2005 में सभी के लिए आय सीमा को बढ़ाते हुए तथा राज्य सरकार के सेवानिवृत्त कर्मचारियों तथा महाराष्ट्र के सेवारत और सेवानिवृत्त सैनिकों के संबंध में अधिवास की आवश्यकता को हटाते हुए जुलाई 1999 के सरकारी संकल्प के प्रावधानों में संशोधन कर दिया जिससे अब तक अपात्र रहे सदस्य पात्र बन गए।

* महाराष्ट्र सरकार का पर्यावरण विभाग, महाराष्ट्र तटीय जोन प्रबंधन प्राधिकरण, तथा भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय जैसी कई एजेंसियों की मौजूदगी के बावजूद, मुंबई में मंत्रालय से कुछ ही किलोमीटर के अन्दर 100 मीटर से ऊँची एक इमारत बिना आवश्यक अनुमति के खड़ी हो गई तथा संबंधित स्थानीय प्राधिकारियों से कब्जा प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर लिया।

* भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तटीय विनियमन अधिसूचना से संबंधित विद्यमान प्रावधानों की ओर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करने में चूक गया। इनकी इस सूचना ने पर्याप्त संदर्भ उत्पन्न कर दिया कि महाराष्ट्र सरकार इसे सोसायटी द्वारा प्रस्तावित आवासीय विकास के लिए 'अनापत्ति' के रूप में ले सके तथा इस प्रकार इसे एम.ओ.ई.एफ. की ''पर्यावरणी अनुमति'' के रूप में प्रयोग कर सके।

नोटः mi;Dr lkjk'k fu;=d egky[kkijh{kd }kjk miyC/k djk;k x;k gSA

रक्षा संपदा प्रबन्धन की निष्पादन लेखापरीक्षा का सार

[2010–11 का सी.एण्ड ए.जी., का प्रतिवेदन संख्या 35, संघ सरकार (रक्षा सेवाएं)]

17.31 लाख एकड़ भूमि के साथ रक्षा मंत्रालय सरकार में सबसे बड़ा भू–स्वामी है। सर्वोच्च स्तर पर भूमि का प्रबन्धन करने की जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय तथा महानिदेशालय रक्षा संपदा (डी.जी.डी.ई.) की है। बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण, अब अधिकतर शहरों में छावनी और स्टेशन क्षेत्र प्रायः शहर के मध्य में स्थित है। छावनी के अन्दर तथा बाहर दोनों स्थानों में पड़ने वाली अधिकतर रक्षा भूमि अब मुख्य वास्तविक संपदा बन चुकी है।

ifronu dk e[; y[kkijh{kk fu"d"kZ fuEu izdkj Fk%

* रक्षा भूमि के प्रबन्धन में केन्द्र बिन्दु की कमी थी। रक्षा मंत्रालय के पास केवल एक ही अनुभाग है जो कि इतनी बड़ी संख्या में मामलों को निपटाने के लिए अपर्याप्त है। इसके अलावा रक्षा संपदा प्रबंधन के अनेक पहलुओं पर जिम्मेदारी की रेखाएं भी धुंधली थीं, चूंकि संबंधित एजेंन्सियों में से कोई भी एजेन्सी जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए आगे नहीं आ रही थी।

* विभिन्न रक्षा स्थापनाओं के लिए भूमि की

आवश्यकता के भू–प्रतिमानों को असमान रूप से लागू किया जाना पाया गया। लेखा परीक्षा ने 39 मिलिट्री स्टेशनों के संबंध में, नये मिलिट्री स्टेशनों की बाबत बने वर्ष 1991 के प्रतिमानों को लागू करने पर पाया कि इन स्टेशनों के पास 81,814.82 एकड़ भूमि अधिक थी।

* स्थानीय मिलिट्री प्राधिकारियों के अनुसार और डी.ई.ओज, जोकि भूमि का रिकार्ड रखने के लिए जिम्मेदार है, के अभिलेखों में ए–1 भूमि के आंकड़ों में बड़े पैमाने पर असंगतताएं पाई गईं थीं। जैसाकि प्रतिवेदन में बताया गया है, भूमि का सर्वेक्षण एवं निरीक्षण किए जाने के अभाव में भूमि पर अतिक्रमण एवं इसको हड़पे जाने, जोकि बिलकुल आम हो गया है, का जोखिम रहता है।

* अधिग्रहीत भूमि का एक बड़ा भाग 1 वर्ष से लेकर 60 वर्षों से अधिक की अवधि में नामांतरित किये जाने के लिए प्रतीक्षा में था। उदाहरण के लिए 11 डी.ई.ओज के रिकार्ड में दर्ज 13.39 प्रतिशत भूमि मंत्रालय के नाम पर नामांतरित नहीं हुई थी। डी.जी.डी.ई. भी नामांतरण की स्थिति से संबन्धित केन्द्रीयकृत रिकार्ड रखने में असफल रहा।

* मंत्रालय ने दिसम्बर 1992 में डी.जी.डी.ई. को रक्षा उद्देश्यों के लिए वर्तमान धारित भूमि का उपयोग युक्तिसंगत और अधिकतम करने के लिए भूमि लेखापरीक्षा करने का निर्देश दिया। थलसेना मुख्यालय, तथापि, भूमि लेखापरीक्षा जारी रखने के लिए सहमत नहीं था और इसने मंत्रालय को सूचित किया कि आगे और लेखापरीक्षा नहीं की जा सकती थी। डी.जी.डी.ई. ने भी भूमि लेखापरीक्षा की प्रक्रिया को समाप्त होने दिया।

* भूमि अधिग्रहण में लम्बे विलम्ब देखे गए। तीन कमानों में डी.ई. ओज/ए.डी.ई.ओ. द्वारा पूरे किए गए भूमि अधिग्रहण के 10 मामलों में एक से आठ वर्ष तक विलम्ब हुआ था। 49 मामलों की पुनरीक्षा के दौरान जहाँ चार थलसेना तथा वायुसेना एवम् नौसेना की प्रत्येक की दो कमानों में अधिग्रहण प्रगति में है, लेखापरीक्षा ने पाया कि 15 मामले 1–5 वर्ष पुराने, 12 मामले 6–10 वर्ष पुराने, 15 मामले 11–20 वर्ष पुराने, 6 मामले 20 वर्ष से अधिक पुराने थे, और एक मामले की स्थिति के बारे में जानकारी नहीं दी गई थी। नवम्बर 1979 से जून 2003 की अवधि के 21 मामलों में संबंधित सरकारी संस्वीकृतियां जारी होने के पश्चात भी अवार्डों की अंतिम घोषणा का होना प्रतीक्षित था। दिसम्बर 1986 और मार्च 2009 के बीच के 18 मामलों में रुपये 56.24 करोड़ की भूमि लागत जमा कराने के बाद भी अधिग्रहण प्रक्रिया का पूरा होना अभी तक शेष था।

* रक्षा भूमि का लगातार लम्बे समय से व्यावसायिक दोहन हो रहा है। रक्षा भूमि पर शॉपिंग कम्प्लेक्सों को अनुमति देने तथा उनसे कमाए गए राजस्व को रेजिमेन्टल निधियों, जो कि संसदीय निगरानी के दायरे में नहीं आती, में जमा करने की परिपाटी निर्बाध रूप से जारी थी। विभिन्न लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में पहले ही उल्लिखित किए जा चुके मामलों के अनुवर्तन से पता चला कि धरातलीय स्तर पर बहुत ही नगण्य परिवर्तन हुआ है। उदाहरणार्थ, शॉपिंग कम्प्लेक्सों हेतु रक्षा भूमि दोहन तथा लोकनिधि से राजस्व के अन्तरण के कुछ मामले भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन, 2003 की संख्या 6, के पैरा संख्या 2.5 में उल्लिखित किए गए थे।

* छोड़ी गई भूमि के निपटान/ दोहन से संबधित कार्रवाई किए जाने की कमी थी। रक्षा मंत्रालय तथा डी.जी.डी.ई. के अभिलेखों की जांच से पता लगा कि पांच कमानों में छोड़े गए एयर फील्ड्स (ए.ए.एफ्स) तथा कैम्पिंग ग्राउण्डस (सी.जीज) का 25,888.81 एकड़ का एक क्षेत्र 1980 से ही सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं के अधिक्य में पड़ा हुआ था, जिसका ना तो कोई निपटान किया गया था और न ही कोई वैकल्पिक उपयोग। 7499.39 एकड़ भूमि पर

अतिक्रमण हो चुका था। सभी कमानों में ऐसी भूमि पर अतिक्रमण 16.10 से 38.96 प्रतिशत की बीच था।

* अतिक्रमित रक्षा भूमि का क्षेत्र जनवरी 1997 में 6,903 एकड़ से बढ़कर जुलाई 2009 में 14,539.38 एकड़ हो गया। ना तो भूमि का किसी प्राधिकारी द्वारा कोई निरीक्षण किया जा रहा था और रक्षा संपदा अधिकारियों द्वारा आवश्यक प्रमाण–पत्र दिए जा रहे थे और न ही मंत्रालय एवं डी.जी.डी.ई. नये अतिक्रमणों को जन्म देने वाली परिस्थितियों की जाँच अथवा अन्वेषण की प्रगति की निगरानी कर रहे थे।

* यद्यपि गोल्फ एक अधिकृत गतिविधि नहीं है, फिर भी थलसेना के पास 8076.94 एकड़ क्षेत्र में 97 गोल्फ कोर्स थे। रक्षा भूमि पर गोल्फ कोर्स, आर्मी जोन गोल्फ नामक एक निजी पंजीकृत सोसायटी द्वारा संचालित किए जा रहे थे। क्लब के सदस्य न केवल सेनाकर्मी ही थे बल्कि भूतपूर्व सैनिक, सिविलियन तथा विदेशी भी इसके सदस्य थे। सरकारी परिसम्पत्तियों के उपयोग के लिए किराया दिए बिना भारी मात्रा में राजस्व कमाया जा रहा था। कमाये गए राजस्व को सरकारी खाते में जमा न करा कर सम्भवतया रेजिमेन्टल निधि में जमा कर दिया गया था।

* रक्षा भूमि का अनधिकृत रूप से पार्कों तथा क्लबों के लिए उपयोग किया जा रहा था। आगरा, लखनऊ, सिकन्दराबाद तथा पुणे में 122.58 एकड़ रक्षा भूमि विभिन्न क्लबों को मामूली दरों पर पट्टे पर दे दी गई थी। भूमि का उपयोग विवाह, पार्टियों, प्रदर्शनियों आदि जैसे अनधिकृत उद्देश्यों के लिए किया जा रहा था। क्लबों पर वर्ष 2004–05 से 2009–10 के लिए रुपये 2.14 करोड़ बकाया थे।

* पट्टों के प्रबंधन की स्थिति निराशाजनक थी। रुपये 11,033 करोड़ कीमत की 2500 एकड़ रक्षा भूमि, रुपये 2.13 करोड़ के एक वार्षिक किराए पर पट्टे पर थी, जो वर्तमान बाजार कीमत को देखते हुए नगण्य था। 3780 पट्टों के नवीनीकरण में कोई प्रगति नहीं हुई थी और 1800 मामलों में, पट्टों को खाली कराने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया गया था।

* मंत्रालय की भूमि नीति का उल्लघंन करते हुए, ओल्ड ग्रांट बंगलों (ओ.जी.बीज) का अनधिकृत विक्रय/हस्तान्तरण, ओ.जी. बीज का व्यवसायिक उद्देश्यों जैसे मैरिज हॉल्स तथा होटल/रेस्तराँ के लिए उपयोग के अनेकों मामले देखे गए थे। मंत्रालय को स्थलों के पुनर्ग्रहण के लिए भेजे गए 92 मामले एक से सात वर्षों से संस्वीकृति के लिए लंबित पड़े थे तथा पुनर्ग्रहण अधिसूचनाओं के 65 मामले मंत्रालय के पास दो से सात वर्षों से लंबित पड़े थे।

नोटः mi;qDr lkjk'k fu;=d egkys[kkijh{kd }kjk miyC/k djk;k x;k gA

II j{kk ea=ky;

iSjk 2-1% LVsV&vkWQ&n&vkVZ rksi dk 'kkfey djus esa foyEc

विशिष्ट तोप प्रणाली की आवश्यकता को परिभाषित करने में रक्षा मंत्रालय और सेना की विफलता ने अपने तोपखाने को विश्व भर में उपयोग में लाई जा रही नवीनतम प्रोद्योगिकी की तोपों को प्राप्त करने में एक दशक से अधिक समय के लिए वंचित किया। 1970 की पुरानी तकनीक की वर्तमान तोपों को प्रतिस्थापित करके स्टेट–ऑफ–द–आर्ट तकनीक की तोपों की अधिप्राप्ति में असामान्य विलम्ब ने न केवल सेना की यौद्धिक तैयारियों को प्रभावित किया अपितु भारी लागताधिक्य भी हुआ।

iSjk 2-2% ejEer lqfo/kkvksa ¼feuh fMiks½ dh LFkkiuk esa foyEc ,oa Vsªyjksa dk vuko';d vk;kr

मार्च 2008 और अक्टूबर 2009 के मध्य, सितम्बर 2010 तक 12 वेपन लोकेटिंग राडार (डब्ल्यु. एल. आर.) की मरम्मत हेतु मिनी डिपो स्थापित करने के लिए, संयुक्त राज्य सरकार (यूएसजी) को ₹ 100.18 करोड़ का अग्रिम भुगतान किया गया था। नियत दिनांक तक मरम्मत सुविधाओं की स्थापना की ओर कोई प्रगति नहीं हो पाई थी। परिणामस्वरूप, मरम्मत की कमी से कई डब्ल्यू एल आर निष्क्रिय पड़े थे। इसके साथ–साथ डब्ल्यू एल आर के लिए सहायक संयत्रों की आवश्यकता के अशुद्ध विश्लेषण से ₹ 2.19 की लागत के 12 ट्रेलरों की अनावश्यक अधिप्राप्ति हुई।

iSjk 2-3% fe'ku ,DlsYy lwpuk rduhdh ¼,e-bZ-vkbZ-Vh-½

रक्षा लेखा विभाग (डीएडी) के प्रत्येक कार्य के स्वचालन के उद्देश्यों के साथ नियोजित डीएडी की ''मिशन एक्सेल सूचना तकनीक (एमईआईटी)'' परियोजना ₹ 20.47 करोड़ व्यय करने के बावजूद अपनी पटरी से उतर गई। डीएडी के सभी कार्य के स्वचालन के वाँछित उद्देश्य चार वर्षों तक प्राप्त नहीं हो सके।

III थलसेना

iSjk 3-1% mPprj nj dh Lohd`fr ds dkj.k vfrfjDr O;;

महानिदेशक राष्ट्रीय कैडेट कोर (डीजीएनसीसी) ने अपने कैडेटों के लिए मच्छरदानियों की अधिप्राप्ति करते समय सामान्य वित्तीय नियमों और रक्षा अधिप्राप्ति नियमावली (डीपीएम) के प्रावधानों का उल्लंघन किया था। अशुद्ध पद्धति अपनाते हुए एल–I फर्म से उच्चतर दरों पर गत आपूर्तिकर्ता से 80 प्रतिशत मदें क्रय करते हुए ₹ 21 करोड़ का फालतू व्यय किया गया।

iSjk 3-2% O;fDrxr fdV enksa dh vf/kiwfrZ grq ljdkjh [kkrs ls xSj&ljdkjh ys[kk esa fuf/k;ksa dk fopyu

सेना मुख्यालय ने मंत्रालय की अनुमति के बिना व्यक्तिगत किट भंडार (पीकेएस यूएन) के नाम से एक व्यावसायिक दुकान स्थापित की। इस दुकान के माध्यम से विगत तीन वर्षों में ₹ 140.75 करोड़ मूल्य के सरकारी भंडार का लेन देन किया गया था। पीकेएस (यूएन) के लिए भंडार सरकारी निधियों को गैर सरकारी लेखों में विपथन करके खरीदे गये थे और सेना ने ₹ 5.36 करोड़ का सेवा–कर अनियमित रूप से प्रभारित किया था।

iSjk 3-11% flfoy gk;MZ VªkalikVZ Bsdsnkjksa dks vfu;fer Hkqxrku

दो आयुध डिपुओं द्वारा निर्भर यूनिटों को आयुध भंडारो के परिवहन हेतु सिविल हायर्ड ट्रांसपोर्ट की शंकायुक्त

बुकिंग के कारण सिविल हायर्ड ट्रांसपोर्ट के ठेकेदारों को ₹ 32.29 लाख का अनियमित भुगतान किया गया।

IV fuek.k dk;l ,o lU; vfHk;rk lok,

Para 4.1: fc t yh fcyk dk Hkxrkukf/kD;

गलत दर सूची लागू करने तथा सैन्य इंजीनियरी सेवा द्वारा सही संविदागत अधिकतम मांग (सीएमडी) सूचित करने में विफलता के कारण विद्युत आपूर्ति एजेंसियों को ₹ 1.63 करोड़ का भुगतानाधिक्य किया गया।

V lhek lM+d laxBu

i|jk 5-2 lLohdfr d| ckjg o"kk d| mijkr Hkh i|y dh vi.krk

निर्माण कार्य के अनुपयुक्त नियोजन एवं पर्यवेक्षण के कारण ₹ 3.54 करोड़ व्यय करने के बावजूद 12 वर्षों के उपरान्त भी उत्तराखण्ड में एक नदी पर पुल सम्पूर्ण नहीं हो सका।

VI j{kk vuql/kku ,o fodkl laxBu

i|jk 6-1 vuqi;kxh Hkfe dk yu d| dkj.k ykdeku dk vo:) gkuk

अप्रैल 2008 में एक केन्द्र स्थापित करने के लिए रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने ₹ 73.26 करोड़ में फरीदाबाद में 407 एकड़ की जंगलात भूमि को अधिग्रहीत किया। यह भूमि निर्माण कार्रवाई के लिए प्रयोग नहीं की जा सकी क्योंकि गैर–जंगलात उद्देश्य के लिए भूमि के विपथन की अनुमति केन्द्रीय शक्तिप्राप्त समिति (सीईसी) द्वारा प्रदान नहीं की गई थी।

i|jk 6-3 vif{kr fofunsZ'k d| uhp ,d ekM;yj fczt dk fodkl

सैन्य भार वर्ग (एमएलसी)–70 के साथ 46 मीटर स्पैन के मॉडयुलर पुल की प्रयोक्ता की आवश्यकता के प्रति डीआरडीओ ने ₹ 21.46 करोड़ व्यय करते हुए 40 मीटर एमएलसी–70 मॉडयुलर पुल विकसित किया। सेना ने आवश्यक मानकों से कम होने के कारण पुल स्वीकार नहीं किया और मॉडयुलर पुल की आवश्यकता 9 वर्षों तक पूरी नहीं हुई।

VII vk;|/k vuql/kku ,o fodkl LFkkiuk e| ifj;kstuk icU/ku

v/;k; 7% vk;|/k vuql/kku ,o fodkl LFkkiuk ¼,-vkj-Mh-bZ-½ e| ifj;kstuk icU/ku

विगत 15 वर्षों के दौरान एआरडीई द्वारा हस्तगत की गई स्टाफ परियोजनाओं की जांच पड़ताल से प्रकट हुआ कि जांची गई समाप्त 46 स्टाफ परियोजनाओं में से केवल 13 ही उत्पादन हेतु गई जबकि शेष में या तो कोई उत्पादन वांछित न था अथवा सफलता का दावा साबित नहीं किया जा सका। कई परियोजनाएं असफल हो गईं क्योंकि इन्हें सामान्य स्टाफ गुणवत्ता आवश्यकता (जी.एस.क्यू.आर.) के निश्चित किए बिना हाथ में लिया गया या प्रयोक्ता के द्वारा गुणवत्ता आवश्यकता में बार–बार परिवर्तन किया गया। अत्यधिक समयावृद्धि और अंतिम उत्पाद को प्रयोक्ता द्वारा स्वीकार न किया जाना भी परियोजना के समाप्त किए जाने का कारण बना। कई मामलों में विलंब और असफलता आयात पर निर्भरता का कारण बना।

VIII vk;|/k QDVh laxBu

i|jk 8-2% ,d Ø; djkj dk vfre :i nu| e| foyac d| dkj.k vfrfjDr 0;;

भारी वाहन फैक्टरी आवड़ी, सशस्त्र वाहन मुख्यालय आवड़ी और रक्षा मंत्रालय द्वारा एक मशीन की उपलब्धता का केवल एक ही स्त्रोत है, जानते हुए भी संयुक्त रूप से एक प्रस्ताव को सुनिश्चित करने में असामान्य विलम्ब किया जिससे इसकी अधिप्राप्ति नये प्रस्तावों के उपरांत करने से ₹ 1.36 करोड़ का परिहार्य अधिक व्यय हुआ।

i|jk 8-4 Qe| dk vn|; ykHk nuk

आयुध फैक्टरी अम्बरनाथ मिनरल और मेटल ट्रैडिंग कॉरपोरेशन, मुम्बई से उनकी कॉपर कैथोड्स की अप्राप्त मात्रा की आपूर्ति हेतु फरवरी 2007 के लंदन मेटल एक्सचेंज दरों पर आपूर्ति आदेश के अनुसार करवाने में विफल रही और उसे मई 2007 की उच्चतर दरों पर स्वीकृत करके ₹ 9.77 करोड़ का अदेय लाभ पहुँचाया।

i|jk 8-5% ikiyV dk ifjgk;| vk;kr

आयुध फैक्टरी खमरिया ने आयुध फैक्टरी बोर्ड को एक गोलाबारूद के प्रोपैलेंट के शेष भण्डार की गलत सूचना प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप ₹ 2.17 करोड़ मूल्य के प्रोपैलेंट का परिहार्य आयात हुआ और जब आयुध फैक्टरी भंडारा से उसी मद की उत्पादन लागत की तुलना की गई तो ₹ 39.79 लाख का अधिक व्यय पाया गया।

egRoi.k y[kk&ijh{kk fVIif.k;k dk lkjk'k&j{kk e=ky;

2011&12 dk ifronu l[;k 20

I. vx.kh; ok;;ku d gfFk;kjk d vf/kxg.k e foyc

जनवरी 2004 में हवाई जहाज की अधिप्राप्ति के साथ संबद्ध पैकेज को अंतिम रूप दिये बिना 3405.61 करोड़ रूपये लागत के 16 मिग–29 के हवाई जहाज प्राप्त करने के उपगमन में त्रुटि के कारण दिसम्बर 2009 में छः हवाई जहाज बिना शस्त्रों के प्रदान किये गये। तदोपरांत पांच और हवाई जहाजों को मई 2011 में परिदान किया गया। हवाई जहाज के हथियारों के लिए केवल मार्च 2006 में संविदा की गई जिस कारण शस्त्रों का अक्टूबर 2010 तक परिदान नहीं हुआ जिसने हवाई जहाज की संक्रियात्मक क्षमताओं को बुरी तरह प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त हवाई जहाज के लिए बियोंड विजुअल रेंज मिसाइल की 93.68 करोड़ रुपये लागत पर संविदा की गई जिसका भारतीय वायुसेना के पास असंतोषजनक इतिहास है।

(पैराग्राफ 2.1)

II. fuEu Lrj Vkl ikVcy jMkjk dh vfèkikfIr e vfrfjDr 0;;

संविदा पूर्व प्रक्रिया को अंतिम रूप देने में प्रत्येक स्तर पर विलम्ब से वायु सुरक्षा सर्वेक्षण प्रणाली की संवेदनशील आवश्यकता का अधिग्रहण अवरोधित हुआ। इसके अलावा मंत्रालय द्वारा अभिप्राप्ति के दौरान अपर्याप्त मूल्य सम्बधी बातचीत के कारण बिना औचित्य मैसर्स भारत इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड को 57.46 करोड़ रूपए का परिहार्य अतिरिक्त भुगतान किया गया।

(पैराग्राफ 2.2)

III. ,d fuxjkuh i.kkyh d lpkyu e vfrfjDr 0;;

भारतीय वायुसेना ने 676 करोड़ रूपए लागत पर दो महत्तवपूर्ण सर्वेक्षण प्रणालियों की अधिप्राप्ति की। इनमें से एक प्रणाली दुर्घटनाग्रस्त हो गई तथा मई 2009 से अब तक असंक्रियात्मक रही है। दुर्घटना, मौसम परिवर्तनों को ध्यान में रखने, अवरोध स्थल पर जारी क्रियाकलापों के अप्रर्याप्त पर्यवेक्षण तथा मरम्मत क्रियाकलापों के अनुसरण में विफलता के कारण हुई। दोनों प्रणालियों ने फैबरिक्स का प्रयोग होने के बावजूद भी समयापूर्व खराब होना शुरू हो गया जिससे हीलियम का अधिक रिसाव होने के कारण संक्रिया लागत में अधिक व्यय हुआ। भारतीय वायुसेना को यह प्रणाली दो और वर्षों तक उपलब्ध होने की संभावना नहीं है।

(पैराग्राफ 2.3)

IV vui;Dr lpkj midj.kk dh vf/kikfIr

वायु सुरक्षा वी./यू.एच.एफ. लिंक्स सभी वायु संक्रियाओं में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय/भारतीय वायुसेना ने हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (एच.ए.एल.) द्वारा डिजाइन व विकसित किये संचार उपकरण को स्वीकार किया जबकि उपकरण ने तकनीकी आवश्यकताओं को प्राप्त नहीं किया था। विचारणीय समय और 116 करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद भारतीय वायुसेना की संचार उपकरण की संवेदनशील आवश्यकताओं अभी तक पूरी की जानी है।

(पैराग्राफ 2.3)

V ihfltu vikt jMkjk dh vf/kikfIr e vlkekU; nsjh

भारतीय नौ सेना ने प्रीसिजन अप्रोच रेडारों की अधिप्राप्ति में अत्यधिक विलम्ब किया परिणामस्वरूप प्रारंभिक दरों से अधिक होने के कारण 2.01 करोड़ रूपये का अतिरिक्त व्यय हुआ। फास्ट ट्रैक आधार पर खरीदे जाने वाले रेडार अधिप्राप्ति प्रक्रिया शुरू करने के आठ वर्ष उपरान्त अप्रैल 2009 में चालू किये गये। चालूकरण के बार राडार की निष्पादन क्षमता अनिश्चित थी।

(पैराग्राफ 2.5)

VI Hkkjrh; nwrkokl ds ek/;e ls rRdky okfudh HkkMkjk dh vf/kikfIr e foyEc

प्रत्येक चरण पर विलम्ब से भारतीय दूतावासों के माध्यम से संवेदनशील एवं अत्यावश्यक विमानन भंडारों/पुर्जों की अधिप्राप्ति बाधित हुई। वायुसेना मुख्यालय में निर्णय लेने की गति धीमी थी जिस कारण संविदाएं करने में देरी हुई। संविदा की परिदान समयसूची उल्लेखनीय रूप से अधिक थी जो अधिप्राप्ति की अत्यावश्यकता को कम करती है।

(पैराग्राफ 2.7)

VII iqtk dh vf/kikfIr ij ifjgk;l 0;;

वैकल्पिक धारा के तहत आपूर्ति आदेश देने में विफलता के परिणामस्वरूप पुर्जों की अनुवर्ती अधिप्राप्ति पर 4.29 करोड़ रूपए का परिहार्य व्यय हुआ। इसके अतिरिक्त अधिप्राप्ति में विलम्ब के कारण अधिक लम्बे समय तक हिस्से–पुर्जे प्राप्त न होने से स्थापित अवसंरचना अनुपयोजित रही।

(पैराग्राफ 3.1)

VIII ¶ys;j dkjrlk dh vf/kikfIr e fu"Qy 0;;

मिग–21 बाइसन हवाई जहाज उन्नयन परियोजना में प्रयोग के लिए अधिप्राप्ति 20,000 फ्लेयरों में से 3.09 करोड़ रुपये लागत के 19540 फ्लेयरों ने अपने जीवन काल के 7 वर्ष भण्डार में व्यतीत किए। इस तरह संक्रिया करने वाले स्क्वाड्रनों को देने से पूर्व जहां इनका उपयोग होना था फ्लेयर कारतूसों का जीवनकाल समाप्त होने के कारण फ्लेयरों की अधिप्राप्ति अफलदायी रही।

(पैराग्राफ 3.2)

IX ,d gfydkIVj ds fy, dyiqtk dh vfekikfIr e ifjgk;l 0;;

के.ए.31 हेलिकॉप्टर के पुर्जों की अधिप्राप्ति के मामले की प्रक्रिया में असामान्य विलम्ब हुआ। इसके अतिरिक्त भारतीय नौसेना की एक फर्म की निविदा दरों की वैधता बढ़ा पाने में विफलता के परिणामस्वरूप 10.71 करोड़ रुपये का परिहार्य व्यय हुआ।

(पैराग्राफ 4.1)

X foap jhy gkbMªkfyd dh vf/kikfIr ij ifjgk;l 0;;

विंच रील हाइड्रोलिक की अधिप्राप्ति के लिए निविदाओं की प्रक्रिया के प्रारम्भिक चरण में निविदा मूल्यांकन समिति की उचित कर्त्तव्यपरायणता की कमी से अधिप्राप्ति में विलम्ब हुआ तथा 9.73 करोड़ रुपए का परिहार्य व्यय हुआ।

(पैराग्राफ 4.2)

XI x l Vjckbu dh vf/kikfIr e vfrfjDr 0;;

भारतीय नौसेना द्वारा 9 गैस टरबाइनों के अधिप्राप्ति आदेश विभिन्न करने से 2.49 करोड़ रुपये का अधिक व्यय हुआ क्योंकि पांच गैस टरबाइनों की अनुवर्ती अधिप्राप्ति उच्च लागत पर हुई।

(पैराग्राफ 4.3)

XII iuMfCc;k ij ,l-ih-,y- IykfVx Vcyk dh vf/kLFkkiuk e vlk/kkj.k foyEc

एस.पी.एल प्लोटिंग टेबिल एक नौ संचालन एवं सामरिक तंत्र स्थिति अंकित करने वाली प्रणाली है जो जहाज को अपनी स्थिति बताने के साथ–साथ सैंसर इकाईयों से प्राप्त आंकड़ों को अंकित कर सकती है। 6.05 करोड़ रुपए लागत पर अधिप्राप्त चार एस.पी.एल. प्लोटिंग इसकी प्राप्ति के चार वर्ष उपरांत भी पनडुब्बियों पर अधिष्ठापित नहीं हो सकी। निरंतर अनुपयोज्य का मतलब है कि इन प्लोटिंग टेबलों के बिना इसके उपयोग के सितम्बर 2008 में अपनी वारंटी सुरक्षा समाप्त कर दी।

(पैराग्राफ 4.4)

XIII ty vkifrl ;ktuk d dk;kUo;u e /kheh ixfr

विशाखापट्टनम में जल आपूर्ति योजना के क्रियान्वयन/चालूकरण में सैन्य अभियंता सेवाओं की सात वर्ष से अधिक की असामान्य देरी थी। 4.53 करोड़ रुपये के व्यय से रक्षा कर्मिकों को पर्याप्त एवं स्वच्छ जल प्रदान करने के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई।

(पैराग्राफ 4.6)

XIV ifjogu d nkjku HkMkjk dh gkfu

एयरोनाटिकल विकास स्थापना की मार्ग में नुकसान या टूट–फूट के प्रति बीमा के लिए विद्यमान आदेशों की अनुपालना में विफलता के कारण हल्के लड़ाकू विमान कार्यक्रम के लिए 10.63 करोड़ रुपए के भंडारों का मार्ग में नुकसान हुआ।

(पैराग्राफ 5.1)

XV y[kk ijh{kk d n"Vkr ij cpr@olfy;k

नौसेना के दो मामलों में 1.31 करोड़ रुपए की वसूली/समायोजना तथा वायुसेना के तीन मामलों में 31.56 करोड़ रुपये की बचत लेखा परीक्षा द्वारा बताए जाने के बाद की गई।

(पैराग्राफ 3.6 और 4.10)

j{kk e=ky;

y[kkijh{kk ifronu 2011&12 dh l- lh, 3

Hkkjr byDVkfuDl fyfeVM

ijk 7-1 सेटेलाइट रेडियो रिसीवर के निर्माण और आपूर्ति में हानि/सेटेलाइट रेडियो के संविदागत विनिर्माण और सहयोगी के साथ करार के बिना आपूर्ति के परिणामस्वरूप ₹ 16.39 करोड़ की हानि हुई।

chbl,e,y fyfeVM

ijk 7-2 विक्रेता मॉडल उपस्कर की बिक्री

यद्यपि कम्पनी खनन और निर्माण उपस्कर के व्यवसाय में 1964 से थी तथा निर्माण उपस्कर के सम्बन्ध में इसने 12 प्रतिशत बाजार शेयर का उपभोग किया, फिर भी डीएमई (लघु निर्माण उपस्कर) के सम्बन्ध में कम्पनी का बाजार शेयर 2009–10 तक मात्र लगभग एक प्रतिशत था और यह इस खंड में घरेलू व अन्तर्राष्ट्रीय पूर्तिकारों दोनों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही थी।

ब्रांड पहचान स्थापित करने तथा उचित बाजार शेयर प्राप्त करने के लिए, कम्पनी ने सारे देश में व्यापक डीलरशिप नेटवर्क स्थापित करने का निर्णय (जुलाई 2006) किया था ताकि आन्तरिक क्षेत्रों में स्थित ग्राहकों तक अधिक से अधिक पहुंचा जा सके। लेखापरीक्षा में कम्पनी के डीलरशिप नेटवर्क की समीक्षा से निम्नलिखित का पता चला:

आधुनिक वर्षों में निर्माण/अवसंरचना गतिविधियों में वृद्धि के बावजूद भी, कम्पनी कम समाप्त हुये लघु उपस्कर के लिए क्षमता में पूंजी से लाभ उठाने में विफल रही।

कम्पनी द्वारा आपूर्ति डीएमई की गुणवत्ता तथा विक्रय के बाद सेवा खराब थी जिसके कारण ग्राहकों द्वारा उपस्कर वापस कर दिए गए। इसने कम्पनी के उत्पाद के लिए नकारात्मक पहचान बना दी।

कम्पनी ने डीलरों को वैध आदेशों के बिना उपस्कर प्रेषित किये थे और बाजार वास्तविकताओं पर विचार भी नहीं किया था परिणामस्वरूप सम्पत्ति सूची एकत्र हो गई तथा निधियों का अवरोधन हो गया।

ijk 7-3 संयुक्त उद्यम सहयोगी के चयन में कम्पनी के हितों की सुरक्षा करने में विफलता।

संयुक्त उद्यम सहयोगी की व्यापारिक और वित्तीय विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में विफलता के परिणामस्वरूप ₹ 6.94 करोड़ के निष्फल निवेश के अतिरिक्त ₹ 19.15 करोड़ की कारपोरेट गारंटी के आह्वान का भय रहा।

fgUnqLrku ,jkukfVDl fyfeVM

ijk 7-4 सामग्री प्रबन्धन मॉड्यूल पर विशिष्ट दबाव डालते हुए औद्योगिक वित्तीय प्रणाली के कार्यान्वयन पर सू प्रौ लेखापरीक्षा।

हिन्दुस्तान एरोनोटिक्स लिमिटेड ने आइसोलेटिड आइलेन्ड ऑफ ऑटोमेशन के हटाने के लिए डिवीजनों के मध्य एकसमान क्रियाविधि एवं प्रथाओं, निर्णय करने के लिए ऑन–लाइन सूचना, एकीकरण और अन्तर–प्रचालनीय प्रणालियों के कार्यान्वित करने के उद्देश्य से औद्योगिक वित्तीय प्रणाली (आईएफएस) एक ईआरपी–पैकेज का कार्यान्वयन किया। इंजन डिवीजन, बेंगलूरू और नासिक डिवीजन में सामग्री प्रबन्धन मॉड्यूल पर विशिष्ट दबाव डालते हुए आईएफएस कार्यान्वयन की समीक्षा की गई थी। कार्यान्वयन में विलम्ब अनुभवहीन कार्यान्वयक के साथ सम्मिलित कारबार प्रक्रिया री–इंजीनियरिंग के अभाव के कारण देखे गये थे। प्रणाली अभिकल्प में कमी, विभिन्न कारबार प्रक्रियाओं के नॉन–मेपिंग, स्थानान्तरण से पूर्व डाटा के शोधन न करने, हस्त्य हस्ताक्षेपों सहित सम्मिलित वैधीकरण जाँचों के अभाव के परिणामस्वरूप अपूर्ण और अविश्वसनीय डाटा प्राप्त हुए तथा पुनः इसके कारण परियोजना गुणवत्ता दस्तावेज के अनुसार अभिप्रेत अभिलाभों की प्राप्ति नहीं हुई।

ijk 7-5 दृढ़ वचनबद्धता के बिना समर्पित निर्माण सुविधाओं को निर्धारित करना।

दृढ़ वचनबद्धता अथवा पीएण्डडब्ल्यूसी के साथ समान प्रतिभागिता के बिना निर्यात आदेश लेने के लिए कम्पनी का समर्पित सुविधाओं को निर्धारित करने का निर्णय अविवेकपूर्ण था, परिणामस्वरूप ₹ 53.37 करोड़ की राशि की निधियों का अवरोधन तथा ₹ 46.97 करोड़ की राशि का निष्फल व्यय हुआ।

y[kkijh{kk ifrosnu 2011&12 dh l- ih, 4

Hkkjr byDVkfuDl fyfeVM

Hkkjr byDVkfuDl fyfeVM e vf/kkfIr i.kkyh

लेखा परीक्षा जांच से खरीद, विक्रेता विकास और निविदा करने की प्रक्रिया की प्रणाली और क्रियाविधियों में कतिपय अपर्याप्तताओं का पता चला। कुछ महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्षों की चर्चा नीचे की गई है:

* de foØrk vk/kkj

कम्पनी का विक्रेता आधार बहुत कम था, क्योंकि लगभग एक–तिहाई मानक मदों के लिए उसका केवल एक ही विक्रेता था जबकि इनमें से और एक–तिहाई मदों के लिए उसके केवल दो विक्रेता थे। वास्तव में कम्पनी पिछले तीन वर्षों के दौरान अपनी डायरेक्ट्री में केवल 168 विक्रेता ही जोड़ पाई जो कि कम्पनी के कुल विक्रेताओं को केवल एक प्रतिशत था। इस प्रकार बड़ी संख्या में मदों की खरीद के लिए पर्याप्त विक्रेता आधार

के अभाव में, प्रतिस्पर्द्धात्मक दरें प्राप्त करने में कम्पनी की योग्यता क्षीण थी।

* foØrk vk/kkj dk 'k;j u djuk

कम्पनी का विक्रेता आधार इकाई विशिष्ट था और उसे निविदाएं आमंत्रित करते समय अन्य इकाइयों के साथ शेयर नहीं किया जा रहा था। इसके कारण कम्पनी प्रतिस्पर्द्धात्मक कीमतों का लाभ उठाने से वंचित रही, विशेषकर तब जब कम्पनी का विक्रेता आधार बहुत कम था।

* eY; iofÙk dh ekuhVfjx u djuk

कम्पनी अपनी क्रय पद्धति में विशिष्ट प्रावधान होने के बावजूद सामग्री और संघटकों की मूल्य प्रवृत्ति की मॉनीटरिंग नहीं कर रही थी।

* Ø; vkns'k nus vkj lkexh d fujh{k.k e foyEc

जांचे गये 38 प्रतिशत मामलों में कम्पनी की इकाइयां क्रय आदेश देने के लिए निर्धारित समय सीमा का पालन करने में विफल रही। इसके अतिरिक्त, 66 प्रतिशत मामलों में जहां क्रय आदेशों को अन्तिम रूप दिया गया था, वहां विक्रेताओं को क्रय आदेश प्रेषित करने में विलम्ब हुआ था। कम्पनी ने क्रय प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं, जैसे निविदा मूल्यांकन तथा उसे अन्तिम रूप देने के बाद क्रय आदेश देने के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की थी।

* fon'k e fLFkr dk;ky;k dk de mi;kx

कम्पनी सामग्री के आयात में बचत करने के लिए विदेश में स्थित इन कार्यालयों का लाभ नहीं उठा सकी।

* ykxr dVkrh mik;

देशीकरण जो लागत कटौती का एक प्रमुख उपाय माना गया था, बहुत सफल नहीं हुआ था जोकि इस तथ्य से स्पष्ट है कि विदेशी विक्रेताओं को दिए गए आदेशों का मूल्य 2007–08 में 48 प्रतिशत से बढ़कर 2009–10 में 68 प्रतिशत हो गया था।

* vokLrfod ctfVx

कम्पनी खरीद पर अपने खर्च की मांग का वास्तविक निर्धारण करने में विफल रही क्योंकि सभी तीन वर्षों में खरीद के वास्तविक व्यय में नियोजित व्यय की तुलना में 20 प्रतिशत का अन्तर था।

नोटः उपर्युक्त सारांश नियंत्रक–महालेखापरीक्षक द्वारा उपलब्ध कराया गया है।

lh,M, th fjikVk@ih,lh fjikVk e dh xbZ fVIif.k;k d lc/k e 31-12-2011 dh fLFkfr d vuqlkj dh xbZ dkjokbZ lcekh fVIif.k;k dh fLFkfr

Ø-l-	o"kZ	lh,M, th@ih,lh fjikVk d mu ijk d C;kj ftue 31-12-2011 dk ,Vh,u yfEcr g					
		पैरा/पीए रिपोर्टों की संख्या जिन पर 2011–12 (31.12.2011 तक) के दौरान लेखा परीक्षा द्वारा पुनरीक्षण के पश्चात पीएसी को एटीएन प्रस्तुत किए जा चुके हैं	उन एटीएन की संख्या जिनको प्रथम बार भी मंत्रालय द्वारा लेखा परीक्षा को नहीं भेजा गया है	पुनरीक्षण हेतु लेखा परीक्षा को भेजे गए एटीएन की संख्या	भेजे गए एटीएन की संख्या परन्तु उनको टिप्पणियों के साथ लौटा दिया गया है तथा लेखा परीक्षा मंत्रालय द्वारा उनको पुनः प्रस्तुत करने की प्रतीक्षा में हैं	रक्षा मंत्रालय/रक्षा मंत्रालय (वित्त) सेना मुख्यालय के पास लम्बित एटीएन की संख्या	उन एटीएन की संख्या जिनका लेखा परीक्षा द्वारा अंतिम पुनरीक्षण कर दिया गया है परन्तु उनको मंत्रालय द्वारा पीएसी को प्रस्तुत नहीं किया गया है।
1	1987-88				1		
2	1988-89				1		
3	1995-96				1		
4	1996-97						
5	1999-2000	1		1		1	
6	2001-02	2	1			3	
7	2002-03		1				
8	2003-04	1				1	
9	2004-05	2				2	
10	2005-06	5				3	
11	2006-07	5		1			1
12	2007-08	14		2	1	2	2
13	2008-09	13	3	1	2	1	2
14	2009-10	22		1	4	3	
15	2010-11		20	7		9	2
16	2011-12 **(31.12.2011** rd)			3		25	
	;kx	**65**	**25**	**16**	**10**	**50**	**7**